जैन साहित्य एवं मंदिर उपकरण

हमारे यहाँ सभी प्रकार का दिगंबर जैन एवं भारत के सभी प्रमुख
धार्मिक संस्थानों का सत साहित्य एवं मंदिर में उपयोग हेतु उपकरण
और प्रभावना में बाटने योग्य सामग्री सीमित मूल्य पर उपलब्ध है

(पांडुशिला ,सिंघासन, छत्र, चवर प्रातिहार्य,जाप माला ,मंगल कलश, पूजा बर्तन ,चंदोवा,तोरण ,झारी ,

(शुद्ध चांदी के उपकरण आर्डर पर निर्मित किया जाता है)

नोट:-हमारे यहाँ घरो में उपयोग हेतु ,साधुओ के उपयोग हेतु ,
अनुष्ठानों में उपयोग हेतु शुद्ध घी भी आर्डर पर
उपलब्ध कराया जाता है

SOURABH KUMAR JAIN
9993602663
77229 83010
SOURABHJN1989@GMAIL.COM

विशद विधान संग्रह
भाग-1

(श्री आदिनाथ से वासुपूज्य तक)

रचयिता

प.पू. आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

कृति - विशद विधान संग्रह (भाग-1)

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - प्रथम-2013 ● प्रतियाँ :1000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग - क्षुल्लक श्री 105 विदर्शसागरजी, क्षुल्लक श्री विसोमसागरजी

संपादन - ब्र. ज्योति दीदी (9829076085) आस्था दीदी, सपना दीदी

संयोजन - किरण दीदी, आरती दीदी, उमा दीदी ● मो. 9829127533

प्राप्ति स्थल - 1 जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट
मनिहारों का रास्ता, जयपुर
फोन : 0141-2319907 (घर) मो.: 9414812008

2. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार
ए-107, बुध विहार, अलवर मो.: 9414016566

3. विशद साहित्य केन्द्र
C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर, कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा) प्रधान ● मो.: 09416882301

4. लाल मंदिर, चाँदनी चौक, दिल्ली

मूल्य - 101/- रु. मात्र

_wDH$: amOy J«m{\$H$ AmQ>© , जयपुर ● फोन : 2313339, मो.: 9829050791

परम पूज्य आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज का संक्षिप्त जीवन परिचय

पूर्व नाम	– रमेशचन्द जैन
पिता का नाम	– स्व. श्री नाथूराम जैन
माता का नाम	– श्रीमती इन्दरदेवी जैन
जन्म तिथि	– चैत्र कृष्ण चतुर्दशी, शनिवार, 11 अप्रैल, 1964
जन्म स्थान	– ग्राम–कुपी, जिला–छतरपुर (मध्यप्रदेश)
लौकिक शिक्षा	– एम.ए. पूर्वार्ध
संयम मार्ग पर प्रवेश	– प.पू. वात्सल्य रत्नाकर आचार्य 108 श्री विमलसागरजी महाराज से सन् 1993 में श्री सम्मेदशिखरजी में 2 प्रतिमा के व्रत धारण किये
ऐलक दीक्षा	– प.पू. गणाचार्य श्री 108 विरागसागरजी महाराज से मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी, 18 दिसम्बर, 1993 में
दीक्षा स्थान	– अतिशय क्षेत्र श्रेयांसगिरि (पन्ना), मध्यप्रदेश
मुनि दीक्षा	– फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी, दिनांक 8 फरवरी, 1996
दीक्षा स्थान	– सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरी (छतरपुर)
मुनि दीक्षा गुरु	– प.पू. गणाचार्य श्री 108 विरागसागरजी महाराज
आचार्य पद	– बसंत पंचमी, दिनांक 13 फरवरी, 2005 मालपुरा, जिला–टोंक (राज.)
आचार्य पद प्रदाता	– प.पू. मर्यादा शिष्योत्तम आचार्य श्री 108 भरतसागरजी महाराज
रूचि	– ध्यान, चिंतन, मनन, लेखन कार्य, 80 विधान के रचयिता
विशेष	– प.पू. गणाचार्य श्री 108 विरागसागरजी महाराज के आशीर्वाद से प.पू. मर्यादा शिष्योत्तम आचार्य श्री 108 श्री भरतसागरजी महाराज ने 27 पिच्छीधारियों त्यागी–व्रतियों के ससंघ सान्निध्य में दिनांक 13 फरवरी, 2005 को मालपुरा, जिला–टोंक (राज.) की धरती पर भारी जन–समुदाय की उपस्थिति में मुनि श्री विशदसागरजी महाराज को अपने हाथों से आचार्य पद के योग्य संस्कारों से संस्कारित कर ''आचार्य पद'' पर सुशोभित किया व उसी समय नव–दीक्षित आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज ने एक मुनि व दो क्षुल्लक दीक्षाएँ प्रदान की।

श्रेष्ठ पूजन, भक्ति आराधना, ध्यान, साधना से ही कटेगी कर्मों की विशाल श्रृंखला

आदिनाथ भगवान से महावीर भगवान तक; महावीर भगवान से लेकर अर्हत्बली, धरसेन, पुष्पदंत, भूतबली आचार्य तक; पुष्पदंत, भूतबली, कुन्दकुन्दाचार्य से वर्तमान आचार्य तक मुनि परम्परा एक सी रही है। इस परम्परा पर चलकर मुमुक्षु जीव परमात्मा को पाने के प्रयास में रत हैं। ये सभी साधक अपने मूलगुणों का निरतिचार पालन कर रहे हैं। मुनिराजों, आचार्यों और मोक्ष मार्ग के पथिक अन्य संयमी जीवों के महान् तत्त्व ज्ञान और विशाल मस्तिष्क का परिचय उनके साहित्य द्वारा प्राप्त होता है। उनके द्वारा रचित साहित्य की ओर जब दृष्टिपात करते हैं तब उनकी तीक्ष्ण बुद्धि, अद्भुत प्रतिभा, कार्यक्षमता और कला के महत्त्वपूर्ण चित्र हमारे हृदय पटल पर अंकित हो उठते हैं। सूक्ष्म आत्म विज्ञान, आध्यात्मिक तत्त्व विवेचन, मनोमुग्धकारी सूक्तियाँ, विलक्षण तर्कणा कर्म और योग का समन्वय धारावाही शब्द, राशी तथा अलंकारों के रसमय प्रयोग के दर्शन कर हम श्रद्धा, भक्ति और विनय से नम्रीभूत हो जाते हैं। परम पूज्य साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज द्वारा रचित प्रस्तुत ग्रन्थ में हमारे आराध्य चौबीस तीर्थंकरों की पूजा, भक्ति, स्तुति एवं आराधना की गई है। यह 24 तीर्थंकर महामण्डल विधान पुस्तक अपने आप में विराट एवं विशाल हैं। यह सागर ही नहीं महासागर है। भक्त से भगवान बनने की यात्रा का हेतु है। श्री दिगम्बर जैन मंदिर, शंकर नगर, दिल्ली में 1 से 24 जनवरी, 2013 तक 24 तीर्थंकरों के 24 विधान हुए। विधानों की पुस्तकें एकत्रित करने में काफी परेशानी हुई। आचार्यश्री से निवेदन किया कि आपके द्वारा रचित सभी 24 विधानों का यदि एक या दो पुस्तक में संकलन हो जाए तो श्रावकों को पुस्तकें ढूँढ़ने में ज्यादा परेशानी नहीं होगी और अल्प समय में आचार्यश्री के आशीर्वाद एवं समाज के सहयोग से यह ग्रन्थ छपकर आपके हाथों में पहुँच रहा है।

पंचकल्याणक की तिथियों, पर्व के दिनों या विशेष अवसरों में इस पुस्तक से यथायोग्य पूजन, विधान कर जीवन को सौभाग्यशाली बनाएँ। पुनः आचार्य गुरुवर श्री विशदसागरजी के चरणों में नवकोटि से नमोस्तु एवं भावना भाते हैं कि आगे भी आपकी लेखनी और भी विशाल रूप लेते हुए जिनवाणी की सेवा में लगी रहे।

–मुनि विशालसागर

(संघस्थ आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृ.सं.
1.	मंगलाष्टक	6
2.	ध्वजारोहण-विधि	8
3.	अंगन्यास विधि	12
4.	मण्डप प्रतिष्ठा विधि	16
5.	अभिषेक पाठ भाषा	18
6.	शांतिधारा	21
7.	विनय पाठ	24
8.	मंगल पाठ	25
9.	पूजन प्रारम्भ	26
10.	मूलनायक सहित समुच्चय पूजन	34
11.	श्री नवदेवता पूजा	39
12.	सिद्ध भक्ति (प्राकृत)	44
13.	श्री आदिनाथ महामण्डल विधान	45
14.	श्री अजितनाथ विधान	82
15.	श्री संभवनाथ विधान	177
16.	श्री अभिनन्दननाथ विधान	156
17.	श्री सुमतिनाथ विधान	199
18.	श्री पद्मप्रभ विधान	240
19.	श्री सुपार्श्वनाथ विधान	290
20.	श्री चन्द्रप्रभ पूजन विधान	325
21.	श्री पुष्पदन्त विधान	374
22.	श्री शीतलनाथ विधान	417
23.	श्री श्रेयांसनाथ विधान	458
24.	श्री वासुपूज्य विधान	489

मंगलाष्टक

रचयिता : प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

पूजनीय इन्द्रों से अर्हत्, सिद्ध क्षेत्र सिद्धी स्वामी।
जिन शासन को उन्नत करते, सूरी मुक्ती पथगामी।।
उपाध्याय हैं ज्ञान प्रदायक, साधू रत्नत्रय धारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।1।।

नमित सुरासुर के मुकुटों की, मणिमय कांति शुभ्र महान्।
प्रवचन सागर की वृद्धी को, प्रभु पद नख हैं चंद्र समान।।
योगी जिनकी स्तुति करते, गुण के सागर अनगारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।2।।

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण युत, निर्मल रत्नत्रयधारी।
मोक्ष नगर के स्वामी श्री जिन, मोक्ष प्रदाता उपकारी।।
जिन आगम जिन चैत्य हमारे, जिन चैत्यालय सुखकारी।
धर्म चतुर्विध पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी।।3।।

तीन लोक में ख्यात हुए हैं, ऋषभादिक चौबिस जिनदेव।
श्रीयुत द्वादश चक्रवर्ति हैं, नारायण नव हैं बलदेव।।
प्रति नारायण सहित तिरेसठ, महापुरुष महिमाधारी।
पुरुष शलाका पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी।।4।।

जया आदि हैं अष्ट देवियाँ, सोलह विद्यादिक हैं देव।
श्रीयुत तीर्थंकर की माता-पिता यक्ष-यक्षी भी एव।।
देवों के स्वामी बत्तिस वसु, दिक् कन्याएँ मनहारी।
दश दिक्पाल सहित विघ्नों के, नाशक हों मंगलकारी।।5।।

सुतप वृद्धि करके सर्वौषधि, ऋद्धी पाई पञ्च प्रकार।
वसु विधि महा निमित् के ज्ञाता, वसुविधि चारण ऋद्धीधार।।

पंच ज्ञान तिय बल भी पाये, बुद्धि सप्त ऋद्धीधारी।
ये सब गण नायक पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।6।।

आदिनाथ स्वामी अष्टापद, वासुपूज्य चंपापुर जी।
नेमिनाथ गिरनार गिरि से, महावीर पावापुर जी।।
बीस जिनेश सम्मेदशिखर से, मोक्ष विभव अतिशयकारी।
सिद्ध क्षेत्र पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।7।।

व्यंतर भवन विमान ज्योतिषी, मेरु कुलाचल इष्वाकार।
जंबू शाल्मलि चैत्य वृक्ष की, शाखा नंदीश्वर वक्षार।।
रूप्यादि कुण्डल मनुजोत्तर, में जिनगृह अतिशयकारी।
वे सब ही पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।8।।

तीर्थंकर जिन भगवंतों को, गर्भ जन्म के उत्सव में।
दीक्षा केवलज्ञान विभव अरु, मोक्ष प्रवेश महोत्सव में।।
कल्याणक को प्राप्त हुए तब, देव किए अतिशय भारी।
कल्याणक पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।9।।

धन वैभव सौभाग्य प्रदायक, जिन मंगल अष्टक धारा।
सुप्रभात कल्याण महोत्सव, में सुनते-पढ़ते न्यारा।।
धर्म अर्थ अरु काम समन्वित, लक्ष्मी हो आश्रयकारी।
मोक्ष लक्ष्मी 'विशद' प्राप्त कर, होते हैं मंगलकारी।।10।।

।। इति मंगलाष्टकम् ।।

गुरु भक्ति

Y_©àÑmdH$ma_nyÁ`ho !, VdMaUm|_|H$ê±$Z_Z²Ÿ&
¶w{Õ{dHmeHà~bAmnHmo, HaVoh_gmXadÝXZŸ&&
na_emp¶VXoZodmbo ho !, Jwéda H$aVoh_A{^ZŸ&
{dX{gÝwJwUH$Amu{©dH$mo, H$aVoh_ev²-ev² dÝXZŸ&&

ध्वजारोहण-विधि

* ध्वजदण्ड मण्डप की ऊँचाई से दुगना हो, 3 कटनी हो, ध्वजदण्ड पीले खोले से ढका हो ऊपर से गोट लगा हो।
* शिखर पर लगे हुए कलश से 1 हाथ ऊँची ध्वजा नीरोगता, 2 हाथ ऊँची ऋद्धि, 3 हाथ ऊँची सम्पत्ति, 4 हाथ ऊँची शासक समृद्धि, 5 हाथ ऊँची सुभिक्ष राष्ट्रवृद्धि में कारण होती है।
* ध्वजा त्रिकोण विलस्त तक लम्बी और 11 अंगुल से 24 अंगुल चौड़ी होनी चाहिये।

ध्वजा फहराने का फल-

ध्वजा फहराने पर प्रथम ही वायु वेग से पूर्व दिशा में फहरे तो सर्वमनोसिद्धि, उत्तर में फहरे तो आरोग्य सम्पत्ति, पश्चिम वायव्य एवं ऐशान दिशा में फहरे तो वर्षा हो, शेष दिशा व विदिशा में फहरे तो शांति कर्म करना चाहिए।

ध्वजा रोहण स्थल में-

1. पहली कटनी में नवदेवता के प्रतीक 9 श्री फल रखना चाहिए।
2. दूसरी कटनी में 5 मिट्‌टी के कलश रखना चाहिए।
3. तीसरी कटनी में दश दिशा संबंधी ध्वजायें रखना चाहिए।
4. बड़ी शांतिधारा के मंत्रों से हवन स्थल में अग्नि रख धूप खेना।

नोट- ध्वजा रोहण से पूर्व सर्वप्रथम विनायक यंत्र या पंचपरमेष्ठी पूजन करें, उसके बाद 108 या नौ बार णमोकार मंत्र का जाप्य करें।

भक्ति पाठ

लघु सिद्ध श्रुत एवं आचार्य भक्ति।

अर्घ- ॐ ह्रीं अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्वजादण्ड एवं ध्वजा की जल से शुद्धि–

ज्ञान शक्तिमयीं मत्वा ध्वजदण्डाग्र चूलिकाम्।
अनादि सिद्ध मंत्रेण स्नपनं ते करोम्यहम्।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं ह्रीं क्लीं श्री सर्वशान्ति कुरु–कुरु स्वाहा।

अर्घं– **पंचपरमेष्ठिनस्ते मंगललोकोत्तमाश्च शरणानि।**
धर्मोऽपि कर्णिकायां समर्चिताः सन्तु नः सुखदाः।।

ॐ ह्रीं अर्हदादि मंगलोत्तम शरणभूतेभ्यो नवदेवताभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्वजदण्ड पर पुष्पक्षेपण

1. **देवेन्द्र मणि मौलि समार्चितांघ्रि, देवाधिदेव परमेश्वर कीर्तिभाजः।**
पुष्पायुध प्रमथनस्य जिनश्वरस्य, पुष्पांजलि विरचितोऽस्तु विनेय शांत्यै।।

ॐ परब्रह्मणे नमो नमः, स्वस्ति–स्वस्ति, जीव–जीव नंद नंद, वर्धस्य–वर्धस्य, विजयस्व–विजयस्व, पुनीहि–पुनीहि, पुण्याहं–पुण्याहं, मांगल्यं–मांगल्यं, जय–जय।

2. **तत् कुंभ वार्मिवर मंत्रपूतैः, सत्संमुखानि प्रतिबिंबितानाम्।**
यक्षादि सर्वध्वज देवतानां, संप्रोक्षण सांप्रतमातनोमि।।

ॐ सर्वराष्ट्र क्षुद्रोपद्रवं हर–हर ॐ स्वस्ति भद्रं भवतु स्वाहा।

शुद्ध जल से ध्वज दण्ड शुद्धि–

ॐ ह्रीं श्री नमोऽर्हते पवित्रतरजलेन ध्वजदण्ड शुद्धिं करोमि।

ध्वजा एवं ध्वज दण्ड पर स्वस्तिक लेखन–

ॐ ह्रीं ध्वजदण्डे पताके च स्वस्तिक लेखनं करोमि।

ध्वजदण्ड में रक्षा सूत्र बांधे–

श्री सूत्राम शतार्चितांघ्रि जलजद्वान्द्वय लोकत्रये,
प्रेष्ठोन्मिष्ठ गरिष्ठ सुष्ठ सुवचो जुष्टाय तेऽर्हन्नमः।

अंतातीत गुणाय निर्जित भव व्राताय बुद्धोल्लसः,
ऋद्धे बुद्धि विशुद्धि दायक महा विष्णो विजिष्णो जिनः।।

ॐ ह्रीं त्रिवर्ण सूत्रेण ध्वजदण्ड परिवेष्टयामि। ॐ णमो अरहंताणं स्वाहा। (इस मंत्र का 9 बार जाप करें)

ध्वजदण्ड पर माला काली चोटी, मंगल सूत्र बांधने का मंत्र–

ध्वजदण्डाग्र भागस्थ, कोकिला त्रय वर्तिनः।
वेणुदण्डस्य तस्याग्रे, वहनामि ध्वजकूर्चिकाम्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं ध्वजदण्डं मालामंगलसूत्रेण वेष्टयामि।

ध्वजा गर्त शुद्धि (अष्ट द्रव्य से)

ॐ ह्रीं नीरजसे नमः (जल गर्त में छोड़े), ॐ ह्रीं शीलगन्धाय नमः (सुगंध)
ॐ ह्रीं अक्षताय नमः (अक्षतान्), ॐ ह्रीं विमलाय नमः (पुष्पं)
ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः (नैवेद्यं), ॐ ह्रीं ज्ञानोद्योनाय नमः (दीपं)
ॐ ह्रीं श्रुतधूपाय नमः (धूपं), ॐ ह्रीं अभीष्ट फलप्रदाय नमः (फलं)
ॐ ह्रीं परम सिद्धाय नमः (अर्घं)।

ध्वजदण्ड में पंचरत्न–स्वस्तिक स्थापन–

ॐ ध्वजदण्डगर्ते पंचरत्न हिरण्य स्वस्तिकं स्थापनं करोमि।

ध्वजारोहण मंत्र–

रत्नत्रयात्मक–तयाभि–मंतेऽन्नदण्डे, लोकत्रय प्रकृत केवल बोधरूपम्।
संकल्प पूजित मिदं ध्वजमर्च्य लग्ने, स्वारोपयामि सति मंगल वाद्य घोषे।।

ॐ णमो अरिहंताणं स्वस्तिभद्रं भवतु सर्वलोक शान्ति र्भवतु स्वाहा।

तदग्रदेशे ध्वज दण्ड मुच्चै, र्भास्वद्विमानं गमनाद्विरूंधत्।
निवेश्यलग्ने शुभोपदेश्ये, महत्पताकोच्छ्रयणं विदध्यात्।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनशासनपताके सदोच्छ्रिता तिष्ठ तिष्ठ भव भव वषट् स्वाहा।
(इन मंत्रों को बोलकर गाने बाजे की ध्वनि के साथ ध्वजा फहराना)

ध्वजा पर पुष्पक्षेपण करना–

सजयुत जिन धर्मो यावदा चन्द्र तारम्, व्रत नियम तपोर्भि–वर्द्धतां साधुसङ्ऽघंः।
अह–रह–रभि–वृद्धिं यान्तु चैत्यालयस्ते, तदधिकृत–जनानां क्षेम मारोग्यमस्तु।।
ॐ ह्रीं दशचिह्नाष्ट गुंटिकालंकृत ध्वजायै पुष्पं।
प्रतिष्ठाकारक, प्रतिष्ठाचार्य एवं सम्मिलित श्रावक गण ध्वजा पर पुष्प फेंके एवं नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें।

ध्वज गीत

(तर्ज– जन गन मन अधिनायक...)

तीन लोक अधिनायक जय हे, अर्हत् सिद्ध विधाता।
मोक्षमार्ग के अनुपम नायक, जग में शांति प्रदाता।।
गणधरादि तुम नमते, साधु चरण प्रणमते, हे मुक्ति पद दाता।
मण्डल की पूजा विधान में, पहले ध्वज फहराता।
जय हे – जय हे – जय हे – जय जय जय जय हे।। हे जग में शांति प्रदाता।।1।।
पञ्च रंग अथवा केसरिया, ध्वज अनुपम बनवाएँ।
स्वस्तिक चिह्न बनाकर उसमें, सुरभित पुष्प बंधाएँ।।
शुभ जैन ध्वजा फहराएँ, हम सादर शीश झुकाएँ, जो फहर फहर फहराता।
स्वस्तिक चिह्न सहित ध्वज को जग, सारा शीश झुकाता।। जय हे....।।2।।
पञ्च परम, परमेष्ठि जग में, मोक्ष मार्ग दर्शाते।
भवि जीवों से तीन लोक में, वह सब पूजे जाते।।
उनके गुण हम गाएँ, पद में शीश झुकाएँ, हे भविजन के त्राता।
विशद भाव से आज झुका है, ध्वज के आगे माथा।। जय हे....।।3।।

जल शुद्धि मंत्र-ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म महापद्म तिगिंछ केसरि पुण्डरीक महापुण्डरीक गंगा सिन्धु रोहिद्रोहितास्या हरिद्धरिकान्ता सीता सीतोदा नारी नरकान्ता सुवर्णकूला रूप्यकूला रक्ता रक्तोदा क्षीराम्भोनिधि शुद्ध जलं सुवर्ण घटं प्रक्षालितपरिपूरितं नवरत्न गंधाक्षत पुष्पार्चित ममोदकं पवित्रं कुरु–कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं क्षं क्षं लं लं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा। (पीले सरसों अथवा लवंग से जल शुद्ध करना)

अंगन्यास विधि

मंगलाष्टक के बाद शरीर की रक्षा और तत्तद् दिशाओं से आने वाले विघ्नों की निवृत्ति के लिए नीचे लिखे अनुसार अंगन्यास किया जावे। दोनों हाथों के अंगुष्ठ से लेकर कनिष्ठिका पर्यन्त पांचों अंगुलियों में क्रम से अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु परमेष्ठी की स्थापना करें। पूजन जाप या हवन में बैठने वाले महाशय सर्वप्रथम दोनों हाथों के अंगूठों को बराबरी से मिलाकर सामने करें। तथा–

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।

इस मंत्र का उच्चारण कर अंगुष्ठों पर सिर झुकावें। फिर दोनों हाथों की तर्जनियों (अंगूठा के पास की अंगुलियों) को बराबरी से मिलाकर सामने करें

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।

यह मंत्र पढ़कर तर्जनियों पर सिर झुकावें। फिर बीच की दोनों अंगुलियों को मिलाकर सामने करें और–

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं ह्रूँ मध्यमाभ्यां नमः।

यह मंत्र पढ़कर मध्यमाओं पर सिर झुकावें। फिर दोनों अनामिकाओं को मिलाकर सामने करें और–

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं अनामिकाभ्यां नमः।

यह मंत्र पढ़कर अनामिका पर सिर झुकावें। फिर दोनों कनिष्ठाओं को मिलाकर सामने करें और–

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

यह मंत्र पढ़कर कनिष्ठाओं पर सिर झुकावें। फिर दोनों हथेलियों को बराबर सामने फैलाकर–

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करतलाभ्यां नमः।

यह मंत्र पढ़कर करतलों (गदियों) पर सिर झुकावे। फिर दोनों कर पृष्ठों को बराबर सामने फैलाकर–

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः करपृष्ठाभ्यां नमः।

यह मंत्र पढ़कर हथेलियों के ऊपरी भाग पर सिर झुकावें। तदनन्तर–

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मम शीर्षं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर दाहिने हाथ से सिर का स्पर्श करें। फिर

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वदनं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर दाहिने हाथ से मुख का स्पर्श करें।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं ह्रूँ मम हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर दाहिने हाथ से हृदय का स्पर्श करें।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर दाहिने हाथ से नाभि का स्पर्श करें।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः मम पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर दाहिने हाथ से पैरों का स्पर्श करें।

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मम गात्रे रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर अपने शरीर का स्पर्श करें।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वस्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर अपने वस्त्रों का स्पर्श करें।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं ह्रूँ मम पूजाद्रव्यं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर पूजा की सामग्री का स्पर्श करें।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम स्थलं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर अपने खड़े होने की जगह की ओर देखें।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्व जगत् रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर चुल्लू में जल लेकर सब ओर फैकें।

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ठः ठः ह्रीं स्वाहा।

इस मंत्र से चुल्लू के जल को मंत्र कर अपने सिर पर सींचें।

ॐ नमोऽर्हते सर्व रक्ष-रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

(यह मंत्र पढ़कर परिचारकों पर पुष्प छोड़ें)

रक्षासूत्र बन्धन मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सर्वोपद्रवशान्तिं कुरु कुरु। ॐ नमोऽर्हते भगवते तीर्थंकर परमेश्वराय कर पल्लवे रक्षाबंधनं करोमि एतस्य समृद्धिरस्तु। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः स्वाहा।

तिलक करण मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतपराक्रमाय ते भवतु।

यह मंत्र पढ़कर गृहस्थाचार्य सभी पात्रों को तिलक लगावें।

दिग्वन्दना मंत्र

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां पूर्वदिशासमागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा। यह मंत्र पढ़कर पूर्व दिशा में पीले चावल या सरसों क्षेपें।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिणदिशासमागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा। यह मंत्र पढ़कर दक्षिण दिशा में पीले चावल या सरसों क्षेपें।

ॐ ह्रूं णमो आयरियाणं ह्रूं पश्चिमदिशासमागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा। यह मंत्र पढ़कर पश्चिम दिशा में पीले चावल या सरसों क्षेपें।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तरदिशासमागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा। यह मंत्र पढ़कर उत्तर दिशा में पीले चावल या सरसों क्षेपें।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्वदिशासमागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा। यह मंत्र पढ़कर सर्वदिशाओं में पीले चावल या सरसों क्षेपें।

परिणाम-शुद्धि-मन्त्र

विधिं विधातुं यजनोत्सवे, ऽगेहादिमूर्च्छामपनोदयामि।
अनन्यचित्ता कृतिमादधामि, स्वर्गादि लक्ष्मीमपि हापयामि।।

यह पढ़कर पात्रों से गृहस्थी के कार्यों से प्रकृत विधानपर्यन्त निवृत्त रहने की प्रतिज्ञा कराई जावे।

रक्षा मन्त्र

ॐ नमो अर्हते सर्व रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

इस मन्त्र से पीले चावलों या पीले सरसों को सात बार मन्त्रित कर सभी पात्रों पर पुष्प प्रक्षेप किया जावे।

शान्ति मन्त्र

ॐ क्षूं ह्रूं फट् किरीटिं घातय घातय, परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय, सहस्रखण्डान् कुरु, कुरु, परमुद्रां छिन्द छिन्द, परमंत्रान् भिन्द भिन्द, क्षां क्षः फट् स्वाहा।

इस मन्त्र से भी पीले सरसों या चावलों को तीन बार मन्त्रित कर सभी पात्रों पर प्रक्षेप किया जावे। किरीट (मुकुट), मुद्रा (परवाना, छाप, मुहर)

यज्ञोपवीत धारण मन्त्र

ॐ नमः परमशान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकरणायाहंरत्नत्रय चिह्न यज्ञोपवीतं दधामि मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर पुरुष पात्रों को 'यज्ञोपवीत' पहिनाया जावे।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः ऐतेषां पात्रशुद्धिमंत्र सर्वांगशुद्धिः भवतु।

यह मंत्र पढ़कर पात्रों पर जल छिड़ककर उनकी अंतिम शुद्धि की जावे।

मंगल कलश स्थापना मंत्र

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिब्रह्मणो मतेऽस्मिन् विधीयमाने श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ विधान कार्यं। .. श्री वीर निर्वाण निर्वाण संवत्सरे, ...मासे, ...पक्षे, ...तिथौ, ...दिने, ...लग्ने, भूमिशुद्ध्यर्थं, पात्रशुद्ध्यर्थं, शान्त्यर्थं पुण्याहवाचनार्थं नवरत्नगन्धपुष्पाक्षत श्रीफलादिशोभितं शुद्धप्रासुकतीर्थजलपूरितं मंगलकलशस्थापनं करोमि श्रीं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

नोट :– यह पढ़कर मण्डल के उत्तर कोने में जल, अक्षत, पुष्प, हल्दी, सुपारी, सवा रुपया, श्रीफल और पुष्पमाला सहित मंगलकलश श्रावक द्वारा स्थापित कराया जावे। इस कलश को पुण्याहवाचन कलश भी कहते हैं।

दीपक स्थापन

रुचिरदीप्तिकरं शुभदीपकं, सकललोकसुखाकर-मुज्ज्वलम्।
तिमिरजालहरं प्रकरं सदा, किल धरामि सुमंगलकं मुदा।।

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।

(मुख्य दिशानुसार आग्नेय कोण में दीपक स्थापित करें।)

शास्त्र स्थापन

स्थापनीयं वरं शास्त्रं, कुन्दकुन्दादि निर्मितं।
जैन तत्त्व प्रवोधाय, स्याद्वादेन विभूषितम्।।

ॐ ह्रीं मण्डलोपरि जिनशास्त्रं स्थापयामि।

***

मण्डप प्रतिष्ठा विधि

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः नमोऽर्हते श्रीमते पवित्रतर जलेन मण्डप शुद्धि करोमि स्वाहा (मण्डप पर जल से शुद्धि करें।)

मण्डप स्थित मंगल कलश में हल्दी सुपारी रखने का मंत्र–

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः मंगल कलशे मंगल कार्य निर्विघ्न परिसमाप्त्यर्थं पुंगी फलानि प्रभृति वस्तूनि प्रक्षिपामीति स्वाहा।

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः नमोऽर्हते श्रीमते सर्व रक्ष रक्ष हूँ फट स्वाहा। (मंगल कलश में हल्दी, सुपारी, पीली सरसों, नवरत्न, सवा रुपया हाथ में लेकर सावधानीपूर्वक रख दें।)

निम्न मन्त्रपूर्वक पंचवर्ण सूत्र से मण्डप को तीन बार वेष्टित करें।

यत्पंचवर्णाक्तपवित्रसूत्रं, सूत्रोक्ततत्त्वाभमनेकमेकम्।
तेनत्रिवारं परिवेष्टयामः, शिष्टेष्टयागाश्रयमण्डपेन्द्रम्।।

मन्त्र :–ॐ अनादिपरमब्रह्मणे नमो नमः। ॐ ह्रीं जिनाय नमो नमः। ॐ चतुर्मंगलाय नमो नमः। ॐ चतुर्लोकोत्तमाय नमो नमः। ॐ चतुःशरणाय नमो नमः अस्य.................. (विधान का नाम) नामधेय यजमानस्य .... (विधान कर्ता का नाम) नामधेय-याजकस्य च सुरासुरनरनृपयक्ष देवतागण गन्धर्वस्य कुलगोत्रनामदेशादिभागृहाराम-परिचारकस्यपुण्याहमंत्रैः पुण्याहं वाचयेत् (करोमि) प्रीयंतां ते कुलं, प्रीयंतां ते आयुः प्रीयंतां ते मातृपितृसुहृद् बन्धुवर्गस्य प्रीयंतां। त्वं जीव, त्वं विजयस्व, ते मांगल्यं-मांगल्यं भवतु। सपरिवार वर्धस्व-वर्धस्व विजयस्व-विजयस्व, भवतु भवतु सर्वदा शिवं कुरु।।

श्रीमण्डपाभं मिलितत्रिलोकी-श्रीमंडितंपण्डितपुण्डरीकं।
श्रीमण्डपं खण्डितपापतापं तमेनमर्घ्येण च मण्डयामः।।

मण्डपायार्घ्यं दद्यात्। (मण्डप के लिये अर्घ्य चढ़ावें।)

मण्डप शुद्धि की संक्षिप्त विधि

नीचे लिखे मंत्र को 5 बार पढ़कर मण्डप पर जल छिड़क देवें।

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः प्रतिष्ठा मण्डप वेदी प्रभृति स्थानानां शुद्धिं कुर्मः।

मण्डप की आठों दिशाओं में क्रमशः नीचे लिखे मंत्र पुष्प क्षेपते हुए मण्डप शुद्धि करें।

1. ॐ आं क्रौं ह्रीं नमः चतुर्णिकाय देवाः सर्व विघ्नः निवारणार्थाय... कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
2. ॐ आं क्रौं ह्रीं पूर्व दिशा के प्रतिहारी कुमुदेश्वर देवाः....... विघ्न निवारणार्थाय........ कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
3. ॐ आं क्रौं ह्रीं आग्नेय दिशा के प्रतिहारी यमेन्द्र देवाः....... विघ्न निवारणार्थाय....... कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
4. ॐ आं क्रौं ह्रीं दक्षिण दिशा के प्रतिहारी वामन देवाः....... विघ्न निवारणार्थाय...... कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
5. ॐ आं क्रौं ह्रीं नैऋत्य दिशा के प्रतिहारी नैऋतेन्द्र देवाः...... विघ्न निवारणार्थाय.....कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
6. ॐ आं क्रौं ह्रीं पश्चिम दिशा के प्रतिहारी अंजन देवाः....... विघ्न निवारणार्थाय..... कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
7. ॐ आं क्रौं ह्रीं वायव्य दिशा के प्रतिहारी वायुकुमारः देवाः......विघ्न निवारणार्थाय....... कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
8. ॐ आं क्रौं ह्रीं उत्तर दिशा के प्रतिहारी पुष्पदन्त देवाः...... विघ्न निवारणार्थाय....... कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
9. ॐ आं क्रौं ह्रीं ईशान दिशा के प्रतिहारी ऐशानेद्र देवाः...... विघ्न निवारणार्थाय...... कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
10. ॐ आं क्रौं ह्रीं वास्तुकुमारदेवाः... मेघकुमारदेवाः, नागकुमारदेवाः... विघ्न निवारणार्थाय .. कार्य सिद्धयर्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।

अभिषेक पाठ भाषा

–आचार्य विशदसागर

श्रीमत् जिनवर वन्दनीय हैं, तीन लोक में मंगलकार।
स्याद्वाद के नायक अनुपम, अनन्त चतुष्टय अतिशयकार।।
मूल संघ अनुसार विधि युत, श्री जिनेन्द्र की शुभ पूजन।
पुण्य प्रदायक सद्दृष्टि को, करने वाली कर्म शमन।।1।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा स्नपन प्रस्तावनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री मत् मेरू के दर्भाक्षत, युक्त नीर से धो आसन।
मोक्ष लक्ष्मी के नायक जिन, का शुभ करके स्थापन।।
मैं हूँ इन्द्र प्रतिज्ञा का शुभ, धारण करके आभूषण।
यज्ञोपवीत मुद्रा कंकण अरु, माला मुकुट करूँ धारण।।2।।

ॐ ह्रीं नमो परमशान्ताय शांतिकराय पवित्रीकृतायाहं रत्नत्रय स्वरूपं यज्ञोपवीत धारयामि।

हे विबुधेश्वर ! वृन्दों द्वारा, वन्दनीय श्री जिन के बिम्ब।
चरण कमल का वन्दन करके, अभिषेकोत्सव को प्रारम्भ।।
स्वयं सुगन्धी से आये ज्यों, भ्रमर समूहों का गुंजन।
गंध अनिन्द्य प्रवासित अनुपम, का मैं करता आरोपण।।3।।

ॐ ह्रीं परम पवित्राय नमः नवांगेषु चंदनानुलेपनं करोमि।

जो प्रभूत इस लोक में अनुपम, दर्प और बल युक्त सदैव।
बुद्धी शाला दिव्य कुलों में, जन्मे जो नागों के देव।।
मैं समक्ष उनके शुभ अनुपम, करने हेतु संरक्षण।
स्नपन भूमि का करता हूँ, अमृत जल से प्रच्छालन।।4।।

ॐ ह्रीं जलेन भूमि शुद्धिं करोमि स्वाहा।

इन्द्र क्षीर सागर के निर्मल, जल प्रवाह वाला शुभ नीर।
हरता है संसार ताप को, काल अनादि जो गम्भीर।।

जिनवर के शुभ पाद पीठ का, प्रच्छालन करता कई बार।
हुआ उपस्थित उसी पीठ को, प्रच्छालित मैं करूँ सम्हार।।5।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन पीठ-प्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

श्री सम्पन्न शारदा के मुख, से निकले जो अतिशयकार।
विघ्नों का नाशक करता है, सदा सभी का मंगलकार।।
स्वयं आप शोभा से शोभित, वर्ण रहा पावन श्रीकार।
श्री जिनेन्द्र के भद्रपीठ पर, लिखता हूँ मैं अपरम्पार।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकार लेखनं करोमिं स्वाहा।

गिरि सुमेर के अग्रभाग में, पाण्डुक शिला का है स्थान।
श्री आदि जिन का पहले ही, इन्द्र किए अभिषेक महान।।
कल्याणक का इच्छुक मैं भी, जिन प्रतिमा का स्थापन।
अक्षत जल पुष्पों से पूजा, भाव सहित करता अर्चन।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीवर्णे प्रतिमास्थापनं करोमि स्वाहा।

(अब चौकी पर चारों दिशा में चार कलश स्थापित करें।)

उत्तमोत्तम पल्लव से अर्चित, कहे गये जो महति महान।
स्वर्ण और चाँदी ताँबे अरू, रांगा निर्मित कलश महान।।
चार कलश चारों कोणों पर, जल पूरित ज्यों चउ सागर।
ऐसा मान करूँ स्थापन, भक्ति से मैं अभ्यन्तर।।

ॐ ह्रीं स्वस्त्ये चतुः कोणेषु चतुः कलश स्थापनं करोमि स्वाहा।

(जल से अभिषेक करें)

श्री जिनेन्द्र के चरण दूर से, नम्र हुए इन्द्रों के भाल।
मुकुट मणि में लगे रत्न की, किरणच्छवि से धूसर लाल।।
जो प्रस्वेद ताप मल से हैं, मुक्त पूर्ण श्री जिन भगवान।
भक्ति सहित प्रकृष्ट नीर से, मैं करता अभिषेक महान।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐ अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।

उदक चन्दन............... महंयजे।

(चार कलश से अभिषेक करें)

इष्ट मनोरथ रहे सैकड़ों, उनकी शोभा धारे जीव।
पूर्ण सुवर्ण कलशा लेकर शुभ, लाए अनुपम श्रेष्ठ अतीव।।
भव समुद्र के पार हेतु हैं, सेतु रूप त्रिभुवन स्वामी।
करता हूँ अभिषेक भाव से, श्री जिनेन्द्र का शिवगामी।।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपालसंतं वृषभादि वर्धमानांतंचतुर्विंशति तीर्थंकरपरमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे .... देशे ... नाम नगरे एतद् ... जिनचैत्यालये वीर नि. सं. ... मासोत्तममासे ... मासे ... पक्षे ... तिथौ ... वासरे प्रशस्त ग्रहलग्न होरायां मुनिआर्यिका-श्रावक-श्राविकाणाम् सकलकर्मक्षयार्थं जलेनाभिषेकं करोमि स्वाहा। इति जलस्नपनम्।

उदक चन्दन............... महंयजे।

(सुगंधित कलशाभिषेक करें)

जिनके शुभ आमोद के द्वारा, अन्तराल भी भली प्रकार।
चतुर्दिशा का परम सुवासित, हो जाता है शुभ मनहार।।
चार प्रकार कर्पूर बहुल शुभ, मिश्रित द्रव्य सुगन्धी वान।
तीन लोक में पावन जिन का, करता मैं अभिषेक महान्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर पूर्णसुगंधितकलशाभिषेकेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।

उदक चन्दन............... महंयजे।

हमने संसार सरोवर में, अब तक प्रभु गोते खाए हैं।
अब कर्म मैल के धोने को, जलधारा करने आए हैं।।

इत्याशीर्वादः

शांतिधारा

ॐ नम: सिद्धेभ्य:। श्री वीतरागाय नम:। ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते, श्री पार्श्वतीर्थंकराय द्वादशगणपरिवेष्टिताय, शुक्लध्यान पवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयंभुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परम सुखाय, त्रैलोक्य महीव्याप्ताय, अनंत संसार चक्र परिमर्दनाय, अनन्त दर्शनाय, अनंत ज्ञानाय, अनंत वीर्याय, अनंत सुखाय, त्रैलोक्य वशंकराय, सत्य ज्ञानाय, सत्य ब्रह्मणे, धरणेन्द्र फणा मंडल मंडिताय, ऋष्यार्यिका श्रावक श्राविका प्रमुख चतुर संघोपसर्ग विनाशनाय, **घाति कर्म** विनाशनाय, अघातिकर्म विनाशनाय। **अपवायं अस्माकं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **मृत्युं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **अति कामं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **रति कामं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **क्रोधं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **अग्नि भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वशत्रु भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वविघ्नं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वोपसर्गं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व राजभयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व चोर भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व दुष्ट भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व मृग भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व परमत्रं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वात्म चक्र भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व शूल रोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व क्षय रोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व कुष्ठ रोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व क्रूररोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व नरमारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व गज मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वाश्व मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व गो मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व महिष मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व धान्य मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व वृक्ष मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व गुल्म मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वपत्र मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व पुष्प मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व फल मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व राष्ट्र मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व देश मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व विष मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व बेताल शाकिनी भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व वेदनीयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व मोहनीय** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व कर्माष्टकं** छिंद छिंद भिंद भिंद।

ॐ सुदर्शन महाराज मम् चक्र विक्रम तेजो बल शौर्य वीर्य शांतिं कुरु कुरु। **सर्व जनानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व भव्यानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व गोकुलानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व ग्राम नगर खेट कर्वट मंटब पत्तन द्रोणमुख संवाहनंदनं** कुरु

कुरु। **सर्व लोकानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व देशानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व यजमानानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व दुखं हन हन दह दह पच पच कुट कुट शीघ्रं शीघ्रं।**

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधि व्यसन वर्जितं।
अभयं क्षेम आरोग्यं स्वस्ति-रस्तु विधीयते।।

श्री शांति-मस्तु ! ... कुल-गोत्र-धन-धान्यं सदास्तु। चंद्रप्रभु वासुपूज्य-मल्लि-वर्धमान पुष्पदंत-शीतल मुनिसुव्रत-स्तनेमिनाथ-पार्श्वनाथ इत्येभ्यो नम:।

(इत्यनेन मंत्रेण नवग्रहांणां शान्त्यर्थं गन्धोदक धारा वर्षणम्)

शांति मंत्र - ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाऽशेषकल्मशाय दिव्यतेजो मूर्तये नम:। श्री शांतिनाथाय शांतिकराय सर्वपाप प्रणाशनाय सर्व विघ्न विनाशनाय सर्वरोग उपसर्ग विनाशनाय सर्वपरकृत क्षुद्रोपद्रव विनाशनाय सर्वक्षामडामर विनाशनाय ... ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र: अ सि आ उ सा नम: सर्वदेशस्य चतुर्विध संघस्य सर्व विश्वस्य तथैव मम् (नाम) सर्वशांतिं कुरु कुरु तुष्टिं पुष्टिं कुरु कुरु वषट् स्वाहा।

शांति: शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां।
शांति निरन्तर तपोभव भावितानां।।
शांति: कषाय जय जृम्भित वैभवानां।
शांति: स्वभाव महिमान मुपागतानां।।

सपूंजकानां प्रति पालकानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञ: करोतु शांतिं भगवान् जिनेन्द्र:।।

अज्ञान महातम के कारण, हम व्यर्थ कर्म कर लेते हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, प्रभु जल की धारा देते हैं।।

अर्घ्य - **उदक चंदन तंदुल पुष्पकै: चरुसुदीप सुधूप फलार्घकै:।**
धवल मंगल गानरवाकुले जिन ग्रहे जिननाथ महंयजे ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपतये शांतिधारां करोमि नमोऽर्हते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(नीचे लिखे श्लोक को पढ़कर गंधोदक अपने माथे से लगाएँ।)

निर्मलं निर्मली करणं, पवित्रं पाप नाशनम्।
जिन गंधोदकं वन्दे, कर्माष्टकं निवारणम्।।

अभिषेक समय की आरती

(तर्ज : आनन्द अपार है...)

जिनवर का दरबार है, भक्ती अपरम्पार है।
जिनबम्बों की आज यहाँ पर, होती जय-जयकार है ।।

(1) दीप जलाकर आरति लाए, जिनवर तुमरे द्वार जी।
भाव सहित हम गुण गाते हैं, हो जाए उद्धार जी।।

(2) मिथ्या मोह कषायों के वश, भव सागर भटकाए हैं।
होकर के असहाय प्रभु जी, द्वार आपके आए हैं।।

(3) शांती पाने श्री जिनवर का, हमने न्हवन कराया जी।
तारण तरण जानकर तुमको, आज शरण में आया जी।।

(4) हम भी आज शरण में आकर, भक्ती से गुण गाते हैं।
भव्य जीव जो गुण गाते वह, अजर अमर पद पाते हैं।।

(5) नैया पार लगा दो भगवन्, तव चरणों सिर नाते हैं।
'विशद' मोक्ष पद पाने हेतू, सादर शीश झुकाते हैं।।

जिनवर का...!

आचार्य 108 श्री विशदसागरजी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर ले मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु चरणों में सिर धरते हैं।।
ॐ हूँ क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनय पाठ

पूजा विधि के आदि में, विनय भाव के साथ।
श्री जिनेन्द्र के पद युगल, झुका रहे हम माथ।।
कर्मघातिया नाशकर, पाया केवलज्ञान।
अनन्त चतुष्टय के धनी, जग में हुए महान् ।।
दुखहारी त्रयलोक में, सुखकर हैं भगवान।
सुर-नर-किन्नर देव तव, करें विशद गुणगान।।
अघहारी इस लोक में, तारण तरण जहाज।
निज गुण पाने के लिए, आए तव पद आज।।
समवशरण में शोभते, अखिल विश्व के ईश।
ॐकारमय देशना, देते जिन आधीश।।
निर्मल भावों से प्रभू, आए तुम्हारे पास।
अष्टकर्म का नाश हो, होवे ज्ञान प्रकाश।।
भवि जीवों को आप ही, करते भव से पार।
शिव नगरी के नाथ तुम, विशद मोक्ष के द्वार ।।
करके तव पद अर्चना, विघ्न रोग हों नाश।
जन-जन से मैत्री बढ़े, होवे धर्म प्रकाश।।
इन्द्र चक्रवर्ती तथा, खगधर काम कुमार।
अर्हत् पदवी प्राप्त कर, बनते शिव भरतार।।
निराधार आधार तुम, अशरण शरण महान्।
भक्त मानकर हे प्रभू ! करते स्वयं समान।।
अन्य देव भाते नहीं, तुम्हें छोड़ जिनदेव ।
जब तक मम जीवन रहे, ध्याऊँ तुम्हें सदैव ।।
परमेष्ठी की वन्दना, तीनों योग सम्हाल।
जैनागम जिनधर्म को, पूजें तीनों काल।।
जिन चैत्यालय चैत्य शुभ, ध्यायें मुक्ती धाम।
चौबीसों जिनराज को, करते 'विशद' प्रणाम।।

मंगल पाठ

परमेष्ठी त्रय लोक में, मंगलमयी महान।
हरें अमंगल विश्व का, क्षण भर में भगवान।।1।।

मंगलमय अरहंतजी, मंगलमय जिन सिद्ध।
मंगलमय मंगल परम, तीनों लोक प्रसिद्ध।।2।।

मंगलमय आचार्य हैं, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल परम, पूजें योग लगाय।।3।।

मंगल जैनागम रहा, मंगलमय जिन धर्म।
मंगलमय जिन चैत्य शुभ, हरें जीव के कर्म।।4।।

मंगल चैत्यालय परम, पूज्य रहे नवदेव।
श्रेष्ठ अनादिनन्त शुभ, पद यह रहे सदैव।।5।।

इनकी अर्चा वन्दना, जग में मंगलकार।
समृद्धी सौभाग्य मय, भव दधि तारण हार।।6।।

मंगलमय जिन तीर्थ हैं, सिद्ध क्षेत्र निर्वाण।
रत्नत्रय मंगल कहा, वीतराग विज्ञान।।7।।

अथ् अर्हत पूजा प्रतिज्ञायां... *।। पुष्पांजलि क्षिपामि।।*

(यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना एवं पूजन की प्रतिज्ञा करनी चाहिए।)

(जो शरीर पर वस्त्र एवं आभूषण हैं या जो भी परिग्रह है, इसके अलावा परिग्रह का त्याग एवं मंदिर से बाहर जाने का त्याग जब तक पूजन करेंगे तब तक के लिए करें।)

इत्याशीर्वाद :

पूजन प्रारम्भ

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।1।।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलि क्षेपण करना)

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि-पण्णतं धम्मं सरणं पव्वज्जामि। ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पांजलि)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंचनमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते।।1।।

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः।।2।।

अपराजित-मंत्रोऽयं सर्वविघ्न-विनाशनः।
मङ्गलेषु च सर्वेषु प्रथमं मङ्गलम् मतः।।3।।

एसो पञ्च णमोयारो सव्वपावप्पणासणो।
मङ्गलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं।।4।।

अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं।।5।।

कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं।।6।।

विघ्नौघाः प्रलयम् यान्ति शाकिनी-भूतपन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे।।7।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

उदक चंदन तंदुल पुष्पकै चरू सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिन गृहे कल्याण नाथ महंयजे।।

ॐ ह्रीं भगवतो-गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंचकल्याणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदक चंदन तंदुल पुष्पकै चरू सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिन गृहे जिननाथ महंयजे।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उदक चंदन तंदुल पुष्पकै चरू सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिन गृहे जिननाम महंयजे।।

ॐ ह्रीं भगवत् जिन अष्टोत्तर सहस्त्र नामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदक चंदन-तंदुल पुष्पकै चरू सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल मंगल ज्ञान रवाकुले जिन गृहे जिन सूत्र महंयजे।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणितत्त्वार्थ सूत्र दशाध्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल

श्री मज्जिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं, स्याद्वाद-नायक मनंत चतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसङ्घ-सुदृशां-सुकृतैकहेतु-जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि।।
स्वस्ति त्रिलोकगुरुवे जिनपुङ्गवाय, स्वस्ति-स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश सहजोर्ज्जितदृङ् मयाय, स्वस्तिप्रसन्न-ललिताद्भुत वैभवाय।।
स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधाप्लवाय; स्वस्ति स्वभाव-परभावविभासकाय;
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक चिदुद्गमाय, स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत विस्तृताय।।
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्ययथानुरूपं; भावस्य शुद्धि मधिकामधिगंतुकामः।
आलंबनानि विविधान्यवलंब्यवल्गन्; भूतार्थयज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञं।।
अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम पावनानि, वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन् ज्वलद्विमलकेवल-बोधवह्नौ; पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपेत्।

श्री वृषभो नः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अजितः।
श्री संभवः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।
श्री सुमतिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति; स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः।
श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति; स्वस्ति श्री शीतलः।
श्री श्रेयांसः स्वस्ति; स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।
श्री विमलः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अनन्तः।
श्री धर्मः स्वस्ति; स्वस्ति श्री शान्तिः।
श्री कुन्थुः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अरहनाथः।
श्री मल्लिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।
श्री नमिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री नेमिनाथः।
श्री पार्श्वः स्वस्ति; स्वस्ति श्री वर्धमानः।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघाः स्फुरन्मनः पर्यय शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।1।।

(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये।)

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं संभिन्न-संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।2।।
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादना-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञानबलाद्वहंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।3।।
प्रज्ञा-प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।4।।
जङ्घावलि-श्रेणि -फलाम्बु-तंतु-प्रसून-बीजांकुर चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गण-स्वैर-विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।5।।
अणिम्नि दक्षाःकुशला महिम्नि, लघिम्निशक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।6।।

सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं प्राकाम्य मंतर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुण प्रधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ।।7।।
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ।।8।।
आमर्षसर्वौषधयस्तथाशीर्विषा विषा दृष्टिविषाविषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्लमल्लौषधीशाः,स्वस्तिक्रियासुपरमर्षयो नः ।।9।।
क्षीरं स्रवन्तोऽत्रघृतं स्रवन्तो मधुस्रवंतोऽप्यमृतं स्रवन्तः।
अक्षीणसंवास महानसाश्चं स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ।।10।।

(इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्) (इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

पूजा पीठिका (हिन्दी भाषा)

ॐ जय जय जय नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु
अरहन्तों को नमन् हमारा, सिद्धों को करते वन्दन।
आचार्यों को नमस्कार हो, उपाध्याय का है अर्चन।।
सर्वलोक के सर्व साधुओं, के चरणों शत्शत् वन्दन।
पञ्च परम परमेष्ठी के पद, मेरा बारम्बार नमन्।।

ॐ ह्रीं अनादि मूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

मंगल चार-चार हैं उत्तम, चार शरण हैं जगत् प्रसिद्ध।
इनको प्राप्त करें जो जग में, वह बन जाते प्राणी सिद्ध।।
श्री अरहंत जगत् में मंगल, सिद्ध प्रभू जग में मंगल।
सर्व साधु जग में मंगल हैं, जिनवर कथित धर्म मंगल।।
श्री अरहंत लोक में उत्तम, परम सिद्ध होते उत्तम।
सर्व साधु उत्तम हैं जग में, जिनवर कथित धर्म उत्तम।।
अरहंतों की शरण को पाएँ, सिद्ध शरण में हम जाएँ।
सर्व साधु की शरण केवली, कथित धर्म शरणा पाएँ।।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(चाल टप्पा)

अपवित्र या हो पवित्र कोई, सुस्थित दुस्थित होवे।
पंच नमस्कार ध्याने वाला, सर्व पाप को खोवे।।
अपवित्र या हो पवित्र नर, सर्व अवस्था पावें।
बाह्यभ्तंर से शुचि हैं वह, परमातम को ध्यावें।।
अपराजित यह मंत्र कहा है, सब विघ्नों का नाशी।
सर्व मंगलों में मंगल यह, प्रथम कहा अविनाशी।।
पञ्च नमस्कारक यह अनुपम, सब पापों का नाशी।
सर्व मंगलों में मंगल यह, प्रथम कहा अविनाशी।।
परं ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, अर्हं अक्षर माया।
बीजाक्षर है सिद्ध संघ का, जिसको शीश झुकाया।।
मोक्ष लक्ष्मी के मंदिर हैं, अष्ट कर्म के नाशी।
सम्यक्त्वादि गुण के धारी, सिद्ध नमूँ अविनाशी।।
विघ्न प्रलय हों और शाकिनी, भूत पिशाच भग जावें।
विष निर्विष हो जाते क्षण में, जिन स्तुति जो गावें।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

पंचकल्याणक का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परमेष्ठी का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्रनाम अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तरसहस्रनामेभ्योअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरू ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्राणि तत्त्वार्थ सूत्र दशाध्याय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान (हिन्दी)

(शम्भू छन्द)

तीन लोक के स्वामी विद्या, स्याद्वाद के नायक हैं।
अनन्त चतुष्टय श्री के धारी, अनेकान्त प्रगटायक हैं।।
मूल संघ में सम्यक् दृष्टी, पुरुषों के जो पुण्य निधान।
भाव सहित जिनवर की पूजा, विधि सहित करते गुणगान।।1।।
जिन पुंगव त्रैलोक्य गुरू के, लिए 'विशद' होवे कल्याण।
स्वाभाविक महिमा में तिष्ठे, जिनवर का हो मंगलगान।।
केवल दर्शन ज्ञान प्रकाशी, श्री जिन होवें क्षेम निधान।
उज्ज्वल सुन्दर वैभवधारी, मंगलकारी हो भगवान।।2।।
विमल उछलते बोधामृत के, धारी जिन पावें कल्याण।
जिन स्वभाव परभाव प्रकाशक, मंगलकारी हों भगवान।।
तीनों लोकों के ज्ञाता जिन, पावें अतिशय क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों में, विस्तृत ज्ञानी हैं भगवान।।3।।
परम भाव शुद्धी पाने का, अभिलाषी होकर हम नाथ।
देश काल जल चन्दनादि की, शुद्धी भी रखकर के साथ।।

जिन स्तवन जिन बिम्ब का दर्शन, ध्यानादी का आलम्बन।
पाकर पूज्य अरहन्तादी की, करते हम पूजन अर्चन।।4।।
हे अर्हन्त ! पुराण पुरुष हे !, हे पुरुषोत्तम यह पावन।
सर्व जलादी द्रव्यों का शुभ, पाया हमने आलम्बन।।
अति दैदीप्यमान है निर्मल, केवल ज्ञान रूपी पावन।
अग्नी में एकाग्र चित्त हो, सर्व पुण्य का करें हवन।।5।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(दोहा छन्द)

श्री ऋषभ मंगल करें, मंगल श्री अजितेश।
श्री संभव मंगल करें, अभिनंदन तीर्थेश।।
श्री सुमति मंगल करें, मंगल श्री पद्मेश।
श्री सुपार्श्व मंगल करें, चन्द्रप्रभु तीर्थेश।
श्री सुविधि मंगल करें, शीतलनाथ जिनेश।
श्री श्रेयांस मंगल करें, वासुपूज्य तीर्थेश।।
श्री विमल मंगल करें, मंगलानन्त जिनेश।
श्री धर्म मंगल करें, शांतिनाथ तीर्थेश।।
श्री कुन्थु मंगल करें, मंगल अरह जिनेश।
श्री मल्लि मंगल करें, मुनिसुव्रत तीर्थेश।।
श्री नमि मंगल करें, मंगल नेमि जिनेश।
श्री पार्श्व मंगल करें, महावीर तीर्थेश।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(छन्द ताटंक)

महत् अचल अद्भुत अविनाशी, केवल ज्ञानी संत महान्।
शुभ दैदीप्यमान मनः पर्यय, दिव्य अवधि ज्ञानी गुणवान।।

दिव्य अवधि शुभ ज्ञान के बल से, श्रेष्ठ महा ऋद्धीधारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी ।।1।।

(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना चाहिये।)

जो कोष्ठस्थ श्रेष्ठ धान्योपम, एक बीज सम्भिन्न महान्।
शुभ संश्रोतृ पदानुसारिणी, चउ विधि बुद्धि ऋद्धीवान।।
शक्ती तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महा ऋद्धीधारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी ।।2 ।।

श्रेष्ठ दिव्य मतिज्ञान के बल से, दूर से ही हो स्पर्शन।
श्रवण और आस्वादन अनुपम, गंध ग्रहण हो अवलोकन।।
पंचेन्द्रिय के विषय ग्राही, श्रेष्ठ महा ऋद्धीधारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी ।।3 ।।

प्रज्ञा श्रमण प्रत्येक बुद्ध शुभ, अभिन्न दशम पूरवधारी।
चौदह पूर्व प्रवाद ऋद्धि शुभ, अष्टांग निमित्त ऋद्धीधारी।।शक्ति...।।4 ।।
जंघा अग्नि शिखा श्रेणी फल, जल तन्तू हों पुष्प महान्।
बीज और अंकुर पर चलते, गगन गमन करते गुणवान।।शक्ति...।।5।।
अणिमा महिमा लघिमा गरिमा, ऋद्धीधारी कुशल महान्।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारण करते जो गुणवान।।शक्ति...।।6 ।।
जो ईशत्व वशित्व प्राकम्पी, कामरूपिणी अन्तर्धान।
अप्रतिघाती और आप्ती, ऋद्धी पाते हैं गुणवान।।शक्ति... ।।7 ।।
दीप्त तप्त अरू महा उग्र तप, घोर पराक्रम ऋद्धी घोर।
अघोर ब्रह्मचर्य ऋद्धिधारी, करते मन को भाव विभोर।।शक्ति...।।8 ।।
आमर्ष अरू सर्वौषधि ऋद्धी, आशीर्विष दृष्टी विषवान।
क्ष्वेलौषधि जल्लौषधि ऋद्धी, विडौषधी मल्लौषधि जान।।शक्ति...।।9 ।।
क्षीर और घृतस्रावी ऋद्धी, मधु अमृतस्रावी गुणवान।
अक्षीण संवास अक्षीण महानस, ऋद्धीधारी श्रेष्ठ महान्।।।।शक्ति...10 ।।

(इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्) परि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव-शास्त्र-गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण।।
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदिक, पूज्य हुए जो जगत प्रधान।।
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छंद)

जल पिया अनादी से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी ।।1 ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नी, हम उससे सतत सताए हैं।
अब नील गिरी का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी ।।2 ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं।।

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ती हम पाए हैं।
अभिव्यक्त नहीं कर पाए अतः, भवसागर में भटकाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मों कृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव 'विशद', जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार।। शान्तये शांतिधारा..

दोहा- पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।
सुख-शांति सौभाग्यमय, होवे सकल समाज।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पञ्च कल्याणक के अर्घ

तीर्थंकर पद के धनी, पाए गर्भ कल्याण।
अर्चा करे जो भाव से, पावे निज स्थान।।1।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार।।2।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर।।3।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व-पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान।।

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ति जीवों में, और ना मिलते अन्य कहीं।।
विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा।।1।।
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल।।
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते हैं पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण।।2।।
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश।।
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।
एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष।।3।।
अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिनवाणी जग उपकारी।।4।।

प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन।।
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता श्रेष्ठ प्रकाश।।5।।
वस्तू तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैराग्य जगाता है।।
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तू पाया नहीं कहीं।।6।।
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है।।
गुप्ति समिति अरु धर्मादिक का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा।।7।।
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान।।
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान।।8।।
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याए भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप।।
इस जग के दुख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान।।9।।

दोहा- नेता मुक्ती मार्ग के, तीन लोक के नाथ।
शिवपद पाने नाथ ! हम, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घपदप्राप्त्ये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।
मुक्ती पाने के लिए, करते हम गुणगान।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री नवदेवता पूजा

स्थापना

हे लोक पूज्य अरिहंत नमन् !, हे कर्म विनाशक सिद्ध नमन्!
आचार्य देव के चरण नमन् अरु, उपाध्याय को शत् वन्दन।।
हे सर्वसाधु है तुम्हें नमन् ! हे जिनवाणी माँ तुम्हें नमन्!
शुभ जैनधर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन।।
नवदेव जगत् में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नवकोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
हे प्रभु ! अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से भव संताप गलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए ।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए ।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल,होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हसिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नी में धूप जलायें हैं।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।8 ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्तानंद छन्द

नव देव हमारे, जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते, जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा।।

शांतये शांति धारा करोमि।

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य (9, 27 या 108 बार)

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा – **मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।**
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।

जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

सम्यक्‌दर्शन ज्ञान चरितमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

श्री जिनेन्द्र की ओम्‌कार मय, वाणी सुखदाई।
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई।।
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिनबिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

दोहा– नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।
''विशद'' भाव से कर रहे, शत्‌–शत्‌ बार प्रणाम्‌।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा – भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।
पावे मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें।।

इत्याशीर्वाद :

सिद्ध भक्ति (प्राकृत)

असरीरा जीवघणा, उवजुता दंसणेय पाणेय।
सायार मणायारा, लक्खणमेयं तु सिद्धाणं।।
मूलोत्तर– पयडीणं, बंधोदयसत्त–कम्म उम्मुक्का।
मंगलभूदा सिद्धा, अट्‌ठगुणातीद संसारा।।
अट्‌ठ वियकम्म वियला सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्‌ठ गुणा किदकिच्चा, लोयग्गणिवासिणो सिद्धा।।
सिद्धा णट्‌ठट्‌ठ मला विसुद्ध बुद्धीय लद्धि सब्भावा।
तिहुअणसिर–सेहरया, पसियंत्तु भडारया सव्वे।।
गमणागमण विमुक्के विहडियकम्मपयडि संघारा।
सासह सुह संपत्ते ते सिद्धा वंदियो णिच्चं।।
जय मंगल भूदाणं, विमलाणं णाणदंसणमयाणं।
तइलोइसेहराणं, णमो सदा सव्व सिद्धाणं।।
सम्मत्त – णाणदंसण–वीरिय सुहुमं तहेव अवग्गहणं।
अगुरुलघु अव्वावाहं, अट्‌ठगुणा होंति सिद्धाणं।।
तवसिद्धे णयसिद्धे, संजमसिद्धे चरित्रसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य, सिद्धे सिरसा णमस्सामि।।

इच्छामि भंते ! सिद्ध भत्ति काउस्सग्गोकओ तस्सालोचेऊं सम्मणाण सम्मदंसण सम्मचरित्त जुत्ताणं अट्‌ठविह कम्म–विप्पमुक्काणं, अट्‌ठगुणसंपण्णाणं उड्ढ–लोयमत्थम्मि पयट्‌ठियाणं, तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं चरित्तसिद्धाणं अतीताणागदवट्टमाणकालत्तय सिद्धाणं सव्वसिद्धाणं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बेहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होदु मज्झं।

(कायोत्सर्गं कुरु)

&& lr Am{XZmWm` Z_…Ÿ&&

आदि धर्म प्रवर्तक, चमत्कारक

lr Am{XZmW _hm_ÊS>b {dYmZ

विधान मण्डल

मध्य में - ॐ
प्रथम वलय में - ६
द्वितीय वलय में - १२
तृतीय वलय में - २४
चतुर्थ वलय में - ४८

रचयिता

प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

श्री आदिनाथ स्तवन

तीन लोक के ज्ञाता जिनवर, वीतराग पद धारी हैं।
दोष अठारह रहित जिनेश्वर, निजानंद अविकारी हैं।।
आदि ब्रह्म आदीश आदि जिन, आदि सृष्टि के कर्त्ता।
नमन् करूँ अरहंत प्रभु को, मुक्ति वधु के जो भर्ता।।१।।

वृषभनाथ है नाम आपका, वृषभ चिन्ह के धारी हैं।
वृषभ धर्म को पाने वाले, आतम ब्रह्म विहारी हैं।।
अषि मषि कृषि वाणिज्य कला अरु, शिल्प कला के दाता हैं।
जगती को आलोकित करते, जग के भाग्य विधाता हैं।।।२।।

कर्मभूमि के अधिनायक प्रभु, जग के करूणाकारी हैं।
जिनवाणी के अधीपति शुभ, तीर्थंकर अवतारी हैं।।
हे परम शांत! पावन पुनीत, हे कृपा सिंधु! करुणा निधान ।
हे ऋषभदेव तव चरणों में, ममभाव सहित शत्-शत् प्रणाम्।३।।

हे महिमा ! मण्डित गुण निधान , हे अक्षय ! जीवन ज्योतिधाम।
हे मोक्ष पंथ ! के उन्नायक प्रभु, जन जन के अमृत ललाम् ।।
हे अजर अमर सृष्टि कर्त्ता ! हे परम पिता! हे परम ईश!
हे आदि विधाता! युग दृष्टा, हे मुक्ती पथ पंथी मुनीश!।।४।।

तुम इन्द्रिय मन को जीत लिए, प्रभु आप जितेन्द्रिय कहलाए।
निज चेतन रस में लीन हुए, आतम स्वरूप को प्रभु ध्याए।।
हे जग उद्धारक! जगत पति, हे जिनवर! आदीश्वर स्वामी! ।
सब बोल रहे हैं जयकारा, हे ऋषभ देव अंतर्यामी !।।५।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री आदिनाथ जिन पूजन

(स्थापना)

हे ज्ञानमूर्ति करुणा निधान !, हे धर्म दिवाकर करुणाकर !
हे तेज पुंज ! हे तपोमूर्ति !, सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर।।
हे धर्म प्रवर्तक आदिनाथ, तव चरणों में करते वंदन।
यह भक्त शरण में आकर के प्रभु, करते उर से आह्वानन।।
हम भव सागर में भटक रहे, अब तो मेरा उद्धार करो।
श्री वीतराग सर्वज्ञ महाप्रभु, भव समुद्र से पार करो।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

क्षीर नीर सम जल अति निर्मल, रत्न कलश भर लाए हैं।
जन्म मृत्यु का रोग नशाने, तव चरणों में आए हैं।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्यध्वनि की गंध मनोहर, मन मयूर प्रमुदित करती।
भव आताप निवारण करके, सरल भावना से भरती।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

आदिनाथ जी अष्टापद से, अक्षय निधि को पाए हैं।
अक्षय निधि को पाने हेतू, अक्षय अक्षत लाए हैं।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

क्षणभंगुर जीवन की कलिका, क्षण-क्षण में मुरझाती है।
काम वेदना नशते मन की, चंचलता रुक जाती है।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर श्री आदि प्रभू ने, एक वर्ष उपवास किए।
त्याग किए नैवेद्य सभी वह, क्षुधा वेदना नाश किए।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का दीपक जगमग जलकर, बाहर का तम हरता है।
ज्ञान दीप जलकर मानव को, पूर्ण प्रकाशित करता है।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की ज्वाला में जलकर, हमने संसार बढ़ाया है।
प्रभु तप अग्नी में कर्मों की, शुभ धूप से धूम उड़ाया है।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

महामोक्ष सुख से हम वंचित, मोक्ष महाफल दान करो।
श्रीफल अर्पित करता हूँ प्रभु, शिव पद हमें प्रदान करो।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म का नाश करो प्रभु, अष्ट गुणों को पाना है।
अर्घ्य समर्पित करता हूँ प्रभु, अष्टम भूपर जाना है।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

दूज कृष्ण आषाढ़ माह की, मरुदेवी उर अवतारे।
रत्नवृष्टि छह माह पूर्व कर, इन्द्र किए शुभ जयकारे।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाऊँ शुभकारी।
मुक्ती पथ पर बढ़ूँ हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चैत्र कृष्ण नौमी को प्रभु ने, नगर अयोध्या जन्म लिया।
नाभिराय के गृह इन्द्रों ने, आनंदोत्सव महत् किया।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाऊँ शुभकारी।
मुक्ती पथ पर बढ़ूँ हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा नवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चैत्र कृष्ण नौमी को प्रभु ने, राग त्याग वैराग्य लिया।
संबोधन करके देवों ने, भाव सहित जयकार किया।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाऊँ शुभकारी।
मुक्ती पथ पर बढ़ूँ हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा नवम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

फाल्गुन वदी एकादशी को प्रभु, कर्म घातिया नाश किए।
लोकोत्तर त्रिभुवन के स्वामी, केवलज्ञान प्रकाश किए।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाऊँ शुभकारी।
मुक्ती पथ पर बढ़ूँ हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

माघ कृष्ण की चतुर्दशी को, प्रभु ने पाया पद निर्वाण।
सुर नर किन्नर विद्याधर ने, आकर किया विशद गुणगान।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाऊँ शुभकारी।
मुक्ती पथ पर बढ़ूँ हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- शांती पाते जीव सब, करके शांतीधार।
कर्म नाशकर शीघ्र ही, पाते भवदधि पार।। शांतये शांतिधारा...

पुष्पाञ्जलि के हेतु यह, लाए पुष्प पराग।
जन्म-जन्म से लग रही, मिटे राग की आग।। शांतये शांतिधारा...

जयमाला

दोहा- अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, दीपक लिया प्रजाल।
आदिनाथ भगवान की, गाते हैं जयमाल।।

(राधेश्याम छंद)

सुर नर पशु अनगार मुनि यति, गणधर ऋषि ध्यान लगाते हैं।
श्री आदिनाथ भगवान आपकी, महिमा भक्तामर गाते हैं।।

जो चरण वंदना करते हैं, वह सुख-शांती को पाते हैं।
जो पूजा करते भाव सहित, उनके संकट कट जाते हैं।।

तुमने कलिकाल के आदि में, तीर्थंकर बन अवतार लिया।
इस भरत भूमि की धरती का, आकर तुमने उपकार किया।।

जब भोगभूमि का अंत हुआ, लोगों को यह आदेश दिया।
षट्कर्म करो औ कष्ट हरो, जीवों को यह संदेश दिया।।

तुमने शरीर निज आतम के, शाश्वत स्वभाव को जाना है।
नश्वर शरीर का मोह त्याग, चेतन स्वरूप पहिचाना है।।

तुमने संयम को धारण कर, छह माह का ध्यान लगाया है।
ले दीक्षा चार सहस्त्र भूप, उनको भी वन में पाया है।।
जब क्षुधा तृषा से अकुलाए, फल फूल तोड़ने लगे भूप।
तब हुई गगन से दिव्य गूंज, यह नहीं चले निर्ग्रंथ रूप।।
फिर छाल पात कई भूपों ने, अपने ही तन पर लपटाई।
तब खाने-पीने की विधियाँ, उन लोगों ने कई अपनाई।।
जब चर्या को निकले भगवन्, तब विधि किसी ने न जानी।
छह सात माह तक रहे घूमते, आदिनाथ मुनिवर ज्ञानी।।
राजा श्रेयांस ने पूर्वाभास से, साधु चर्या को जान लिया।
पड़गाहन करके आदिराज को, इच्छुरस का दान दिया।।
विधि दिखाकर आदि प्रभु ने, मुनिचर्या के संदेश दिए।
अक्षय हो गई अक्षय तृतीया, देवों ने पंचाश्चर्य किए।।
प्रभुवर ने शुद्ध मनोबल से, निज आतम ध्यान लगाया है।
चउ कर्म घातिया नाश किए, शुभ केवलज्ञान जगाया है।।
देवों ने प्रमुदित भावों से, शुभ समवशरण था बनवाया।
सौधर्म इन्द्र परिवार सहित, प्रभु पूजन करने को आया।।
सुर-नर पशुओं ने जिनवर की, शुभ वाणी का रसपान किया।
श्रद्धान ज्ञान चारित पाकर, जीवों ने स्व पर कल्याण किया।।
कैलाश गिरि पर योग निरोध, करके कर्मों का नाश किया।
फिर माघ कृष्ण चौदश को प्रभु ने, मोक्ष महल में वास किया।।
तब निर्विकल्प चैतन्य रूप, शिव का स्वरूप प्रभु ने पाया।
अब उस पद को पाने हेतु प्रभु, अब विशद भाव मन में आया।।
जो शरण आपकी आता है, वह खाली हाथ न जाता है।
जो भक्तिभाव से गुण गाता है, वह इच्छित फल को पाता है।।

(आर्या छन्द)

हे दीनानाथ ! तुमको प्रणाम, हे ज्ञानसरोवर ! मुक्ति धाम।
हे धर्म प्रवर्तक ! तीर्थंकर, शिव पद दाता तुमको प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- आदिनाथ को आदि में, कोटि-कोटि प्रणाम।
'विशद' सिंधु भव सिंधु से, पाऊँ मैं शिवधाम।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

(प्रथम वलयः)

षटकर्मों का दे गये, आदिनाथ उपदेश ।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, पाने निज स्वदेश ।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

स्थापना

हे ज्ञानमूर्ति करुणा निधान !, हे धर्म दिवाकर करुणाकर !
हे तेज पुंज ! हे तपोमूर्ति !, सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर।।
हे धर्म प्रवर्तक आदिनाथ, तव चरणों में करते वंदन।
यह भक्त शरण में आकर के प्रभु, करते उर से आह्वानन।।
हम भव सागर में भटक रहे, अब तो मेरा उद्धार करो।
श्री वीतराग सर्वज्ञ महाप्रभु, भव समुद्र से पार करो।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

कल्पवृक्ष जब लुप्त हुए तो, नर पशु व्याकुल हुए विशेष ।
भोग भूमि के अन्त में प्रभुजी, 'असी कर्म' का दे संदेश।।
जीवन चर्या की शिक्षा दे, किये जगत् का प्रभु कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाते आदिनाथ पद, पाने को हम भी निर्वाण ।।१।।

ॐ ह्रीं असि कर्म शिक्षा प्रदायक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कमी धान्य की हो जाने पर, छीना झपटी हुई विशेष।
बँटवारा कर शांत किए वह, 'मसी कर्म' का दे संदेश।।
जीवन चर्या की शिक्षा दे, किये जगत का प्रभु कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाते आदिनाथ पद, पाने को हम भी निर्वाण ।।२।।

ॐ ह्रीं मसिकर्म शिक्षा प्रदायक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

नष्ट धान्य के हो जाने पर, जीव दुखी फिर हुए विशेष ।
धान्य उगाओ मेहनत करके, 'कृषी कर्म' दीन्हा संदेश ।।
जीवन चर्या की शिक्षा दे, किये जगत का प्रभु कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाते आदिनाथ पद, पाने को हम भी निर्वाण ।।३।।

ॐ ह्रीं कृषि कर्म शिक्षा प्रदायक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वस्तू अदल बदल कर विनिमय, देशान्तर से करो विशेष।
प्रभु 'वाणिज्य कर्म' का दीन्हे, जग जीवों को भी संदेश।।
जीवन चर्या की शिक्षा दे, किये जगत का प्रभु कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाते आदिनाथ पद, पाने को हम भी निर्वाण ।।४।।

ॐ ह्रीं वाणिज्य कर्म शिक्षा प्रदायक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भांति-भांति की 'कला' सिखाए, भवि जीवों को प्रभू विशेष।
करो आजीविका इससे प्राणी, दीन्हें जग को यह सन्देश।।
जीवन चर्या की शिक्षा दे, किये जगत का प्रभु कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाते आदिनाथ पद, पाने को हम भी निर्वाण ।।५।।

ॐ ह्रीं कला कर्म शिक्षा प्रदायक धर्म प्रर्वतक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

काष्ठ धातु पाषाणादिक में, 'शिल्प कला' का दे संदेश।
जग जीवों को ज्ञान सिखाए, जीवन चर्या के अवशेष ।।
जीवन चर्या की शिक्षा दे, किये जगत का प्रभु कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाते आदिनाथ पद, पाने को हम भी निर्वाण ।।६।।

ॐ ह्रीं शिल्प कर्म शिक्षा प्रदायक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

असि मसि कृषि वाणिज्य कला अरु, शिल्प का दीन्हें प्रभु संदेश।
जीवन जीने को जीवों ने, हेतू पाए अन्य विशेष।।
जीवन चर्या की शिक्षा दे, किये जगत का प्रभु कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाते आदिनाथ पद, पाने को हम भी निर्वाण ।।७।।

ॐ ह्रीं षट्कर्म शिक्षा प्रदायक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(द्वितिय वलयः)

दोहा- **द्वादश तप पाए प्रभू, आदिनाथ जिनराज।**
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, शिव पद पाने आज।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

स्थापना

हे ज्ञानमूर्ति करुणा निधान !, हे धर्म दिवाकर करुणाकर !
हे तेज पुंज ! हे तपोमूर्ति !, सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर।।
हे धर्म प्रवर्तक आदिनाथ, तव चरणों में करते वंदन।
यह भक्त शरण में आकर के प्रभु, करते उर से आह्वानन।।
हम भव सागर में भटक रहे, अब तो मेरा उद्धार करो।
श्री वीतराग सर्वज्ञ महाप्रभु, भव समुद्र से पार करो।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

जीत रहे जो सर्व कषाएँ, करते विषयों का संहार ।
क्षुधा वेदना जीत रहे हैं, चतुर्विधी त्यागें आहार॥
अनशन तप का पालन करते, कर्म निर्जरा किए महान्।
आदिनाथ के पद में वन्दन, करके हम करते गुणगान॥१॥

ॐ ह्रीं अनशन तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भूख से कम आधा चौथाई, एक ग्रास लेते आहार।
उत्तम मध्यम जघन्य रूप से, होता है जो तीन प्रकार॥
ऊनोदर तप पालन करते, कर्म निर्जरा करें महान्।
आदिनाथ के पद में वन्दन, करके हम करते गुणगानङ्क २॥

ॐ ह्रीं ऊनोदर तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चर्या को आहार हेतु जो, व्रत संख्यान करके जावें।
लाभालाभ में तोष रोष नहिं, साम्य भाव मन में पावें॥
व्रत परिसंख्यान पालते हैं तप, कर्म निर्जरा किए महान्।
आदिनाथ के पद में वंदन, करके हम करते गुणगानङ्क ३॥

ॐ ह्रीं व्रत परिसंख्यान तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कभी एक दो तीन रसों का, छोड़-छोड़ करते आहार।
कभी चार रस कभी पाँच का, कभी छोड़ते सर्व प्रकार॥
रस परित्याग का पालन करते तप, कर्म निर्जरा किए महान्।
आदिनाथ के पद में वंदन, करके हम करते गुणगानङ्क ४॥

ॐ ह्रीं रस परित्याग तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अनाशक्त रहते विविक्त जो, शैय्याशन से तप करते ।
शान्त भाव से रहते हैं जो, बाधाओं से नहिं डरते ॥
विविक्त शैय्याशन पालन करते, कर्म निर्जरा किए महान्।
आदिनाथ के पद में वंदन, करके हम करते गुणगानङ्क ५॥

ॐ ह्रीं विविक्त शैय्याशन तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तन से रहा ममत्व भाव जो, धीरे-धीरे छोड़ रहे।
आत्म ध्यान में रत रह करके, चेतन से नाता जोड़ रहे॥
कायोत्सर्ग तप पालन करते, कर्म निर्जरा किए महान्।
आदिनाथ के पद में वंदन, करके हम करते गुणगानङ्क ६॥

ॐ ह्रीं कायोत्सर्ग तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गमनागमन आदि चर्या में, हो प्रमाद से प्राणी घात।
लेते हैं प्रायश्चित्त स्वयं ही, करते दोषों का संघात ॥
प्रायश्चित्त तप पालन करके, करते कर्मों का खण्डन ।
आदिनाथ प्रभु के चरणों में, करते हम शत्-शत् वन्दन॥७॥

ॐ ह्रीं प्रायश्चित तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दर्शन ज्ञान चारित्र रूप है, और विनय उपचार कहा।
यथा योग्य आदर करना ही, इनका विनयाचार रहा ॥
विनय सु तप का पालन करते, कर्म निर्जरा किए महान्।
आदिनाथ के पद में वन्दन, करके हम करते गुणगान॥८॥

ॐ ह्रीं विनय तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

करें साधना अपनी उसमें, कोई भी बाधा आवे ।
दूर करें निस्वार्थ भाव से , वैय्यावृत्ती कहलावे ॥
वैय्यावृत्ती सुतप पालते, कर्म निर्जरा किए महान्।
आदिनाथ के पद में वंदन, करके हम करते गुणगानङ्क ९॥

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ति तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुबह शाम दिन रात निरन्तर, स्वाध्याय में रहते लीन ।
वाचना पृच्छना अरु अनुप्रेक्षा, आम्नाय उपदेश प्रवीन ॥
स्वाध्याय तप पालन करते, कर्म निर्जरा किए महान्।
आदिनाथ के पद में वंदन, करके हम करते गुणगानङ्क १०॥

ॐ ह्रीं स्वाध्याय तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

होवे यदि उपसर्ग परीषह, शांत भाव से सहते हैं।
आत्म ध्यान में लीन रहें नित, मोह त्याग कर रहते हैं॥
व्युत्सर्ग तप पालन करते, कर्म निर्जरा किए महान्।
आदिनाथ के पद में वंदन, करके हम करते गुणगान॥११॥

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चिंतन मनन ध्यान जप में जो, रहते हैं निशदिन लवलीन।
आत्म ध्यान नित करें भाव से, होते सम्यक् ज्ञान प्रवीन॥
ध्यान सुतप का पालन करते, कर्म निर्जरा किए महान्।
आदिनाथ के पद में वंदन, करके हम करते गुणगान॥१२॥

ॐ ह्रीं ध्यान तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्वादश तप को तपने वाले, करते कर्मों का संहार।
केवल ज्ञान प्रकट करते फिर, सारे जग में अपरम्पार॥
आदि प्रभू ने संयम धारण, करके किया आत्म कल्याण।
शीश झुका हम वन्दन करते, रत्नत्रय का दो प्रभु दान॥१३॥

ॐ ह्रीं द्वादश तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(तृतीय वलयः)

दोहा : **सोलह कारण भावना, प्रतिहार्य के अर्घ्य।**
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, पाने सुपद अनर्घ॥

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

स्थापना

हे ज्ञानमूर्ति करुणा निधान !, हे धर्म दिवाकर करुणाकर !
हे तेज पुंज ! हे तपोमूर्ति !, सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर॥

हे धर्म प्रवर्तक आदिनाथ, तव चरणों में करते वंदन।
यह भक्त शरण में आकर के प्रभु, करते उर से आह्वानन॥
हम भव सागर में भटक रहे, अब तो मेरा उद्धार करो।
श्री वीतराग सर्वज्ञ महाप्रभु, भव समुद्र से पार करो॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

विष्णु पद छन्द

सप्त तत्त्व छह द्रव्य गुणों में, श्रद्धा उर धरना।
मिथ्या भाव छोड़कर सम्यक्, रुचि प्राप्त करना॥
शंकादिक दोषों को तजकर, भेद ज्ञान पाना।
दरश विशुद्धी गुणीजनों ने, या को ही माना॥
तीर्थंकर पद पाने हेतू, श्री जिन को ध्याते।
भव्य भावना भाते है हम, चरणों सिर नाते॥१॥

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धि भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उच्च गोत्र का कारण बन्धु, मृदुल भाव गाया।
पुण्य पुरुष होता है जिसने, विनय भाव पाया॥
विशद विनय सम्पन्न भावना, भाव सहित गाये।
तीर्थंकर का पद पाकर के, सिद्ध शिला जाये॥
तीर्थंकर पद पाने हेतू...॥२॥

ॐ ह्रीं विनय सम्पन्नता भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कृत कारित अरु अनुमोदन से, मन-वच-तन द्वारा।
नव कोटी से शील व्रतों का, पालन हो प्यारा॥
सोलहकारण शुभम् भावना, भाव सहित भावें।
अनतिचार व्रत शील से अपना, जीवन महकावें॥
तीर्थंकर पद पाने हेतू, श्री जिन को ध्याते।
भव्य भावना भाते है हम, चरणों सिर नाते॥३॥

ॐ ह्रीं अनतिचार भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अजर अमर पद पाने हेतू, ज्ञान सुधामृत पाना।
ॐकार मय जिनवाणी के, शुभ छन्दों को गाना॥
ज्ञान योग होता अभीक्ष्ण, यह शुद्ध भाव से ध्याना।
'विशद' ज्ञान के द्वारा भाई, सिद्ध शिला को पाना॥
तीर्थंकर पद पाने हेतू...॥४॥

ॐ ह्रीं अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण को, सम्यक् धर्म कहा।
मोक्ष महल का सम्यक् साधन, अनुपम यही रहा॥
धर्म और उसके फल में जो, हर्ष भाव आवे।
सू संवेग भाव शास्त्रों में, ये ही कहलावे॥
तीर्थंकर पद पाने हेतू...॥५॥

ॐ ह्रीं संवेग भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पल-पल करके नर जीवन का, समय निकल जाता।
इन्द्रियरोध किये बिन भाई, मिले ना सुख साता॥
इच्छाओं का दमन करे फिर, महामंत्र जपना।
यथा शक्ति तप करना भाई, शक्तिसः तपना ॥
तीर्थंकर पद पाने हेतू...॥६॥

ॐ ह्रीं शक्तितस्तप भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पर परिणत से बचकर हमको, निज निधि को पाना।
छोड़ विकल्पों को अब सारे, निज को ही ध्याना॥
यथाशक्ति जो त्याग करे वह, मोक्ष मार्ग जानो।
जैनागम में त्याग शक्तिसः, इसी तरह मानो॥
तीर्थंकर पद पाने हेतू...॥७॥

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्याग भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जन्म मरण होता है तन का, चेतन है ज्ञाता।
कर्म करेगा जैसा प्राणी, वैसा फल पाता॥
चेतन का ना अंत है कोई, ना ही आदी है।
श्रेष्ठ मरण औ सत् अनुभूती, साधू समाधी है॥
यही भावना भाते हैं हम, जिन पद को पाएँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, प्रभु के गुण गाएँ ॥८॥

ॐ ह्रीं साधु समाधि भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

साधक करें साधना अपनी, संयम के द्वारा।
रत्नत्रय अपने जीवन से, जिनको है प्यारा ॥
विघ्न साधना में कोई भी, उनकी आ जावे ।
वैय्यावृत्ती विघ्न दूर, करना ही कहलावे ॥
यही भावना भाते हैं...॥९॥

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ती भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अर्हत् होते हैं इस जग में, सद्गुण के दाता ।
अतः सार्व कहलाए भगवन्, भविजन के त्राता॥
हो अनुराग गुणों में उनके, भाव सहित भाई।
अर्हत् भक्ती गुणी जनों ने, इसी तरह गाई ॥
यही भावना भाते हैं हम...॥१०॥

ॐ ह्रीं अर्हद् भक्ति भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सत् संयम की इच्छा करके, गुरु के गुण गाते।
भाव सहित वंदन करने को, चरणों में जाते ॥
गुरु चरणों की भक्ती जग में, होती सुख दानी।
गुणियों ने आचार्य भक्ति शुभ, इसी तरह मानी॥
यही भावना भाते हैं हम...॥११॥

ॐ ह्रीं आचार्य भक्ति भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

करते हैं उपदेश धर्म का, जो मंगलकारी।
संत दिगम्बर और निरम्बर, नीरस आहारी।।
उपाध्याय को जग भोगों से, पूर्ण विरक्ती है।
भाव सहित गुण गाना उनकी, बहुश्रुत भक्ती है ।।
यही भावना भाते हैं हम, जिन पद को पाएँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, प्रभु के गुण गाएँ।।१२।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुत (उपाध्याय)भक्ति भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सप्त तत्त्व झंकृत होते हैं, जिनवाणी द्वारा।
दिव्य देशना निःसृत होती, जैसे जलधारा।।
जिस वाणी से जागृत होवे, चेतन शक्ती है।
विशद ज्ञान में वर्णित पावन, प्रवचन भक्ती है।।
यही भावना भाते हैं हम...।।१३।।

ॐ ह्रीं प्रवचन भक्ति भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

होते क्या कर्त्तव्य हमारे, उनको पाना है।
व्रत संयम से जीवन अपना, हमें सजाना है।।
कर्त्तव्यों के पालन हेतू, भावों से भरना ।
आवश्यकाऽपरिहार भावना, सम्पूरण करना ।।
यही भावना भाते हैं हम...।।१४।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहारिणी भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

महिमा अगम है जिन शासन की, कैसे उसे कहें।
संयम तप श्रद्धा भक्ती में, हर पल मगन रहें।।
मोक्ष मार्ग औ जैन धर्म की, महिमा जो गाई।
पथ प्रभावना सत् संतों ने, जग में फैलाई।।
यही भावना भाते हैं हम...।।१५।।

ॐ ह्रीं मार्ग प्रभावना भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्वेष भाव के द्वारा हमने, कितने कष्ट सहे।
मद माया की लपटों में हम, जलते सदा रहे।।
सदियाँ गुजर गयीं हैं लेकिन, धर्म नहीं पाया।
चेतन की यह भूल रही अरु, रही मोह माया।।
यही भावना भाते हैं हम, जिन पद को पाएँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, प्रभु के गुण गाए।।१६।।

ॐ ह्रीं प्रवचन वत्सलत्व भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

प्रातिहार्य है शोक निवारी, तरु अशोक कहलाता है।
रत्नों से सज्जित है अनुपम, सबके मन को भाता है।।
कान्तिमान आभा से अनुपम, शोभित होते अपरम्पार।
समवशरण में आदि प्रभू के, चरणों वन्दन बारम्बार।।१७।।

ॐ ह्रीं अशोक तरु सत् प्रातिहार्य सहित धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

इन्द्र पुष्प वृष्टी करते हैं, समवशरण में अतिशयकार।
मन मोहक शुभ गंध फैलती, चतुर्दिशा में विस्मयकार।।
कान्तिमान आभा से अनुपम, शोभित होते अपरम्पार।
समवशरण में आदि प्रभू के, चरणों वन्दन बारम्बार।।१८।।

ॐ ह्रीं सुर पुष्प वृष्टि प्रातिहार्य सहित धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

प्रभु की दिव्य देशना अनुपम, सब भाषा मय मंगलकार ।
ॐकार मय प्रहसित होती, चतुर्दिशा में बारम्बार।।
कान्तिमान आभा से अनुपम, शोभित होते अपरम्पार।
समवशरण में आदि प्रभू के, चरणों वन्दन बारम्बार।।१९।।

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य सहित धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

चौंसठ चँवर ढौरते अतिशय, यक्ष खड़े हो द्वार महान्।
अतिशय महिमा दिखलाते हैं, नमन् करें करके गुणगान॥
कान्तिमान आभा से अनुपम, शोभित होते अपरम्पार।
समवशरण में आदि प्रभू के, चरणों वन्दन बारम्बार॥२०॥

ॐ ह्रीं चँवर प्रातिहार्य सहित धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

रत्न जड़ित सिंहासन सुन्दर, मन को मोहित करे अहा।
अधर विराजे जिस परश्री जिन, जैनागम में यही कहा॥
कान्तिमान आभा से अनुपम, शोभित होते अपरम्पार।
समवशरण में आदि प्रभू के, चरणों वन्दन बारम्बार॥२१॥

ॐ ह्रीं सिंहासन प्रातिहार्य सहित धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

भामण्डल की महिमा अनुपम, अतिशय कारी रही महान्।
सप्त भवों की दिग्दर्शक है, जिसका कौन करे गुणगान॥
कान्तिमान आभा से अनुपम, शोभित होते अपरम्पार।
समवशरण में आदि प्रभू के, चरणों वन्दन बारम्बार॥२२॥

ॐ ह्रीं भामण्डल प्रातिहार्य सहित धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

मन को आह्लादित करती है, देव दुन्दुभि अतिशयकार।
करती है गुणगान प्रभू का, जड़ होकर भी श्रेष्ठ अपार॥
कान्तिमान आभा से अनुपम, शोभित होते अपरम्पार।
समवशरण में आदि प्रभू के, चरणों वन्दन बारम्बार॥२३॥

ॐ ह्रीं दुन्दुभि प्रातिहार्य सहित धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

दर्शाते छत्रत्रय प्रभुता, श्री जिनेन्द्र की महिमावन्त।
तीन लोक के अधिनायक प्रभु, तीर्थंकर हैं यह भगवंत ॥
कान्तिमान आभा से अनुपम, शोभित होते अपरम्पार।
समवशरण में आदि प्रभू के, चरणों वन्दन बारम्बार॥२४॥

ॐ ह्रीं छत्रत्रय प्रातिहार्य सहित धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

भव्य भावना सोलह कारण, भव्य जीव जो भाते हैं।
केवल ज्ञान प्राप्त करते, वह प्रातिहार्य प्रगटाते हैं॥
समोवशरण की रचना करते, इन्द्र सभी मिल अपरम्पार।
चरण वन्दना करते हैं सब, 'विशद' भाव से बारम्बार॥ २५॥

ॐ ह्रीं सोलह कारण भावना अष्ट प्रातिहार्य प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(चतुर्थ वलयः)

सोरठा- **णमो जिणाणं आदि, ऋषिवर पावें ऋद्धियाँ ।**
पाने मरण समाधि, पुष्पाञ्जलि करते विशद॥

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

स्थापना

हे ज्ञानमूर्ति करुणा निधान !, हे धर्म दिवाकर करुणाकर !
हे तेज पुंज ! हे तपोमूर्ति !, सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर ।।
हे धर्म प्रवर्तक आदिनाथ, तव चरणों में करते वंदन।
यह भक्त शरण में आकर के प्रभु, करते उर से आह्वानन ।।
हम भव सागर में भटक रहे, अब तो मेरा उद्धार करो।
श्री वीतराग सर्वज्ञ महाप्रभु, भव समुद्र से पार करो ।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

'णमो जिणाणं' श्री जिनेन्द्र को, विशद भाव से करूँ नमन्।
केवल ज्ञान ऋद्धि के धारी, श्री जिनेन्द्र को शत् वन्दन॥
धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं॥१॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो ओहि जिणाणं' कहकर, अवधि ज्ञान का करूँ मनन।
अवधि ज्ञान के धारी मुनिवर, के चरणों में हो वन्दन॥
धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं॥२॥

ॐ ह्रीं णमो ओहि जिणाणं ऋद्धि धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कहकर 'णमो परमोहि जिणाणं', परमावधि का होय यतन।
परम साधना करने वाले, मुनि के चरणों में वन्दन॥
धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं॥३॥

ॐ ह्रीं णमो परमोहि जिणाणं ऋद्धि धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'ॐ णमो सव्वोहि जिणाणं', सर्वावधि पाये जो ज्ञान ।
श्रेष्ठ ऋद्धि के धारी मुनिवर, सर्व लोक में रहे महान् ॥
धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं॥४॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोहि जिणाणं ऋद्धि धारक आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'ॐ णमो अणंतोहि जिणाणं', की महिमा है अपरम्पार।
श्रेष्ठ ज्ञान धारी मुनि पद में, वन्दन मेरा बारम्बार॥
धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं॥५॥

ॐ ह्रीं णमो अणंतोहि जिणाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो कोट्ठ बुद्धीणं' पद से, कोट्ठ बुद्धि धारी जिन संत।
उनके चरणों में वन्दन कर, हो जाए कर्मों का अंत॥

धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं॥६॥

ॐ ह्रीं णमो कोट्ठ बुद्धीणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो बीज बुद्धीणं' पद में, बीज बुद्धि ऋद्धी धारी।
श्रेष्ठ साधना करते मुनिवर, मन से होकर अविकारी॥
धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं॥७॥

ॐ ह्रीं णमो बीज बुद्धीणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'ॐ णमो पादाणुसारीणं', पादाणुसारिणी ऋद्धीवान ।
तप बल से यह ऋद्धी पाते, स्वयं जगाते हैं उपमान॥
धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं॥८॥

ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'ॐ णमो संभिन्न सोदारणं', सभिन्न श्रोतृत्व के धारी ।
उनके चरणों वन्दन करते, हम भी होकर अविकारी ॥
धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं॥९॥

ॐ ह्रीं णमो संभिन्न सोदारणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो सयं बुद्धाणं' कहकर, स्वयंबुद्ध ऋद्धीधारी।
मुनिवर के चरणों में वन्दन, करते हम मंगलकारी॥
धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं॥१०॥

ॐ ह्रीं णमो सयं बुद्धाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो पत्तेय बुद्धाणं' कहकर, प्रत्येक बुद्धि ऋद्धी पाऊँ।
श्रेष्ठ साधना करूँ भाव से, मोक्ष महल को मैं जाऊँ॥
धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं॥११॥

ॐ ह्रीं णमो पत्तेय बुद्धाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो बोहिय बुद्धाणं' कहते, बोधी पाने हेतू महान्।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, उनका हम करते गुणगान ॥
धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं॥१२॥

ॐ ह्रीं णमो बोहिय बुद्धाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'ॐ णमो उजु मदीणं' कहके, ऋजुमति मनःपर्यय ज्ञान।
परम साधना करने वाले, पा जाते हैं सम्यक् ज्ञान॥
धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं॥१३॥

ॐ ह्रीं णमो उजु मदीणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कहके 'णमो विउल मदीणं', विपुलमती पा लेते ज्ञान ।
आतम ध्यान लगाने वाले, पा जाते हैं केवल ज्ञान॥
धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं॥१४॥

ॐ ह्रीं णमो विउल मदीणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'ॐ णमो दश पुव्वीणं' कह, दश पूर्वों का पाऊँ ज्ञान ।
विशद भाव से जिन मुद्रा का, करता रहूँ नित्य मैं ध्यान॥

धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं॥१५॥

ॐ ह्रीं णमो दश पुव्वीणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'ॐ णमो चउदश पुव्वीणं', चौदह पूर्वों के धारी ।
मुनिवर की शुभ करें वन्दना, होकर हम भी अविकारी॥
धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं॥१६॥

ॐ ह्रीं णमो चउदश पुव्वीणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(अडिल्य छंद)

णमो अट्ठंग महा निमित्त, कुसलाणं जानिए।
महा निमित्तक ज्ञान, श्रेष्ठ मुनि पाते हैं मानिए॥
उनके चरणों में वंदन, को आए हैं।
होके भाव विभोर चरण, में सिर नाए हैं॥१७॥

ॐ ह्रीं णमो अट्ठंग महानिमित्त कुसलाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(चाल टप्पा)

णमो विउव्व इड्ढि पत्ताणं, ऋद्धीधर स्वामी।
ऋद्धि सिद्धि का दान हमें दो, मुक्ती पथ गामी॥
मुनीश्वर हे अन्तर्यामी !
सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी ॥ १८॥

ॐ ह्रीं णमो विउव्व इड्ढि पत्ताणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ध्याउँ 'णमो विज्जाहराणं', ऋद्धि महा नामी।
इसको पाने वाला बनता, मुक्ती पथ गामी॥

मुनीश्वर हे अन्तर्यामी !
सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी ॥१९॥

ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो चारणाणं' ऋद्धीधर, हैं त्रिभुवन नामी ।
उनकी भक्ती करने वाला, हो उसका स्वामी॥
मुनीश्वर हे अन्तर्यामी !
सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी ॥२०॥

ॐ ह्रीं णमो चारणाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो पण्ण समणाणं' जानो, मुक्ती पथ गामी।
प्रज्ञा श्रमण ऋद्धि के धारी, हैं त्रिभुवन नामी ॥
मुनीश्वर हे अन्तर्यामी !
सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी ॥२१॥

ॐ ह्रीं णमो पण्ण समणाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो आगास गामीणं' वाले, ऋद्धी के स्वामी।
गगन गमन करते है भाई, मुक्ती पथगामी॥
मुनीश्वर हे अन्तर्यामी !
सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी ॥२२॥

ॐ ह्रीं णमो आगास गामीणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो आसी विसाणं' ऋद्धी, मुनिवर ने पाई।
श्रेष्ठ ऋद्धि को धार गुरू ने, प्रभुता दिखलाई॥
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई ॥२३॥

ॐ ह्रीं णमो आसी विसाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो दिट्ठी विसाणं', ऋद्धी मुनिवर ने पाई।
मरण देखते होय जीव का, देखें न भाई॥
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई ॥२४॥

ॐ ह्रीं णमो दिट्ठी विसाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो उग्ग तवाणं' जानो, ऋद्धी यह भाई।
उग्र तपों को पाते मुनिवर, यह ऋद्धी पाई॥
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई ॥२५॥

ॐ ह्रीं णमो उग्ग तवाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो दित्त तवाणं' ऋद्धी, से मुनीवर भाई।
दीप्त तपों को अतिशय तपते, मुनीवर सुखदायी॥
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई ॥२६॥

ॐ ह्रीं णमो दित्त तवाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो तत्त तवाणं' ऋद्धी, से ऋषिवर भाई।
कठिन-कठिन तप करके मुनिवर, अतिशय दिखलाई॥
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई ॥२७॥

ॐ ह्रीं णमो तत्त तवाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो महा तवाणं' ऋद्धी, पाकर के भाई।
उत्तम से उत्तम तप तपते, हैं ऋषि सुखदायी॥
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई ॥२८॥

ॐ ह्रीं णमो महा तवाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो घोर तवाणं' ऋद्धी, ऋषिवर जो पाई।
घोर परीषह सहकर भी मुनि, तप करते भाई॥
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई ॥२९॥

ॐ ह्रीं णमो घोर महा तवाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो घोर गुणाणं' जानो, ऋद्धी सुखदाई।
श्रेष्ठ गुणों को पाते ऋषिवर, ऋद्धी यह पाई॥
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई ॥३०॥

ॐ ह्रीं णमो घोर गुणाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो घोर परक्कमाणं' यह, ऋद्धी सुखदायी।
घोर पराक्रम पाते मुनिवर, यह ऋद्धी पाई॥
मुनीश्वर पूजों हो भाई
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई॥३१॥

ॐ ह्रीं णमो घोर परक्कमाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो घोर गुण बंभयारीणं', ऋद्धीधर भाई।
घोर ब्रह्मचर्य पालन करते, अतिशय सुखदायी ॥
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई ॥३२॥

ॐ ह्रीं णमो घोर गुण बंभयारीणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(चाल-छन्द)

'णमो आमोसहि पत्ताणं' बोल बोल मैटो सब गम।
आमर्षौषधि के धारी, ऋषिवर जग में उपकारी॥
मुनि की जय जयकार करो, चरणों में नित शीश धरो।
उनका जो भी ध्यान करें, आतम का कल्याण करें॥ ३३॥

ॐ ह्रीं णमो आमोसहि पत्ताणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो खेल्लोसहि पत्ताणं', ऋद्धी पाकर मैटो गम।
थूक लार मुख के न्यारे, रोग नशाते हैं सारे॥
मुनि की जय जयकार करो, चरणों में नित शीश धरो।
उनका जो भी ध्यान करें, आतम का कल्याण करें॥ ३४॥

ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहि पत्ताणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो जल्लोसहि पत्ताणं', मोह त्याग कर धारो सम।
ऋषि के तन का जल्ल अहा, रोग मैटता पूर्ण रहा॥
मुनि की जय जयकार करो, चरणों में नित शीश धरो।
उनका जो भी ध्यान करें, आतम का कल्याण करें॥ ३५॥

ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहि पत्ताणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो विप्पोसहि पत्ताणं', ऋद्धी होती है सक्षम।
मल औषधि बन जाता है, सारे रोग नशाता है॥
मुनि की जय जयकार करो, चरणों में नित शीश धरो।
उनका जो भी ध्यान करें, आतम का कल्याण करें॥३६॥

ॐ ह्रीं णमो विप्पोसहि पत्ताणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो सव्वोसहि पत्ताणं', पाते हैं जो धारें यम।
सर्वौषधि ऋद्धी धारी, व्याधि मैटते हैं सारी॥
मुनि की जय जयकार करो, चरणों में नित शीश धरो।
उनका जो भी ध्यान करें, आतम का कल्याण करें॥ ३७॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहि पत्ताणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(शेर -छन्द)

'णमो मण बलीणं' यह, ऋद्धि पाए हैं।
मन बल से श्रेष्ठ ऋद्धी, ऋषिवर जगाए हैं॥
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से ॥ ३८॥

ॐ ह्रीं णमो मण बलीणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो वचि बलीणं', यह ऋद्धि जानिए।
वचनों में शक्ति मिलती, ऋषी को ये मानिए ॥
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से ॥ ३९॥

ॐ ह्रीं णमो वचि बलीणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो काय बलीणं', इस ऋद्धि के धनी।
पाते हैं मुनि शक्ती, ऋद्धी से अति धनी॥
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से ॥ ४०॥

ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो खीर सवीणं', यह ऋद्धि जो पाए।
रुखा आहार कर में, शुभ क्षीर सा बनाए॥
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से॥४१॥

ॐ ह्रीं णमो खीर सवीणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो सप्पि सवीणं', इस ऋद्धि के धारी ।
रुखा आहार पाते, शुभ घृत सम भारी ॥
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से॥४२॥

ॐ ह्रीं णमो सप्पि सवीणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो महुर सवीणं' यह ऋद्धि जानिए।
रुक्ष आहार मधुर, हो जाए मानिए॥
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से॥४३॥

ॐ ह्रीं णमो महुर सवीणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो अमिय सवीणं', यह ऋद्धि पाए हैं।
आहार रुक्ष अमृत, जैसा बनाए हैं॥
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से॥४४॥

ॐ ह्रीं णमो अमिय सवीणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आर्या -छन्द

'णमो अक्खीण महाणसाणं', यह ऋद्धी है अतिशयकारी।
कमें नहीं आहार जहाँ पर, भोजन लेवें अनगारी॥
जिन मुनि की पूजा करने यह, द्रव्य सजाकर लाए हैं।
भक्ति भाव से शीश झुकाकर, वन्दन करने आए हैं॥ ४५॥

ॐ ह्रीं णमो अक्खीण महाणसाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'ॐ णमो बड्ढमाणाणं' यह, ऋद्धी मुनिवर ने पाई।
केवल ज्ञान प्राप्त होने तक, ऋद्धी बढ़ती सुखदाई॥

जिन मुनि की पूजा करने यह, द्रव्य सजाकर लाए हैं।
भक्ति भाव से शीश झुकाकर, वन्दन करने आए हैं।।४६।।

ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'ॐ णमो सिद्धायदणाणं' यह, ऋद्धी ऋषिवर जी पाते ।
सिद्धायतन के दर्शन मुनि को, बैठे-बैठे हो जाते।।
जिन मुनि की पूजा करने यह, द्रव्य सजाकर लाए हैं।
भक्ति भाव से शीश झुकाकर, वन्दन करने आए हैं।।४७।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धायदणाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो भयवदोमहदि महावीर बड्ढमाण', बुद्ध ऋद्धी जानो।
वर्द्धमान महावीर प्रभू सम, बन जाते हैं ऋषि मानो।।
जिन मुनि की पूजा करने यह, द्रव्य सजाकर लाए हैं।
भक्ति भाव से शीश झुकाकर, वन्दन करने आए हैं।।४८।।

ॐ ह्रीं णमो भयवदोमहदि महावीर बड्ढमाण बुद्ध रिसीणो ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गणधर वलय में णमो जिणाणं, आदि ऋद्धियाँ कहीं महान्।
अड़तालिस यह मंत्र श्रेष्ठ हैं, भाव सहित कीन्हा गुणगान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते हम शत्-शत् वन्दन।
मुक्ती पद को प्राप्त करें हम, किया भाव से यह अर्चन।।४९।।

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं आदि ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जाप्य मंत्र : ॐ **ह्रीं श्रीं क्लीं ऐम् अर्हं श्री ऋषभनाथ तीर्थंकराय नमः।**

समुच्चय जयमाला

धर्म प्रवर्तक आदि जिन, मैटें भव का जाल।
ऋद्धि सिद्धि सौभाग्य के, हेतु कहूँ जयमाल।।

(चौपाई छन्द)

लोकालोक अनन्त बताया, जिनवाणी में ऐसा गाया।
तीन लोक उसमें शुभ गाए, ऊर्ध्व अधो अरु मध्य बताए।।
मध्य लोक उसका शुभ जानो, मध्य में जम्बूद्वीप बखानो।
उसमें भरत क्षेत्र शुभ गाया, धनुषाकार जिसे बतलाया।।
छह खण्डों में बँटा है भाई, पञ्च म्लेच्छ खण्ड दुखदाई।
आर्य खण्ड उसका शुभ जानो, मध्य में उसको तुम पहिचानो।।
परिवर्तन उसमें बतलाया, उत्सर्पिणी अवसर्पिणी गाया।
अति दुखमादिक काल बताए, छह संख्या में जो कहलाए।।
अवसर्पिणी यह काल कहा है, हीन हीनता रूप रहा है।
बल बुद्धी वैभव घट जाए, फिर भी मानव मान बढ़ाए।।
सुषमा दुषमा भाई गाया, तृतीय काल जिसे बतलाया।
एक लाख पूरव की जानो, तीन वर्ष वसु माह बखानो।।
पन्द्रह दिन इस काल के जानो, शेष काल के भाई मानो।
सर्वार्थ सिद्धी से चय कीन्हें, नगर अयोध्या जन्म जो लीन्हें।।
नाभिराय के भाग्य जगाये, मरुदेवी को धन्य बनाये।
देवों ने उत्सव कर भारी, पूजा कीन्ही अतिशयकारी।।
पद युवराज आपने पाया, लोगों ने तब हर्ष मनाया।
हुई कल्पवृक्षों की हानी, व्याकुल हुए जगत् के प्राणी।।
भूख प्यास ने उन्हें सताया, लोगों ने उत्पात मचाया।
रोते गाते चरणों आये, प्रभु से अपनी अर्ज सुनाए।।

प्रभू ने तब षट् कर्म बताए, प्राणी पाकर नाचे गाये।
आजीविका पाकर हर्षाए, जीवन सुखमय सभी बिताए।।
हुआ स्वयंवर उनका भाई, विधी सभी ने यह अपनाई।
लाख तिरासी पूरव जानो, भोग में बीती उनकी मानो।।
नीलाञ्जना ने मरण को पाया, प्रभु ने तब वैराग्य जगाया।
धर्म प्रर्वतक प्रभु कहलाये, मुक्ती का शुभ मार्ग दिखाए।।
प्रभु ने रत्नत्रय को पाया, कई राजाओं ने अपनाया।
छह महिने का ध्यान लगाया, निज आतम को प्रभु ने ध्याया।।
विधी दान की प्रभू बताए, नृप श्रेयांस के भाग्य जगाए।
तीज शुक्ल वैशाख की पाई, अक्षय तृतिया जो कहलाई।।
प्रभु ने अतिशय ध्यान लगाया, क्षण में केवल ज्ञान जगाया।
समवशरण तब देव बनाए, प्रभु की दिव्य देशना पाए।।
मुक्ती पद को प्रभु ने पाया, सारे जग को मार्ग दिखाया।
हम भी यही भावना भाते, प्रभु पद सादर शीश झुकाते।।
जग में भ्रमण किया है भारी, अब आयी मुक्ती की बारी।
मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ, कर्म नाशकर मुक्ती पाएँ ।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय-जय अविकारी, संयमधारी, मोक्ष महल के अधिकारी।
जय ज्ञान पुजारी, अतिशयकारी, धर्म प्रवर्तक शिवकारी।।

ॐ ह्रीं धर्म प्रर्वतक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि.स्वाहा।

अडिल्य छन्द

प्रथम जिनेश्वर आप हुए, यह जानिए।
मोक्ष मार्ग की राह बताए, मानिए।।
भव भोगों की नहीं है, मन में चाहना।
विशद मोक्ष पद पाएँ, है यह भावना ।।

(इत्याशीर्वाद : पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

चालीसा

दोहा– परमेष्ठी जिन पाँच हैं, मंगल उत्तम चार।
शरण चार की प्राप्त कर, भवदधि पाऊँ पार।।

दोहा– वंदन करके भाव से, करते हम गुणगान।
चालीसा जिन आदि का, गाते विशद महान्।।

चौपाई

लोकालोक अनन्त बताया, जिसका अन्त कहीं न पाया।
लोक रहा है विस्मयकारी, चौदह राजू है मनहारी।।
ऊर्ध्व लोक ऊर्ध्व में गाया, अधोलोक नीचे बतलाया।
मध्य लोक है मध्य में भाई, सागर दीप युक्त सुखदायी।।
नगर अयोध्या जन्म लिया है, नाभिराय को धन्य किया है।
सर्वार्थसिद्धि से चय कर आये, मरुदेवी के लाल कहाए।।
चिह्न बैल का पद में पाया, लोगों ने जयकार लगाया।
आदिनाथ प्रभु जी कहलाए, प्राणी सादर शीश झुकाए।।
जीवों को षट् कर्म सिखाए, सारे जग के कष्ट मिटाए।
पद युवराज का पाये भाई, विधि स्वयंवर की बतलाई।।
सुत ने चक्रवर्ति पद पाया, कामदेव सा पुत्र कहाया।
हुईं पुत्रियाँ उनके भाई, कालदोष की यह प्रभुताई।।
ब्राह्मी को श्रुत लिपि सिखाई, ब्राह्मी लिपि अतः कहलाई।
लघु सुता सुन्दरी कहलाई, अंक ज्ञान की कला सिखाई।।
लाख तिरासी पूरब जानो, काल भोग में बीता मानो।
इन्द्र के मन में चिंता जागी, प्रभू बने बैठे हैं रागी।।
उसने युक्ती एक लगाई, देवी नृत्य हेतु बुलवाई।
उससे अतिशय नृत्य कराया, तभी मरण देवी ने पाया।।

दृश्य प्रभू के मन में आया, प्रभु को तब वैराग्य समाया।
केश लुंच कर दीक्षा धारी, संयम धार हुए अविकारी।।
छह महीने का ध्यान लगाया, चित् का चिंतन प्रभु ने पाया।
चर्या को प्रभु निकले भाई, विधि किसी ने जान न पाई।।
छह महीने तक प्रभु भटकाए, निराहार प्रभु काल बिताए।
नृप श्रेयांस को सपना आया, आहार विधि का ज्ञान जगाया।।
अक्षय तृतीया के दिन भाई, चर्या की विधि प्रभु ने पाई।
भूप ने यह सौभाग्य जगाया, इक्षू रस आहार कराया।।
पञ्चाश्चर्य हुए तब भाई, ये है प्रभुवर की प्रभुताई।
प्रभुजी केवल ज्ञान जगाए, समवशरण तब देव बनाए।।
प्रातिहार्य अतिशय प्रगटाए, दिव्य ध्वनि तब प्रभू सुनाए।
मोक्ष मार्ग प्रभु ने दर्शाया, जैनधर्म का ज्ञान कराया।।
योग निरोध प्रभुजी कीन्हें, कर्म नाश सारे कर दीन्हें।
शिव पदवी को प्रभु ने पाया, सिद्ध शिला स्थान बनाया।।
बने पूर्णतः प्रभु अविकारी, सुख अनन्त पाये त्रिपुरारी।
हम भी यही भावना भाते, पद में सादर शीश झुकाते।।
जिस पदवी को तुमने पाया, वह पाने का भाव बनाया।
तव पूजा का फल हम पाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ।।

दोहा

चालीसा चालीस दिन, दिन में चालिस बार।
'विशद' भाव से जो पढ़ें, पावें भव से पार।।
रोग शोक पीड़ा मिटे, होवें बहु गुणवान्।
कर्म नाश कर अन्त में, होवे सिद्ध महान्।।

* * *

आरती

तर्ज : आज करें हम .....

आज करें हम विशद भाव से, आरती मंगलकारी।
मणिमय दीपक लेकर आये, आदिनाथ दरबार।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।

जन्म प्राप्त कर नगर अयोध्या, को प्रभु धन्य बनाया।
नाभिराय राजा मरुदेवी, ने सौभाग्य जगाया।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।।1।।

षट् कर्मों की शिक्षा देकर, सबके भाग्य जगाए।
नर-नारी सब नाचे गाये, जय-जयकार लगाए।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।।2।।

रत्नत्रय पाकर हे स्वामी, मोक्ष मार्ग अपनाया।
आतम ध्यान लगाकर तुमने, केवलज्ञान जगाया।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।।3।।

यही भावना भाते हैं हम, तव पदवी को पावें।
मोक्ष प्राप्त न होवे जब तक, शरण आपकी आवें।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।।4।।

अतिशय पुण्यवान प्राणी ही, दर्श आपका पाते।
'विशद' आरती करने वाले, बिगड़े भाग्य बनाते।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।।5।।

* * *

प्रशस्ति

(चौपाई)

लोकालोक रहा मनहार, महिमा जिसकी अपरम्पार।
मध्यलोक में जम्बूदीप, मध्य सुमेरू रहा समीप।।
भरत क्षेत्र है दक्षिण भाग, आर्य खण्ड है एक विभाग।
उसमें भारत देश महान, प्रान्त है जिसमें राजस्थान।।
टोंक जिला में है यह ग्राम, रहा बनेठा जिसका नाम।
मन्दिर जहाँ बने हैं तीन, श्रावक ज्ञानी रहे प्रवीण ।।
चन्द्र प्रभु मन्दिर के पास, जैनों का शुभ रहा निवास।
श्रावक के गृह हैं बत्तीस, अग्रवाल जैनी उन्नीस।।
खण्डेलवाल रहे हैं शेष, सभी धार्मिक रहे विशेष।
चन्द्र प्रभू अरु नेमिनाथ, महावीर प्रभु जानो साथ।।
अतिशय तीनों हुए विधान, जिनकी रही निराली शान।
चार दिनों का रहा प्रवास, जैन भवन में कीन्हा वास।।
माघ कृष्ण बारस की शाम, लेखन से कीन्हा विश्राम।
आदिनाथ का लिखा विधान, जिसकी महिमा रही महान।।
रही भावना मन में एक, पुण्य कमावें प्राणी नेक।
जैन धर्म का पावें योग, धर्म ध्यान का हो संयोग।।
शुभ उपयोग हमारा होय, नहीं अशुभ क्षण जावे कोय।
ज्ञान ध्यान में बीते काल, अतः कलम को लिया सम्हाल।।
यही भावना मेरी खास, रत्नत्रय का होय विकास।
'विशद' ज्ञान का होय प्रकाश, सिद्ध शिला पर होय निवास।।
ज्ञानी पण्डित नहीं महान, लघ्वाचार नहीं कुछ ज्ञान।
अक्षर मात्रा की हो भूल, करें सभी ज्ञानी निर्मूल।।

विशद
अजितनाथ विधान

प्रथम वल्य - 5
द्वितीय वलय - 10
तृतीय वलय - 20
चतुर्थ वलय - 40
पंचम वलय - 46

रचयिता

प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

श्री अजितनाथ स्तवन

कर्म विजेता जिन तीर्थंकर, होते हैं कल्मषहारी।
मानो श्रेष्ठ चन्द्रमा दूजा, उदित हुआ मंगलकारी।।
इन्द्रादि से वन्दनीय हैं, ऋषिपति जिनराज प्रभो।
अतः बंध कषाय विजित ही, बंदू तुमरे चरण विभो।।1।।

जैसे दिनकर किरण तिमिर को, कर देती है नाश अहा।
देह काँति का सर्व लोक में, वैसा श्रेष्ठ प्रकाश रहा।।
सूर्य कांति तो बाह्य तिमिर की, नाशक जग में कहलाई।
ध्यान दीप की अतिशय कांति, अंतर तम हरती भाई।।2।।

स्वयं पक्ष को श्रेष्ठ मानते, रहे प्रवादी मद में चूर।
वचन रूप तप सिंहनाद से, निर्मद होते सारे क्रूर।।
मद से आर्द्र हुए हैं जिनके, गण्डस्थल जैसे गजराज।
सिंह गर्जना सुनकर भागे, गजराजों का सकल समाज।।3।।

अद्भुत कर्म तेज के धारी, सर्वलोक में परम पवित्र।
ज्ञानानन्त के धारी शाश्वत्, विश्व नेत्र जन-जन के मित्र।।
सर्व दुःख नाशक जिन शासन, तीन लोक में श्रेष्ठ महान्।
स्थित करें परम पद में जो, त्रिभुवन वंदित रहा प्रधान।।4।।

सर्व दोष रूपी मेघों के, सघन कलंक रहित मनहार।
दिव्य ध्वनि अविरोध किरण से, प्रगटित होती मंगलकार।।
भव्य जीवरूपी कुमुदों को, करें प्रफुल्लित चन्द्र समान।
पावन करो पवित्र मेरा मन, करुणा कर मेरे भगवान।।5।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री अजितनाथ जिन पूजन

(स्थापना)

हे अजितनाथ ! तव चरण माथ, हम झुका रहे जग के प्राणी।
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, प्रभु भवि जीवों के कल्याणी।।
मम हृदय कमल पर आ तिष्ठो, हे करुणाकर करुणाकारी।
तव चरणों में वन्दन करते, हे मोक्ष महल के अधिकारी।।
हे नाथ ! कृपा करके मेरे, अन्तर में आन समा जाओ।
तुम राह दिखाओ मुक्ती की, हे करुणाकर उर में आओ।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

सागर का जल पीकर भी हम, तृषा शांत न कर पाए।
जन्मादि जरा के रोग मैटने, प्रासुक जल भरकर लाए।
श्री अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन के वन में रहकर भी, ताप शांत न कर पाए।
संताप नशाने भव-भव का, शुभ गंध चढ़ाने हम लाए।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अक्षय पद पाने हेतू हम, सदा तरसते आए हैं।
अब अक्षय पद पाने को भगवन्, अक्षय अक्षत लाए हैं।।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे ! भगवन् मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

व्याकुल होकर कामवासना, से हम बहु अकुलाए हैं।
अब काम बाण के नाश हेतु, यह पुष्प चढ़ाने लाए हैं।।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के सब जीव रहे व्याकुल, जो क्षुधा से बहु अकुलाए हैं।
हो क्षुधा वेदना नाश प्रभो !, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहित करता है मोह महा, उसके सब जीव सताए हैं।
हम मोह तिमिर के नाश हेतु, यह अतिशय दीपक लाए हैं।।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के तीव्र सघन वन से, यह धूप जलाने लाए हैं।
हो अष्ट कर्म का शीघ्र नाश, हम साता पाने आए हैं।।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल की चाहत में सदियों से, सारे जग में हम भटकाए ।
हो मोक्ष महाफल प्राप्त हमें, अतएव चढ़ाने फल लाए।।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन आदि अष्ट द्रव्य, हम श्रेष्ठ चढ़ाने लाए हैं।
हो पद अनर्घ शुभ प्राप्त हमें, हम चरण शरण में आए हैं।।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

ज्येष्ठ माह की तिथि अमावश, अजितनाथ लीन्हें अवतार।
धन्य हुई विजया माताश्री, गृह में हुए मंगलाचार।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाऽमावस्यायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

माघ कृष्ण दशमी को जन्मे, जिनवर अजितनाथ तीर्थेश।
पाण्डुक शिला पर न्हवन कराए, इन्द्र सभी मिलकर अवशेष।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दशमी शुभ माघ वदी पावन, अजितेश तपस्या धारी है।
इस जग का मोह हटाया है, यह संयम की बलिहारी है।।
हम चरणों में वन्दन करते, मम जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(चौपाई)

पौष शुक्ल एकादशी आई, केवलज्ञान जगाए भाई।
तीर्थंकर अजितेश कहाए, सुर-नर वंदन करने आए।।
जिसपद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदि चैत पञ्चमी जानो, सम्मेद शिखर से मानो।
अजितेश जिनेश्वर भाई, शुभ घड़ी में मुक्ती पाई।।
प्रभु चरणों अर्घ्य चढ़ाते, शुभभाव से महिमा गाते।
हम मोक्ष कल्याणक पाऐं, बस यही भावना भाऐं।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला पंचम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जयमाला

दोहा – जिन पूजा के भाव से, कटे कर्म का जाल।
अजित नाथ जिनराज की, गाते हम जयमाल।।

(छन्द मोतियादाम)

जय लोक हितंकर देव जिनेन्द्र, सुरासुर पूजे इन्द्र नरेन्द्र।
करें अर्चन कर जोर महेन्द्र, करें पद वन्दन देव शतेन्द्र।।
प्रभु हैं जग में सर्व महान्, करूँ मैं भाव सहित गुणगान।
गर्भ के पूरव से छह मास, बने सुर इन्द्र प्रभु के दास।।
करें रत्नों की वृष्टि अपार, करें पद वन्दन बारम्बार।
मनाते गर्भ कल्याणक आन, करें नित भाव सहित गुणगान।।
प्रभु का होवे जन्म कल्याण, करें पूजा तब देव महान।
ऐरावत लावें इन्द्र प्रधान, करें गुणगान सुरासुर आन।।
करें अभिषेक सभी मिल देव, सुमेरू गिरि के ऊपर एव।
बढ़े जग में आनन्द अपार, रही महिमा कुछ अपरम्पार।।
रहे जग में बन के नर नाथ, झुकाते चरणों में सब माथ।
मिले जब प्रभु को कोई निमित्त, लगे तब संयम में शुभ चित्त।।
गिरि कन्दर शिखरों पर घोर, सुतप धारें अति भाव विभोर।
जगे फिर प्रभु को केवलज्ञान, करें सुर नर पद में गुणगान।।

करें उपदेश प्रभु जी महान, करें सुन के प्राणी कल्याण।
करे प्रभु जी फिर कर्म विनाश, प्रभु करते शिवपुर में वास।।
बने अविकार अखण्ड विशुद्ध, अजरामर होते पूर्ण प्रबुद्ध।
जगी मन में मेरे यह चाह, मिले हमको प्रभु सम्यक् राह।।

(छन्द घत्तानंद)

जय-जय उपकारी संयमधारी, मोक्ष महल के अधिकारी।
सद्गुण के धारी जिन अविकारी, सर्व दोष के परिहारी।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यं पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – अजितनाथ से नाथ का, कौन करे गुणगान।
चरण वन्दना कर मिले, उभय लोक सम्मान।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

प्रथम वलयः (पाँच बंध के हेतू)

दोहा– हेतु बन्ध के यह कहे, जिन गुण के प्रतिकूल।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, करने वह निर्मूल।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

हे अजितनाथ ! तव चरण माथ, हम झुका रहे जग के प्राणी।
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, प्रभु भवि जीवों के कल्याणी।।
मम हृदय कमल पर आ तिष्ठो, हे करुणाकर करुणाकारी।
तव चरणों में वन्दन करते, हे मोक्ष महल के अधिकारी।।
हे नाथ ! कृपा करके मेरे, अन्तर में आन समा जाओ।
तुम राह दिखाओ मुक्ती की, हे करुणाकर उर में आओ।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द जोगीरासा)

है मिथ्यात्व बन्ध का हेतू, बन्ध कराए अपरम्पार।
चतुर्गति में भ्रमण कराए, प्राणी को जो बारम्बार।।
बन्ध के हेतू नाश किए प्रभु, पाए अनुपम केवल ज्ञान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम उनका गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं बन्धहेतू मिथ्यात्व रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अविरति के कारण भोगों में, रहते हैं प्राणी लवलीन।
कर्म बन्ध का हेतू अवरति, ग्रहण कराए चारित हीन।।
बन्ध के हेतू नाश किए प्रभु, पाए अनुपम केवल ज्ञान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम उनका गुणगान।।2।।

ॐ ह्रीं बन्धहेतू अविरति रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म बन्ध होता प्रमाद से, जिसके पन्द्रह भेद कहे।
इन्द्रिय और कषाय विकथा, निद्रा स्नेह सब भेद रहे।।
बन्ध के हेतू नाश किए प्रभु, पाए अनुपम केवल ज्ञान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम उनका गुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं बन्धहेतू प्रमाद रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होता बन्ध कषायों द्वारा, जग जीवों के अपरम्पार।
तीव्र मंद मध्यम कषाय हो, होता बन्ध उसी अनुसार।।
बन्ध के हेतू नाश किए प्रभु, पाए अनुपम केवल ज्ञान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम उनका गुणगान।।4।।

ॐ ह्रीं बन्धहेतू कषाय रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आश्रव बन्ध के हेतू गाए, जैनागम में तीनों योग।
कर्म बन्ध के साथ जीव के, होता दुःखों का संयोग।।
बन्ध के हेतू नाश किए प्रभु, पाए अनुपम केवल ज्ञान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम उनका गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं बन्धहेतू योग रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यादि हैं बन्ध के कारण, काल अनादि अपरम्पार।
छुटकारा न पाया इनसे, भ्रमण किया जग बारम्बार।।
बन्ध के हेतू नाश किए प्रभु, पाए अनुपम केवल ज्ञान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम उनका गुणगान।।6।।

ॐ ह्रीं पञ्चबंधहेतू रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा– बन्ध प्रक्रिया के कहे, आगम में दश भेद।
नाश नहीं कर पाए हम, है इसका अब खेद।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

हे अजितनाथ ! तव चरण माथ, हम झुका रहे जग के प्राणी।
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, प्रभु भवि जीवों के कल्याणी।।
मम हृदय कमल पर आ तिष्ठो, हे करुणाकर करुणाकारी।
तव चरणों में वन्दन करते, हे मोक्ष महल के अधिकारी।।
हे नाथ ! कृपा करके मेरे, अन्तर में आन समा जाओ।
तुम राह दिखाओ मुक्ती की, हे करुणाकर उर में आओ।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

10 भेद बंध प्रक्रिया (छन्द : जोगीरासा)

जीव कर्म हो ऐकामेक, बंधें जीव के कर्म अनेक।
जिनवर करते कर्म विनाश, करते चेतन गुण में वास।।1।।

ॐ ह्रीं कर्मबंध रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फल दे कर्म सुस्थिति पाय, स्थिति ऐसी उदय कहाए।
जिनवर करते कर्म विनाश, करते चेतन गुण में वास।।2।।

ॐ ह्रीं कर्म उदय रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बंधे कर्म सत्ता को पाय, यही कर्म का सत्व कहाय।
जिनवर करते कर्म विनाश, करते चेतन गुण में वास।।3।।

ॐ ह्रीं कर्म सत्त्व रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की स्थिति बढ़ जाय, कर्मोत्कर्षण यह कहलाए।
जिनवर करते कर्म विनाश, करते चेतन गुण में वास।।4।।

ॐ ह्रीं कर्मउत्कर्षण रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की स्थिति घट जाय, कर्मापकर्षण यह कहलाए।
जिनवर करते कर्म विनाश, करते चेतन गुण में वास।।5।।

ॐ ह्रीं कर्म अपकर्षण रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म शुभाशुभ बदले रूप, यही संक्रमण का स्वरूप।
जिनवर करते कर्म विनाश, करते चेतन गुण में वास।।6।।

ॐ ह्रीं कर्म संक्रमण रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की शक्ति दब जाय, आगम में उपशांत कहाए।
जिनवर करते कर्म विनाश, करते चेतन गुण में वास।।7।।

ॐ ह्रीं कर्मोपशम रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समय से पहले कर्म विनाश, कर उदीरणा करते नाश।
जिनवर करते कर्म विनाश, करते चेतन गुण में वास।।8।।

ॐ ह्रीं कर्म उदीरणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म होय हीनाधिक रूप, कहा निधत्ति का स्वरूप।
जिनवर करते कर्म विनाश, करते चेतन गुण में वास।।9।।

ॐ ह्रीं कर्म निधत्ति रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म नहीं हीनाधिक होय, उपशम और उदीरणा खोय।
कर्म निकासित करें विनाश, करते चेतन गुण में वास।।10।।

ॐ ह्रीं निकाचित कर्म रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म प्रक्रिया का स्वरूप, बतलाया दश भेदों रूप।
जिनवर करते कर्म विनाश, करते चेतन गुण में वास।।11।।

ॐ ह्रीं कर्म दशभेद रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः (20 प्ररूपणा)

दोहा– बीस प्ररूपणा का कथन, करते विधि अनुसार।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, नशे भ्रमण संसार।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

हे अजितनाथ ! तव चरण माथ, हम झुका रहे जग के प्राणी।
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, प्रभु भवि जीवों के कल्याणी।।
मम हृदय कमल पर आ तिष्ठो, हे करुणाकर करुणाकारी।
तव चरणों में वन्दन करते, हे मोक्ष महल के अधिकारी।।
हे नाथ ! कृपा करके मेरे, अन्तर में आन समा जाओ।
तुम राह दिखाओ मुक्ती की, हे करुणाकर उर में आओ।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

14 मार्गणा

(छन्द जोगीरासा)

गति मार्गणा पाके जीव, दुःख उठाते विशद अतीव।
गति का जिनवर किये विनाश, पाए केवल ज्ञान प्रकाश।।1।।

ॐ ह्रीं गति मार्गणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पायें पाँच इन्द्रियाँ लोग, जिनसे हो दुख का संयोग।
जिनवर करके उनका नाश, पाते केवल ज्ञान प्रकाश।।2।।

ॐ ह्रीं इन्द्रिय मार्गणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी काय मार्गणा युक्त, भव से न हो पाते मुक्त।
काय मार्गणा किए विनाश, होवे केवल ज्ञान प्रकाश।।3।।

ॐ ह्रीं काय मार्गणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योगों द्वारा आश्रव पाय, प्राणी सारा जगत भ्रमाय।
योग मार्गणा किए विनाश, होवे केवल ज्ञान प्रकाश।।4।।

ॐ ह्रीं योग मार्गणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भेद वेद के गाए तीन, भोगों में रहते तल्लीन।
वेद मार्गणा किए विनाश, होवे केवल ज्ञान प्रकाश।।5।।

ॐ ह्रीं वेद मार्गणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम को नित कषे कषाय, आश्रव बन्ध करे दुख पाय।
सब कषाय का करें विनाश, विशद ज्ञान का होय प्रकाश।।6।।

ॐ ह्रीं कषाय मार्गणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान मार्गणा में अज्ञान, धारी प्राणी रहे प्रधान।
करके निज आतम का ध्यान, पा लेते हैं केवल ज्ञान।।7।।

ॐ ह्रीं क्षयोपशम ज्ञान मार्गणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संयम और असंयम ज्ञान, रही मार्गणा की पहिचान।
यथाख्यात् चारित्र प्रधान, पाकर पाते केवलज्ञान।।8।।

ॐ ह्रीं असंयम रहित यथाख्यातचारित्रसहित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दर्शन रही मार्गणा खास, जिससे हो सामान्याभास।
प्राप्त होय जब पुण्य अतीव, केवल दर्शन पावे जीव।।9।।

ॐ ह्रीं दर्शन मार्गणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लेश्या के छह भेद बताए, अशुभ कर्म के कारण गाए।
लेश्या का कर पूर्ण विनाश, प्राप्त किए प्रभु मुक्ती वास।।10।।

ॐ ह्रीं लेश्या मार्गणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्य जीव पाते श्रद्धान, यही भव्य की है पहिचान।
भव्याभव्य मार्गणा नाश, पाते प्राणी शिवपुर वास।।11।।

ॐ ह्रीं भव्य मार्गणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्या शासन मिश्र प्रधान, उपशम क्षायिक वेदक जान।
सभी मार्गणा किए विनाश, क्षायिक दर्शन पाए खास।।12।।

ॐ ह्रीं मिथ्यारहित सम्यक्त्व मार्गणा सहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

संज्ञी असंज्ञी जानो आप, पाते दोनों बहु संताप।
संज्ञी मार्गणा किए विनाश, पाया केवलज्ञान प्रकाश।।13।।

ॐ ह्रीं संज्ञी मार्गणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आहार मार्गणा के दो भेद, पहुँचाते हैं भारी खेद।
प्रभु ने उनका किया विनाश, पाया केवलज्ञान प्रकाश।।14।।

ॐ ह्रीं आहार मार्गणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सवैया छन्द)

मोह और योग से जीव की प्रवृत्ति होय,
ताको नाम शास्त्र में गुणस्थान गाया है।।
ज्ञान ध्यान तप शील प्राप्त कर संतों ने,
गुण स्थान से अतीत सिद्ध पद पाया है।।15।।

ॐ ह्रीं गुणस्थान प्ररूपणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भिन्न-भिन्न भाँति-भाँति जीव भेद गाए हैं।
नाम इसका श्रेष्ठ शुभ जीव समास गाया है।।
ज्ञान ध्यान तप शील प्राप्त कर संतों ने,
जीव समास से अतीत सिद्ध पद पाया है।।16।।

ॐ ह्रीं जीव समास प्ररूपणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आहारादि देह के योग्य शक्ति प्राप्त हो,
नाम पर्याप्ति इसका ही बताया है।
ज्ञान ध्यान तप शील प्राप्त कर संतों ने,
पर्याप्ति से अतीत सिद्ध पद पाया है।।17।।

ॐ ह्रीं पर्याप्ति प्ररूपणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीव जिसके योग से जीवन पाय जग में,
वियोग से मरण होय प्राण वह कहाया है।
ज्ञान ध्यान तप शील प्राप्त कर संतों ने,
जीव प्राण से अतीत सिद्ध पद पाया है।।18।।

ॐ ह्रीं प्राण प्ररूपणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आहारादि जीव के कोई भी वांछा होय,
इसका नाम आगम में संज्ञा जो बताया है।
ज्ञान ध्यान तप शील प्राप्त कर संतों ने,
संज्ञातीत जीव ने सिद्ध पद पाया है।।19।।

ॐ ह्रीं संज्ञा प्ररूपणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान और दर्शन शुभ लक्षण रहा जीव का,
दोय भेद रूप यह उपयोग जो कहाया है।
ज्ञान ध्यान तप शील प्राप्त कर संतों ने,
गुण स्थान से अतीत सिद्ध पद पाया है।।20।।

ॐ ह्रीं उपयोग प्ररूपणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहीं मार्गणा चौदह खास, उनसे पाना है अवकाश।
बीस प्ररूपणा का श्रद्धान, करके पाना केवलज्ञान।।21।।

ॐ ह्रीं बीस प्ररूपणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा- बाईस परीषह जय करें, दोष अठारह हीन।
तीर्थंकर इस लोक में, होते ज्ञान प्रवीण।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

हे अजितनाथ ! तव चरण माथ, हम झुका रहे जग के प्राणी।
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, प्रभु भवि जीवों के कल्याणी।।

मम हृदय कमल पर आ तिष्ठो, हे करुणाकर करुणाकारी।
तव चरणों में वन्दन करते, हे मोक्ष महल के अधिकारी।।
हे नाथ ! कृपा करके मेरे, अन्तर में आन समा जाओ।
तुम राह दिखाओ मुक्ती की, हे करुणाकर उर में आओ।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

22 परिषह एवं 18 दोषरहित जिन

(छन्द जोगीरासा)

क्षुधा परीषह जय पाते हैं, मुनि वृन्द होके अविकार।
ज्ञान ध्यान तप में रत रहकर, करें साधना मुनि अनगार।।1।।

ॐ ह्रीं क्षुधा परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृषा परीषह जय करते हैं, वीतराग साधु अनगार।
ज्ञान ध्यान तप के धारी मुनि, जग में होते मंगलकार।।2।।

ॐ ह्रीं तृषा परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुश्किल शीत परीषह जय है, वह भी सहते संत महान्।
सम्यक् चारित्र पाने वाले, होते संयम के स्थान।।3।।

ॐ ह्रीं शीत परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्मी की लपटों को सहते, निष्पृह साधू हो अविकार।
उष्ण परीषह जय के धारी, जग में गाए मंगलकार।।4।।

ॐ ह्रीं उष्ण परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दंशमशक परीषह जय करते, समता धारी संत प्रधान।
कठिन साधना करने वाले, तीन लोक में रहे महान्।।5।।

ॐ ह्रीं दंशमशक परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तर बाह्य लाज का कारण, नग्न परीषह सहते हैं।
ज्ञान ध्यान तप के धारी मुनि, समता भाव से रहते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं नग्न परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरति परीषह जय के धारी, होते हैं साधू निर्ग्रन्थ।
विशद साधना करने वाले, करते हैं कर्मों का अन्त।।7।।

ॐ ह्रीं अरति परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हाव-भाव लखकर स्त्री के, समता से रहते अनगार।
स्त्री परिषह जय करते हैं, वीतराग साधू मनहार।।8।।

ॐ ह्रीं स्त्री परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चर्या परिषह जय धारी मुनि, पैदल करते सदा विहार।
यत्नाचार धरे चर्या में, जिनकी चर्या अपरम्पार।।9।।

ॐ ह्रीं चर्या परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान ध्यान आदि को बैठें, विविक्त आसन के आधार।
निषद्या परीषह जय करते हैं, जैन मुनि होके अविकार।।10।।

ॐ ह्रीं निषद्या परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षिति शयन एकाशन में मुनि, करते हैं समता को धार।
शैय्या परिषह जय करते हैं, ज्ञानी ध्यानी ऋषि अनगार।।11।।

ॐ ह्रीं शैय्या परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कटू वचन बोले यदि कोई, फिर भी न करते हैं रोष।
जैन मुनीश्वर समता वाले, परीषह जय धारी आक्रोष।।12।।

ॐ ह्रीं आक्रोश परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वध करे यदि कोई प्राणी, न बोलें मुनि कटु वाणी।
मुनि बध परीषह जय धारी, हैं जग में मंगलकारी।।13।।

ॐ ह्रीं बध परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल-छन्द)

जिन मुनि याचना धारी, परीषह जय करते भारी।
इनकी है महिमा न्यारी, होते हैं मंगलकारी।।14।।

ॐ ह्रीं याचना परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ना लाभ प्राप्त कर पावें, मन में समता उपजावें।
मुनि अलाभ परीषह वाले, इस जग में रहे निराले।।15।।

ॐ ह्रीं अलाभ परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन में कोई रोग सतावे, मुनि शांत भाव को पावें।
जय रोग परीषह धारी, होते जग में मंगलकारी।।16।।

ॐ ह्रीं रोग परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृण शूल आदि चुभ जावे, फिर भी मन समता आवे।
तृण स्पर्श जयी कहलावें, परिषह में न घबड़ावें।।17।।

ॐ ह्रीं तृणस्पर्श परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन मल से लिप्त हो जावे, मन में आकुलता आवे।
मुनि मल परीषह जय धारी, जग में रहते अविकारी।।18।।

ॐ ह्रीं मल परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्कार पुरस्कार जानो, परीषह जय धारी मानो।
हैं मुनिवरजी शुभकारी, इस जग में मंगलकारी।।19।।

ॐ ह्रीं सत्कार पुरूस्कार परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर शुभ प्रज्ञा पावें, प्रज्ञा में न हर्षावें।
मुनि प्रज्ञा परिषह धारी, जय पाते हैं अविकारी।।20।।

ॐ ह्रीं प्रज्ञा परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान परीषह गाया, मुनिवर ने जय शुभ पाया।
न खेद हृदय में लावें, मन में समता उपजावें।।21।।

ॐ ह्रीं अज्ञान परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिराज अदर्शन धारी, होते उसके जयकारी।
मुनिवर परिषह जय पावें, मन में समता उपजावें।।22।।

ॐ ह्रीं दर्शन परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अठारह दोष से रहित जिन

(चौपाई)

केवलज्ञानी होने वाले, क्षुधा वेदना खोने वाले।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।23।।

ॐ ह्रीं क्षुधादोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृषा दोष भी न रह पाए, जो भी केवलज्ञान जगाए।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।24।।

ॐ ह्रीं तृषादोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म दोष भी न रह पाए, जो भी केवलज्ञान जगाए।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।25।।

ॐ ह्रीं जन्मदोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जरा दोष की होती हानी, बन जाते जो केवल ज्ञानी।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।26।।

ॐ ह्रीं जरादोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विस्मय दोष रहे न भाई, केवलज्ञानी के दुखदायी।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।27।।

ॐ ह्रीं विस्मयदोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरति दोष उनके भी खोवे, केवल ज्ञानी जो भी होवे।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।28।।

ॐ ह्रीं अरतिदोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खेद दोष के होते त्यागी, केवल ज्ञानी बहु बड़भागी।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।29।।

ॐ ह्रीं खेददोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोग देह में कभी न आवे, जो भी केवल ज्ञान जगावे।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।30।।

ॐ ह्रीं रोग रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन में शोक कभी न लाते, जो नर केवल ज्ञान जगाते।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।31।।

ॐ ह्रीं शोकदोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मद उनके कैसे रह पावे, जो भी केवल ज्ञान जगावे।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।32।।

ॐ ह्रीं मददोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह दोष के हैं वे नाशी, जो हैं केवलज्ञान प्रकाशी।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।33।।

ॐ ह्रीं मोहदोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भय का क्षय उनके हो जावे, केवल ज्ञान मुनि प्रगटावे।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।34।।

ॐ ह्रीं भयदोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निद्रा दोष त्यागते स्वामी, केवलज्ञानी अन्तर्यामी।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।35।।

ॐ ह्रीं निद्रादोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिंता उनके हृदय न आवे, जो तीर्थंकर पदवी पावे।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।36।।

ॐ ह्रीं चिंतादोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वेद रहे न तन में कोई, जिनने भव से मुक्ति पाई।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।37।।

ॐ ह्रीं स्वेददोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग-दोष उनका नश जाए, मुनिवर केवलज्ञान जगाए।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।38।।

ॐ ह्रीं रागदोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन में द्वेष कभी न लावें, विशद ज्ञान जो मुनि प्रगटावें।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी ।।39 ।।

ॐ ह्रीं द्वेषदोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मरण दोष के होते नाशी, केवल ज्ञानी शिवपुर वासी।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी ।।40 ।।

ॐ ह्रीं मरण दोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाईस परीषह जय के धारी, दोष अठारह के संहारी।
अजितनाथ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।41 ।।

ॐ ह्रीं द्वाविंशति परीषहजय एवं अष्टादश दोषरहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम वलयः

दोहा- अतिशय पाए हैं प्रभू, प्रातिहार्य भी साथ।
अनन्त चतुष्टय युक्त जिन, झुका रहे हम माथ ।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

हे अजितनाथ ! तव चरण माथ, हम झुका रहे जग के प्राणी।
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, प्रभु भवि जीवों के कल्याणी ।।
मम हृदय कमल पर आ तिष्ठो, हे करुणाकर करुणाकारी।
तव चरणों में वन्दन करते, हे मोक्ष महल के अधिकारी ।।
हे नाथ ! कृपा करके मेरे, अन्तर में आन समा जाओ।
तुम राह दिखाओ मुक्ती की, हे करुणाकर उर में आओ ।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

10 जन्म के अतिशय

दश अतिशय पावें प्रभु पावन, निर्मल सुखदाई।
स्वेद रहित जिनवर का तन है, अति पावन भाई ।।
प्रभू की जानो प्रभुताई।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलदायी ।।1 ।।

ॐ ह्रीं स्वेदरहित सहजातिशयधारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तन है मल मूत्र रहित शुभ, अति पावन भाई।
भव्यों को आह्लादित करता, निर्मल सुखदाई ।।
प्रभू की जानो प्रभुताई।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलदायी ।।2 ।।

ॐ ह्रीं नीहाररहित सहजातिशयधारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समचतुस्त्र संस्थान प्रभु का, सुन्दर सुखदाई।
घट बढ़ अंग न होवे कोई, जिन की प्रभुताई ।।
प्रभू की जानो प्रभुताई।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलदायी ।।3 ।।

ॐ ह्रीं समचतुष्क संस्थान सहजातिशयधारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वज्रवृषभ नाराच संहनन, श्री जिनेन्द्र पाए।
परमौदारिक तन का बल, प्रभु अतिशय प्रगटाए ।।
प्रभू की जानो प्रभुताई।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलदायी ।।4 ।।

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराच संहनन सहजातिशयधारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित परम सुगंधित श्री जिन, मनहर तन पाए।
तीर्थंकर प्रकृति के कारण, अतिशय दिखलाए ।।
प्रभू की जानो प्रभुताई।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलदायी ।।5 ।।

ॐ ह्रीं सुगंधित तन सहजातिशयधारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूप सुसुंदर महा मनोहर, श्री जिनवर पाए।
अतिशय रूप के धारी जिनके, पावन गुण गाए।।
प्रभू की जानो प्रभुताई।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलदायी।।6।।

ॐ ह्रीं अतिशयरूप सहजातिशयधारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ अधिक इक सहस सुलक्षण, तन में कहलाए।
जन्म होत ही श्री जिनवर ने, मंगलमय पाए।।
प्रभू की जानो प्रभुताई।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलदायी।।7।।

ॐ ह्रीं सहस्राष्टलक्षण सहजातिशयधारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के तन में रक्त मनोहर, श्वेत वर्ण भाई।
यह अतिशय अनुपम कहलाए, प्रभु की प्रभुताई।।
प्रभू की जानो प्रभुताई।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलदायी।।8।।

ॐ ह्रीं श्वेतरुधिर सहजातिशयधारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन-जन का मन मोहित करती, हित-मित प्रिय वाणी।
अतिशय अनुपम मंगलमय है, जग की कल्याणी।।
प्रभू की जानो प्रभुताई।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलदायी।।9।।

ॐ ह्रीं प्रियहितवचन सहजातिशयधारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व जहाँ में अतिशयकारी, बल जिनवर पाए।
भक्ति भाव से सुर नर प्रभु के, चरणों सिर नाए।।
प्रभू की जानो प्रभुताई।
जन्म का अतिशय पाए, श्री जिन जग मंगलदायी।।10।।

ॐ ह्रीं अतुल्यबल सहजातिशयधारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

10 केवलज्ञान के अतिशय

केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय पावें।
शत् योजन दुष्काल वहाँ का, शीघ्र विनश जावे।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।11।।

ॐ ह्रीं गव्यूति शत् चतुष्टय सुभिक्षत्व घातिक्षय जातिशयधारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होय गमन आकाश प्रभू का, अति विस्मयकारी।
भक्ति भाव से आते मिलकर, वहाँ देव भारी।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।12।।

ॐ ह्रीं आकाशगमन घातिक्षय जातिशयधारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, भक्ती हितकारी।
मार सके न कोई किसी को, हैं अदया हारी।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।13।।

ॐ ह्रीं अदयाभाव घातिक्षय जातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होय नहीं उपसर्ग प्रभु पर, किसी तरह भाई।
विशद ज्ञान की महिमा है यह, प्रभु की प्रभुताई।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।14।।

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव घातिक्षय जातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा रोग से पीड़ित सारे, जग में जीव कहे।
क्षुधा वेदना को जीते प्रभु, बिन आहार रहे।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।15।।

ॐ ह्रीं कवलाहार घातिक्षय जातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में अधर विराजे, पूर्व दृष्टि कीजे।
भवि जीवों को चतुर्दिशा में, प्रभु दर्शन दीजे।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।16।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुखदर्श घातिक्षय जातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब विद्या के ईश्वर प्रभु जी, सकल ज्ञानधारी।
ध्यावें प्रभु को भक्ति भाव से, होवे सुखकारी।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।17।।

ॐ ह्रीं सर्व विद्येश्वरत्व घातिक्षय जातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुद्गल के परमाणु मिलकर, बने देह भाई।
छाया नहीं पड़े प्रभु तन की, प्रभु अतिशय पाई।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।18।।

ॐ ह्रीं छायारहित घातिक्षय जातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बढ़ें नहीं नख केश जरा भी, विशद ज्ञान जगते।
उपमा नहीं जग में कोई, अति मनहर लगते।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।19।।

ॐ ह्रीं समान नखकेशत्व घातिक्षय जातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पलक झपकती नहीं बंद न, खुलती है भाई।
नाशादृष्टि रहे निरन्तर, यह शुभ प्रभुताई।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।20।।

ॐ ह्रीं अक्षस्पंदरहित घातिक्षयजातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

14 देवकृत अतिशय

चौदह अतिशय कहे देवकृत, श्री जिन के भाई।
अर्धमागधी भाषा प्रभु की, भविजन सुखदाई।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।21।।

ॐ ह्रीं सर्वार्धमागधी भाषा देवोपनीतातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

मैत्रीभाव सभी जीवों में, स्वयं जगे भाई।
महिमा विस्मयकारी है शुभ, प्रभु की प्रभुताई।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।22।।

ॐ ह्रीं सर्वमैत्रीभाव देवोपनीतातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

षट् ऋतु के फल फूल स्वयं ही, खिल जाते भाई।
श्री जिन का हो गमन जहाँ पर, प्रभु की प्रभुताई।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।23।।

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादि तरु परिणाम भाषा देवोपनीतातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्पण सम भूमि हो जावे, अति मंगलकारी।
जहाँ चरण पड़ते श्री जिनके, हो विस्मयकारी।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।24।।

ॐ ह्रीं आदर्शतल प्रतिमा रत्नमही देवोपनीतातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित मंद पवन बहती है, भविजन सुखदाई।
श्रीजिन की महिमा का फल है, प्रभु की प्रभुताई।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।25।।

ॐ ह्रीं सुगंधित विहरण मनुगत वायुत्व देवोपनीतातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वानंद होय इस जग में, जिन दर्शन पाके।
सुरपति नरपति धन्य मानते, जिन के गुण गाके।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।26।।

ॐ ह्रीं सर्वानंदकारक देवोपनीतातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

कंटक रहित भूमि हो जावे, श्री जिन पद पाके।
सुरपति नरपति हर्ष मनावें, श्री जिन गुण गाते।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।27।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमित धूलि कंटकादि भाषा देवोपनीतातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नभ में जय जयकार करें सुर, महिमा दिखलावें।
हो अपार सुखकारी जग में, प्रभु के गुण गावें।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।28।।

ॐ ह्रीं आकाशे जय-जयकार देवोपनीतातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गंधोदक की वृष्टि करें सुर, मन में हर्षावें।
जन-जन को हितकारी पावन, महिमा दिखलावें।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।29।।

ॐ ह्रीं मेघकुमारकृत गंधोदक वृष्टि देवोपनीतातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चरण कमल तल कमल रचाते, पावन सुखदाई।
सुर नरेन्द्र की महिमा है यह, प्रभु की प्रभुताई।।

तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।30।।

ॐ ह्रीं चरण कमल तलरचित स्वर्ण कमल देवोपनीतातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गगन सुनिर्मल हो जावे अति, श्री जिन के आवें।
नर सुरेन्द्र अति नाचे गावें, मन में हर्षावें।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।31।।

ॐ ह्रीं शरदकाल वन्निर्मल गगन गमनत्व देवोपनीतातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व दिशाएँ धूम रहित हों, मनहर सुखदाई।
नाचें गावें हर्ष मनावें, सुर नर गुण गाई।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।32।।

ॐ ह्रीं सर्वानंदकारक देवोपनीतातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

धर्मचक्र चलता है आगे, शुभ महिमाधारी।
भवि जीवों के मन को मोहे, अति मंगलकारी।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।33।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्रचतुष्टय भाषा देवोपनीतातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

मंगल द्रव्य अष्ट शुभ लावें, भक्ति सहित भाई।
देव समर्पित रहें भाव से, जिन महिमा गाई।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।34।।

ॐ ह्रीं अष्ट मंगल द्रव्य देवोपनीतातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

आठ प्रातिहार्य के अर्घ्य

(हरिगीतिका छंद)

तरु अशोक सुंदर सुखदाई, दीखे मनहर भाई।
सब जीवों के शोक हरे जो, यह प्रभु की प्रभुताई।।
श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसुधारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।35।।

ॐ ह्रीं अशोकतरु सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

पुष्प सुवृष्टि करते सुरगण, मन में अति हर्षावें।
पूजा अर्चा करें वंदना, शुभ अतिशय गुण गावें।।
श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसुधारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।36।।

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दिव्य ध्वनि खिरती जिनवर की, ओमकार मय प्यारी।
पाप विनाशी धर्म प्रकाशी, जग में मंगलकारी।।
श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसुधारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।37।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

चौंसठ चंवर ढुरें प्रभु आगे, सुंदर शुभम् सुखकारी।
महिमा दिखलाते श्री जिन की, होते विस्मयकारी।।
श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसुधारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।38।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठिचामर सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

रत्न जड़ित सुंदर सिंहासन, जिनवर का सोहे।
अधर विराजे उस पर श्री जिन, सब जग को मोहे।।
श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसुधारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।39।।

ॐ ह्रीं सिंहासन सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

भामण्डल के आगे लज्जित, कोटि सूर्य होवें।
सप्त भवों को जाने भविजन, मन की जड़ता खोवें।।
श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसुधारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।40।।

ॐ ह्रीं भामण्डल सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

देव दुंदुभि बाजे बजते, सब आकाश गुँजावें।
देव करें गुणगान भक्ति से, मन में अति हर्षावें।।
श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसुधारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।41।।

ॐ ह्रीं देवदुंदुभि सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तीन छत्र शुभ रत्न जड़ित हैं, चन्द्र कांति छवि धारी।
तीन लोक की महिमा गावें, शुभ अतिशय सुखकारी।।
श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसुधारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।42।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रय सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

चार अनंत चतुष्टय

दर्श अनंत पाए जिनवर जी, सर्व लोक दर्शाये।
कर्म दर्शनावरणी नाशे, तिन पद शीश झुकाये।।
श्री अरहंत सकल परमातम, अनंत चतुष्टय धारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।43।।

ॐ ह्रीं अनंतदर्शन गुणप्राप्त श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरणी कर्म नाशकर, केवलज्ञान प्रकाशे।
सर्व लोक के ज्ञाता श्रीजिन, सर्व चराचर भासे।।
श्री अरहंत सकल परमातम, अनंत चतुष्टय धारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।44।।

ॐ ह्रीं अनंतज्ञान गुणप्राप्त श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहनीय को मोहित करके, ऐसा सबक सिखाया।
हार मान झुक गया चरण में, पास नहीं फिर आया।।
श्री अरहंत सकल परमातम, अनंत चतुष्टय धारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।45।।

ॐ ह्रीं अनंतसुख गुणप्राप्त श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तराय कर्मों के नाशी, जिन अर्हत् कहलाए।
निज आतम का ध्यान लगाकर, वीर्यानन्त प्रगटाए।।
श्री अरहंत सकल परमातम, अनंत चतुष्टय धारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।46।।

ॐ ह्रीं अनंतवीर्य गुणप्राप्त श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- छियालिस पाए मूलगुण, अजितनाथ भगवान।
विशद गुणों के हेतु हम, करते हैं गुणगान।।47।।

ॐ ह्रीं षट् चत्वारिंशद्गुणप्राप्त श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा- सकल गुणों के नाथ को, पूजे सकल समाज।
जयमाला गाते यहाँ, अजित नाथ पद आज।।

(छन्द-स्रग्विणी)

जय अजितनाथ मुक्ति के तुम नाथ हो, श्रेष्ठ आशीष तुम्हारा मेरे साथ हो।
पूर्ण हो नाथ मेरी मनोकामना, धर्म की हो मेरे हृदय में भावना।।
इन्द्र धरणेन्द्र मनुजेन्द्र तुम्हें ध्यावते, योगि नायक तुम्हारे ही गुण गावते।
पूर्ण हो नाथ मेरी मनोकामना, धर्म की हो मेरे हृदय में भावना।।
मोह के वश हो नाथ दुःख कई सहे, तीनों लोकों में हरदम भटकते रहे।
पूर्ण हो नाथ मेरी मनोकामना, धर्म की हो मेरे हृदय में भावना।।
चार गतियों के दुःख की कहें क्या कथा, आप सर्वज्ञ हो जानते सब व्यथा।
पूर्ण हो नाथ मेरी मनोकामना, धर्म की हो मेरे हृदय में भावना।।

धर्म से हीन हम जग भिखारी रहे, सौख्य की चाह में दुःख हमने सहे।
पूर्ण हो नाथ मेरी मनोकामना, धर्म की हो मेरे हृदय में भावना।।
धन्य सौभाग्य तव आज दर्शन मिला, कर कृपा दीजिए ज्ञान सूरज खिला।
पूर्ण हो नाथ मेरी मनोकामना, धर्म की हो मेरे हृदय में भावना।।
पञ्च कल्याणधारी जगत के विभु, श्रेष्ठ अतिशय जो पाए हैं तुमने प्रभु।
पूर्ण हो नाथ मेरी मनोकामना, धर्म की हो मेरे हृदय में भावना।।
कर्मघाती प्रभु आपने चउ हने, शुभ चतुष्टय के धारी तुम अर्हत् बने।
पूर्ण हो नाथ मेरी मनोकामना, धर्म की हो मेरे हृदय में भावना।।
हम करें भक्ति से आप आराधना, मोक्ष मारग की हो अब मेरी साधना।
पूर्ण हो नाथ मेरी मनोकामना, धर्म की हो मेरे हृदय में भावना।।
मुक्ति जब तक न हो हम न जाऐं कहीं, आपके पाद की भक्ति छूटे नहीं।
पूर्ण हो नाथ मेरी मनोकामना, धर्म की हो मेरे हृदय में भावना।।
बोधि का लाभ हो दर्श परिपूर्ण हो, वीर्य सम्यक्त्व का लाभ भी पूर्ण हो।
पूर्ण हो नाथ मेरी मनोकामना, धर्म की हो मेरे हृदय में भावना।।
धर्म चक्राधिपति आप जग बंद्य हो, लोक के प्राणियों से तुम अभिवंद्य हो।
पूर्ण हो नाथ मेरी मनोकामना, धर्म की हो मेरे हृदय में भावना।।
मुक्ति करना शुभम् लक्ष्य अपना रहा, हम बने तब चरण में पुजारी अहा।
पूर्ण हो नाथ मेरी मनोकामना, धर्म की हो मेरे हृदय में भावना।।

(छन्द : घत्तानन्द)

जय-जय श्री जिनवर घाति करम हर, शिव रमणी के शुभ भर्त्ता।
जय-जय केवल रवि, अतिशय तव छवि, मोक्ष मार्ग के हे कर्त्ता।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- अजितनाथ तव पाद में, झुका रहे हम माथ।
मुक्ती जब तक न मिले, सदा निभाना साथ।।

इत्याशीर्वादः ।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री 1008 अजितनाथ भगवान की आरती

ॐ जय अजितनाथ स्वामी, प्रभु अजितनाथ स्वामी।
आरति करके हम भी, बने मोक्षगामी।। ॐ जय.....

माघ सुदी दशमी को, तुमने जन्म लिया। प्रभु तुमने जन्म लिया।
मात विजयसेना जितशत्रु-2, को भी धन्य किया।। ॐ जय.....

नगर अयोध्या जन्मे, गज लक्षणधारी, स्वामी- गज लक्षणधारी।
आयु लाख बहत्तर पूरब-2, पाये मनहारी।। ॐ जय.....

साढ़े चार सौ धनुष प्रभु का, तन ऊँचा गाया- स्वामी- तन ऊँचा गाया
माघ सुदी दशमी को प्रभु ने-2, उत्तम तप पाया।। ॐ जय.....

पौष सुदी दशमी को, विशद ज्ञान पाए, प्रभु-विशद ज्ञान पाए
इन्द्र सभी आकर के-2, चरणों सिर नाए।। ॐ जय.....

चैत सुदी पाँचें को, शिव पदवी पाए-प्रभु शिव पदवी पाए।
गिरि सम्मेद शिखर को-2, यह जग सिर नाए।। ॐ जय.....

> है भरोसा आज भी गुरुदेव के आशीष पर।
> चाह जिसको धन की है करता भरोसा ईश पर।।
> भावना यह है हमारी जीवन में इतनी 'विशद'।
> छाँव हो गुरुदेव की शुभ बस हमारे शीश पर।।

श्री अजितनाथ चालीसा

दोहा- नमन् मेरा अरिहंत को, सिद्धों को भी साथ।
आचार्य उपाध्याय साधु को, झुका रहे हम माथ।।
जिनवाणी जिनधर्म जिन, चैत्यालय शुभकार।
अजितनाथ के पद युगल, वन्दन बारम्बार।।

(चौपाई)

जय जय अजितनाथ जिन स्वामी, हो स्वामी तुम अन्तर्यामी।
तुमने सर्व चराचर जाना, जैसा है उस रूप बखाना।।
आप हुए प्रभु केवलज्ञानी, कल्याणी प्रभु तेरी वाणी।
तुमने प्रभु शिवमार्ग दिखाया, आत्मबोध इस जग ने पाया।।
देवों के तुम देव कहाते, सारे जग में पूजे जाते।
विजय अनुत्तर है शुभकारी, चयकर आये हे त्रिपुरारी।।
जम्बूद्वीप लोक में गाया, भरत क्षेत्र उसमें बतलाया।
जिसमें कौशल देश बखाना, नगर अयोध्या अतिशय माना।।
जितशत्रु राजा कहलाए, रानी विजया देवी पाए।
ज्येष्ठ अमावस को जिन स्वामी, गर्भ में आये अन्तर्यामी।।
गर्भ नक्षत्र रोहिणी गाया, ब्रह्ममुहूर्त श्रेष्ठ बतलाया।
माघ शुक्ल दशमी शुभकारी, जन्म लिए जिनवर अविकारी।।
तभी इन्द्र का आसन डोला, लोगों ने जयकारा बोला।
आसन से तब उठकर आया, सप्त कदम चल शीश झुकाया।।
ऐरावत पर चढ़कर आया, साथ में शचि को अपने लाया।
मेरु गिरि पर लेकर जावें, पाण्डुक शिला पर न्हवन करावे।।
इन्द्र ने पद में शीश झुकाया, पग में गज लक्षण शुभ पाया।
हाथ अठारह सौ ऊँचाई, अजितनाथ के तन की गाई।।
लाख बहत्तर पूरब भाई, जिनवर ने शुभ आयू पाई।
उल्कापात देखकर स्वामी, दीक्षा धारे अन्तर्यामी।।

माघ शुक्ल नौमी दिन गाया, संध्याकाल का समय बताया।
देव पालकी सुप्रभ लाए, उसमें प्रभुजी को बैठाए।।
ले उद्यान सहेतुक आए, सप्त वर्ण तरु तल पहुँचाए।
केशलुंच कर वस्त्र उतारे, सहस मुनि सह दीक्षा धारे।।
वेलोपवास किए जिन स्वामी, ध्यान किए निज अन्तर्यामी।
ब्रह्मदत्त पड़गाहन कीन्हें, क्षीर खीर आहार जो दीन्हें।।
पूर्वांग हीन लख स्वामी, तप धारे मुक्ती पथ गामी।
पौष शुक्ल एकादशी पाए, केवलज्ञान प्रभु प्रगटाए।।
धनपति स्वर्ग से चलकर आया, समवशरण अनुपम बनवाया।
साढ़े ग्यारह योजन जानो, छियालिस कोष श्रेष्ठ पहिचानो।।
प्रातिहार्य से युक्त कहाए, पद्मासन में शोभा पाए।
नब्बे गणधर प्रभु के गाए, प्रथम केसरी सिंह कहाए।।
एक लाख मुनि संख्या गाई, श्रेष्ठ यक्षिणी अजिता गाई।
महायक्ष शुभ यक्ष बताया, श्रोता चक्री सगर कहाया।।
तीन लाख श्रावक शुभ जानो, पाँच लाख श्राविकाएँ मानो।
प्रभु सम्मेद शिखर पर आए, कूट सिद्धवर अतिशय पाये।।
योग निरोध प्रभु ने पाया, एक माह का समय बताया।
चैत शुक्ल पाँचे शुभ गाई, प्रातः तुमने मुक्ती पाई।।
कायोत्सर्गासन जिन पाए, सहस मुनि सह मोक्ष सिधाए।
प्रतिमाएँ कई मंगलकारी, रहीं लोक में अतिशयकारी।।
जिनका आलम्बन हम पाते, पद में सादर शीश झुकाते।
विशद भावना रही हमारी, शिवपद पाएँ मंगलकारी।।

सोरठा– पढ़े भाव के साथ, चालीसा चालीस दिन।
चरण झुकाए माथ, सुख–शांती सौभाग्य हो।।
पावे धन सन्तान, दीन दरिद्री होय जो।
विशद मिले सम्मान, नाम वंश यश भी बढ़े।।

प्रशस्ति

भरत क्षेत्र में श्रेष्ठ है, भारत जिसका नाम।
हरियाणा शुभ प्रांत है, ऋषि–मुनियों का धाम।।1।।
रेवाड़ी एक जिला है, जैनों का स्थान।
तीर्थ तिजारा के निकट, होता शोभावान।।2।।
पर्व अढ़ाई के समय, कीन्हा यहाँ प्रवास।
जैनपुरी के मध्य में, जैन भवन में खास।।3।।
रचना पूर्ण विधान की, हुई यहाँ पर आन।
अजितनाथ भगवान का, किया गया गुणगान।।4।।
दो हजार ग्यारह शुभम्, वर्षायोग के पूर्व।
कार्य हुआ यह श्रेष्ठ शुभ, अतिशय कार्य अपूर्व।।5।।
वीर निर्वाण पच्चीस सौ, सैंतीस रहा महान्।
दशमी शुक्ल आषाढ़ की, सोमवार दिन मान।।6।।
समय लगे शुभ योग में, लेखन कीन्हा कार्य।
पूजन भक्ति का शुभम, लाभ लेय सब आर्य।।7।।
लघु धी से जो भी लिखा, जानो उसे प्रमान।
भूल–चूक को भूलकर, करो धर्म का ध्यान।।8।।
अन्तिम यह है भावना, जीवन बने महान्।
सुख शांति सौभाग्य पा, हो सबका कल्याण।।9।।
अजितनाथ भगवान का, किया गया गुणगान।
गुण पाने के भाव से, रचना हुई महान।।10।।
भाव रहे मेरे शुभम्, यही भावना नाथ।
तीन योग से तव चरण, झुका रहे हम माथ।।11।।

विशद
संभवनाथ विधान

मध्य में	-	ॐ
प्रथम	-	4
द्वितीय	-	8
तृतीय	-	16
चतुर्थ	-	32
पञ्चम	-	64

रचयिता : प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

संभवनाथ स्तवन

(शम्भू छन्द)

संभवनाथ जिनेश्वर जग में, संभव करते सारे काम।
चरण शरण को जो पा लेता, उसको मिलते चारों धाम।।
इन्द्रादि से वन्दनीय हैं, ऋषियों से भी पूज्य त्रिकाल।
कर्म बन्ध से रहित हुए हैं, सभी काटते कर्म कराल।।1।।

दिनकर किरण तिमिर को जैसे, कर देती निर्मूल अहा।
देह कांति का तीन लोक में, फैला श्रेष्ठ प्रकाश रहा।।
बाह्य तिमिर की नाशक रवि की, कांति फैले चारों ओर।
ज्ञान दीप की अतिशय आभा, करती जग को भाव-विभोर।।2।।

अद्‌भुत परम तेज के धारी, श्री जिनेन्द्र हैं परम पवित्र।
सर्व जगत् से भिन्न हैं लेकिन, हैं जिनेन्द्र जन-जन के मित्र।।
श्री जिनेन्द्र जिनवर का शासन, तीन लोक में रहा महान्।
जिन शासन का धारी बनता, सर्व लोक में सर्व प्रधान।।3।।

पाप और पापी इस जग के, प्रभु से रहते हरदम दूर।
चरण-शरण में आते हैं जो, शुभ भावों से हों भरपूर।।
भव्य जीव चरणों में नत हो, करते बार-बार यशगान।
पावन कर दो मेरा भी मन, करुणाकर मेरे भगवान।।4।।

सारे जग में गूँज रही है, तव वाणी की शुभ झंकार।
तन-मन-धन के स्रोत प्राप्त हों, तव अर्चा से अपरम्पार।।
तुम हो एक अलौकिक स्वामी, भवि जीवों के तारणहार।
अतः विशद तव चरण हृदय में, धारण करते मंगलकार।।5।।

दोहा- सम्भव जिन की भक्ति से, होते सारे काम।
सुख-शांति सौभाग्य शुभ, पाने विशद प्रणाम।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री संभवनाथ पूजन

(स्थापना)

विशद भाव से पूजा करने, जिन मंदिर में आते हैं।
सम्भव जिन की पूजा करके, जीवन सफल बनाते हैं।।
जिन पद का आराधन करके, अतिशय पुण्य कमाते हैं।
आह्वानन करके निज उर में, सादर शीश झुकाते हैं।।
हे नाथ ! कृपाकर भक्तों को, मुक्ती का मार्ग दिखा जाओ।
हम भव सागर में डूब रहे, अब पार कराने को आओ।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(वेसरी छन्द)

प्रासुक जल के कलश भराए, चरण चढ़ाने को हम लाए।
जन्म जरा मृत्यु भयकारी, नाश होय प्रभु शीघ्र हमारी।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केसर घिसकर लाए, चरण शरण में हम भी आए।
विशद भावना हम यह भाए, भव संताप नाश हो जाए।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धोकर अक्षत थाल भराए, जिन अर्चा को हम ले आए।
हम भी अक्षय पद पा जाएँ, चतुर्गति में न भटकाएँ।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

चावल रंग कर पुष्प बनाए, हमको जरा नहीं वह भाए।
यहाँ चढ़ाने को हम लाए, काम वासना मम नश जाए।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रस यह नैवेद्य बनाए, बार-बार खाके पछताए।
क्षुधा शांत न हुई हमारी, नाश करो तुम हे ! त्रिपुरारी।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय घृत के दीप जलाए, यहाँ आरती करने लाए।
छाया मोह महातम भारी, उससे मुक्ति होय हमारी।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मबन्ध करते हम आए, भव-भव में कई दुःख उठाए।
धूप जलाने को हम लाए, कर्म नाश करने हम आए।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय हमने न पाया, तीन लोक में भ्रमण कराया।
सरस चढ़ाने को फल लाए, मोक्ष महाफल पाने आए।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म विशद है मंगलकारी, हम भी उसके हैं अधिकारी।
पद अनर्घ पाने को आए, अर्घ्य चढ़ाने को हम लाए।।

प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

फाल्गुन शुक्ल अष्टमी को प्रभु, सम्भव जिन अवतार लिये।
मात सुसेना के उर आए, जग-जन का उपकार किये।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को प्रभु, जन्मे सम्भव जिन तीर्थेश।
न्हवन और पूजन करवाये, इन्द्र सभी मिलकर अवशेष।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला पूर्णिमायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसिर सुदी पूर्णमासी को, संभव जिन वैराग्य लिए।
निज स्वजन और परिजन सारे, वैभव से नाता तोड़ दिए।।
हम चरणों में वन्दन करते, मम् जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला पूर्णिमायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

चौथ कृष्ण कार्तिक की जानो, संभवनाथ जिनेश्वर मानो।
केवलज्ञान प्रभु प्रगटाए, सुर-नर वंदन करने आए।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा चतुर्थ्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठी सुदि चैत्र की आई, गिरि सम्मेद शिखर से भाई।
संभव जिनवर मुक्ती पाए, हम चरणों में शीश झुकाए।।

प्रभु चरणों हम अर्घ्य चढ़ाते, शुभ भावों से महिमा गाते।
हम भी मोक्ष कल्याणक पाएँ, अन्तिम यही भावना भाएँ।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला षष्ठम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – सम्भव नाथ जिनेन्द्र के, चरणों में चितधार।
जयमाला गाते विशद, पाने भव से पार।।

(छन्द चामर)

पूर्व पुण्य का सुफल, जिनेन्द्र देव धारते।
तीर्थंकर श्रेष्ठ पद, आप जो सम्हालते।।
पुष्प वृष्टि देव आन, करते हैं भाव से।
जन्म समय इन्द्र सभी, न्हवन करें चाव से।।
चिन्ह देख इन्द्र पग, नाम जो उच्चारते।
जय जय की ध्वनि तब, इन्द्र गण पुकारते।।
क्षुद्र सा निमित्त पाय, संयम प्रभु धारते।
चेतन का चिन्तन शुभ, चित्त से विचारते।।
विश्व वन्दनीय जो, पाप शेष नाशते।
ॐकार रूप दिव्य, देशना प्रकाशते।।
श्री जिनेन्द्र ज्ञान ज्ञेय, सर्व लोक जानते।
द्रव्य तत्त्व पुण्य पाप, धर्म को बखानते।।
सर्व दोष भागते हैं, दूर-दूर आपसे।
सर्व दुःख दूर हों, आप नाम जाप से।।
आप सर्व लोक में, अनाथ के भी नाथ हो।
ध्यान करें आपका, उन सबके तुम साथ हो।।
इन्द्र और नरेन्द्र और, गणेन्द्र आपको भजैं।
सर्वलोक वर्ति जीव, चरण आपके जजैं।।

आपके चरणारविन्द, में करूँ ये प्रार्थना।
तीन काल आपकी, प्राप्त हो आराधना।।
हे जिनेन्द्र ! ध्यान दो, ज्ञान दो वरदान दो।
कर रहे हम प्रार्थना, प्रार्थना पे ध्यान दो।।
लोक यह अनन्त है, अनन्त का न अन्त है।
जीव ज्ञानवन्त है, शक्ति से भगवन्त है।।
ज्ञान का प्रकाश हो, मोह तिमिर नाश हो।
स्वस्वरूप प्राप्त हो, स्वयं में निवास हो।।
धर्म शुक्ल ध्यान हो, आत्मा का भान हो।
सर्व कर्म हान हो, स्वयं की पहचान हो।।
घातिया हों कर्म नाश, होय ज्ञान का प्रकाश।
अष्ट गुण प्राप्त कर, शिवपुर में होय वास।।
भावना है यह जिनेश, और नहीं कोई शेष।
धर्म जैन है विशेष, सब अधर्म है अशेष।।

(छन्द घत्तानन्द)

सम्भव जिन स्वामी, अन्तर्यामी, मोक्ष मार्ग के पथगामी।
शिवपुर के वासी, ज्ञान प्रकाशी, त्रिभुवन पति हे जगनामी!।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - पुष्प समर्पित कर रहे, जिनवर के पदमूल।
मोक्ष महल की राह में, हो जाओ अनुकूल।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

प्रथम वलयः

दोहा- अनन्त चतुष्टय प्राप्त कर, हुए श्री के नाथ।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, चरण झुकाते माथ।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

विशद भाव से पूजा करने, जिन मंदिर में आते हैं।
सम्भव जिन की पूजा करके, जीवन सफल बनाते हैं।।
जिन पद का आराधन करके, अतिशय पुण्य कमाते हैं।
आह्वानन करके निज उर में, सादर शीश झुकाते हैं।।
हे नाथ ! कृपाकर भक्तों को, मुक्ती का मार्ग दिखा जाओ।
हम भव सागर में डूब रहे, अब पार कराने को आओ।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

ज्ञानावर्ण कर्म के नाशी, जान रहे हैं लोकालोक।
ज्ञानानन्त प्रभुजी पाए, इन्द्र चरण में देते ढ़ोक।।
सम्भव जिन के चरण कमल में, पूजन करते अपरम्पार।
विशद भाव से वन्दन करते, नत होकर के बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं **अनन्तज्ञान** प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकालोक द्रव्यषट् गतियाँ, देख रहे जो भली प्रकार।
कर्म दर्शनावर्ण नाशकर, दर्शानन्त पाए मनहार।।
सम्भव जिन के चरण कमल में, पूजन करते अपरम्पार।
विशद भाव से वन्दन करते, नत होकर के बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं **अनन्तदर्शन** प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महामोह मिथ्या कषाय का, नाश किए हैं जिन अर्हन्त।
सुख अनन्त को पाने वाले, हुए लोक में जिन भगवन्त।।
सम्भव जिन के चरण कमल में, पूजन करते अपरम्पार।
विशद भाव से वन्दन करते, नत होकर के बारम्बार।।3।।

ॐ ह्रीं **अनन्तसुख** प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तराय कर्मों के नाशी, प्राप्त किए हैं वीर्य अनन्त।
ज्ञानादि सद्गुण के धारी, आप बने जग में गुणवन्त।।
सम्भव जिन के चरण कमल में, पूजन करते अपरम्पार।
विशद भाव से वन्दन करते, नत होकर के बारम्बार।।4।।

ॐ ह्रीं **अनन्तवीर्य** प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्त चतुष्टय पाने वाले, हुए लोक में आप महान्।
कर्म घातिया नाश किए फिर, बने लोक में आप प्रधान।।
सम्भव जिन के चरण कमल में, पूजन करते अपरम्पार।
विशद भाव से वन्दन करते, नत होकर के बारम्बार।।5।।

ॐ ह्रीं **अनन्तचतुष्टय** प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा- प्रातिहार्य प्रगटाए हैं, पाकर केवलज्ञान।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पाने पद निर्वाण।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

विशद भाव से पूजा करने, जिन मंदिर में आते हैं।
सम्भव जिन की पूजा करके, जीवन सफल बनाते हैं।।
जिन पद का आराधन करके, अतिशय पुण्य कमाते हैं।
आह्वानन करके निज उर में, सादर शीश झुकाते हैं।।
हे नाथ ! कृपाकर भक्तों को, मुक्ती का मार्ग दिखा जाओ।
हम भव सागर में डूब रहे, अब पार कराने को आओ।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौपाई छंद)

तरु अशोक तल में भगवान, उज्ज्वल तन अति शोभावान।
मेघ निकट दिनकर के होय, उस भाँति दिखते प्रभु सोय।।

सम्भव जिन तीर्थेश महान्, सुर-नर सब करते गुणगान।
पूज रहे पद बारम्बार, अर्चा करते मंगलकार।।1।।

ॐ ह्रीं **अशोक तरु** प्रातिहार्ययुक्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय सिंहासन पर देव, तव मन शोभे स्वर्णिम एव।
रवि का उदयाचल पर रूप, उदित सूर्य सम दिखे स्वरूप।।
सम्भव जिन तीर्थेश महान्, सुर-नर सब करते गुणगान।
पूज रहे पद बारम्बार, अर्चा करते मंगलकार।।2।।

ॐ ह्रीं **सिंहासन** प्रातिहार्ययुक्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ढुरते चामर शुक्ल विशेष, स्वर्णिम शोभित है तव भेष।
ज्यों मेरु पर बहती धार, स्वर्णमयी पर्वत मनहार।।
सम्भव जिन तीर्थेश महान्, सुर-नर सब करते गुणगान।
पूज रहे पद बारम्बार, अर्चा करते मंगलकार।।3।।

ॐ ह्रीं **चतुःषष्ठि चँवर** प्रातिहार्ययुक्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन छत्र तिय लोक समान, मणिमय शशि सम शोभावान।
सूर्य ताप का करे विनाश, श्री जिन के गुण करें प्रकाश।।
सम्भव जिन तीर्थेश महान्, सुर-नर सब करते गुणगान।
पूज रहे पद बारम्बार, अर्चा करते मंगलकार।।4।।

ॐ ह्रीं **छत्रत्रय** प्रातिहार्ययुक्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश दिशि ध्वनि गूँजें गम्भीर, जय घोषक जिनवर की धीर।
तीन लोक में अति सुखदाय, सुयश दुन्दुभि बाजा गाय।।
सम्भव जिन तीर्थेश महान्, सुर-नर सब करते गुणगान।
पूज रहे पद बारम्बार, अर्चा करते मंगलकार।।5।।

ॐ ह्रीं **दुन्दुभि** प्रातिहार्ययुक्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंद मरुत गंधोदक सार, सुर-गुरु सुमन अनेक प्रकार।
दिव्य वचन श्री मुख से खिरे, पुष्प वृष्टि नभ से ज्यों झरे।।

सम्भव जिन तीर्थेश महान्, सुर-नर सब करते गुणगान।
पूज रहे पद बारम्बार, अर्चा करते मंगलकार।।6।।

ॐ ह्रीं **पुष्पवृष्टि** प्रातिहार्ययुक्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिजग कांति फीकी पड़ जाय, भामण्डल की शोभा पाय।
चन्द्र कांति सम शीतल होय, सारे जग का आतप खोय।।
सम्भव जिन तीर्थेश महान्, सुर-नर सब करते गुणगान।
पूज रहे पद बारम्बार, अर्चा करते मंगलकार।।7।।

ॐ ह्रीं **भामण्डल** प्रातिहार्ययुक्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ग मोक्ष की राह दिखाय, द्रव्य तत्त्व गुण को प्रगटाय।
दिव्य ध्वनि है 'विशद' अनूप, ॐकार सब भाषा रूप।।
सम्भव जिन तीर्थेश महान्, सुर-नर सब करते गुणगान।
पूज रहे पद बारम्बार, अर्चा करते मंगलकार।।8।।

ॐ ह्रीं **दिव्य ध्वनि** प्रातिहार्ययुक्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रातिहार्य प्रगटाए अष्ट, मिटा रहे इस जग के कष्ट।
प्रभु की भक्ति अपरम्पार, करने वाली भव से पार।।
सम्भव जिन तीर्थेश महान्, सुर-नर सब करते गुणगान।
पूज रहे पद बारम्बार, अर्चा करते मंगलकार।।9।।

ॐ ह्रीं अष्ट प्रातिहार्य प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः

दोहा- सोलह विद्या देवियाँ, पूजा करें विशाल।
भक्ति भाव से वंदना, जिन पद करें त्रिकाल।।

(तृतीय मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

विशद भाव से पूजा करने, जिन मंदिर में आते हैं।
सम्भव जिन की पूजा करके, जीवन सफल बनाते हैं।।

जिन पद का आराधन करके, अतिशय पुण्य कमाते हैं।
आह्वानन करके निज उर में, सादर शीश झुकाते हैं।।
हे नाथ ! कृपाकर भक्तों को, मुक्ती का मार्ग दिखा जाओ।
हम भव सागर में डूब रहे, अब पार कराने को आओ।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छंद)

श्री जिनेन्द्र की रही सेविका, देवी रहा रोहणी नाम।
विद्या देवी प्रथम कहाई, है प्रभावना जिसका काम।।
हे देवी ! जिन अर्चा करने, को हम करते हैं आह्वान।
सब विघ्नों को दूर करो तुम, करो प्रभू का शुभ गुणगान।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री रोहिणीदेवि !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्व वाहिनी श्रेष्ठ सुन्दरी, प्रज्ञप्ती है जिसका नाम।
जिन अर्चा करने में तत्पर, रहती है जो आठों याम।।
हे देवी ! जिन अर्चा करने, को हम करते हैं आह्वान।
सब विघ्नों को दूर करो तुम, करो प्रभू का शुभ गुणगान।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री प्रज्ञप्तिदेवि !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गज वाहन है जिसका अनुपम, वज्र श्रृंखला है शुभ नाम।
चतुर्दिशा के विघ्न विनाशे, चतुर्भुजा युत करें प्रणाम।।
हे देवी ! जिन अर्चा करने, को हम करते हैं आह्वान।
सब विघ्नों को दूर करो तुम, करो प्रभू का शुभ गुणगान।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री वज्रश्रृंखलादेवि !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वज्रांकुश है कमल वासिनी, जिन रक्षा है जिसका काम।
ब्रह्मचारिणी वत् सात्विक है, जिनपद में नित करे प्रणाम।।
हे देवी ! जिन अर्चा करने, को हम करते हैं आह्वान।
सब विघ्नों को दूर करो तुम, करो प्रभू का शुभ गुणगान।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री वज्रांकुशादेवि !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनशासन की भक्त जामुन्दा, अप्रतिचक्रा भी है नाम।
जिनशासन रक्षा में तत्पर, जरा नहीं लेती विश्राम।।
हे देवी ! जिन अर्चा करने, को हम करते हैं आह्वान।
सब विघ्नों को दूर करो तुम, करो प्रभू का शुभ गुणगान।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री अप्रतिचक्रादेवि !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नित्य करे पुरुषार्थ भाव से, जिन पूजा में आठों याम।
रूप सुन्दरी देवी अनुपम, श्रेष्ठ पुरुषदत्ता है नाम।।
हे देवी ! जिन अर्चा करने, को हम करते हैं आह्वान।
सब विघ्नों को दूर करो तुम, करो प्रभू का शुभ गुणगान।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री पुरुषदत्तादेवि !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्ण श्याम है जिसके तन का, काली देवी जिसका नाम।
भक्त वत्सला है जिनेन्द्र की, सिंहवाहिनी करे प्रणाम।।
हे देवी ! जिन अर्चा करने, को हम करते हैं आह्वान।
सब विघ्नों को दूर करो तुम, करो प्रभू का शुभ गुणगान।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री कालीदेवि !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धनुष बाण लेकर चलती है, खड्ग शोभता जिसके हाथ।
फल अर्पित कर महाकाली जिन, चरणों नित्य झुकाए माथ।।
हे देवी ! जिन अर्चा करने, को हम करते हैं आह्वान।
सब विघ्नों को दूर करो तुम, करो प्रभू का शुभ गुणगान।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री महाकालीदेवि !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई छन्द)

गौरी गौर वर्ण की जानो, जिनशासन की रक्षक मानो।
जिन अर्चा करने को आओ, भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाओ।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री गौरीदेवि !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैन धर्म गांधारी धारे, खड्ग ढाल निज हाथ सम्हारे।
जिन अर्चा करने को आओ, भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाओ।।10।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री गांधारीदेवि !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्वालामालिनी नाम बताया, मेढ़ा वाहन जिसका गाया।
जिन अर्चा करने को आओ, भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाओ।।11।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री ज्वालामालिनीदेवि !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवी श्रेष्ठ मानवी जानो, धर्म रक्षिका जिसको मानो।
जिन अर्चा करने को आओ, भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाओ।।12।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री मानवीदेवि !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बैरोटी विघ्नों को नाशे, जैन धर्म को नित्य प्रकाशे।
जिन अर्चा करने को आओ, भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाओ।।13।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री बैरोटीदेवि !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम अच्युता प्यारा-प्यारा, जिसने जैन धर्म को धारा।
जिन अर्चा करने को आओ, भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाओ ।।14 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री अच्युतादेवि !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवी कही मानसी प्यारी, नाग है जिसकी श्रेष्ठ सवारी।
जिन अर्चा करने को आओ, भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाओ ।।15 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री मानसीदेवि !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महामानसी नाम बताया, हंसवाहिनी जिसको गाया।
जिन अर्चा करने को आओ, भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाओ ।।16 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री महामानसीदेवि !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सोलह विद्या देवियाँ, विघ्न करें सब दूर।
अर्घ्य चढ़ा पूजा करें, भावों से भरपूर ।।17 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री षोडश विद्यादेवि !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा- सौधर्मादि देव सब, इन्द्र प्रतीन्द्र महान्।
लौकान्तिक भी जिन प्रभू, का करते गुणगान ।।

(चतुर्थ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

विशद भाव से पूजा करने, जिन मंदिर में आते हैं।
सम्भव जिन की पूजा करके, जीवन सफल बनाते हैं।।
जिन पद का आराधन करके, अतिशय पुण्य कमाते हैं।
आह्वानन करके निज उर में, सादर शीश झुकाते हैं।।

हे नाथ ! कृपाकर भक्तों को, मुक्ती का मार्ग दिखा जाओ।
हम भव सागर में डूब रहे, अब पार कराने को आओ।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(जोगीरासा-छन्द)

सौधर्मेन्द्र स्वर्ग से चलकर, ऐरावत पर आवे।
विशद भाव से सम्भव जिनपद, श्रीफल श्रेष्ठ चढ़ावे ।।
संभवनाथ के पद पंकज, में पूजा श्रेष्ठ रचाते।
प्रमुदित होकर भक्ति भाव से, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते ।।1 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री सौधर्म इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गजारुढ़ ईशान इन्द्र शुभ, पूंगी फल ले आवे।
विशद भाव से सम्भव जिनके, पद में श्रेष्ठ चढ़ावे ।।
संभवनाथ के पद पंकज, में पूजा श्रेष्ठ रचाते।
प्रमुदित होकर भक्ति भाव से, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते ।।2 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री ईशान इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सनत इन्द्र सुकुण्डल मण्डित, सिंहारुढ़ हो आवे।
आम्र फलों के गुच्छे लाकर, चरणों श्रेष्ठ चढ़ावे ।।
संभवनाथ के पद पंकज, में पूजा श्रेष्ठ रचाते।
प्रमुदित होकर भक्ति भाव से, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते ।।3 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री सनतकुमारइन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्वारुढ़ माहेन्द्र इन्द्र भी, केले लेकर आवे।
विशद भाव से सम्भव जिन के, पद में श्रेष्ठ चढ़ावे ।।

संभवनाथ के पद पंकज, में पूजा श्रेष्ठ रचाते।
प्रमुदित होकर भक्ति भाव से, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री माहेन्द्र इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हंस पे चढ़कर ब्रह्म इन्द्र भी, पुष्प केतकी लावे।
विशद भाव से सम्भव जिन के, पद में श्रेष्ठ चढ़ावे।।
संभवनाथ के पद पंकज, में पूजा श्रेष्ठ रचाते।
प्रमुदित होकर भक्ति भाव से, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री ब्रह्मेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य फलों के थाल सजाकर, लान्तवेन्द्र पद आवे।
विशद भाव से चरण कमल की, अर्चा कर हर्षावे।।
संभवनाथ के पद पंकज, में पूजा श्रेष्ठ रचाते।
प्रमुदित होकर भक्ति भाव से, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री लान्तवेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्र इन्द्र चकवा पर चढ़कर, पुष्प सेवन्ती लावे।
विशद भाव से चरण कमल की, अर्चा कर हर्षावे।।
संभवनाथ के पद पंकज, में पूजा श्रेष्ठ रचाते।
प्रमुदित होकर भक्ति भाव से, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री शुक्रेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शतारेन्द्र कोयल वाहन पर, चढ़कर जिनपद आवे।
नील कमल के गुच्छे लाकर, चरणों श्रेष्ठ चढ़ावे।।
संभवनाथ के पद पंकज, में पूजा श्रेष्ठ रचाते।
प्रमुदित होकर भक्ति भाव से, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री शतारेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गरुड़ारुढ़ इन्द्र आनत पद, पनस फलों को लावे।
निज परिवार सहित भक्ति से, पूजा कर हर्षावे।।
संभवनाथ के पद पंकज, में पूजा श्रेष्ठ रचाते।
प्रमुदित होकर भक्ति भाव से, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री आनतेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्म विमानारुढ़ भक्ति से, प्राणतेन्द्र भी आवे।
तुम्बरु फल लाकर के अनुपम, पूजा श्रेष्ठ रचावे।।
संभवनाथ के पद पंकज, में पूजा श्रेष्ठ रचाते।
प्रमुदित होकर भक्ति भाव से, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते।।10।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री प्राणतेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आरणेन्द्र चढ़ कुमुद यान पर, गन्ने लेकर आवे।
निज परिवार सहित भक्ति से, पूजा श्रेष्ठ रचावे।।
संभवनाथ के पद पंकज, में पूजा श्रेष्ठ रचाते।
प्रमुदित होकर भक्ति भाव से, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते।।11।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री आरणेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अच्युतेन्द्र चढ़कर मयूर पर, धवल चँवर ले आवे।
चौसठ चँवर ढुरावे पद में, गीत भक्ति के गावे।।
संभवनाथ के पद पंकज, में पूजा श्रेष्ठ रचाते।
प्रमुदित होकर भक्ति भाव से, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते।।12।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री अच्युतेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ग के प्रतीन्द्र

(जोगीरासा-छन्द)

प्रति इन्द्र सौधर्म स्वर्ग से, जिन अर्चा को आवे।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, मन में बहु हर्षावे।।13।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री सौधर्म प्रतीन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रति इन्द्र ईशान स्वर्ग से, आके पूज रचावे।
अष्ट द्रव्य लेकर हाथों में, खुश हो नाचे गावे।।14।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री ईशान प्रतीन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रति इन्द्र सानत कुमार भी, भाव सहित गुण गावे।
पूजा करके श्री जिनेन्द्र की, चरणों शीश झुकावे।।15।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री सानतकुमार प्रतीन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रति इन्द्र माहेन्द्र स्वर्ग से, द्रव्य संजोकर लावे।
पूजा करे भाव से आके, नाचे हर्ष मनावे।।16।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री माहेन्द्र प्रतीन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रति इन्द्र ब्रह्मोत्तर आके, पूजा श्रेष्ठ रचावे।
निज परिवार सहित भक्ति से, नाच-नाच गुण गावे।।17।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री ब्रह्मोत्तर प्रतीन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रति इन्द्र कापिष्ठ स्वर्ग से, दिव्य पदारथ लावे।
नव कोटी से भाव बनाकर, महिमा गाने आवे।।18।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री कापिष्ठ प्रतीन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाशुक्र आवे प्रतीन्द्र भी, अतिशय भक्ति बढ़ावे।
चरण कमल की अर्चा करके, भक्ति में खो जावे।।19।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री महाशुक्र प्रतीन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहस्रार आके प्रतीन्द्र जिन, चरण कमल को ध्यावे।
करे अर्चना निज शक्ति से, सादर शीश झुकावे।।20।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री सहस्रार प्रतीन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

आनत स्वर्ग वासी प्रतीन्द्र जिन, चरण कमल में आता है।
पूजा करता है भक्ति से, जिनवर के गुण गाता है।।21।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री आनत प्रतीन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणत स्वर्ग वासी प्रतीन्द्र शुभ, द्रव्य सजाकर लाता है।
निज परिवार सहित पूजा कर, चरणों शीश झुकाता है।।22।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री प्राणत प्रतीन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आरण स्वर्ग वासी प्रतीन्द्र निज, वाहन साथ में लाता है।
शक्तिसः पूजा अर्चा कर, पावन द्रव्य चढ़ाता है।।23।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री आरण प्रतीन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणत स्वर्गवासी प्रतीन्द्र निज, वाहन साथ में लाता है।
दर्शन करते ही जिनवर का, चरणों में झुक जाता है।।24।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री प्राणत प्रतीन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकान्तिक देव

ब्रह्मलोक वासी सारस्वत, देव प्रभु चरणों आवें।
जिनवर के वैराग्य समय पर, अनुमोदन कर सुख पावें।।
भाव सहित प्रभु अर्चा करके, श्री जिनेन्द्र के गुण गावें।
विशद भाव से पूजा करके, जिन चरणों में सिर नावें।।25।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री सारस्वत देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकान्तिक आदित्य देव शुभ, जिन अर्चा करने आवें।
दिनकर की भाँति पूरब में, अपनी आभा बिखरावें।।
भाव सहित प्रभु अर्चा करके, श्री जिनेन्द्र के गुण गावें।
विशद भाव से पूजा करके, जिन चरणों में सिर नावें।।26।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री आदित्य देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि देव आग्नेय कोण से, भाव बनाकर के आवें।
ब्रह्मलोक में रहने वाले, ब्रह्म ऋषि शुभ कहलावें।।
भाव सहित प्रभु अर्चा करके, श्री जिनेन्द्र के गुण गावें।
विशद भाव से पूजा करके, जिन चरणों में सिर नावें।।27।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री अग्नि देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरुण देव लौकान्तिक भाई, आके जिनपद झुक जावें।
कर प्रणाम चरणों में प्रभु के, नित्य नये मंगल गावें।।
भाव सहित प्रभु अर्चा करके, श्री जिनेन्द्र के गुण गावें।
विशद भाव से पूजा करके, जिन चरणों में सिर नावें।।28।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री अरुण देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्दतोय लौकान्तिक आके, करते वन्दन बारम्बार।
भव्य भावना बारह भाते, प्रभु के चरणों में शुभकार।।
भाव सहित प्रभु अर्चा करके, श्री जिनेन्द्र के गुण गावें।
विशद भाव से पूजा करके, जिन चरणों में सिर नावें।।29।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री गर्दतोय देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुषित देव लौकान्तिक भाई, गुण गाते हैं मंगलकार।
ब्रह्मऋषि कहलाने वाले, करें अर्चना अपरम्पार।।
भाव सहित प्रभु अर्चा करके, श्री जिनेन्द्र के गुण गावें।
विशद भाव से पूजा करके, जिन चरणों में सिर नावें।।30।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री तुषित देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अव्याबाध सभी बाधाएँ, करते हैं आकर के दूर।
लौकान्तिक यह देव प्रभु, की भक्ति करते हैं भरपूर।।
भाव सहित प्रभु अर्चा करके, श्री जिनेन्द्र के गुण गावें।
विशद भाव से पूजा करके, जिन चरणों में सिर नावें।।31।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री अव्याबाध देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवारिष्ट कहे लौकान्तिक, ब्रह्मलोक वासी शुभकार।
उत्तर दिशा से आने वाले, वन्दन करते बारम्बार।।
भाव सहित प्रभु अर्चा करके, श्री जिनेन्द्र के गुण गावें।
विशद भाव से पूजा करके, जिन चरणों में सिर नावें।।32।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री अरिष्ट देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश इन्द्र प्रतीन्द्र साथ ही, लौकान्तिक भी अष्ट प्रकार।
जिनपूजा भक्ति में तत्पर, रहते हैं जो बारम्बार।।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चढ़ा रहे हैं हम अभिराम।
विशद भाव से शीश झुकाकर, करते बारम्बार प्रणाम।।33।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **इन्द्र, प्रतीन्द्र, लौकान्तिक देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम वलयः

दोहा- इन्द्र भवन वासी तथा, व्यन्तर नवग्रह देव।
द्वारपाल तिथि देव सब, जिनपद झुकें सदैव।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

विशद भाव से पूजा करने, जिन मंदिर में आते हैं।
सम्भव जिन की पूजा करके, जीवन सफल बनाते हैं।।
जिन पद का आराधन करके, अतिशय पुण्य कमाते हैं।
आह्वानन करके निज उर में, सादर शीश झुकाते हैं।।
हे नाथ ! कृपाकर भक्तों को, मुक्ती का मार्ग दिखा जाओ।
हम भव सागर में डूब रहे, अब पार कराने को आओ।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

प्रथम इन्द्र भवनालय वासी, असुर कुमार कहलाता है।
निज परिवार सहित भक्ती से, जिन पूजा को आता है।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **असुरकुमार इन्द्र** ! पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम इन्द्र भवनालय वासी, नाग कुमार कहलाता है।
निज परिवार सहित भक्ती से, जिन पूजा को आता है।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **नागकुमार इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम इन्द्र भवनालय वासी, विद्युत कुमार कहलाता है।
निज परिवार सहित भक्ती से, जिन पूजा को आता है।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **विद्युतकुमार इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम इन्द्र भवनालय वासी, सुपर्ण कुमार कहलाता है।
निज परिवार सहित भक्ती से, जिन पूजा को आता है।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **सुपर्णकुमार इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम इन्द्र भवनालय वासी, अग्नि कुमार कहलाता है।
निज परिवार सहित भक्ती से, जिन पूजा को आता है।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **अग्निकुमार इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(जोगीरासा छन्द)

प्रथम इन्द्र भवनालय वासी, वात कुमार कहावे।
दिव्य द्रव्य की रचना करके, पूजा कर हर्षावे।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **वातकुमार इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम इन्द्र भवनालय वासी, स्तनित कुमार कहावे।
दिव्य द्रव्य की रचना करके, पूजा कर हर्षावे।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **स्तनितकुमार इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम इन्द्र भवनालय वासी, उदधि कुमार कहावे।
दिव्य द्रव्य की रचना करके, पूजा कर हर्षावे।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **उदधिकुमार इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम इन्द्र भवनालय वासी, दीप कुमार कहावे।
दिव्य द्रव्य की रचना करके, पूजा कर हर्षावे।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **दीपकुमार इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम इन्द्र भवनालय वासी, दिक् कुमार कहलावे।
दिव्य द्रव्य की रचना करके, पूजा कर हर्षावे।।10।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **दिक्कुमार इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

द्वितीय इन्द्र असुर देवों के, भवनालय से आते हैं।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, पूजा श्रेष्ठ रचाते हैं।।11।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **असुरदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय नागकुमार इन्द्र भी, जिन चरणों में आते हैं।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, पूजा श्रेष्ठ रचाते हैं।।12।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **नागकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय विद्युत देव कुमार शुभ, जिन अर्चा को आते हैं।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, पूजा श्रेष्ठ रचाते हैं।।13।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **विद्युतदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुपर्ण कुमार देव द्वितिय भी, जिनवर के गुण गाते हैं।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, पूजा श्रेष्ठ रचाते हैं।।14।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **सुपर्णकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि कुमार देव द्वितिय जिन, चरण शरण में आते हैं।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, पूजा श्रेष्ठ रचाते हैं।।15।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **अग्निकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(जोगीरासा छन्द)

वात कुमार देव जिन चरणों, सुरभित पवन बहावे।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, पूजा श्रेष्ठ रचावे।।16।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **वातकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय स्तनित कुमार शरण में, नित प्रति मंगल गावे।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, पूजा श्रेष्ठ रचावे।।17।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **स्तनितकुमार !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय उदधि कुमार मेघ से, रिमझिम जल बरसावे।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, पूजा श्रेष्ठ रचावे।।18।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **उदधिकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय दीप कुमार देव शुभ, जग-मग ज्योति जगावे।
अष्ट द्रव्य का का थाल सजाकर, पूजा श्रेष्ठ रचावे।।19।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **दीपकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय दिक्कुमार जिन चरणों, भाव सहित सिरनावे।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, पूजा श्रेष्ठ रचावे।।20।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **दिक्ककुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यन्तर इन्द्रों से पूज्य जिनेन्द्र (शम्भू छन्द)

निज परिवार सहित व्यन्तर के, किन्नरेन्द्र पद आते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, सादर शीश झुकाते हैं।।21।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **किन्नरेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित व्यन्तर के, इन्द्र किम्पुरुष आते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, सादर शीश झुकाते हैं।।22।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **किम्पुरुष देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित व्यन्तर के, महोरगेन्द्र पद आते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, सादर शीश झुकाते हैं।।23।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **महोरगेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित व्यन्तर के, गन्धर्वेन्द्र पद आते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, सादर शीश झुकाते हैं।।24।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **गन्धर्वेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित व्यन्तर के, यक्ष इन्द्र पद आते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, सादर शीश झुकाते हैं।।25।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **यक्ष इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित व्यन्तर के, राक्षसेन्द्र पद आते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, सादर शीश झुकाते हैं।।26।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **राक्षसेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित व्यन्तर के, भूत इन्द्र पद आते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, सादर शीश झुकाते हैं।।27।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **भूत इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित व्यन्तर के, पिशाच इन्द्र पद आते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, सादर शीश झुकाते हैं।।28।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री प्रथम **पिशाच इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किम्पुरुषेन्द्र वान व्यन्तर के, द्वितीय इन्द्र भी आते हैं।
निज परिवार सहित भक्ती कर, पूजा श्रेष्ठ रचाते हैं।।29।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **किम्पुरुषेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किन्नर देव वान व्यन्तर के, द्वितीय इन्द्र भी आते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, सादर शीश झुकाते हैं।।30।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **किन्नरदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महोरगेन्द्र वान व्यन्तर के, द्वितीय इन्द्र भी आते हैं।
अन्य श्रेष्ठ देवों को लाकर, पूजा श्रेष्ठ रचाते हैं।।31।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **महोरगेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गन्धर्व इन्द्र वान व्यन्तर के, द्वितीय इन्द्र भी आते हैं।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, अर्चा कर गुण गाते हैं।।32।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **गन्धर्व इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष इन्द्र व्यन्तर देवों के, द्वितीय भी गुण गाते हैं।
पूजा करके नृत्य गानकर, मन ही मन हर्षाते हैं।।33।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **यक्ष इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राक्षस देव वान व्यन्तर के, द्वितीय इन्द्र भी आते हैं।
अपनी वृत्ति छोड़ भक्ति से, पूजा कर गुण गाते हैं।।34।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **राक्षस देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूत इन्द्र व्यन्तर देवों के, द्वितीय भी गुण गाते हैं।
हर्ष भाव से पूजन करके, अतिशय द्रव्य चढ़ाते हैं।।35।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **भूत इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पिशाचेन्द्र व्यन्तर देवों के, द्वितीय भी गुण गाते हैं।
सुन्दर रूप बनाकर जिनपद, पूजा श्रेष्ठ रचाते हैं।।36।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री द्वितीय **पिशाच इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवग्रह द्वारा पूज्य श्री जिनेन्द्र *(शम्भू छन्द)*

सतत् प्रकाश ताप प्रतिभाषी, रवि विमान का है आधीश।
पल्योपम आयु का धारी, कमल हाथ ले नत हो शीश।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा करता, सूर्य महाग्रह पद में आन।
विशद भाव से वंदन करके, करता है अतिशय गुणगान।।37।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **आदित्य देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लाख वर्ष पल्लाधिक आयु, बलक्षरोचि शुभ आभावान।
महारत्नकृतोद्ध भेषयुत, श्रेष्ठ ग्रहाधिप रहा महान्।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करता, सोम महाग्रह पद में आन।
विशद भाव से वंदन करके, करता है अतिशय गुणगान।।38।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **सोम देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरोह्यमान आकार मृगाधिक, अर्ध कोषाश्रित प्रभु विमान।
अर्ध पल्य आयु के धारी, यक्षाश्रित सुकुमार महान्।।

श्री जिनेन्द्र की अर्चा करता, मंगल ग्रह जिनपद में आन।
विशद भाव से वंदन करके, करता है अतिशय गुणगान।।39।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **मंगल देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकपूज्य सत्त्वोहित केहरि, केन्द्र त्रिकोणे जन सुखकार।
अर्घ्य भेंट कर पुष्टीकर्त्ता, सोम पुत्र है मंगलकार।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करता, बुधग्रह भावसहित जिनपद में आन।
विशद भाव से वंदन करके, करता है अतिशय गुणगान।।40।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **बुध देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भेंट ग्राही सुर राजमंत्री, स्वर्ग लोक में रहा महान्।
पयः प्रपूरित घृत संतुष्टक, वियत विहारी श्रेष्ठ प्रधान।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करता, गुरु महाग्रह पद में आन।
विशद भाव से वंदन करके, करता है अतिशय गुणगान।।41।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **गुरु देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाम हस्त में रहा कमण्डल, शुचि दण्डधारी गुणवान।
सव्य पाण कविराज मुख्य है, जिसके वस्त्र सुधौत महान्।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करता, शुक्र महाग्रह पद में आन।
विशद भाव से वंदन करके, करता है अतिशय गुणगान।।42।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **शुक्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है रजनीश शत्रु छाया सुत, सूर्य खचारि पुत्र महान्।
कृष्ण वर्ण अष्टारिग सज्जन, सौख्यकार अतिशय गुणवान।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करता, शनि महाग्रह पद में आन।
विशद भाव से वंदन करके, करता है अतिशय गुणगान।।43।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **शनि देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शशि बिम्ब को छठे मास में, प्रच्छादित करता है आन।
निज के बिम्ब से परिवर्तित कर, हो स्वभाव से तुष्ट महान्।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करता, राहु महाग्रह पद में आन।
विशद भाव से वंदन करके, करता है अतिशय गुणगान।।44।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **राहु देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वियद् बिहारी पुण्य कृष्ण ध्वज, एकादशस्थ है छायावान।
कृष्ण वर्णधारी है अनुपम, शोभित होवे आभावान।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करता, केतु महाग्रह पद में आन।
विशद भाव से वंदन करके, करता है अतिशय गुणगान।।45।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **केतु देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुःद्वारपाल द्वारा पूज्य जिनेन्द्र

सोम इन्द्र कोदण्ड काण्ड ले, स्फुट दृष्टि मुष्टीधारी।
भव्य मरुदभट वेद्या जानो, कथानुरक्त महिमाकारी।।
पुरोद्धार पुरु के उद्धारक, सुख-शांति का दो वरदान।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा का शुभ, आकर करो साथ रसपान।।46।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **सोमदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो शत्रु को दण्डित करते, धारण करते दण्ड महान्।
पास रहे सुर चण्डदेव कई, देते हैं जो करुणादान।।
निज परिवार सहित यमेन्द्र तुम, सुख-शांति का दो वरदान।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा का शुभ, आकर करो साथ रसपान।।47।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **यमदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हालाहल भाला ज्वाला अरु, जटा आदिभीला अहिवास।
वीर सुरों की सेना लेकर, पश्चिम द्वार में करो निवास।।
वरुण इन्द्र परिवार सहित आ, सुख-शांति का दो वरदान।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा का शुभ, आकर करो साथ रसपान।।48।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **वरुणदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शत्रु लोक आकम्पित जिनसे, गदा आदिधारी कई देव।
लोकाक्रम उत्ताल सुरों से, उत्तर दिश में रहे सदैव।।
हे कुबेर ! परिवार सहित तुम, सुख-शांति का दो वरदान।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा का शुभ, आकर करो साथ रसपान।।49।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **कुबेरदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथिदेवता द्वारा पूज्य जिनेन्द्र

(शम्भू छन्द)

धनुष बाण ले यक्ष प्रतिपद, प्रतिपक्ष प्रभु पद आवे।
धवलोज्ज्वल शुभ कांति वाला, पद्म अर्चना को लावे।।50।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **यक्षदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षमालधारी त्रिशूल ले, वैश्वानर सुर सूर्य समान।
गजारुढ़ हो द्वितीय तिथि को, करता आके प्रभु गुणगान।।51।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **वैश्वानर देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्वयान पर राक्षस चढ़कर, मुसलाखेट खट्वांग समेत।
खिला कमल ले तृतीय तिथि को, भाव सहित पूजा के हेत।।52।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **राक्षस देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मारुत आभावाला न धृत, जलज भयासि खेट महान्।
व्याघ्रारुढ़ चतुर्थी के दिन, फलादान करता गुणगान।।53।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **मारुत देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शरत चंद्र की कांति वाला, सर्पासन पर पन्नग देव।
श्रृणि पाश ले हाथ पंचमी, के दिन अर्चा करे सदैव।।54।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **पन्नग देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कशांकदान डमरू फरीम कुश, खड्ग अक्षमाला के साथ।
नंदा अधिपति असुर षष्ठी को, पूजे शत्रु पत्र ले हाथ।।55।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **असुर देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेणु प्रकाश सप्तमी के दिन, अश्वारूढ़ देव सुकुमार।
पाशांकुश फल भोज हाथ ले, वंदन करता बारम्बार।।56।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **सुकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ले कृपाण फल खेट हाथ में, अर्चा करने पितृ देव।
जगतपति आठें को आवे, प्राणी रक्षा करे सदैव।।57।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **पितृदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शूल कपाल नेत्र त्रयधारी, उदित सूर्य सम करे प्रकाश।
श्री विश्वमाली नवमी को, जिन पूजा करता है खास।।58।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **विश्वमाली देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खेट बाण खड्गोज्ज्वलधारी, मन में अतिशय करुणाधार।
पूर्णाधिप द्वितीय दशमी को, चमर मोर पर हुआ सवार।।59।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री चमर देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धनुष बाण तलवार खेट ले, हो प्रसन्न कर ऊपर हाथ।
एकादशि का ईश वैरोचन, भक्ती सहित झुकावे माथ।।60।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **वैरोचन देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हंसारुढ़ महाविद्युत भी, इन्द्र वर्ण सम जोड़े हाथ।
धनुष बाण पूत्री कृपाण ले, द्वादशेन्द्र अर्चा को साथ।।61।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **महाविद्युत देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मारदेव चढ़कर गवेन्द्र पर, चन्द्र खड्ग फल ले निज हाथ।
त्रयोदशाधिप वर्ण नील में, अर्चा को द्रव्य लावे साथ।।62।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **मारदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुदगरांक फल गदा कुठारी, चतुर्दश्यधिपति ले हाथ।
चढ़ गवेन्द्र पर नील वर्ण में, विश्वेश्वर पद टेके माथ।।63।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **विश्वेश्वर देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कमनीय वदन बाणामय पाशी, दण्डपत्र कोदण्ड ले हाथ।
पिण्डाशन पञ्चादश तिथि को, अर्चा करे झुकाए माथ।।64।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **पिण्डाशन देव !** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बीस इन्द्र भवनालय वासी, सोलह व्यन्तर वासी देव।
पन्द्रह तिथि देवता नवग्रह, द्वारपाल भी चार सदैव।।

श्री जिनेन्द्र की पूजा भक्ति, करते हैं अतिशय गुणगान।
अर्घ्य चढ़ाकर जिन चरणों में, हम भी करते मंगलगान।।65।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री **भवनवासी, व्यन्तर, नवग्रह, तिथिदेव, द्वारपाल देव** पादपद्मार्चिताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐंम् अर्हं अनन्तचतुष्टय प्राप्त अष्ट प्रातिहार्य संयुक्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

दोहा- जिनपूजा से भक्त का, कटे कर्म का जाल।
संभवनाथ जिनेन्द्र की, गाते हम जयमाल।।

(तर्ज : शेर छन्द)

जय-जय जिनेन्द्र आपकी, महिमा अपार है,
संसार में कोई जीव नहिं, पाए पार है।
करते हैं पूर्व भव में, संयम की साधना,
अर्हन्त सिद्ध प्रभु की, करते आराधना।।
जो पुण्य के सुफल से, जिनधर्म धारते,
मानव गति को पाकर, जीवन सम्हारते।
कई भव में पुण्य संचित, करते हैं जो अरे,
तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध, फिर जीव वह करे।।
स्वर्गों से देव आके, नगरी को सजाते,
करते हैं रत्नवृष्टि, अत्यन्त हर्षाते।
गर्भादि पंचकल्याणक, आ करके मनाते,
करते प्रभु की अर्चा, सौभाग्य जगाते।।
फाल्गुन सुदी की आठें, प्रभु गर्भ में आये,
माता सुषेणा देवी के, भाग्य जगाये।
श्रावस्ती के जितारि नृप, पिता कहाए,
कार्तिक सुदी की पूर्णिमा, को जन्म प्रभु पाए।।

सौधर्म इन्द्र भक्ति से, चरण में आया,
पाण्डुक शिला पे प्रभु का, अभिषेक कराया।
शुभ अश्व चिह्न देख, सौधर्म ने कहा,
सम्भव जिनेन्द्र प्रभु जी का, नाम शुभ रहा।।
शुभ चार सौ धनुष की, अवगाहना कही,
आयु भी साठ लाख पूर्व, की विशद रही।
गृहवास में रहे प्रभु ने, राज्य चलाया,
पतझड़ को देख प्रभु ने, वैराग्य शुभ पाया।।
शुभ माघ शुक्ल पूनम, को संयम पाया,
केशों का लुंच करके, प्रभु ध्यान लगाया।
कार्तिक वदी चतुर्थी, को ज्ञान जगाए,
चरणों में इन्द्र आके, जयकार लगाए।
करके विहार प्रभु जी, सम्मेद गिर आए,
शुभ चैत शुक्ल षष्ठी, को मोक्ष सिधाए।।
अक्षय अनन्त शिव सुख, पाए प्रभु नये,
कर्मों का नाश करके, शिवधाम को गये।
अग्नि कुमार देव ने, नख केश जलाए,
इन्द्रों ने सिद्धक्षेत्र पर, पद चिह्न बनाए।
करते हैं भव्य अर्चना, शुभ पुण्य कमाते,
सम्मेद शिखर वन्दना को, जीव कई जाते।।

दोहा- संभवनाथ जिनेन्द्र प्रभु, जग में हुए महान्।
अर्चा करते भाव से, पाने पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- पूजा करते भाव से, जिन गुण करने प्राप्त।
विशद मोक्ष पथ पर बढ़ें, बने शीघ्र ही आप्त।।

इत्याशीर्वादः

सम्भवनाथ चालीसा

दोहा- पञ्च परमेष्ठी लोक में, अतिशय रहे महान।
सम्भव जिन तीर्थेश का, करते हम गुणगान।।

(चौपाई)

सम्भव जिन शुभ करने वाले, भविजन का दुःख हरने वाले।
जो हैं अनुपम महिमा धारी, तीन लोक में मंगलकारी।।
गुण गाने के भाव बनाए, जिन चरणों से प्रीति लगाए।
देवों के भी देव कहाए, शत् इन्द्रों से पूज्य बताए।।
श्रेष्ठ दिगम्बर मुद्रा धारे, कर्म शत्रु प्रभु सभी निवारे।
मोह विजय तुमने प्रभु कीन्हा, उत्तम संयम मन से लीन्हा।।
जम्बू द्वीप रहा मनहारी, भरत क्षेत्र पावन शुभकारी।
आर्य खण्ड जिसमें बतलाया, भारत देश श्रेष्ठ शुभ गाया।।
श्रावस्ती नगरी है प्यारी, सुखी सभी थी जनता सारी।
भूप जितारी जी कहलाए, रानी भूप सुसीमा पाए।।
स्वर्गों से चयकर प्रभु आए, सारे जग के भाग्य जगाये।
फाल्गुन सुदी अष्टमी जानो, मंगलमय ये तिथि पहचानो।।
सम्भव जिनवर गर्भ में आए, रत्न देव तब कई वर्षाये।
छह महिने पहले से भाई, हुई रत्नवृष्टि सुखदायी।।
कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा गाई, पावन हुई जन्म से भाई।
इन्द्र कई स्वर्गों से आए, बालक का अभिषेक कराए।।
पग में अश्व चिह्न शुभ पाया, इन्द्र ने प्रभु पद शीश झुकाया।
सम्भवनाथ नाम बतलाया, जिन गुण गाकर के हर्षाया।।
जन्म से तीन ज्ञान प्रभु पाए, अतः त्रिलोकीनाथ कहाए।
साठ लाख पूरब की भाई, आयु जिनवर की बतलाई।।
धनुष चार सौ थी ऊँचाई, स्वर्ण रंग तन का था भाई।
अश्विन सुदी पूनम दिन आया, प्रभु ने संयम को अपनाया।।

केशलुंच कर दीक्षा धारी, महाव्रती बन के अविकारी।
देव कई लौकान्तिक आए, श्रेष्ठ प्रशंसा कर हर्षाए।।
देवों ने तब हर्ष मनाया, प्रभु के पद में शीश झुकाया।
पूजा करके प्रभु गुण गाए, जयकारों से गगन गुँजाए।।
स्वर्ण पेटिका दिव्य मँगाई, उसमें केश रखे शुभ भाई।
देव पेटिका हाथ सम्हाले, क्षीर सिन्धु में जाकर डाले।।
प्रभु ने अतिशय ध्यान लगाया, निज स्वभाव में निज को पाया।
कार्तिक वदी चौथ प्रभु पाए, अनुपम केवलज्ञान जगाए।।
समवशरण आ देव रचाए, गंधकुटी अतिशय बनवाए।
प्रातिहार्य जिसमें प्रगटाए, कमलासन अतिशय बनवाए।।
दिव्य देशना प्रभु सुनाए, गणधर आदि चरण में आए।
बारह सभा लगी मनहारी, दिव्य ध्वनि पाई शुभकारी।।
श्रावक कई चरणों में आए, भिन्न-भिन्न वह पूज रचाए।
मनवांछित फल वह सब पाए, अपने जो सौभाग्य जगाए।।
प्रभु सम्मेदशिखर पर आए, शास्वत् तीर्थराज कहलाए।
पूर्व दिशा में दृष्टि कीन्हें, निज स्वभाव में दृष्टि दीन्हें।।
धवल कूट है मंगलकारी, ध्यान किए जाके त्रिपुरारी।
योग निरोध प्रभुजी कीन्हें, एक माह निज में चित्त दीन्हें।।
चैत् सुदी षष्टी को स्वामी, बने कर्म नश शिवपथ गामी।
एक समय में शिवपद पाया, सिद्ध शिला पर धाम बनाया।।
हम यह नित्य भावना भाते, प्रभु पद अपने हृदय सजाते।
जिस पद को प्रभुजी तुम पाए, वह पद पाने पद में आए।।
इच्छा पूर्ण करो हे स्वामी ! तव चरणों में विशद नमामि।
जागें अब सौभाग्य हमारे, कट जाएँ भव-बन्धन सारे।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, प्रतिदिन चालिस बार।
पढ़ने से शांति मिले, मन में अपरम्पार।।
स्वजन मित्र मिलकर सभी, करते हैं सहयोग।
इस भव में शांति 'विशद', परभव शिव का योग।।

श्री 1008 संभवनाथ भगवान की आरती

(तर्ज : भक्ति बेकरार है)

संभवनाथ भगवान हैं, गुण अनन्त की खान हैं।
तीन लोक में मेरे स्वामी, अतिशय हुए महान् हैं।।

1. श्रावस्ती में जन्म लिए प्रभु, अतिशय मंगल छाया है-2
पिता जितारी मात सुसेना, ने सौभाग्य जगाया है-2 संभवनाथ....
2. साठ लाख पूरब की आयु, श्री जिनेन्द्र ने पाई जी-2
धनुष चार सौ मेरे प्रभु की, रही श्रेष्ठ ऊँचाई जी-2 संभवनाथ....
3. तप्त स्वर्ण सम रंग प्रभु का, छियालीस गुण के धारी हैं-2
गंधकुटी में दिव्य कमल पर, जिन रहते अविकारी हैं-2 संभवनाथ....
4. पञ्चकल्याणक पाने वाले, मुक्ति पथ के नेता हैं-2
अनन्त चतुष्टय के धारी प्रभु, अनुपम कर्म विजेता हैं-2 संभवनाथ....
5. आरती करने हेतु भगवन्, दीप जलाकर लाए हैं-2
सुख-शांति सौभाग्य 'विशद' हो, तव चरणों में आए हैं-2 संभवनाथ....

प्रशस्ति

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐम् अर्हं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र शरणं प्रपद्ये, ॐ ह्रीं श्रीं यजमंतं भगवन्तं कृपालसन्तं वृषभादि वर्द्धमान पर्यन्तं आद्यानाम आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे राजस्थान प्रान्ते कोटा नाम नगरे श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र चरण सान्निध्ये श्री वीर निर्वाण संवत् 2536 विक्रम संवत् 2066 शक सं. 2010 सन् 2010 मासानाम मासोत्तमासे माघ मासे कृष्ण पक्षे त्रयोदश्यां शुक्रवासरे दिनांक 13 मार्च 2010 शुभ मुहूर्त्ते मूल संघे सेनगच्छे बलात्कार गणे कुन्दकुन्दाचार्य परम्परायां आचार्यश्री आदिसागराय तत् पट्ट शिष्य समाधि सम्राट आचार्य महावीरकीर्ति तत् शिष्य वात्सल्य रत्नाकर आचार्य विमलसागराय तत् शिष्य मर्यादा शिष्योत्तम आचार्य भरतसागराय उपसर्गविजेता आचार्य विरागसागराय तत् शिष्य क्षमामूर्ति साहित्य रत्नाकर पंचकल्याणक प्रभावक गुरुदेव आचार्य विशदसागराय द्वारा श्री संभवनाथ विधान सर्व जनहिताय रचितं इति भद्रं भूयात्।

विशद अभिनन्दननाथ विधान

माण्डना

मध्य में - ॐ
प्रथम - 9
द्वितीय - 18
तृतीय - 36
चतुर्थ - 72

रचयिता
प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

श्री अभिनन्दननाथ स्तवन

(शम्भू छन्द)

हे स्वामिन! शुभ भक्ति आपकी, भाव सहित जो करे यथार्थ ।
मुख से स्तुति करे आपकी, गुण गाता है जो निस्वार्थ ।।
विनती करने हेतु आपकी, शीश धरे जो हस्त कमल ।
धन्य है उसका यह नर जीवन, करें अर्चना चरण विमल ।।1।।

जो भव भ्रमण से बचना चाहो, चरण कमल की करना सेव ।
यदि चरण ना मिलें कदाचित, कुछ भी करना आप सदैव ।।
पर कुदेव को नहीं पूजना, खाय अन्न भूखा नर-मौन ।
अन्न यदि दुर्लभ हो जावे, कालकूट विष खाये कौन? ।।2।।

सहस नयन से इन्द्र देखता, निरूपाधिक सुन्दर तम देह ।
गदगद वाणी रोमांचित हो, प्रभु से करे न कौन स्नेह ।।
हर्ष अश्रु नयनों से झरते, शीश झुका द्वय जोड़े हाथ ।
चित्त प्रपफुल्लित होता भगवन्, खुश हो चरण झुकाएँ माथ ।।3।।

तीन लोक के रक्षक ज्ञाता, कर्म शत्रु के शासक नाथ ।
श्री उत्पादक श्रेष्ठ सुरों में, त्रय विधि तव चरणों में माथ ।।
शरणागत कल्याण प्रदायक, मैं हूँ आपकी चरण शरण ।
छोड़ उपेक्षा रक्षा कीजे, विशद प्रार्थना करो वरण ।।4।।

तीन लोक के अधिपति सारे, राजा महाराजा अरु देव ।
कोटि मुकुट की शोभा पाकर, चरण कमल शोभित हैं एव ।।
कर्म रूप वृक्षों को जिनने, विशद किया जड़ से निर्मूल ।
चन्द्र समान सुशीतल जिनके, भक्ती करूँ चरण पद मूल ।।5।।

दोहा गुण गाते जो भाव से, श्री जिन के शुभकार ।
अल्प समय में जीव वह, पाते भव से पार ।।

इत्याशीर्वाद; पुष्पांजलि क्षिपेत्

श्री अभिनन्दननाथ पूजन

स्थापना

जय-जय जिन अभिनन्दन स्वामी, जय-जय मुक्ति वधू के स्वामी ।
पावन परम कहे सुखकारी, तीन लोक में मंगलकारी ।।

अतिशय कहे गये जो पावन, जिनकी महिमा है मनभावन ।
भाव सहित हम वन्दन करते, करते हैं उर में आह्वानन ।।
यही भावना रही हमारी, पूर्ण तुम करो हे त्रिपुरारी ।
तुम हो तीन लोक के स्वामी, मंगलमय हो अन्तर्यामी ।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(छन्द-अष्टक)

बन्धू सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की ।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवल ज्ञान की ।।
वन्दे जिनवरम्-वन्दे जिनवरम्-2

क्षीर नीर के कलश मनोहर, भर करके हम लाए हैं ।
जन्म मरण के नाश हेतु हम, पूजा करने आए हैं ।
भव की तृषा मिटाने वाली, अर्चा है भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवलज्ञान की ।
वन्दे जिनवरम्-वन्दे जिनवरम्-2

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

बन्धु सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की ।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवल ज्ञान की ।।
वन्दे जिनवरम्-वन्दे जिनवरम्-2

कश्मीरी केसर में चन्दन, हमने श्रेष्ठ घिसाया है ।
जिसकी परम सुगन्धि द्वारा, मन मधुकर हर्षाया है ।।
भव आताप नशाने वाली, अर्चा है भगवान की ।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवल ज्ञान की ।।
वन्दे जिनवरम्–वन्दे जिनवरम्–2

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

बन्धू सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की ।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवल ज्ञान की ।।
वन्दे जिनवरम्–वन्दे जिनवरम्–2

कर्मबन्ध के कारण प्राणी, जग के सब दुख पाते हैं ।
जन्म जरा मृत्यू को पाकर, भव सागर भटकाते हैं ।।
अक्षय पद देने वाली है, अर्चा जिन भगवान की ।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवलज्ञान की ।।
वन्दे जिनवरम्–वन्दे जिनवरम्–2

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान निर्वपामीति स्वाहा।

बन्धू सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवलज्ञान की
वन्दे जिनवरम्–वन्दे जिनवरम् –2

काम वासना में सदियों से, तीन लोक भटकाए हैं ।
पुष्प सुगन्धित लेकर चरणों, मुक्ती पाने आए हैं ।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा पावन, आतम के कल्याण की ।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवलज्ञान की ।।
वन्दे जिनवरम्–वन्दे जिनवरम् –2

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्प निर्वपामीति स्वाहा।

बन्धू सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की ।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवलज्ञान की ।।
वन्दे जिनवरम्–वन्दे जिनवरम्–2

क्षुधा रोग की बाधाओं से, जग में बहुत सताए हैं ।
नाश हेतु हम बाधाओं के, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं ।।
क्षुधा नाश करने वाली है, पूजा श्री भगवान की ।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवलज्ञान की ।।
वन्दे जिनवरम्–वन्दे जिनवरम्–2

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बन्धू सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की ।
प्रगटित होती जिनपूजा से, ज्योती केवलज्ञान की ।।
वन्दे जिनवरम–वन्दे जिनवरम्–2

मोह तिमिर में फँसकर हमनें, जीवन कई बिताए हैं ।
मोह महातमनाश होय मम्, दीप जलाने लाए हैं ।।
मम् अन्तर में होय प्रकाशित, ज्योती सम्यक् ज्ञान की ।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवलज्ञान की ।।
वन्दे जिनवरम्–वन्दे जिनवरम्–2

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

बन्धू सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की ।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवलज्ञान की ।।
वन्दे जिनवरम्–वन्दे जिनवरम्–2

इन्द्रियों के विषयों में फंसकर, निजानन्द सुख छोड़ दिया ।
आत्म ध्यान करने से हमने, अपने मुख को मोड़ लिया ।।
अष्ट कर्म की नाशक होती–अर्चा जिन भगवान की ।

प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवलज्ञान की ।।
वन्दे जिनवरम्–वन्दे जिनवरम्–2

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

बन्धू सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की ।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवलज्ञान की ।।
वन्दे जिनवरम्–वन्दे जिनवरम्–2
कर्म शुभाशुभ जो भी करते, उसके फल को पाते हैं ।
भेद ज्ञान के द्वारा प्राणी, आतम ज्ञान जगाते हैं ।।
मोक्ष महाफल देने वाली, पूजा है भगवान की ।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवलज्ञान की ।।
वन्दे जिनवरम्–वन्दे जिनवरम्–2

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

बन्धू सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की ।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवलज्ञान की ।।
वन्दे जिनवरम्–वन्दे जिनवरम्–2
लोकालोक अनादी शाश्वत, पर द्रव्यों से युक्त कहा ।
सप्त तत्त्व अरू पुण्य पाप की, श्रद्धा के बिन बना रहा ।।
पद अनर्घ देने वाली है, अर्चा जिन भगवान की ।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवलज्ञान की ।।
वन्दे जिनवरम्–वन्दे जिनवरम्–2

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंच कल्याणक के अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

छठी शुक्ल वैशाख माह का, शुभ दिन आया मंगलकार ।
माँ सिद्धार्था के उर श्री जिन, अभिनन्दन लीन्हें अवतार ।।

अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय–जयकार ।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार ।।

ॐ ह्रीं वैशाख शुक्ला षष्ठम्यां गर्भकल्याण प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल द्वादशी को जग में, अतिशय हुआ था मंगलगान ।
जन्म लिए अभिनन्दन स्वामी, इन्द्र किए तब प्रभु गुणगान ।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय–जयकार ।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार ।।

ॐ ह्रीं माघ शुक्ला द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

द्वादशी शुभम् थी माघ सुदी, प्रभु अभिनन्दन संयम धारे ।
ले चले पालकी में नर–सुर, वह सब बोले जय–जयकारे ।।
हम वन्दन करते चरणों में, मम् जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

चौदस सुदी पौष की आई, अभिनन्दन तीर्थंकर भाई ।
पावन केवलज्ञान जगाए, सुर–नर वंदन करने आए ।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया ।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला चतुर्दश्यां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

षष्ठी शुक्ल वैशाख पिछानो, सम्मेदाचल गिरि से मानो ।
अभिनन्दन जिन मुक्ती पाए, कर्म नाशकर मोक्ष सिधाए ।।

हम भी मुक्ति वधु को पाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ ।
अर्घ्य चढ़ाते मंगलकारी, बनने को शिव पद के धारी ।।

ॐ ह्रीं वैशाख शुक्ला षष्ठम्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **अभिनन्दन वन्दन करूँ, भाव सहित नतभाल ।**
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल ।।

(सखी छन्द)

जय अभिनन्दन त्रिपुरारी, जय–जय हो मंगलकारी ।
तुम जग के संकटहारी, जय–जय जिनेश अविकारी ।।
प्रभु अष्टकर्म विनसाए, अष्टम वसुधा को पाए ।
तव चरण शरण को पाएँ, भव बन्धन से बच जाएँ ।।
हमने भव–भव दुख पाए, अब उनसे हम घबड़ाए ।
तुम भव बाधा के नाशी, हो केवल ज्ञान प्रकाशी ।।
तव गुण का पार नहीं है, तुम सम न कोई कहीं है ।
भव–भव में शरणा पाई, पर आप शरण न पाई ।।
यह थे दुर्भाग्य हमारे, जो तुम सम तारण हारे ।
मन मेरे न भाए, अत एव जगत भरमाए ।।
अब जागे भाग्य हमारे, जो आए द्वार तुम्हारे ।
तब श्रेष्ठ गुणों को गाएँ, न छोड़ कहीं अब जाएँ ।।
अर्चा कर ध्यान लगाएँ, तुमको निज हृदय सजाएँ ।
तब चरणों में रम जाएँ, जब तक न मुक्ति पाएँ ।।
है विनती यही हमारी, हे त्रिभुवन के अधिकारी ।
बस यही भावना भाते, प्रभु सादर शीश झुकाते ।।

भक्तों पर करुणा कीजे, अब और सजा न दीजे ।
हम सेवक बनकर आए, अपनी यह अर्ज सुनाए ।।
कई जीव प्रभु तुम तारे, भव सागर पार उतारे ।
हे त्रिभुवन के सुख दाता, हे जिनवर ! भाग्य विधाता ।।
हे मोक्ष महल के स्वामी! त्रिभुवन के अन्तर्यामी ।
तुमने शिव पद को पाया, यह रही धर्म की माया ।।

(छन्द : घत्तानन्द)

हे जिन! अभिनन्दन, पद में वन्दन, करने हम द्वारे आये ।
मेटो भव क्रंदन, पाप निकन्दन, अर्घ्य चढ़ाने हम लाए ।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा– **भाव सहित वन्दन करें, अभिनन्दन जिन देव ।**
पुष्पांजलि करके विशद, पूजें तुम्हें सदैव ।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्)

प्रथम वलयः

दोहा **नो कषाय को नाश कर, हुए आप अरहंत ।**
पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने भव का अंत ।।

प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

स्थापना

जय–जय जिन अभिनन्दन स्वामी, जय–जय मुक्ति वधू के स्वामी ।
पावन परम कहे सुखकारी, तीन लोक में मंगलकारी ।।
अतिशय कहे गये जो पावन, जिनकी महिमा है मनभावन ।
भाव सहित हम वन्दन करते, करते हैं उर में आह्वानन ।।
यही भावना रही हमारी, पूर्ण तुम करो हे त्रिपुरारी ।
तुम हो तीन लोक के स्वामी, मंगलमय हो अन्तर्यामी ।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(ताटंक छन्द)

करके हास्य कषाय जीव कई, कर्म बन्ध करते भारी ।
शिव पथ के राही कषाय तज, हो जाते हैं अविकारी ।।
कहा परिग्रह नो कषाय यह, जिन तीर्थंकर नाश करें ।
विशद गुणों को पाने वाले, केवलज्ञान प्रकाश करें ।।1।।

ॐ ह्रीं हास्य कर्म रहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रति उदय में जिसके आवे, औरों से वह प्रीति करे ।
यह कषाय दुखकारी जग में, प्राणी के गुण पूर्ण हरे ।।
कहा परिग्रह नो कषाय यह, जिन तीर्थंकर नाश करें ।
विशद गुणों को पाने वाले, केवलज्ञान प्रकाश करें ।।2।।

ॐ ह्रीं रति कर्म रहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरति भाव का उदय होय तो, अप्रीति का भाव जगे ।
कर्मोदय के कारण प्राणी, दुरित मार्ग पर स्वयं लगे ।।
कहा परिग्रह नो कषाय यह, जिन तीर्थंकर नाश करें ।
विशद गुणों को पाने वाले, केवलज्ञान प्रकाश करें ।।3।।

ॐ ह्रीं अरति कर्म रहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इष्ट वियोग अनिष्ट योग में, जिनके मन में आता शोक ।
यह कषाय दुखदायी जग में, पूर्ण लगाना इस पर रोक ।।
कहा परिग्रह नो कषाय यह, जिन तीर्थंकर नाश करें ।
विशद गुणों को पाने वाले, केवलज्ञान प्रकाश करें ।।4।।

ॐ ह्रीं शोक कर्म रहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देख कोई भयकारी वस्तू, व्याकुल हो जाते हैं जीव।
कर्मोदय में जग के प्राणी, कर्म बन्ध भी करें अतीव।।
कहा परिग्रह नो कषाय यह, जिन तीर्थंकर नाश करें ।
विशद गुणों को पाने वाले, केवलज्ञान प्रकाश करें ।।5।।

ॐ ह्रीं भय कर्म रहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण दोषों को देख जुगुप्सा, मन में आती जिसके खास ।
कर्मबन्ध करते वह भारी, निज गुण में न होवे वास ।।
कहा परिग्रह नो कषाय यह, जिन तीर्थंकर नाश करें।
विशद गुणों को पाने वाले, केवलज्ञान प्रकाश करें।।6।।

ॐ ह्रीं जुगुप्सा कर्म रहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

स्त्री वेद उदय में आते, पुरूष की मन में चाह जगे।
स्त्री वेद कहलाता हैं वह, विषयों में वह जीव लगे ।।
कहा परिग्रह नो कषाय यह, जिन तीर्थंकर नाश करें ।
विशद गुणों को पाने वाले, केवलज्ञान प्रकाश करें।।7।।

ॐ ह्रीं स्त्रीवेद कर्म रहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुष वेद का उदय होय तो, रमण करें नारी के साथ ।
होय कषाय का उदय जीव के, कर्मबन्ध हो उसके माथ ।।
कहा परिग्रह नो कषाय यह, जिन तीर्थंकर नाश करें ।
विशद गुणों को पाने वाले, केवलज्ञान प्रकाश करें ।।8।।

ॐ ह्रीं पुरुषवेद कर्म रहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नर–नारी से रमण की आशा, करते जो संसारी जीव ।
वेद नपुंसक के धारी वह, करते रहते बन्ध अतीव ।।
कहा परिग्रह नो कषाय यह, जिन तीर्थंकर नाश करें ।
विशद गुणों को पाने वाले, केवलज्ञान प्रकाश करें।।9।।

ॐ ह्रीं नपुंसक वेद रहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **नो कषाय को नाश कर, करते शिवपुर वास।**
पूजा करते भक्त यह, पूरी कर दो आस।।

ॐ ह्रीं नो कषाय विनाशनाय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा– **दोष अठारह से रहित, अभिनंदन भगवान ।**
पुष्पांजलि कर पूजते, पाने पद निर्वाण ।।

द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत

स्थापना

जय–जय जिन अभिनन्दन स्वामी, जय–जय मुक्ति वधू के स्वामी ।
पावन परम कहे सुखकारी, तीन लोक में मंगलकारी ।।
अतिशय कहे गये जो पावन, जिनकी महिमा है मनभावन ।
भाव सहित हम वन्दन करते, करते हैं उर में आह्वानन ।।
यही भावना रही हमारी, पूर्ण तुम करो हे त्रिपुरारी ।
तुम हो तीन लोक के स्वामी, मंगलमय हो अन्तर्यामी ।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

18 दोष रहित जिनेन्द्र देव

(सखी छन्द)

जो क्षुधा दोष के धारी, वह जग में रहे दुखारी ।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए ।।1।।

ॐ ह्रीं क्षुधा रोग विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो तृषा दोष को पाते, वह अतिशय दुःख उठाते ।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए ।।2।।

ॐ ह्रीं तृषा दोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो जन्म दोष को पावें, वह मरकर फिर उपजावे ।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए ।।3।।

ॐ ह्रीं जन्मदोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है जरा दोष भयकारी, दुख देता है जो भारी ।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए ।।4।।

ॐ ह्रीं जरा दोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा ।

जो विस्मय करने वाले, प्राणी हैं दुखी निराले ।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए ।।5।।

ॐ ह्रीं विस्मय दोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

है अरति दोष जग जाना, दुखकारी इसको माना ।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए ।।6।।

ॐ ह्रीं अरति दोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रम करके जग के प्राणी, बहु खेद करें अज्ञानी ।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए ।।7।।

ॐ ह्रीं खेद दोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

है रोग–दोष दुखदायी, सब कष्ट सहें कई भाई ।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए ।।8।।

ॐ ह्रीं रोग दोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब इष्ट वियोग हो जाए, तब शोक हृदय में आए ।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए ।।9।।

ॐ ह्रीं शोक दोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मद में आकर के प्राणी, करते हैं पर की हानि ।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए ।।10।।

ॐ ह्रीं मद दोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो मोह दोष के नाशी, होते हैं शिवपुर वासी ।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए ।।11 ।।

ॐ ह्रीं मोह दोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भय सात कहे दुखकारी, जिनकी महिमा है न्यारी ।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।12।।

ॐ ह्रीं भय दोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निद्रा से होय प्रमादी, करते निज की बरबादी ।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए ।।13।।

ॐ ह्रीं निद्रा दोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिंता को चिता बताया, उससे ही जीव सताया ।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए ।।14।।

ॐ ह्रीं चिंता दोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन से जब स्वेद बहाए, जो भारी दुख पहुँचाए ।
जिनवर यह दोष नशाएं, फिर तीर्थंकर पद पाएँ ।।15।।

ॐ ह्रीं स्वेद दोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है राग आग सम भाई, जानो इसकी प्रभुताई ।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए ।।16।।

ॐ ह्रीं राग दोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसके मन द्वेष समाए, वह कमठ रूप हो जाए ।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए ।।17।।

ॐ ह्रीं द्वेष दोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मरण दोष के नाशी, वे होते शिवपुर वासी ।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।18।।

ॐ ह्रीं श्री मृत्यु दोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **अभिनन्दन भगवान ने, कीन्हे दोष विनाश ।**
विशद ज्ञान को प्राप्त कर, शिवपुर किया निवास ।।19।।

ॐ ह्रीं अष्टादश दोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः

दोहा– **पूजा करते जिन चरण, आके बत्तिस देव ।**
पुष्पांजलि करते विशद, नत हो सतत् सदैव ।।

तृतीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत

स्थापना

जय–जय जिन अभिनन्दन स्वामी, जय–जय मुक्ति वधू के स्वामी ।
पावन परम कहे सुखकारी, तीन लोक में मंगलकारी ।।
अतिशय कहे गये जो पावन, जिनकी महिमा है मनभावन ।
भाव सहित हम वन्दन करते, करते हैं उर में आह्वानन ।।
यही भावना रही हमारी, पूर्ण तुम करो हे त्रिपुरारी ।
तुम हो तीन लोक के स्वामी, मंगलमय हो अन्तर्यामी ।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

बत्तीस देव पूजित जिन

(भुजंगप्रयात–छन्द)

असुर इन्द्र पंक भाग भवनों से आवें, पूजा को द्रव्य के थाल भर लावें।
जिनवर की पूजा वे अनुपम रचावें, चरणों में नत होके माथा झुकावें।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं असुर कुमार देव ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाग इन्द्र खर भाग भवनों से आते, भक्ती में अपने जो मन को लगाते।
जिनवर की पूजा वे अनुपम रचावें, चरणों में नत होके माथा झुकावें।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं नागकुमार देव ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युतेन्द्र भवनवासी महिमा दिखाते, अर्चा में अपने जो मन को लगाते।
जिनवर की पूजा वे अनुपम रचावें, चरणों में नत होके माथा झुकावें।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं विद्युतकुमार देव ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुपर्णेन्द्र पूजा कर मन में हर्षावे, जयकारा बोल के महिमा जो गावे ।
जिनवर की पूजा वे अनुपम रचावें, चरणों में नत होके माथा झुकावें।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुपर्णकुमार देव ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि इन्द्र खर भाग भवनों के वासी, करते हैं अर्चना जिनवर की खासी।
जिनवर की पूजा वे अनुपम रचावें, चरणों में नत होके माथा झुकावें।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं अग्निकुमार देव ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मारुतेन्द्र भवनों से फल लेके आवें, भक्ती में लीन हो जिनके गुण गावें।
जिनवर की पूजा वे अनुपम रचावें, चरणों में नत होके माथा झुकावें।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं मारूतेन्द्र देव ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्तनित इन्द्र की महिमा है न्यारी, चरणों का बनता जो प्रभु के पुजारी।
जिनवर की पूजा वे अनुपम रचावें, चरणों में नत होके माथा झुकावें।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं स्तनित कुमार देव ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदधि इन्द्र की भक्ति जग से निराली, भव्य प्राणियों का जो मन हरने वाली।
जिनवर की पूजा वे अनुपम रचावें, चरणों में नत होके माथा झुकावें।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं उदधिकुमार देव ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपेन्द्र भक्ती से दीपक जलावे, नाचे औ गावे जो मन से हर्षावे।
जिनवर की पूजा वे अनुपम रचावें, चरणों में नत होके माथा झुकावें।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं दीपकुमार देव ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिक् सुरेन्द्र भवनालय वासी कहावे, पूजा को परिवार साथ में जो लावे।
जिनवर की पूजा वे अनुपम रचावें, चरणों में नत हो के माथा झुकावें।।10।।

ॐ आं क्रों ह्रीं दिक्ककुमार देव ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्य छन्द)

किन्नर इन्द्र प्रथम व्यन्तर का जानिए, श्री जिनवर का भक्त जिसे पहिचानिए ।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से।।11।।

ॐ आं क्रों ह्रीं किन्नरेन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र किम्पुरुष द्वितिय व्यन्तर का कहा, भव्य भ्रमर जिन चरण कमल का जो रहा।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से।।12।।

ॐ आं क्रों ह्रीं किम्पुरुष इन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र महोरग व्यन्तर का जानो सही, जिन चरणों में उसकी भी भक्ती रही।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से।।13।।

ॐ आं क्रों ह्रीं महोरगेन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र रहा गन्धर्व व्यन्तरों का अहा, हो जिनेन्द्र की पूजा वह पहुँचे वहाँ।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से।।14 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं गन्धर्वेन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष इन्द्र की महिमा का ना पार है, जिसकी भक्ती रहती अपरम्पार है।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से।।15।।

ॐ आं क्रों ह्रीं यक्षेन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राक्षस इन्द्र भी आते भावों से भरे, भक्ती करके औरों के मन को हरें।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से।।16।।

ॐ आं क्रों ह्रीं राक्षसेन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूत इन्द्र भी अपनी वृत्ती छोड़ते, जिन अर्चा से अपना नाता जोड़ते।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से।।17।।

ॐ आं क्रों ह्रीं भूतेन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पिशाच इन्द्र आते हैं भावों से अरे !, नव कोटी से भक्ती भावों से भरे।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से।।18।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पिशाचेन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्र इन्द्र ज्योतिष का भाई जानिए, जिन चरणों का भक्त भ्रमर पहिचानिए।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से।19।।

ॐ आं क्रों ह्रीं चन्द्रदेव स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योतिष गाया है प्रतीन्द्र सूरज महा, जिन चरणों का भक्त श्रेष्ठतम जो रहा।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से।।20।।

ॐ आं क्रों ह्रीं भास्करेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शेर छन्द)

सौधर्म इन्द्र श्री फल ले, स्वर्ग से आवे ।
पूजा करे प्रसन्न हो, मन हर्ष बढ़ावे ।।
श्री जिनेन्द्र की शुभ, पूजा को आए हैं ।
यह थाल अष्ट द्रव्य का, हम साथ लाए हैं ।। 21।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सौधर्मेन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ईशान इन्द्रपूंगी फल, साथ में लावे ।
होके सवार गज पे, भक्ति से जो आवे ।।
श्री जिनेन्द्र की शुभ, पूजा को आए हैं ।
यह थाल अष्ट द्रव्य का, हम साथ लाए हैं ।।22।।

ॐ आं क्रों ह्रीं ईशानेन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सनत कुमार इन्द्र, गजारूढ़ हो आवे ।
आमों के गुच्छे साथ में, परिवार जो लावे ।।
श्री जिनेन्द्र की शुभ, पूजा को आए हैं ।।
यह थाल अष्ट द्रव्य का, हम साथ लाए हैं ।।23।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सानतकुमार इन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माहेन्द्र इन्द्र केले के, गुच्छे ले आवे ।
होके सवार अश्व पे, परिवार को लावे ।।
श्री जिनेन्द्र की शुभ, पूजा को आए हैं ।
यह थाल अष्ट द्रव्य का, हम साथ लाए हैं ।।24।।

ॐ आं क्रों ह्रीं माहेन्द्र इन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होके सवार ब्रह्म इन्द, हंस पे आवे।
जो पुष्प केतकी से प्रभु, पूज रचावे।।
श्री जिनेन्द्र की शुभ, पूजा को आए हैं ।
यह थाल अष्ट द्रव्य का, हम साथ लाए हैं ।।25।।

ॐ आं क्रों ह्रीं ब्रह्मेन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ लान्तवेन्द्र दिव्य फल ले, भाव से आवे ।
परिवार साथ में लाके, हर्ष मनावें ।।
श्री जिनेन्द्र की शुभ, पूजा को आए हैं ।
यह थाल अष्ट द्रव्य का हम, साथ लाए हैं ।।26।।

ॐ आं क्रों ह्रीं लान्तवेन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चकवा पे हो सवार इन्द्र, शुक्र भी आवे ।
शुभ पुष्प ले सेवन्ती, के पूज रचावे ।।
तीर्थेश के चरण में, हम अर्घ्यं चढ़ाते ।
भक्ती से विनत होके, पद शीश झुकाते ।।27।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शुकेन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामामिति स्वाहा।

कोयल पे हो सवार, शतारेन्द्र जो आवे ।
जो नील कमल से पूजे, अर्घ्य चढ़ावे ।।
तीर्थेश के चरण में, हम अर्घ्यं चढ़ाते ।
भक्ती से विनत होके, पद शीश झुकाते ।।28।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शतारेन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ के गरूड़ पे आनतेन्द्र, वेग से आवे ।
परिवार सहित श्री जिन को, पूज रचावे ।।

तीर्थेश के चरण में, हम अर्घ्यं चढ़ाते ।
भक्ती से विनत होके, पद शीश झुकाते ।।29।।

ॐ आं क्रों ह्रीं आनतेन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामामिति स्वाहा।

चढ़के विमान पद्म पे, प्राणतेन्द्र भी आवे ।
परिवार सहित तुम्बरू ले, हर्ष मनावे।।
तीर्थेश के चरण में, हम अर्घ्यं चढ़ाते।
भक्ती से विनत होके, पद शीश झुकाते ।।30।।

ॐ आं क्रों ह्रीं प्राणतेन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ के कुमुद विमान पे, आरणेन्द्र जो आवे ।
परिवार सहित गन्ने ले, आन चढ़ावे।।
तीर्थेश के चरण में, हम अर्घ्यं चढ़ाते।
भक्ती से विनत होके, पद शीश झुकाते ।।31।।

ॐ आं क्रों ह्रीं आरणेन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अच्युतेन्द्र हो सवार, मयूर पे आवे ।
परिवार सहित भक्ति से, जो चँवर ढुरावे ।।
तीर्थेश के चरण में, हम अर्घ्यं चढ़ाते ।
भक्ती से विनत होके, पद शीश झुकाते ।।32।।

ॐ आं क्रों ह्रीं अच्युतेन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतु द्वारपाल द्वारा पूजित जिनेन्द्र

पूर्व दिशा का द्वारपाल, सोम कहावे ।
अर्चा करे विनय से, पद शीश झुकावे ।।

तीर्थेश के चरण में, हम अर्घ्यं चढ़ाते ।
भक्ती से विनत होके, पद शीश झुकाते ।।33।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री सोमदेव ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण का द्वारपाल है, यमदेव भी भाई ।
करता चरण की वन्दना, जो श्रेष्ठ सुखदाई ।।
तीर्थेश के चरण में, हम अर्घ्यं चढ़ाते ।
भक्ती से विनत होके, पद शीश झुकाते ।।34।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिशा का द्वारपाल, वरूण देव है ।
भक्ती में लीन रहता, जिन की सदैव है ।।
तीर्थेश के चरण में, हम अर्घ्यं चढ़ाते।
भक्ती से विनत होके, पद शीश झुकाते ।।35।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री वरूण देव! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर दिशा का द्वारपाल, श्रेष्ठ जानिए ।
कहलाए जो कुबेर देव, आप मानिए ।।
तीर्थेश के चरण में, हम अर्घ्य चढ़ाते ।
भक्ती से विनत होके, पद शीश झुकाते ।।36।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री कुबेर देव! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवन वासी ज्योतिष अरू, व्यन्तर वासी ।
बारह सुरेन्द्र आते, कल्पों के प्रवासी ।।
तीर्थेश के चरण में, हम अर्घ्यं चढ़ाते ।
भक्ती से विनत होके, पद शीश झुकाते ।।37।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री षड् त्रिंशत देव पूजित श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा- **सोलह कारण भाव यह, शिव के हैं सौपान ।**
तीर्थंकर गुण प्राप्त कर, करे आत्म कल्याण ।।

चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत

स्थापना

जय-जय जिन अभिनन्दन स्वामी, जय-जय मुक्ति वधू के स्वामी ।
पावन परम कहे सुखकारी, तीन लोक में मंगलकारी ।।
अतिशय कहे गये जो पावन, जिनकी महिमा है मनभावन ।
भाव सहित हम वन्दन करते, करते हैं उर में आह्वानन ।।
यही भावना रही हमारी, पूर्ण तुम करो हे त्रिपुरारी ।
तुम हो तीन लोक के स्वामी, मंगलमय हो अन्तर्यामी ।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

सोलह कारण भावना के अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

भव-भव के घने अंधेरे को, जो सूरज बनकर नष्ट करें ।
दर्शन विशुद्धि धारण कर लें, जो जग के सारे कष्ट हरें ।।
हम सोलह कारण भा भाकर, तीर्थंकर की पदवी पाएँ ।
भव भ्रमण मैट चारों गति का, निज शाश्वत पद में रम जाएँ ।।1।।

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धि भावना सहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ विनय भाव भव नाशक है, जल जाते कष्टों के जंगल ।
यह विनय भाव है मेघ विशद, छा जाते मंगल ही मंगल ।।
हम सोलह कारण भा भाकर, तीर्थंकर की पदवी पाएँ ।
भव भ्रमण मैट चारों गति का, निज शाश्वत पद में रम जाएँ ।।2।।

ॐ ह्रीं विनय सम्पन्न भावना सहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिचार हीन व्रत शुद्ध शील, संयम को अंगीकार करें ।
मन के मतवाले हाथी पर, शीलांकुश से अधिकार करें ।।
हम सोलह कारण भा भाकर, तीर्थंकर की पदवी पाएँ ।
भव भ्रमण मैट चारों गति का, निज शाश्वत पद में रम जाएँ ।।3।।

ॐ ह्रीं शील व्रतेष्वनतिचार भावना सहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज ज्ञान स्वभावी चेतन में, उपयोग निरन्तर लगा रहे ।
बस ज्ञान ज्ञान की धारा में, चैतन्य अभीक्षण जगा रहे ।।
हम सोलह कारण भा भाकर, तीर्थंकर की पदवी पाएँ ।
भव भ्रमण मैट चारों गति का, निज शाश्वत पद में रम जाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं अभीक्षण ज्ञानोपयोग भावना सहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार देह से भोगों से, जब उदासीनता आ जाए ।
है वस्तु स्वभाव धर्म मेरा, संवेग भाव यह कहलाए ।।
हम सोलह कारण भा भाकर, तीर्थंकर की पदवी पाएँ।
भव भ्रमण मैट चारों गति का, निज शाश्वत पद में रम जाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं संवेग भावना सहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस श्रावक के घर में उत्तम, शुभ त्याग वृत्तिमय दान नहीं ।
उस घर के जैसा अन्य कोई, मरघट और शमशान नहीं ।।

हम सोलह कारण भा भाकर, तीर्थंकर की पदवी पाएँ ।
भव भ्रमण मैट चारों गति का, निज शाश्वत पद में रम जाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं शक्ति तस्त्याग भावना सहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्दी गर्मी वर्षा ऋतु में, योगीश्वर तप को करते हैं ।
इस उत्तम तप के द्वारा ही, केवल्य प्राप्त वह करते हैं ।।
हम सोलह कारण भा भाकर, तीर्थंकर की पदवी पाएँ ।
भव भ्रमण मैट चारों गति का, निज शाश्वत पद में रम जाएँ ।।7।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्तप भावना सहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो संत साधना में प्राणी, अपना उपयोग लगाते हैं ।
परिचर्या करते हैं उनकी, वह साधु समाधी पाते हैं ।।
हम सोलह कारण भा भाकर, तीर्थंकर की पदवी पाएँ ।
भव भ्रमण मैट चारों गति का निज शाश्वत पद में रम जाएँ ।।8।।

ॐ ह्रीं साधु समाधि भावना सहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधक की आत्म साधना में, जो बाधाओं को हरते हैं ।
कृषकाय तपस्वी की सेवा, कर वैयावृत्ति करते हैं ।।
हम सोलह कारण भा भाकर, तीर्थंकर की पदवी पाएँ ।
भव भ्रमण मैट चारों गति का निज शाश्वत पद में रम जाएँ ।।9।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ती भावना सहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो घाती कर्म विनाश किए, केवल्य ज्ञान फिर प्रगटाए ।
उनके गुण में अनुराग विशद, शुभ अर्हद भक्ती कहलाए ।।
हम सोलह कारण भा भाकर, तीर्थंकर की पदवी पाएँ ।
भव भ्रमण मैट चारों गति का, निज शाश्वत पद में रम जाएँ ।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हत् भक्ति सहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप धर्म गुप्ति आचारवान, छह आवश्यक के धारी हैं ।
निर्ग्रन्थ संत की भक्ती शुभ, आचार्य भक्ति शुभकारी है ।।
हम सोलह कारण भा भाकर, तीर्थंकर की पदवी पाएँ ।
भव भ्रमण मैट चारों गति का, निज शाश्वत पद में रम जाए।।11।।

ॐ ह्रीं आचार्य भक्ति सहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो द्वादशांग के ज्ञाता हैं, गुण पच्चिस उपाध्याय पाए ।
उनकी भक्ती अर्चा करना, बहुश्रुत भक्ती शुभ जिन गाए ।।
हम सोलह कारण भा भाकर, तीर्थंकर की पदवी पाए ।
भव भ्रमण मैट चारों गति का निज शाश्वत पद में रम जाएँ।।12।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुत भक्ति सहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

परमागम श्री जिन प्रवचन में, शुभ द्रव्य तत्त्व का कथन रहा ।
जिन प्रवचन में अवगाहन हो, यह प्रवचन भक्ती भाव कहा ।।
हम सोलह कारण भा भाकर, तीर्थंकर की पदवी पाएँ ।
भव भ्रमण मैट चारों गति का, निज शाश्वत पद में रम जाएँ।।13।।

ॐ ह्रीं प्रवचन भक्ति भावना सहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समता वन्दन आदिक मुनि के, छह आवश्यक कर्त्तव्य कहे ।
इनका परिहार नहीं करना, आवश्यक यह अपरिहार्य रहे ।।
हम सोलह कारण भा भाकर, तीर्थंकर की पदवी पाएँ ।
भव भ्रमण मैट चारों गति का, निज शाश्वत पद में रम जाए।14।।

ॐ ह्रीं आवश्यक अपरिहार्य भावना सहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गजरथ विमान पूजा विधान, अभिषेक महोत्सव हो भारी ।
जिन बिम्ब प्रतिष्ठा इत्यादी, मारग प्रभावना शुभकारी ।।

हम सोलह कारण भा भाकर, तीर्थंकर की पदवी पाएँ।
भव भ्रमण मैट चारों गति का, निज शाश्वत पद में रम जाएँ।।15।।

ॐ ह्रीं मार्ग प्रभावना भावना सहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री देव शास्त्र गुरु भक्तों पर, ममता विहीन वात्सल्य रहे ।
प्रवचन वात्सल्य यही जानो, उर में करुणा की धार बहे ।।
हम सोलह कारण भा भाकर, तीर्थंकर की पदवी पाएँ ।
भव भ्रमण मैट चारों गति का, निज शाश्वत पद में रम जाएँ।।16।।

ॐ ह्रीं प्रवचन वत्सलत्व भावना सहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दस धर्म के अर्घ्य *(चौपाई छन्द)*

क्रोध कषाय को पूर्ण नशावें, उत्तम क्षमा धर्म वह पावें ।
होते हैं मुनिव्रत के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी।।17।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्म सहित श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मद की दम का करें सफाया, उनने मार्दव धर्म उपाया ।
होते हैं मुनिव्रत के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी ।।18।।

ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्म सहित श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

छोड़ रहे जो मायाचारी, होते वह आर्जव के धारी ।
होते हैं मुनिव्रत के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी ।।19।।

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जवधर्म सहित श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

लोभ नाश जिसका हो जाए, वह ही शौच धर्म प्रगटाए ।
होते हैं मुनिव्रत के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी ।।20।।

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्म सहित श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

असत् वचन के हैं जो त्यागी, सत्य धर्म धारी बड़भागी ।
होते हैं मुनिव्रत के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी ।।21।।

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्म सहित श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नहीं असंयम जिसको भाए, वह संयम धारी कहलाए ।
होते हैं मुनिव्रत के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी ।।22।।

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्म सहित श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्म निर्जरा करने वाले, उत्तम तप धर रहे निराले ।
होते हैं मुनिव्रत के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी ।।23।।

ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्म सहित श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्विविध संग से रहित बताए, उत्तम त्याग धर्मधर गाए ।
होते हैं मुनिव्रत के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी ।।24।।

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्म सहित श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

किन्चित राग रहित अविकारी, उत्तम आकिन्चन व्रतधारी ।
होते हैं मुनिव्रत के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी ।।25।।

ॐ ह्रीं उत्तम आकिन्चन्य धर्म सहित श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

उत्तम ब्रह्मचर्य व्रत धारी, होते आतम ब्रह्म विहारी ।
होते हैं मुनिव्रत के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी ।।26।।

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म सहित श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

छियालिस मूलगुणधारी श्री अभिनन्दननाथ जिन

जन्म के अतिशय *(ताटंक छन्द)*

प्रभु का शरीर अतिशय सुन्दर, होता अनुपम विस्मयकारी ।
तीर्थंकर पद का बन्ध किया, शुभ पुण्य की है यह बलिहारी ।।
श्री अभिनन्दन के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं ।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं ।।27।।

ॐ ह्रीं सुन्दरतन सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर जन्म के अतिशय में, इक यह भी अतिशय पाते हैं ।
प्रभुवर के तन की खुशबू से, लोकत्रय सुरभित हो जाते हैं ।।

श्री अभिनन्दन के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं ।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं ।।28।।

ॐ ह्रीं सुगंधित तनसहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ पुण्य उदय से पूरब के, कई ऐसे अतिशय हो जाते ।
न स्वेद रहे तन में किंचित्, कई इन्द्र चरण आश्रय पाते ।।
श्री अभिनन्दन के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं ।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं ।।29।।

ॐ ह्रीं स्वेदरहित सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दस अतिशय में यह भी अतिशय, मल-मूत्र रहित तन पाते हैं ।
आहार ग्रहण करते फिर भी, जिनवर निहार नहिं जाते हैं ।।
श्री अभिनन्दन के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं ।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं ।।30।।

ॐ ह्रीं निहार रहित सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हित-मित-प्रिय जिनवर की वाणी, मन को संतोष दिलाती है ।
करती प्रसन्न सारे जग को, जन-जन का मन हर्षाती है ।।
श्री अभिनन्दन के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं ।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं ।।31।।

ॐ ह्रीं प्रियहितवचन सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नर सुर के इन्द्र सभी जिनकी, शक्ती के आगे हारे हैं ।
अद्भुत अतुल्य बल के स्वामी, जग में जिनदेव हमारे हैं ।।
श्री अभिनन्दन के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं ।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं ।।32।।

ॐ ह्रीं अतुल्यबल सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रग-रग में जिनके करुणा अरु, वात्सल्य झलकता रहता है ।
है श्वेत रुधिर जिनका पावन, जो सारे तन में बहता है ।।
श्री अभिनन्दन के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं ।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं ।।33।।

ॐ ह्रीं श्वेत रुधिर सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ लक्षण एक हजार आठ, श्री जिनके तन में होते हैं ।
ये मंगलमय सर्वोत्तम हैं, भव्यों की जड़ता खोते हैं ।।
श्री अभिनन्दन के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं ।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं ।।34।।

ॐ ह्रीं सहस्राष्ट शुभलक्षण सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकार मनोहर समचतुस्र, सुन्दर सुडौल तन पाते हैं ।
परमाणू जितने जग में शुभ, मानो सब मिलकर आते हैं ।।
श्री अभिनन्दन के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं ।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं ।।35।।

ॐ ह्रीं समचतुष्कसंस्थान सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ वज्र वृषभनाराच संहनन, जो अतिशय शक्तिशाली है ।
जिनवर हैं जग में सर्वश्रेष्ठ, महिमा कुछ अजब निराली है ।।
श्री अभिनन्दन के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं ।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं ।।36।।

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराचसंहनन सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान के 10 अतिशय

शुभ केवल ज्ञान प्रकट होते, अतिशय सुभिक्ष हो जाता है ।
सौ योजन सर्वदिशाओं में, अपनी सुवास बिखराता है ।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, जिन अभिनन्दन को ध्याते हैं ।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं ।।37।।

ॐ ह्रीं गव्यूतिशत्चतुष्टय सुभिक्षत्व सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब केवलज्ञान उदित होता, तब गगन गमन हो जाता है ।
सुर पाँच हजार धनुष ऊपर, शुभ कमल रचाने आता है ।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, जिन अभिनन्दन को ध्याते हैं ।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं ।।38।।

ॐ ह्रीं आकाशगमन सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु का अतिशय महिमाशाली, इक मुख के चार दिखाते हैं ।
बस उत्तर पूर्व सुमुख प्रभु का, हम समवशरण में पाते हैं ।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, जिन अभिनन्दन को ध्याते हैं ।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं ।।39।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुख सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो बैर विरोध रहा जग में, प्रभु दर्शन से नश जाता है ।
आपस में प्रीति झलकती है, करुणा का स्रोत उभरता है ।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, जिन अभिनन्दन को ध्याते हैं ।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं ।।40।।

ॐ ह्रीं अदयाभाव सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब कर्म घातिया नश जाते, कैवल्य प्रगट हो जाता है ।
तब चेतन और अचेतन कृत, उपसर्ग नहीं हो पाता है ।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, जिन अभिनन्दन को ध्याते हैं ।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं ।।41।।

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अतिशय रहा परम पावन, प्रभु कवलाहार नहीं करते ।
नो कर्म वर्गणाओं द्वारा, प्रभु चेतन में ही आचरते ।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, जिन अभिनन्दन को ध्याते हैं ।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं ।।42।।

ॐ ह्रीं कवलाहार रहित सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मंत्र-तंत्र में नीति निपुण, सब विद्याओं के ईश्वर हैं ।
न जग में रहा कोई बाकी, प्रभु पृथ्वी पती महीश्वर हैं ।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, जिन अभिनन्दन को ध्याते हैं ।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं ।।43।।

ॐ ह्रीं विद्येश्वरत्व सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह केवलज्ञान की महिमा है, प्रभु हो जाते अन्तर्यामी ।
नख केश नहीं बढ़ते किंचित्, तन होता है जग में नामी ।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, जिन अभिनन्दन को ध्याते हैं ।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं ।।44।।

ॐ ह्रीं समान नखकेशत्व सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु की है सौम्य शांत दृष्टी, नासा पर सदा लगी रहती ।
प्रभु वीतरागता धारी हैं, अन्तर की बात मुखर कहती ।।

सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गण्धर, जिन अभिनन्दन को ध्याते हैं ।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं ।।45।।

ॐ ह्रीं अक्ष स्पंदरहित सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु का शरीर परमौदारिक है, पुद्‍गल निमित्त बन पाता है ।
छाया से रहित रहा फिर भी, जो सबके मन को भाता है ।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, जिन अभिनन्दन को ध्याते हैं ।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं ।।46।।

ॐ ह्रीं छायारहित सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह देवकृत अतिशय

शुभ दिव्य देशना जिनवर की, सर्वार्ध मागधी भाषा में ।
यह देवों का अतिशय मानो, समझो मागध परिभाषा में ।।
जिन अभिनन्दन की देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी ।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी ।।47।।

ॐ ह्रीं सर्वार्धमागधीभाषादेवोपुनीतातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस ओर प्रभु के चरण पड़ें, जन-जन में मैत्री भाव रहे ।
न बैर विरोध रहे क्षणभर, जग में खुशियों की धार बहे ।।
जिन अभिनन्दन की देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी ।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी ।।48।।

ॐ ह्रीं सर्वजीवमैत्रीभावदेवोपुनीतातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनवर का गमन जहाँ होता, तो सर्व दिशाएँ हों निर्मल ।
तब देव सभी अतिशय करते, धो देते हैं सारा कलमल ।।
जिन अभिनन्दन की देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी ।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी ।।49।।

ॐ ह्रीं सर्वदिग्निर्मलत्व देवोपुनीतातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर का समवशरण लगते, आकाश श्रेष्ठ निर्मल होवे ।
यह चमत्कार है देवों का, सारे जो दोषों को खोवे ।।
जिन अभिनन्दन की देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी ।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी ।।50।।

ॐ ह्रीं शरदकालवन्निर्मलगगनदेवोपुनीतातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ समवशरण प्रभु का आते, खिलते हैं एक साथ फल-फूल।
भर जाते हैं खेत धान्य से, तरुवर भी झुक जाते अनुकूल ।।
जिन अभिनन्दन की देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी ।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी ।।51।।

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादितरुपरिणाम देवोपुनीतातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन प्रभु के चरण जहाँ पड़ते, भू कंचनवत हो जाती हैं ।
वह ज्यों-ज्यों आगे बढ़ते जाते, दर्पणवत् होती जाती है ।।
जिन अभिनन्दन की देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी ।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी ।।52।।

ॐ ह्रीं आदर्शतलप्रतिमारत्नमयीदेवोपुनीतातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गगन मध्य ज्यों पग रखते सुर, स्वर्ण कमल रचते पावन ।
वह सात-सात आगे पीछे, इक मध्य पंचदश मनभावन ।।
जिन अभिनन्दन की देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी ।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी ।।53।।

ॐ ह्रीं चरणकमलतलरचितस्वर्णकमलदेवोपुनीताशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर इन्द्र नरेन्द्र सभी मिलकर, भक्ती से जय-जयकार करें ।
आओ-आओ सब भक्ति करें, चारों ही ओर पुकार करें ।।
जिन अभिनन्दन की देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी ।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी ।।54।।

ॐ ह्रीं एतेतैतिचतुर्णिकायामर परापराह्वान देवोपुनीतातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चलती है मन्द सुगन्ध पवन, सब व्याधी विषम विनाश करें।
जन-जन को अति सुरभित करती, मन में अतिशय उल्लास भरें।।
जिन अभिनन्दन की देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी ।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी ।।55।।

ॐ ह्रीं सुगंधितविहरण मनुगतवायुत्व देवोपुनीतातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर वृष्टि करें गंधोदक की, मन में अति मंगल मोद भरें ।
ये चमत्कार शुभ भक्ति का, वह भक्ति मेघकुमार करें ।।
जिन अभिनन्दन की देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी ।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी ।।56।।

ॐ ह्रीं मेघकुमारकृतगंधोदकवृष्टिदेवोपुनीतातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुपवन कुमार देव मिलकर, शुभ अतिशय खूब दिखाते हैं ।
धूली कंटक से रहित भूमि पर, वह प्रभु का गमन कराते हैं ।।
जिन अभिनन्दन की देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी ।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी ।।57।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमितधूलिकंटकादि देवोपुनीतातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

परमानन्द मिले जन-जन को, मन आनन्दित हो जाते हैं ।
रोम-रोम पुलकित हो जाए, जब प्रभु का दर्शन पाते हैं ।।

जिन अभिनन्दन की देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी ।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी ।।58।।

ॐ ह्रीं सर्वजनपरमानंदत्वदेवोपुनीतातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

धर्म चक्र को सिर पर रखकर, चलते हैं यक्ष आगे-आगे ।
यह है प्रताप अतिशयकारी, शुभ बाधा स्वयं दूर भागे ।।
जिन अभिनन्दन की देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी ।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी ।।59।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्रचतुष्टयदेवोपुनीतातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कलश ताल दर्पण प्रतीक शुभ, छत्र चँवर ध्वज अरु भृंगार ।
मंगल द्रव्य आठ देवों के, होते हैं जग में सुखकार ।।
जिन अभिनन्दन की देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी ।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी ।।60।।

ॐ ह्रीं अष्टमंगलद्रव्यदेवोपुनीतातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्य

(नरेन्द्र छन्द)

शत इन्द्रों से अर्चित अर्हत्, प्रातिहार्य वसु पायें ।
तरु अशोक शुभ प्रातिहार्य जिन, विशद आप प्रगटायें ।।
शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की महिमा हम गाते ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते ।।61।।

ॐ ह्रीं तरु अशोक प्रातिहार्य संयुक्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सघन पुष्प की वृष्टी करके, नभ में सुर हर्षाते ।
ऊर्ध्व मुखी हो पुष्प बरसते, जिन महिमा दिखलाते ।।

शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की महिमा हम गाते ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते ।।62।।

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य संयुक्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव शरण में हुए अलंकृत, चौंसठ चँवर ढुराते ।
श्वेत चँवर ज्यों नम्रभूत हो, विनय पाठ सिखलाते ।।
शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की महिमा हम गाते ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते ।।63।।

ॐ ह्रीं चतुः षष्ठि चँवर प्रातिहार्य संयुक्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाति कर्म का क्षय होते ही, भामण्डल प्रगटावे ।
कोटि सूर्य की कांती जिसके, आगे भी शर्मावे ।।
शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की महिमा हम गाते ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते ।।64।।

ॐ ह्रीं भामण्डल प्रातिहार्य संयुक्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आओ-आओ जग के प्राणी, प्रभू जगाने आये ।
श्रेष्ठ दुन्दुभी के द्वारा शुभ, वाद्य बजाके गाये ।।
शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की महिमा हम गाते ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते ।।65।।

ॐ ह्रीं दुन्दुभि प्रातिहार्य संयुक्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक के ईश प्रभु हैं, तीन छत्र बतलाते।
गुरु लघु तम लघु ऊर्ध्व में, क्रमशः धवल कांति फैलाते ।।
शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की महिमा हम गाते ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते ।।66।।

ॐ ह्रीं त्रयछत्र प्रातिहार्य संयुक्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अर्हत जिन के दिव्य वचन शुभ, प्रमुदित होकर पाते ।
मोह महातम हरने वाले, सभी समझ में आते ।।
शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की महिमा हम गाते ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर सादर शीश झुकाते ।।67।।

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य संयुक्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण के मध्य रत्नमय, सिंहासन मनहारी ।
कमलाशन पर अधर विराजे, अर्हत् जिन त्रिपुरारी ।।
शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की महिमा हम गाते ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते ।।68।।

ॐ ह्रीं दिव्य सिंहासन प्रातिहार्य संयुक्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्त चतुष्टय *(चौपाई)*

ज्ञानानन्त प्रभु प्रगटाए, ज्ञानावरणी कर्म नशाए ।
श्री जिनेन्द्र की महिमा न्यारी, सारे जग में मंगलकारी ।।69।।

ॐ ह्रीं अनन्त ज्ञान सहिताय श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्श अनन्त प्राप्त कर स्वामी, हुए लोक में अन्तर्यामी ।
श्री जिनेन्द्र की महिमा न्यारी, सारे जग में मंगलकारी ।।70।।

ॐ ह्रीं अनन्त दर्शन सहिताय श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुखानन्त प्रगटाने वाले, अर्हत् जग में रहे निराले ।
श्री जिनेन्द्र की महिमा न्यारी, सारे जग में मंगलकारी ।।71।।

ॐ ह्रीं अनन्त सुख सहिताय श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर्यानन्त के धारी गाये, अन्तराय प्रभु कर्म नशाए ।
श्री जिनेन्द्र की महिमा न्यारी, सारे जग में मंगलकारी ।।72।।

ॐ ह्रीं अनन्त वीर्य सहिताय श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छियालिस मूल गुणों के धारी, जग में होते करुणाकारी ।
विशद भावना सोलह भाए, दशधर्मों के नाथ कहाए ।।73।।

ॐ ह्रीं चतुः षष्ठि मूल गुण एवं षोड्सभावना दशधर्म सहिताय श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

दोहा– **अभिनंदन जिन पद युगल, वन्दन मेरा त्रिकाल ।**
भव क्रन्दन हो नाश मम्, गाते हैं जयमाल।।

(नयनमालिनी छन्द)

अभिनन्दन जिनराज नमस्ते, सिद्ध शिला के ताज नमस्ते ।
तीर्थंकर अखलेश नमस्ते, वीतराग परमेश नमस्ते ।।
नगर अयोध्या रत्न बरसते, नर–नारी मन खूब हरसते ।
गर्भ पूर्व छह माह नमस्ते, प्रभु करुणा की छाँह नमस्ते ।।
संवर नृप के द्वार नमस्ते, हुए मंगलाचार नमस्ते।
जन्मे श्री जिनदेव नमस्ते, स्वर्ग से आये देव नमस्ते ।।
माँ सिद्धार्था श्रेष्ठ नमस्ते, गर्भ में आए यथेस्ठ नमस्ते ।
संगारम्भ विहीन नमस्ते, निज गुणमय स्वाधीन नमस्ते ।।
वैजयन्त अवतार नमस्ते, अशुभ गती क्षयकार नमस्ते ।
मनुज गती शुभकार नमस्ते, उत्तम संयम धार नमस्ते ।।
चऊ आराधन वान नमस्ते, किए कर्म की हान नमस्ते ।
राग द्वेष विहीन नमस्ते, चउ कषाय से हीन नमस्ते ।।
रत्नत्रय धर धीर नमस्ते, चिन्मूरत गंभीर नमस्ते ।
पंच महाव्रत वान् नमस्ते, वीतराग विज्ञान नमस्ते ।।
नव लब्धी धरणेश नमस्ते, पंच भाव सिद्धेश नमस्ते ।
द्रव्य तत्व विज्ञान नमस्ते, कर्म घातिया घात नमस्ते ।।

सप्त भंग के ईश नमस्ते, जगतीपति जगदीश नमस्ते ।
अष्टम भू अधिराज नमस्ते, अष्ट गुणों के ताज नमस्ते ।।
केवल ब्रह्म प्रकाश नमस्ते, सर्व चराचर भास नमस्ते ।
मुक्ति रमापति वीर नमस्ते, हर्त्ता भव भय वीर नमस्ते ।।

(छन्द घत्तानन्द)

हम जग भटकाए, दर्श ना पाए, कर्मों की यह प्रभुताई ।
अब दर्शन पाएँ, ज्ञान जगाएँ, तव छवि मेरे मन भाई ।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– दोषो के हैं कोष हम, अल्प बुद्धि हैं नाथ ।
गुण गाए वाचाल हो, चरण झुकाते माथ ।।

।। इत्याशीर्वाद पुष्पाजलिं क्षिपेत् ।।

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदिसागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीरकीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्याः श्री भरतसागराचार्य श्री विरागसागराचार्याः जातास्तत् शिष्याः आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे दिल्ली प्रान्ते शास्त्री नगर स्थित 1008 श्री शांतिनाथ दि. जैन मंदिर मध्ये अद्य वीर निर्वाण सम्वत् 2538 वि.सं. 2069 मासोत्तम मासे अश्विन मासे शुक्लपक्षे एकादश्यां दिन गुरुवासरे श्री अभिनन्दननाथ विधान रचना समाप्त इति शुभं भूयात्।

श्री अभिनंदननाथ चालीसा

दोहा– नव देवों के चरण में, नव कोटी के साथ ।
भक्ती करते भाव से, चरण झुकाते माथ ।।
अभिनन्दन जिनराज का, चालीसा शुभकार ।
मुक्ती पद के भाव से, लिखते अपरम्पार ।।

(चौपाई)

है आकाश अनन्तानन्त, जिसका कहीं न होता अंत ।
बीच में तीनों लोक महान्, मध्य लोक में मध्य प्रधान ।।
जिसमें जम्बूद्वीप विशेष, दक्षिण में है भारत देश ।
नगर अयोध्या रहा महान्, राजा संवर जिसका जान ।।
कश्यप गोत्र रहा शुभकार, वंश इक्ष्वाकु मंगलकार ।
रानी सिद्धार्था के उर आन, गर्भ में आए जिन भगवान ।।
बेला प्रत्यूष रही प्रधान, पुनर्वसू नक्षत्र महान् ।
वैसाख शुक्ला षष्ठी जान, पाए प्रभु गर्भ कल्याण ।।
माघ शुक्ल बारस शुभकार, जन्म लिए जिन मंगलकार ।
पुनर्वसु नक्षत्र प्रधान, राशी स्वामी बुध पहिचान ।।
पीत वर्ण तन का शुभकार, बन्दर चिन्ह रहा मनहार ।
पचास लाख पूरब की जान, आयु पाये जिन भगवान ।।
साढ़े तीन सौ धनुष महान्, अवगाहन प्रभु तन का जान ।
प्रभु ने देखा मेघ विनाश, धारण किए आप सन्यास ।।
माघ शुक्ल बारस मनहार, प्रत्यूष बेला अपरम्पार ।
चित्रा हस्त पालकी जान, पुनर्वसु नक्षत्र महान् ।।
नगर अयोध्या रहा महान्, दीक्षा स्थल उग्र उद्यान ।
दीक्षा वृक्ष असन पहिचान, धनु बयालिस सौ उच्च महान् ।।

सहस भूप सह दीक्षित जान, कर बेला उपवास महान् ।
दो दिन बाद लिए आहार, क्षीर खीर का प्रभु मनहार ।।
नगर अयोध्या मंगलकार, राजा इन्द्रदत्त गृहवार ।
शुभ अष्टादश वर्ष विशेष, रहे आप छद्मस्थ जिनेश ।।
पौष शुक्ल चौदश दिनमान, प्रभु भी पाए केवल ज्ञान ।
इन्द्र राज धनपति के साथ, आकर चरण झुकाए माथ ।।
समवशरण रचना शुभकार, साढ़े दश योजन विस्तार ।
पद्मासन में बैठ जिनेश, दिव्य-देशना दिए विशेष ।।
गणधर एक सौ तीन महान्, व्रजनाभि थे गणी प्रधान ।
तीन लाख मुनिवर अनगार, प्रभु के साथ रहे शुभकार ।।
यक्षेश्वर था यक्ष प्रधान, यक्षी वज्र शृंखला जान ।
छठ वैसाख शुक्ल की जान, श्री सम्मेद शिखर स्थान ।।
खड्गासन से आप जिनेश, कूटानन्द स्थान विशेष ।
सर्व कर्म का किए विनाश, सिद्धशिला पर कीन्हें वास ।।
पाए ज्ञान अनन्तानन्त, सुख अनन्त पाए भगवन्त ।
आप हुए अभिनन्दन नाथ, चरण झुकाते तब हम माथ ।।
कई जिनबिम्ब रहे शुभकार, सर्व जहाँ में मंगलकार ।
अनुपम रहा दिगम्बर भेष, देते शिवपद का उपदेश ।।
भक्ती करे भाव के साथ, प्रभु के चरण झुकाए माथ ।
उसका होय 'विशद' कल्याण, शीघ्र प्राप्त हो केवलज्ञान ।।
नश जाए क्षण में संसार, मुक्ती पद पाए शुभकार ।
हम भी करते प्रभु गुणगान, प्राप्त हमें हो पद निर्वाण ।।

दोहा- अभिनन्दन जिनराज का, चालीसा शुभकार।
पढ़े सुने जो भाव से, उसका हो उद्धार।।
सुख-शांती सौभाग्य पा, जग में बने महान्।
कर्म नाश कर जीव वह, पद पावे निर्वाण।।

श्री 1008 अभिनन्दननाथ भगवान की आरती

प्रभु अभिनन्दन की करते हम, आरति मंगलकार ।
विशद भाव से आरति लेकर, आये प्रभु के द्वार ।।
हो प्रभु जी, हम सब उतारे, मंगल आरती...

1. नगर अयोध्या जन्म लिए तब, हर्षे सब नर-नारी ।
पन्द्रह माह पूर्व इन्द्रों ने, रत्न वृष्टि की भारी ।।
हो प्रभु...

2. माँ सिद्धार्था संवर के गृह, हुए आप अवतारी ।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराए, इन्द्र सभी शुभकारी ।।
हो प्रभु...

3. साढ़े तीन सौ धनुष प्रभु के, तन की है ऊँचाई ।
लाख पचास पूर्व की आयु, श्री जिनवर ने पाई ।।
हो प्रभु...

4. माघ सुदी बारस को प्रभु जी, उत्तम तप अपनाए ।
पौष सुदी चौदस को अनुपम, केवलज्ञान जगाए ।।
हो प्रभु...

5. छठी शुक्ल वैशाख मोक्ष पद, गिरि सम्मेद से पाए ।
'विशद' गुणों को पाने प्रभु के, आरति करने आए ।।
हो प्रभु...

विशद
श्री सुमतिनाथ विधान

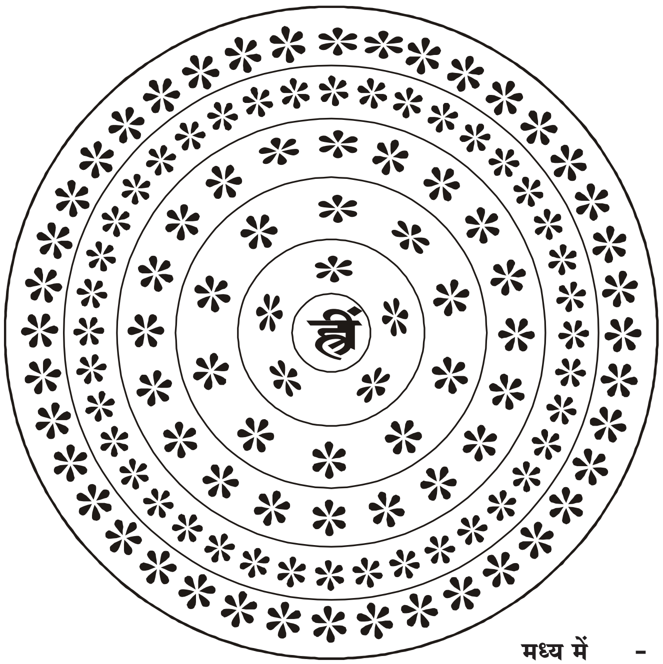

मध्य में	-	ह्रीं
प्रथम	-	5
द्वितीय	-	10
तृतीय	-	20
चतुर्थ	-	40
पञ्चम	-	40
कुल अर्घ्य	-	115

aM{`Vm...

प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

सुमतिनाथ स्तवन

दोहा- तीन लोक में पूज्य जिन, केवल ज्ञान प्रवीण।
दोष अठारह से रहित, निज स्वभाव में लीन।।

सुमतिनाथ पद नमन् हमारा, सर्व जगत उपकारी हैं।
शिवपथ हमें दिखाने वाले, जग में मंगलकारी हैं।।।
पूर्वभवों में सोलहकारण, भव्य भावना भाते हैं।
तीर्थंकर प्रकृति बन्ध का, अतिशय पुण्य कमाते हैं।।1।।
ऐसे पुण्यवान प्राणी का, देव मनाते गर्भकल्याण।
रत्नवृष्टि करते हैं खुश हो, भाव सहित करते गुणगान।।
जन्म कल्याणक के अवसर पर, पाण्डुक शिला पे न्हवन करें।
सुर नरेन्द्र धरणेन्द्र सभी मिल, मन वच तन स्तवन करें।।2।।
आकर के शत इन्द्र धरा पर, तप कल्याण मनाते हैं।
दिव्य पालकी में बैठाकर, दीक्षा वन ले जाते हैं।।
ज्ञान कल्याणक के अवसर पर, समवशरण बनवाते हैं।
दिव्य देशना भव्य जीव तव, श्री जिनवर की पाते हैं।।3।।
अन्त समय आयु का पाकर, जिनवर करते योग निरोध।
शुक्ल ध्यान से कर्म नाशकर, करते हैं आतम का शोध।।
सर्वकर्म के नाशी जिनवर, प्राप्त किए शुभ पद निर्वाण।।
मोक्ष कल्याणक के अवसर पर, देव करें अतिशय गुणगान।।4।।
कर्मोदय के कारण प्राणी, मन में पाते हैं जब क्लेश।
शांती पाते जो जिनवर के, पद में करते भक्ति विशेष।।
सुमतिनाथ की शुभ अर्चा, अतिशय सुख का कारण है।
भव-भव के संचित कर्मों का, होता शीघ्र निवारण है।।5।।

दोहा- सुमतिनाथ प्रभु की, रही महिमा अपरम्पार।
पढ़े सुने जो भाव से, पावें भव से पार।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री सुमतिनाथ पूजन

(स्थापना)

सुर नर किन्नर से अर्चित हैं, तीर्थंकर के चरण कमल।
शरणागत की रक्षा करते, बनकर रक्षा मंत्र धवल।।
सुमतिनाथ के पद पंकज का, उर में करते आह्वानन।
विशद भाव से शीश झुकाकर, करते हम शत्-शत् वन्दन।।
मम उर में तिष्ठो हे भगवन् ! हमको सुमति प्रदान करो।
संयम समता मय जीवन हो, हे प्रभु ! समता का दान करो।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

मोक्ष मार्ग के अनुपम नेता, करते हैं जग का कल्याण।
तीन लोक में मंगलकारी, जिनका गाते सब यशगान।।
प्रासुक निर्मल जल के द्वारा, करते हम उनका अर्चन।
जन्म जरा के नाश हेतु हम, भाव सहित करते वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अखिल विश्व में सर्वद्रव्य के, ज्ञाता श्री जिन देव कहे।
विशद विनय के साथ चरण में, वन्दन करते भक्त रहे।।
परम सुगन्धित चन्दन द्वारा, करते हम प्रभु का अर्चन।
भव संताप नाश करने को, भाव सहित करते वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि मुनि गणधर विद्याधर, भी जिनका करते आराधन।
मुक्ती पाने हेतू करते, मूलगुणों का जो पालन।।
ललित मनोहर अक्षय अक्षत, से करते प्रभु का अर्चन।
अक्षय पद को पाने हेतु, भाव सहित करते वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भव सागर से पार लगाने, हेतू अनुपम पोत कहे।
विशद मोक्ष के पथ पर जिसने, अथक काम के बाण सहे।।
वकुल कमल कुन्दादि पुष्प से, करते हम उनका अर्चन।
काम बाण विध्वंश हेतु हम, करते हैं शत्-शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके ध्यान और चिन्तन से, मिटती भव की पीड़ाएँ।
भूत प्रेत नर पशू शांत हो, करते मनहर क्रीड़ाएँ।।
बावर फैनी मोदक आदिक, से जिनका करते अर्चन।
क्षुधा वेदना नाश होय मम, करते हम शत्-शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विशद ज्ञान उद्योतित करते, मोह तिमिर हरने वाले।
मोक्ष मार्ग के राही चरणों, गुण गाते हो मतवाले।।
घृत के दीप जलाकर करते, जिनवर के पद में अर्चन।
मोह तिमिर के नाश हेतु हम, करते हैं शत्-शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मोही होकर के प्रभु ने, मोह पास का नाश किया।
काल अनादी के कर्मों का, बन्धन पूर्ण विनाश किया।।
अगर तगर की धूप बनाकर, करते हम जिनका अर्चन।
अष्ट कर्म के नाश हेतु हम, करते हैं शत्-शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय की श्रेष्ठ साधना, कर उत्तम फल पाया है।
चतुर्गति का भ्रमण त्यागकर, शिवपुर धाम बनाया है।।
श्री फल, केला, लौंग, इलायची, से करते प्रभु का अर्चन।
मोक्ष महाफल प्राप्त हमें हो, करते हम शत्-शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध शिला पर वास हेतु प्रभु, अष्ट कर्म का नाश किए।
क्षायिक ज्ञान प्रकट कर अनुपम, पद अनर्घ में वास किए।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, करता मैं सम्यक् अर्चन।
पद अनर्घ की प्राप्ति हेतु हम, करते हैं शत्-शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

द्वितिया शुक्ल माह श्रावण की, मात मंगला उर आए।
सुमतिनाथ की भक्ती में रत, देव सभी मंगल गाए।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुक्ल एकादशि को प्रभु, जन्में सुमतिनाथ भगवान।
जय जयगान हुआ धरती पर, इन्द्र किए अभिषेक महान्।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख सुदी नौमी को पावन, सुमतिनाथ दीक्षाधारी।
शिवसुख देने वाली है शुभ, सर्व जगत् मंगलकारी।।
चरणों में वन्दन करते मम, जीवन यह मंगलमय हो।
गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला नवम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

चैत शुक्ल एकादशी जानो, सुमतिनाथ तीर्थंकर मानो।
केवलज्ञान प्रभु जी पाये, समवशरण सुर नाथ रचाए।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत सुदी एकादशी आई, गिरि सम्मेद शिखर से भाई।
सुमतिनाथ जी मोक्ष सिधाए, कर्म नाशकर मुक्ती पाए।।
हम भी मुक्तिवधु को पाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।
अर्घ्य चढ़ाते मंगलकारी, बनने को शिवपद के धारी।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - मति सुमति करके प्रभु, हो गये आप निहाल।
सुमतिनाथ भगवान की, गाते हम जयमाल।।

(सखी छन्द)

जय सुमतिनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तुम हो मुक्ती पथगामी, तुम सर्व लोक में स्वामी।।
प्रभु हो प्रबोध के दाता, जग में जन-जन के त्राता।
तुम सम्यक् ज्ञान प्रदाता, इस जग में आप विधाता।।
है समवशरण सुखकारी, भविजन को आनन्द कारी।
शुभ देवों की बलिहारी, करते हैं अतिशय भारी।।
वह प्रातिहार्य प्रगटाते, भक्ति कर मोद मनाते।
परिवार सहित सब आते, अर्चा करके हर्षाते।।

सुनते जिनवर की वाणी, जो जन-जन की कल्याणी।
प्रभु वीतराग विज्ञानी, आनन्द सुधामृत दानी।।
तुमरी महिमा हम गाते, प्रभु सादर शीश झुकाते।
हम चरण-शरण में आते, आशीष आपका पाते।।
जब से तव दर्शन पाया, प्रभु जी श्रद्धान जगाया।
फिर भेद ज्ञान को पाया, हमने यह लक्ष्य बनाया।।
हम भी सौभाग्य जगाएँ, प्रभु मोक्ष मार्ग अपनाएँ।
तव चरणों शीश झुकाएँ, रत्नत्रय निधि पा जाएँ।।
बनके सम्यक् तपधारी, हो जावें हम अविकारी।
हम बनें प्रभु अनगारी, है विशद भावना भारी।।
प्रभु कर्म निर्जरा होवे, अघ कर्म हमारे खोवे।
मम आतम भी शुचि होवे, सब कर्म कालिमा धोवे।।
प्रभु अनन्त चतुष्टय पावें, तव केवल ज्ञान जगावें।
फिर शिवपुर को हम जावें, अरु मुक्ति वधु को पावें।।
हम यही भावना भाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।
हम भाव सहित गुण गाते, प्रभु द्वार आपके आते।।

(छन्द घत्तानन्द)

तुम हो हितकारी, सब दुखहारी,सुमतिनाथ जिनअविकारी।
हे समताधारी ! ज्ञान पुजारी, मोक्ष महल के अधिकारी।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - सर्व कर्म को नाशकर, बने मोक्ष के ईश।
'विशद' ज्ञान पाने प्रभु, चरण झुकाएँ शीश।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

प्रथम वलयः

दोहा- सुमतिनाथ की वन्दना, करते पञ्च कुमार।
भव्य जीव कर अर्चना, होते भव से पार।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

सुर नर किन्नर से अर्चित हैं, तीर्थंकर के चरण कमल।
शरणागत की रक्षा करते, बनकर रक्षा मंत्र धवल।।
सुमतिनाथ के पद पंकज का, उर में करते आह्वानन।
विशद भाव से शीश झुकाकर, करते हम शत्-शत् वन्दन।।
मम उर में तिष्ठो हे भगवन् ! हमको सुमति प्रदान करो।
संयम समता मय जीवन हो, हे प्रभु ! समता का दान करो।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

पञ्चकुमार से पूज्य जिनेन्द्र

(रोला छन्द)

सुख-शांती हो आनन्द, जीवन हो पावन।
हे 'वास्तुकुमार' ! सुदेव, करते आह्वानन।।
जिन पूजा को हे देव ! तुम भी तो आओ।
तुम सभी नशाओ विघ्न, यहाँ पर आ जाओ।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री वास्तुकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'वायु' ! जाति के देव, वायु मन्द चलाओ।
है जिनवर का आह्वान, भूमी स्वच्छ कराओ।।
जिन पूजा को हे देव ! तुम भी तो आओ।
तुम सभी नशाओ विघ्न, यहाँ पर आ जाओ।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री वायुकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'मेघकुमार' ! सुदेव, सारे विघ्न हरो।
वर्षा कर जल की धार, भू प्रच्छाल करो।।

जिन पूजा को हे देव ! तुम भी तो आओ।
तुम सभी नशाओ विघ्न, यहाँ पर आ जाओ ।।3 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री मेघकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अग्नि कुमार' ! सुदेव, यहाँ पर तुम आओ।
विघ्नों का करो विनाश, प्रभु के गुण गाओ।।
जिन पूजा को हे देव ! तुम भी तो आओ।
तुम सभी नशाओ विघ्न, यहाँ पर आ जाओ ।।4 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री अग्निकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'नागकुमार' ! सुदेव, नागों के स्वामी।
जिन भक्ती करो सहर्ष, बनो तुम अनुगामी।।
जिन पूजा को हे देव ! तुम भी तो आओ।
तुम सभी नशाओ विघ्न, यहाँ पर आ जाओ ।।5 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री नागकुमारदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कुमार भक्त जिनवर के, करते हम उनका आह्वान।
विघ्न नशाओ तुम आकर के, करो प्रभु का अब गुणगान।।
यज्ञ में शामिल होकर तुम भी, प्राप्त करो अपना अनुभाग।
विशद भाव से पूजा कर लो, चरणों में करके अनुराग ।।6 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री पंचकुमार !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा- **जिन पूजा को भाव से, आते दश दिग्पाल।**
अष्ट द्रव्य से पूजकर, वन्दन करें त्रिकाल।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

सुर नर किन्नर से अर्चित हैं, तीर्थंकर के चरण कमल।
शरणागत की रक्षा करते, बनकर रक्षा मंत्र धवल।।
सुमतिनाथ के पद पंकज का, उर में करते आह्वानन।
विशद भाव से शीश झुकाकर, करते हम शत्-शत् वन्दन।।
मम उर में तिष्ठो हे भगवन् ! हमको सुमति प्रदान करो।
संयम समता मय जीवन हो, हे प्रभु ! समता का दान करो।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

दश दिग्पाल से पूज्य जिनेन्द्र

गजारुढ़ हो देव पूर्व से, शचि इन्द्र कई साथ महान्।
अक्षत शस्त्र कोटि ले हाथों, शोभित होता सूर्य महान्।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतू, 'सूर्य इन्द्र' का है आह्वान।
पूर्व दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान।।1 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री रवि इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ दैदीप्यमान ज्वालायुत, आग्नेय से अग्निदेव।
उठती हैं स्फुलिंगे जिसमें, शक्ति हस्त से युक्त सदैव।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतू, 'अग्नि इन्द्र' का है आह्वान।
आग्नेय दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान ।।2 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री अग्निदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुभट प्रचण्ड दण्ड बाहुयुत, चण्डान्वित मुद्दण्ड कोदक।
छाया कटाक्षद्युति भासमान शुभ, लोलाय बाहयत श्रेष्ठ अखण्ड।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतू, सुर 'यमेन्द्र' का है आह्वान।
दक्षिण दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान।।3 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री यमेन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ देह व्यंजित ऋक्षाक्षत, रत्नकांति सम आभावान।
ऋक्षारुढ़ अस्त्र मुद्गर ले, अतिशय उज्ज्वल कांतीमान।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतू, 'नैऋत्य देव' का है आह्वान।
नैऋत्य दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री नैऋत्य देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मकरारुढ़ अस्त्र परिवेष्टित, नागपास ले अपने साथ।
मुक्तामय कल्पित है अनुपम, सुन्दर द्रव्य लिए हैं हाथ।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतू, 'वरुण देव' का है आह्वान।
पश्चिम दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री वरुणदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महामहिज आयुध ले हाथों, अश्वारुढ़ शक्तिधारी।
वायुवेग विलाश भूषान्वित, वायव्यकोण का अधिकारी।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतू, 'पवन इन्द्र' का है आह्वान।
वायव्य दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री पवनेन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नोज्ज्वल पुष्पों से शोभित, देवि धनादि को ले साथ।
उत्तर से विमान पर चढ़कर, धनपति कई इन्द्रों का नाथ।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतू, 'कुबेर इन्द्र' का शुभ आह्वान।
उत्तर दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री कुबेर इन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जटा मुकुट वृषभादिरूढ़ हो, गिरिवर पुत्री को ले साथ।
धवलोज्ज्वल अंगों का धारी, शुभ त्रिशूल ले अपने हाथ।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतू, है धनेन्द्र का शुभ आह्वान।
ईशान दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री धनेन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायु वेग वेगार्जित निज के, धरणेन्द्र पद्मावती का ईश।
उच्च कठोर कूर्म आरोही, अधोलोक का है आधीश।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतू, 'धरणेन्द्र' का शुभ है आह्वान।
अधो दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री धरणेन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चटाटोप चल शौर्य उदारी, मूर्ति विदारित है विकराल।
सिंहारुढ़ मदभ्र कांतियुत, रोहणीश करता नत भाल।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतू, 'सोम इन्द्र' का है आह्वान।
ऊर्ध्व दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान।।10।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री सोमइन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं दिक्पाल इन्द्र रवि आदिक, दश प्रकार के महति महान्।
दशों दिशाओं के रक्षक हैं, विघ्न नाश करते पद आन।।
सुमतिनाथ के चरण कमल की, अर्चा करते हैं शुभकार।
विशद भाव से गुण गाते हैं, वन्दन करते बारम्बार।।11।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री सर्वदिग्पालदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः

दोहा- सौधर्मादिक स्वर्ग के, लौकान्तिक भी देव।
जिन अर्चा में नित्य प्रति, तत्पर रहें सदैव।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

सुर नर किन्नर से अर्चित हैं, तीर्थंकर के चरण कमल।
शरणागत की रक्षा करते, बनकर रक्षा मंत्र धवल।।
सुमतिनाथ के पद पंकज का, उर में करते आह्वानन।
विशद भाव से शीश झुकाकर, करते हम शत्-शत् वन्दन।।
मम उर में तिष्ठो हे भगवन् ! हमको सुमति प्रदान करो।
संयम समता मय जीवन हो, हे प्रभु ! समता का दान करो।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सौधर्मादि इन्द्रों द्वारा पूज्य जिनेन्द्र

(चाल : टप्पा)

'सौधर्मेन्द्र' स्वर्ग से चलकर, ऐरावत पर आवे।
श्रीफल आदी से पूजाकर, उत्सव महत मनावे।।
भाई जिनवर के गुण गावे।
सुमतिनाथ की पूजा करके, मन ही मन हर्षावे।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री सौधर्मेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गजारुढ़ 'ईशान इन्द्र' भी, पूँगी फल ले आवे।
सह परिवार अर्चना करके, उत्सव महत मनावे।।
भाई जिनवर के गुण गावे।
सुमतिनाथ की पूजा करके, मन ही मन हर्षावे।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री ईशानेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंहारुढ़ सुकुण्डल मण्डित, 'सनत कुमार' भी आवे।
आम्रफलों से पूजा करके, उत्सव महत मनावे।।
भाई जिनवर के गुण गावे।
सुमतिनाथ की पूजा करके, मन ही मन हर्षावे।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री सानतकुमार इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्वारुढ़ 'माहेन्द्र इन्द्र' भी, केले लेकर आवे।
सहपरिवार अर्चना करके, उत्सव महत मनावे।।
भाई जिनवर के गुण गावे।
सुमतिनाथ की पूजा करके, मन ही मन हर्षावे।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री माहेन्द्र इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्म स्वर्ग से 'ब्रह्म इन्द्र' भी, हंसारुढ़ हो आवे।
पुष्प केतकी से पूजाकर, उत्सव महत मनावे।।
भाई जिनवर के गुण गावे।
सुमतिनाथ की पूजा करके, मन ही मन हर्षावे।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री ब्रह्मेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'लान्तवेन्द्र' भक्ती से मण्डित, श्री जिन के गुण गावे।
दिव्य फलों से पूजा करके, उत्सव महत् मनावे।।
भाई जिनवर के गुण गावे।
सुमतिनाथ की पूजा करके, मन ही मन हर्षावे।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री लान्तवेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शुक्र इन्द्र' चढ़कर चकवा पर, पुष्प सेवन्ती लावे।
श्रेष्ठ द्रव्य से पूजा करके, उत्सव महत मनावे।।
भाई जिनवर के गुण गावे।
सुमतिनाथ की पूजा करके, मन ही मन हर्षावे।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री शुक्रेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शतारेन्द्र' कोयल पर चढ़कर, जिन चरणों में आवे।
नील कमल से पूजा करके, उत्सव महत मनावे।।
भाई जिनवर के गुण गावे।
सुमतिनाथ की पूजा करके, मन ही मन हर्षावे।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री शतारेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गरुड़ारुढ़ 'इन्द्र आनत' भी, पनस दिव्य फल लावे।
सह-परिवार दिव्य अर्चाकर, उत्सव महत मनावे।।
भाई जिनवर के गुण गावे।
सुमतिनाथ की पूजा करके, मन ही मन हर्षावे।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री आनतेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्म विमानारुढ़ चरण में, 'प्राणतेन्द्र' भी आवे।
तुम्बरु फल से पूजा करके, उत्सव महत मनावे।।
भाई जिनवर के गुण गावे।
सुमतिनाथ की पूजा करके, मन ही मन हर्षावे।।10।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री प्राणतेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुमुद यान पर 'आरणेन्द्र' पद, गन्ने लेकर आवे।
निज परिवार सहित पूजाकर, उत्सव महत मनावे।।
भाई जिनवर के गुण गावे।
सुमतिनाथ की पूजा करके, मन ही मन हर्षावे।।11।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री आरणेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अच्युतेन्द्र' चढ़कर मयूर पर, जिन चरणों में आवे।
श्रीफल आदि से पूजाकर, उत्सव महत मनावे।।
भाई जिनवर के गुण गावे।
सुमतिनाथ की पूजा करके, मन ही मन हर्षावे।।12।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री अच्युतेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकान्तिक देवों से पूज्य जिनेन्द्र

(शम्भू छन्द)

ब्रह्म लोकवासी 'सारस्वत', देव चरण में आते हैं।
जिनवर के वैराग्य भाव की, श्रेष्ठ भावना भाते हैं।।
भाव सहित प्रभु अर्चा करके, हर्षित हो गुण गाते हैं।
विशद भाव से अर्चा करके, चरणों शीश झुकाते हैं।।13।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री सारस्वत देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकान्तिक 'आदित्य' देव शुभ, जिन अर्चा को आते हैं।
दिनकर की भाँती पूरब से, निज आभा बिखराते हैं।।
भाव सहित प्रभु अर्चा करके, हर्षित हो गुण गाते हैं।
विशद भाव से अर्चा करके, चरणों शीश झुकाते हैं।।14।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री आदित्यदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अग्नि देव' आग्नेय कोण से, भाव बनाकर आते हैं।
ब्रह्मलोक में रहने वाले, बह्म इन्द्र कहलाते हैं।।
भाव सहित प्रभु अर्चा करके, हर्षित हो गुण गाते हैं।
विशद भाव से अर्चा करके, चरणों शीश झुकाते हैं।।15।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री अग्निदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अरुण देव' लौकान्तिक भाई, जिन पद में झुक जाते हैं।
कर प्रणाम चरणों में प्रभु के, नित नये मंगल गाते हैं।।
भाव सहित प्रभु अर्चा करके, हर्षित हो गुण गाते हैं।
विशद भाव से अर्चा करके, चरणों शीश झुकाते हैं।।16।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री अरुणदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गर्दतोय' लौकान्तिक आके, करते वन्दन बारम्बार।
भव्य भावना बारह भाते, प्रभु के चरणों में शुभकार।।
भाव सहित प्रभु अर्चा करके, हर्षित हो गुण गाते हैं।
विशद भाव से अर्चा करके, चरणों शीश झुकाते हैं।।17।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री गर्दतोय !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तुषित देव' लौकान्तिक भाई, गुण गाते हैं मंगलकार।
ब्रह्म ऋषी कहलाने वाले, करें अर्चना अपरम्पार।।
भाव सहित प्रभु अर्चा करके, हर्षित हो गुण गाते हैं।
विशद भाव से अर्चा करके, चरणों शीश झुकाते हैं।।18।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री तुषितदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अव्याबाध' सभी बाधाएँ, करते हैं आकर के दूर।
लौकान्तिक यह देव प्रभू पद, भक्ती करते हैं भरपूर।।
भाव सहित प्रभु अर्चा करके, हर्षित हो गुण गाते हैं।
विशद भाव से अर्चा करके, चरणों शीश झुकाते हैं।।19।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री अव्याबाधदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'देवारिष्ट' कहे लौकान्तिक, ब्रह्मलोक वासी शुभकार।
उत्तर दिशा से आने वाले, वन्दन करते बारम्बार।।
भाव सहित प्रभु अर्चा करके, हर्षित हो गुण गाते हैं।
विशद भाव से अर्चा करके, चरणों शीश झुकाते हैं।।20।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री अरिष्ट देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सौधर्मादी देव स्वर्ग के, लौकान्तिक के आठ प्रकार।
बीस देव जिनवर की अर्चा, को रहते हरदम तैय्यार।।
भाव सहित प्रभु अर्चा करके, हर्षित हो गुण गाते हैं।
विशद भाव से अर्चा करके, चरणों शीश झुकाते हैं।।21।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री सौधर्मादि !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा– **भवनत्रिक के देव सब, प्रती इन्द्र भी साथ।**
नर पशु के द्वय इन्द्र भी, झुका रहे पद माथ।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

सुर नर किन्नर से अर्चित हैं, तीर्थंकर के चरण कमल।
शरणागत की रक्षा करते, बनकर रक्षा मंत्र धवल।।

सुमतिनाथ के पद पंकज का, उर में करते आह्वानन।
विशद भाव से शीश झुकाकर, करते हम शत्-शत् वन्दन।।
मम उर में तिष्ठो हे भगवन् ! हमको सुमति प्रदान करो।
संयम समता मय जीवन हो, हे प्रभु ! समता का दान करो।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

भवन व्यंतरवासी इन्द्र, प्रतीन्द्रों द्वारा पूज्य जिनेन्द्र

(छन्द-जोगीरासा)

इन्द्र भवन वासी देवों का, पहला 'असुर कुमार'।
द्रव्य सजाकर पूजा करने, आता सह परिवार।।
सुमतिनाथजी हैं इस जग में, अतिशय मंगलकार।
करे भाव से पूजा जो भी, पावे भव से पार।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री असुरकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र भवन वासी देवों का, दूजा 'नाग कुमार'।
द्रव्य सजाकर पूजा करने, आता सह परिवार।।
सुमतिनाथजी हैं इस जग में, अतिशय मंगलकार।
करे भाव से पूजा जो भी, पावे भव से पार।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री नागकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतिय इन्द्र भवनवासी का, जानो 'विद्युत कुमार'।
द्रव्य सजाकर पूजा करने, आता सह परिवार।।
सुमतिनाथजी हैं इस जग में, अतिशय मंगलकार।
करे भाव से पूजा जो भी, पावे भव से पार।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री विद्युतकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र भवन वासी देवों का, चौथा 'सुपर्ण कुमार'।
द्रव्य सजाकर पूजा करने, आता सह परिवार।।
सुमतिनाथजी हैं इस जग में, अतिशय मंगलकार।
करे भाव से पूजा जो भी, पावे भव से पार।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री सुपर्णकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चम इन्द्र भवन वासी, जानो 'अग्नि कुमार'।
द्रव्य सजाकर पूजा करने, आता सह परिवार।।
सुमतिनाथजी हैं इस जग में, अतिशय मंगलकार।
करे भाव से पूजा जो भी, पावे भव से पार।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री अग्निकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्टम इन्द्र भवन वासी का, आवे 'वात कुमार'।
पूजा हेतू द्रव्य श्रेष्ठ शुभ, लावे सह परिवार।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा जग में, होती है शुभकार।
पुण्य प्राप्त कर मुक्ति पावे, प्राणी बारम्बार।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री वातकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तम इन्द्र भवन वासी का, रहा 'स्तनित कुमार'।
पूजा हेतू द्रव्य श्रेष्ठ शुभ, लावे सह परिवार।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा जग में, होती है शुभकार।
पुण्य प्राप्त कर मुक्ति पावे, प्राणी बारम्बार।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री स्तनितकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम इन्द्र भवन वासी का, आवे 'उदधि कुमार'।
पूजा हेतू द्रव्य श्रेष्ठ शुभ, लावे सह परिवार।।

श्री जिनेन्द्र की पूजा जग में, होती है शुभकार।
पुण्य प्राप्त कर मुक्ति पावे, प्राणी बारम्बार।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री उदधिकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौवा इन्द्र भवन वासी का, आवे 'दीप कुमार'।
पूजा हेतू द्रव्य श्रेष्ठ शुभ, लावे सह परिवार।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा जग में, होती है शुभकार।
पुण्य प्राप्त कर मुक्ति पावे, प्राणी बारम्बार।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री दीपकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दसवाँ इन्द्र भवन वासी का, कहलाए 'दिक् कुमार'।
पूजा हेतू द्रव्य श्रेष्ठ शुभ, लावे सह परिवार।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा जग में, होती है शुभकार।
पुण्य प्राप्त कर मुक्ति पावे, प्राणी बारम्बार।।10।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री दिक्ककुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवनवासी-प्रतीन्द्र द्वारा पूजित जिनेन्द्र

(शम्भू छन्द)

इन्द्र भवनवासी देवों का, असुर कुमार कहलाता है।
निज परिवार सहित प्रतीन्द्र भी, जिन पूजा को आता है।।
सुमतिनाथ की पूजा भाई, सब दुःख हरने वाली है।
भव्य जीव को तीन लोक में, पावन करने वाली है।।11।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री असुरकुमार प्रतीन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र भवनवासी देवों का, नाग कुमार कहलाता है।
निज परिवार सहित प्रतीन्द्र भी, जिन पूजा को आता है।।

सुमतिनाथ की पूजा भाई, सब दुःख हरने वाली है।
भव्य जीव को तीन लोक में, पावन करने वाली है।।12।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री नागकुमार प्रतीन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र भवनवासी देवों का, विद्युत कुमार कहलाता है।
निज परिवार सहित प्रतीन्द्र भी, जिन पूजा को आता है।।
सुमतिनाथ की पूजा भाई, सब दुःख हरने वाली है।
भव्य जीव को तीन लोक में, पावन करने वाली है।।13।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री विद्युतकुमार प्रतीन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र भवनवासी देवों का, सुपर्ण कुमार कहलाता है।
निज परिवार सहित प्रतीन्द्र भी, जिन पूजा को आता है।।
सुमतिनाथ की पूजा भाई, सब दुःख हरने वाली है।
भव्य जीव को तीन लोक में, पावन करने वाली है।।14।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री सुपर्णकुमार प्रतीन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र भवनवासी देवों का, अग्नि कुमार कहलाता है।
निज परिवार सहित प्रतीन्द्र भी, जिन पूजा को आता है।।
सुमतिनाथ की पूजा भाई, सब दुःख हरने वाली है।
भव्य जीव को तीन लोक में, पावन करने वाली है।।15।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री अग्निकुमार प्रतीन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र भवनवासी देवों का, वात कुमार कहलाता है।
निज परिवार सहित प्रतीन्द्र भी, जिन पूजा को आता है।।
सुमतिनाथ की पूजा भाई, सब दुःख हरने वाली है।
भव्य जीव को तीन लोक में, पावन करने वाली है।।16।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री वातकुमार प्रतीन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र भवनवासी देवों का, स्तनितकुमार कहलाता है।
निज परिवार सहित प्रतीन्द्र भी, जिन पूजा को आता है।।
सुमतिनाथ की पूजा भाई, सब दुःख हरने वाली है।
भव्य जीव को तीन लोक में, पावन करने वाली है।।17।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री स्तनितकुमार प्रतीन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र भवनवासी देवों का, उदधि कुमार कहलाता है।
निज परिवार सहित प्रतीन्द्र भी, जिन पूजा को आता है।।
सुमतिनाथ की पूजा भाई, सब दुःख हरने वाली है।
भव्य जीव को तीन लोक में, पावन करने वाली है।।18।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री उदधिकुमार प्रतीन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र भवनवासी देवों का, दीप कुमार कहलाता है।
निज परिवार सहित प्रतीन्द्र भी, जिन पूजा को आता है।।
सुमतिनाथ की पूजा भाई, सब दुःख हरने वाली है।
भव्य जीव को तीन लोक में, पावन करने वाली है।।19।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री दीपकुमार प्रतीन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र भवनवासी देवों का, दिक् कुमार कहलाता है।
निज परिवार सहित प्रतीन्द्र भी, जिन पूजा को आता है।।
सुमतिनाथ की पूजा भाई, सब दुःख हरने वाली है।
भव्य जीव को तीन लोक में, पावन करने वाली है।।20।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री दिक्ककुमार प्रतीन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यन्तर देवों के इन्द्र से पूजित जिनेन्द्र

(चाल टप्पा)

निज परिवार सहित व्यन्तर के, 'किन्नरेन्द्र' पद आवें।
पूजा करते हैं प्रतीन्द्र भी, सादर शीश झुकावें।।
भाई अतिशय पुण्य उपावें।
नत हो सुमतिनाथ जिनवर के, भाव सहित गुण गावें।।21।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री किन्नरेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित व्यन्तर के, इन्द्र 'किम्पुरुष' आवें।
निज परिवार सहित प्रतीन्द्र भी, सादर शीश झुकावें।।
भाई अतिशय पुण्य उपावें।
नत हो सुमतिनाथ जिनवर के, भाव सहित गुण गावें।।22।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री किम्पुरुष !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित व्यन्तर के, 'महोरगेन्द्र' पद आवें।
पूजा करते हैं प्रतीन्द्र भी, सादर शीश झुकावें।।
भाई अतिशय पुण्य उपावें।
नत हो सुमतिनाथ जिनवर के, भाव सहित गुण गावें।।23।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री महोरगेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित व्यन्तर के, 'गन्धर्वेन्द्र' भी आवें।
निज परिवार सहित प्रतीन्द्र भी, सादर शीश झुकावें।।
भाई अतिशय पुण्य उपावें।
नत हो सुमतिनाथ जिनवर के, भाव सहित गुण गावें।।24।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री गन्धर्वेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित व्यन्तर के, 'यक्ष इन्द्र' पद आवें।
पूजा करते हैं प्रतीन्द्र भी, सादर शीश झुकावें।।
भाई अतिशय पुण्य उपावें।
नत हो सुमतिनाथ जिनवर के, भाव सहित गुण गावें।।25।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री यक्षेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित व्यन्तर के, 'राक्षसेन्द्र' पद आवें।
निज परिवार सहित प्रतीन्द्र भी, सादर शीश झुकावें।।
भाई अतिशय पुण्य उपावें।
नत हो सुमतिनाथ जिनवर के, भाव सहित गुण गावें।।26।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री राक्षसेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित व्यन्तर के, 'भूत इन्द्र' पद आवें।
पूजा करते हैं प्रतीन्द्र भी, सादर शीश झुकावें।।
भाई अतिशय पुण्य उपावें।
नत हो सुमतिनाथ जिनवर के, भाव सहित गुण गावें।।27।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री भूतेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित व्यन्तर के, 'पिशाचेन्द्र' पद आवें।
निज परिवार सहित प्रतीन्द्र भी, सादर शीश झुकावें।।
भाई अतिशय पुण्य उपावें।
नत हो सुमतिनाथ जिनवर के, भाव सहित गुण गावें।।28।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री पिशाचेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यन्तर के प्रतीन्द्र द्वारा पूजित जिनेन्द्र

(चौपाई)

किन्नरेन्द्र व्यन्तर का जानो, प्रथम इन्द्र जिसको पहिचानो।
सुमतिनाथ के पद शुभकारी, करे प्रतीन्द्र भक्ति मनहारी।।29।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री किन्नरेन्द्र प्रतीन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किम्पुरुषेन्द्र देव शुभ गाया, जिन पद का सेवक कहलाया।
सुमतिनाथ के पद शुभकारी, करे प्रतीन्द्र भक्ति मनहारी।।30।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री किम्पुरुषेन्द्र प्रतीन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महोरगेन्द्र व्यन्तर का जानो, तृतिय इन्द्र जिसे पहिचानो।
सुमतिनाथ के पद शुभकारी, करे प्रतीन्द्र भक्ति मनहारी।।31।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री महोरगेन्द्र प्रतीन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गन्धर्वेन्द्र देव शुभ गाया, चौथा इन्द्र देव कहलाया।
सुमतिनाथ के पद शुभकारी, करे प्रतीन्द्र भक्ति मनहारी।।32।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री गन्धर्वेन्द्र प्रतीन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष इन्द्र व्यन्तर का भाई, अर्चा करता है सुखदाई।
सुमतिनाथ के पद शुभकारी, करे प्रतीन्द्र भक्ति मनहारी।।33।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री यक्षेन्द्र प्रतीन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राक्षसेन्द्र की महिमा न्यारी, अर्चा करता विस्मयकारी।
सुमतिनाथ के पद शुभकारी, करे प्रतीन्द्र भक्ति मनहारी।।34।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री राक्षसेन्द्र प्रतीन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूत इन्द्र अर्चा को आवे, पद में सादर शीश झुकावे।
सुमतिनाथ के पद शुभकारी, करे प्रतीन्द्र भक्ति मनहारी।।35।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री भूतेन्द्र प्रतीन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पिशाच इन्द्र है देव निराला, जिन पद अर्चा करने वाला।
सुमतिनाथ के पद शुभकारी, करे प्रतीन्द्र भक्ति मनहारी।।36।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री पिशाचेन्द्र प्रतीन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

सतत प्रकाश ताप प्रतिभाषी, रवि विमान का है आधीश।
पल्योपम आयू का धारी, कमल हाथ ले नत हो शीश।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा करता, 'सूर्य महाग्रह' पद में आन।
विशद भाव से वंदन करके, करता है अतिशय गुणगान।।37।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री सूर्य महाग्रह !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लाख वर्ष पल्लाधिक आयू, वलक्षरोचि शुभ आभावान।
महारत्न कृत उद्धत क्षेपी, श्रेष्ठ ग्रहाधिप रहा महान्।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करता, 'सोम महाग्रह' पद में आन।
विशद भाव से वंदन करके, करता है अतिशय गुणगान।।38।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री सोम महाग्रह !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह रत्न श्रेष्ठ नव निधियाँ, चक्र रत्न को पाता है।
छह खण्डों का अधिपति है जो, वह 'नरेन्द्र' कहलाता है।।
बत्तिस सहस्र भूप होते हैं, छह खण्डों में महति महान्।
जिन चरणों में चक्रवर्ति भी, भाव सहित करते यशगान।।39।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री नरेन्द्र महाग्रह !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सिंह' कहा पशुओं का स्वामी, विशद इन्द्र कहलाता हैं।
भक्ति भाव से जिन चरणों में, सादर शीश झुकाता है।।
सुमतिनाथ के चरण कमल की, भक्ति करता अपरम्पार।
मनोयोग से वन्दन करके, अर्चा करता बारम्बार।।40।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री सिंह इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवनालय व्यन्तर देवों के, इन्द्र-प्रतीन्द्र जो रहे प्रधान।
ज्योतिष वासी इन्द्र प्रतीन्द्र शुभ, नर-पशु के भी इन्द्र महान्।।
सुमतिनाथ के चरण कमल की, भक्ति करते अपरम्पार।
मनोयोग से वन्दन करके, अर्चा करते बारम्बार।।41।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री भवनवासी-व्यन्तर-ज्योतिष-इन्द्र-प्रतीन्द्र नर-पशु इन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम वलयः

दोहा- दोष अठारह से रहित, दस धर्मों से युक्त।
अनन्त चतुष्टय प्राप्त जिन, प्रातिहार्य संयुक्त।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

सुर नर किन्नर से अर्चित हैं, तीर्थंकर के चरण कमल।
शरणागत की रक्षा करते, बनकर रक्षा मंत्र धवल।।
सुमतिनाथ के पद पंकज का, उर में करते आह्वानन।
विशद भाव से शीश झुकाकर, करते हम शत्-शत् वन्दन।।
मम उर में तिष्ठो हे भगवन् ! हमको सुमति प्रदान करो।
संयम समता मय जीवन हो, हे प्रभु ! समता का दान करो।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

18 दोष से रहित जिनेन्द्र

जो कर्म घातिया नाश किए, अरु केवलज्ञान प्रकाशे हैं।
वह तीन लोक में पूज्य हुए, अरु 'क्षुधा' वेदना नाशे हैं।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं **क्षुधारोग** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तृषा' वेदना से व्याकुल जग, जीव सताते आये हैं।
जिसने जीता यह तृषा दोष, वह तीर्थंकर कहलाये हैं।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं **तृषादोष** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम 'जन्म' मृत्यु के रोगों से, सदियों से सताते आये हैं।
जो जन्म रोग का नाश किए, वह तीर्थंकर कहलाये हैं।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं **जन्मदोष** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है अर्ध मृतक सम बूढ़ापन, उससे हम पार न पाए हैं।
अब 'जरा' रोग के नाश हेतु, जिन चरण शरण में आए हैं।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं **जरादोष** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मृत्यू' का रोग भयानक है, उससे न कोई बच पाते हैं।
जो जीत लेय इस शत्रु को, वह तीर्थंकर बन जाते हैं।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं **मृत्युदोष** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कई कौतूहल होते जग में, करते हैं विस्मय लोग सभी।
जिनवर ने विस्मय नाश किया, उनको 'विस्मय' न होय कभी।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं **विस्मय दोष** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न कोई शत्रु हमारे हैं, हम हैं चित् चेतन रूप अहा।
हैं 'अरति दोष' के नाशी जिन, उन सम मेरा स्वरूप रहा।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं **अरति दोष** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग जीवन क्षण भंगुर है, सब मोह बली की माया है।
जिनवर ने 'खेद' विनाश किया, सच्चे स्वरूप को पाया है।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं **खेद दोष** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह तन पुद्गल से निर्मित है, कई रोगों की जो खान कहा।
वह नाश किए हैं 'रोग' श्री, जिन पाये पद निर्वाण अहा।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं **रोगदोष** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनका कोई इष्ट अनिष्ट नहीं, जो समता भाव के धारी हैं।
वह सर्व 'शोक' के नाशी हैं, जिन की महिमा अति प्यारी है।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।10।।

ॐ ह्रीं **शोकदोष** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानादिक आठ महामद हैं, जो विनय भाव को खोते हैं।
जो विजय प्राप्त करते 'मद' पर, वह तीर्थंकर जिन होते हैं।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।11।।

ॐ ह्रीं **मददोष** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'मोह' महा मिथ्या कलंक, जिससे प्राणी जग भ्रमण करे।
जो मोह महामद नाश करे, वह आतम रस में रमण करे।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।12।।

ॐ ह्रीं **मोहदोष** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निद्रा' देवी ने इस जग के, सब जीवों को भरमाया है।
जिसने निद्रा को जीत लिया, उसने अर्हन्त पद पाया है।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।13।।

ॐ ह्रीं **निद्रादोष** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'चिंता' में चित्त विलीन रहे, तो चित् का चिन्तन खो जाए।
जो हर ले चिंता की शक्ति, वह शीघ्र सिद्ध पद को पाए।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।14।।

ॐ ह्रीं **चिंतादोष** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउ कर्म घातिया नाश किए, जो परमौदारिक तन पाए।
न 'स्वेद' रहे उनके तन में, वह तीर्थंकर जिन कहलाए।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।15।।

ॐ ह्रीं **स्वेददोष** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग से नाता तोड़ा, जो वीतरागता पाए हैं।
वह 'राग' दोष का नाश किए, अरू तीर्थंकर कहलाए हैं।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।16।।

ॐ ह्रीं **रागदोष** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनको किंचित् भी मोह नहीं, जो निज स्वभाव में लीन रहे।
वह 'द्वेष' भाव का नाश किए, जिन धर्म तीर्थ के नाथ कहे।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।17।।

ॐ ह्रीं **द्वेष दोष** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में 'भय' से भयभीत सभी, जो दुःख अनेकों पाते हैं।
उस भय का नाश किए स्वामी, जिन तीर्थंकर कहलाते हैं।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।18।।

ॐ ह्रीं **भयदोष** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश धर्म युक्त जिनेन्द्र

(चौपाई)

अन्दर में समता उपजाई, क्रोध नहीं करते हैं भाई।
'उत्तम क्षमा' धर्म के धारी, मुनिवर हैं जग में उपकारी।।19।।

ॐ ह्रीं **उत्तम क्षमाधर्म** प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन में अहंकार न आवे, प्राणी समता भाव जगावे।
'मार्दव धर्म' हृदय में धारे, धर्म ध्वजा को हाथ सम्हारे।।20।।

ॐ ह्रीं **उत्तम मार्दवधर्म** प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुटिल भाव मन में न आवे, सरल भाव प्राणी उपजावे।
'उत्तम आर्जव' धर्म के धारी, मुनिवर हैं जग में उपकारी।।21।।

ॐ ह्रीं **उत्तम आर्जवधर्म** प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसके मन मूर्छा न आवे, जो संतोष भाव को पावे।
'उत्तम शौच' धर्म के धारी, मुनिवर हैं जग में उपकारी ।।22।।

ॐ ह्रीं **उत्तम शौचधर्म** प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहें वचन जो मन में होवें, असत वचन की सत्ता खोवें।
'उत्तम सत्य' धर्म के धारी, मुनिवर हैं जग में उपकारी ।।23।।

ॐ ह्रीं **उत्तम सत्यधर्म** प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय मन जीते दुःखदाई, प्राणी रक्षा करते भाई।
वे हैं 'उत्तम संयम' धारी, जन-जन के हैं करुणाकारी ।।24।।

ॐ ह्रीं **उत्तम संयमधर्म** प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छाओं को तजने वाले, द्वादश तप को तपने वाले।
वे हैं 'उत्तम तप' के धारी, जन-जन के हैं करुणाकारी ।।25।।

ॐ ह्रीं **उत्तम तपधर्म** प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर द्रव्यों से राग हटावें, मन में समता भाव जगावें।
'उत्तम त्याग' धर्म के धारी, तन-मन से होते अविकारी ।।26।।

ॐ ह्रीं **उत्तम त्यागधर्म** प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किंचित् मन में राग न होवे, सारी इच्छाओं को खोवे।
वह 'आकिंचन व्रत' के धारी, जन-जन के हैं करुणाकारी ।।27।।

ॐ ह्रीं **उत्तम आकिंचन धर्म** प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो हैं काम भोग के त्यागी, परम ब्रह्म के हैं अनुरागी।
वे हैं 'ब्रह्मचर्य व्रत' के धारी, जन-जन के हैं करुणाकारी ।।28।।

ॐ ह्रीं **उत्तम ब्रह्मचर्यधर्म** प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्त चतुष्टय

(शम्भू छन्द)

द्रव्य और गुण पर्यायों को, एक साथ जो जान रहे।
ज्ञानावर्ण कर्म के नाशी, 'केवलज्ञानी' आप कहे ।।

सुमतिनाथ ने तीर्थंकर पद, पाकर जग कल्याण किया।
अष्ट कर्म को नाश किए फिर, आप स्वयं निर्वाण लिया ।।29।।

ॐ ह्रीं **अनन्तज्ञान** प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य और गुण पर्यायें सब, एक साथ दर्शाए हैं।
कर्म दर्शनावरणी नाशे, 'दर्शानन्त' उपजाए हैं ।।
सुमतिनाथ ने तीर्थंकर पद, पाकर जग कल्याण किया।
अष्ट कर्म को नाश किए फिर, आप स्वयं निर्वाण लिया ।।30।।

ॐ ह्रीं **अनन्तदर्शन** प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह कर्म को नाश किए प्रभु, शाश्वत सुख उपजाए हैं।
नश्वर सुख को तजने वाले, 'सुख अनन्त' प्रगटाए हैं ।।
सुमतिनाथ ने तीर्थंकर पद, पाकर जग कल्याण किया।
अष्ट कर्म को नाश किए फिर, आप स्वयं निर्वाण लिया ।।31।।

ॐ ह्रीं **अनन्तसुख** प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विघ्न अनेक करे जो जग में, अन्तराय दुःख दाता है।
'वीर्य अनन्त' प्रकट होता तो, प्राणी शिव सुख पाता है ।।
सुमतिनाथ ने तीर्थंकर पद, पाकर जग कल्याण किया।
अष्ट कर्म को नाश किए फिर, आप स्वयं निर्वाण लिया ।।32।।

ॐ ह्रीं **अनन्तवीर्य** प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्य

(शम्भू छन्द)

दिव्य रत्न वैडूर्यमणि से, निर्मित शाखाएँ मृदु पत्र।
कोमल कोंपल से शोभित हैं, उप शाखाएँ भी सर्वत्र ।।
हरित मणि से निर्मित पत्रों, की छाया है सघन महान्।
शोक निवारी 'तरु अशोक' है, शोभा युक्त रही पहचान ।।33।।

ॐ ह्रीं **तरु अशोक प्रातिहार्य** युत श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मद से हो उन्मत भ्रमर जो, करते हैं अतिशय गुंजार।
कुन्द कुमुद अरु नील कमल शुभ, श्वेत कमल शुभ हैं मंदार।।
बकुल मालती आदि पुष्पों, से आच्छादित है आकाश।
'पुष्प वृष्टि' होने से लगता, मानो आया हो मधुमास।।34।।

ॐ ह्रीं **पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य** युत श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कड़ा स्वर्णमय और मेखला, बाजूबन्द कर्ण कुण्डल।
कमर करधनी आदि अनेकों, आभूषण शोभित मंगल।।
नेत्र कमल दल के समान शुभ, नेत्रों वाले यक्ष महान्।
लीला पूर्वक 'चंवर युगल' जो, ढौर रहे हैं प्रभु पद आन।।35।।

ॐ ह्रीं **चंवर प्रातिहार्य** युत श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहित आवरण अकस्मात ही, उदित हुए हों ज्यों इक साथ।
सूर्य हजारों सम प्रकाशमय, शोभित होवें जग के नाथ।।
भेद मिटाए दिन रात्रि का, 'भामण्डल' अति शोभावान।
सप्त भवों का दर्शायक है, करता है प्रभु का सम्मान।।36।।

ॐ ह्रीं **भामण्डल प्रातिहार्य** युत श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रबल पवन के घात से क्षोभित, ज्यों समुद्र के शब्द समान।
है गम्भीर श्रेष्ठ स्वर वाला, ज्यों प्रशस्त वीणा का गान।।
श्रेष्ठ बांसुरी आदि उत्तम, वाद्यो सहित 'दुन्दुभि' श्रेष्ठ।
बार-बार गम्भीर शब्द जो, करते ताल के साथ यथेष्ठ।।37।।

ॐ ह्रीं **देव-दुन्दुभि प्रातिहार्य** युत श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन चन्द्रमाओं के जैसा, तीन लोक के चिह्न स्वरूप।
अनुपम मुक्त मणि की लड़ियों, से शोभित है सुन्दर रूप।।
बहुत विशाल नील मणियों से, शुभ निर्मित है दण्ड महान्।
अति मनोज्ञ आभा से संयुत, 'तीन छत्र' हैं शोभावान।।38।।

ॐ ह्रीं **छत्रत्रय प्रातिहार्य** युत श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्ण हृदय को हरने वाली, 'दिव्य ध्वनि' अनुपम गम्भीर।
चार कोश तक चतुर्दिशा में, श्रवण करें धारण कर धीर।।

मेघ पटल जल से पूरित ज्यों, गर्जन करता अपरम्पार।
सर्व दिशाओं के अन्तर को, व्याप्त करे होकर अविकार।।39।।

ॐ ह्रीं **दिव्यध्वनि प्रातिहार्य** युत श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्यों दैदीप्यमान किरणों के, रत्नों की किरणों से युक्त।
इन्द्र धनुष की कांति वाले, अनुपम हैं आभा संयुक्त।।
स्फटिक मणि की शिला से निर्मित, 'सिंहासन' सुन्दर मनहार।
सिंहों का शुभ है प्रतीक जो, समवशरण अति मंगलकार।।40।।

ॐ ह्रीं **सिंहासन प्रातिहार्य** युत श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोष अठारह नाश करें जिन, पाते हैं दश धर्म महान्।
अनन्त चतुष्टय पाने वाले, प्रातिहार्य पाते भगवान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, प्रभु के चरण चढ़ाते हैं।
सुमतिनाथ के चरण-कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।41।।

ॐ ह्रीं अठारह दोष, दश धर्म, अनन्त चतुष्टय, अष्ट प्रातिहार्ययुत श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐम् अर्हं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

दोहा- वात्सल्य के कोष हैं, सुमतिनाथ भगवान।
गाते हैं जयमाल हम, पाने पद निर्वाण।।

(चौपाई)

तीर्थंकर पञ्चम सुमतिनाथ, हम झुका रहे हैं चरण माथ।
श्रावण शुक्ला द्वितिया महान्, प्रभु प्राप्त किए थे गर्भकल्याण।।
तज के विमान आये जयन्त, करने कर्मों का पूर्ण अन्त।
थी मात मंगला जिनकी महान्, पितु भूप मेघरथ जग प्रधान।।
साकेतपुरी नगरी विशेष, शुभ सुमतिनाथ जन्मे जिनेश।
चकवा लक्षण प्रभु का प्रधान, दाये पग में था शोभमान।।
वैसाख शुक्ल नौमी महान्, सब देव किए थे यशोगान।

तब देव पालकी लिए साथ, प्रभु के आगे द्वय जोड़ हाथ।।
लौकान्तिक भी आये सुदेव, चरणों में विनती किए एव।
प्रभु किया आपने जो विचार, मानव जीवन का यही सार।।
राजा थे संग में इक हजार, निर्जन वन को कीन्हें विहार।
वैशाख शुक्ल नौमी जिनेश, प्रभु ने पाया निर्ग्रन्थ भेष।।
प्रभु पञ्च महाव्रत लिए धार, उद्यान सहेतुक के मझार।
शुभ जाति स्मृति से जिनेश, वैराग्य प्रभु धारे विशेष।।
सब दीक्षा धरके हुए संत, कर्मों का करने पूर्ण अन्त।
शुभ चैत्र शुक्ल एकादशी जान, पाया प्रभु ने कैवल्यज्ञान।।
तब समोशरण रचना विशाल, शुभदेव किए थे विनत भाल।
श्री वज्र गणी प्रभु के प्रधान, थे एक सौ सोलह सर्वमान्य।।
शुभ प्रातिहार्य प्रगटे महान्, जिनवर के आगे तब प्रधान।
फिर दिव्य देशना कर जिनेश, बतलाये मुक्ति पथ विशेष।।
सम्मेद शिखर पहुँचे जिनेश, प्रभु ध्यान किए जाके विशेष।
शुभ चैत्र शुक्ल ग्यारस महान्, प्रभु सुमतिनाथ पाए निर्वाण।।
प्रभु अष्ट कर्म का किए नाश, फिर निजानन्द में किए वास।
हम विनत झुकाते चरण माथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ।।
विनती अब मेरी सुनो नाथ, हम अर्घ्य चढ़ाते जोड़ हाथ।
हमको भी भव से करो पार, ये भक्त खड़े हैं प्रभु द्वार।।
हो जावें सारे कर्म नाश, अब मोक्ष महल में होय वास।

दोहा- विशद भावना व्यक्त की, पूर्ण करो हे नाथ।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजते, झुका रहे पद माथ।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सुमतिनाथ की वन्दना, करते हम कर जोर।
धीरे-धीरे ही सही, बढ़ें मोक्ष की ओर।।

।। इत्याशीर्वादः ।। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

सुमतिनाथ चालीसा

दोहा

नव देवों को पूजते, पाने को शिव धाम।
सुमतिनाथ के पद युगल, करते विशद प्रणाम।।

चौपाई

सुमतिनाथ के पद में जावे, उसकी मति सुमति हो जावे।
प्रभु कहे त्रिभुवन के स्वामी, जन-जन के हैं अन्तर्यामी।।
अनुपम भेष दिगम्बर धारी, जिन की महिमा जग से न्यारी।
वीतराग मुद्रा है प्यारी, सारे जग की तारण हारी।।
नगर अयोध्या मंगलकारी, जन्मे सुमतिनाथ त्रिपुरारी।
पिता मेघरथजी कहलाए, मात मंगला जिनकी गाए।।
वंश रहा इक्ष्वाकु भाई, महिमा जिसकी जग में गाई।
वैजयन्त से चयकर आये, श्रावण शुक्ल दोज शुभ पाए।।
मघा नक्षत्र रहा मनहारी, ब्रह्ममुहूर्त पाए शुभकारी।
चैत्र शुक्ल ग्यारस दिन आया, जन्म प्रभुजी ने शुभ पाया।।
इन्द्र तभी ऐरावत लाए, जा सुमेरु पर न्हवन कराए।
चकवा चिह्न पैर में पाया, सुमतिनाथ शुभ नाम बताया।।
स्वर्ण रंग तन का शुभ जानो, धनुष तीन सौ ऊँचे मानो।
जाति स्मरण देखकर स्वामी, बने आप मुक्तिपथ गामी।।
कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी गाई, मघा नक्षत्र पाए सुखदाई।
तेला का व्रत धारण कीन्हे, सहस्र भूप संग दीक्षा लीन्हे।।
गये सहेतुक वन में स्वामी, तरुवर रहा प्रियंगु नामी।
चैत शुक्ल एकादशी प्यारी, हस्त नक्षत्र रहा मनहारी।।

नगर अयोध्या में फिर आए, प्रभु जी केवलज्ञान जगाए।
समवशरण तव देव बनाए, दश योजन विस्तार बताए।।
गणधर एक सौ सोलह गाए, गणधर प्रथम वज्र कहलाए।
मुनिवर तीन लाख कहलाए, बीस हजार अधिक बतलाए।।
गिरि सम्मेद शिखर प्रभु आए, कर्म नाश कर मुक्ति पाए।
कृपा करो भक्तों पर स्वामी, बनें सभी मुक्ति पथगामी।।
इस जग के सारे सुख पाएँ, अन्त में भव से मोक्ष सिधाएँ।
विनती चरणों विशद हमारी, बनो सभी के प्रभु हितकारी।।
चालिस लाख पूर्व की स्वामी, आयु पाए शिवपद गामी।
योग निरोध किए जिन स्वामी, एक माह का अन्तर्यामी।।
चैत्र शुक्ल एकादशी गाई, सुमतिनाथ ने मुक्ति पाई।
सहस्र मुनि सह मुक्ति पाए, अपने सारे कर्म नशाए।।
सीकर जिला रहा शुभकारी, रैवासा में अतिशयकारी।
प्रतिमा प्रगट हुई मनहारी, सुमतिनाथ की मंगलकारी।।
दर्शन प्रभु का है सुखदाई, शांतिदायक है अति भाई।
जस्सू का खेड़ा ग्राम बताया, जिला भीलवाड़ा कहलाया।।
मूलनायक जिन प्रतिमा सोहे, भव्यों के मन को जो मोहे।
कई ग्रामों में प्रतिमा प्यारी, शोभित होती है मनहारी।।
दर्शन पाते हैं नर-नारी, श्री जिनवर का मंगलकारी।
जो भी प्रभु का दर्शन पाए, बार-बार दर्शन को आए।
हम भी प्रभु का ध्यान लगाएँ, निज आतम की शांति पाए।।

दोहा- चालीसा चालिस दिन, सद् श्रद्धा के साथ।
शांति मन में हो विशद, बने श्री का नाथ।।

जाप- ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

श्री 1008 सुमतिनाथ भगवान की आरती

(तर्ज- मात-पिता अरु......)

सुमतिनाथ की करते हैं हम, आरती मंगलकार।
भक्ति भाव से वन्दन करते, चरणों बारम्बार।।
कि आरती करते बारम्बार-2

1. मात मंगला के उर आये, मेघ प्रभु के लाल कहाए।
जन्म अयोध्या नगरी पाए, पद में चकवा चिह्न बताए।।
चार लाख पूरब की आयु, पाये अतिशयकार।
कि आरती करते बारम्बार-2

2. अष्ट कर्म को प्रभु नशाए, क्षण में केवलज्ञान जगाए।
अनन्त चतुष्टय प्रभु प्रगटाए, छियालिस मूल गुणों को पाए।।
शत् इन्द्रों ने आकर बोला, प्रभु का जय-जयकार।
कि आरती करते बारम्बार-2

3. दिव्य देशना प्रभु सुनाये, भव्य जीव सद्दर्शन पाए।
सम्यक् चारित्र प्राणी पाये, सम्यक् तप में चित्त लगाए।।
तीन लोकवर्ती जीवों का, किया बड़ा उपकार।
कि आरती करते बारम्बार-2

4. प्रभु की भक्ति करने आये, घृत कपूर के दीप जलाये।
'विशद' भाव से प्रभु गुण गाये, तीन योग से शीश झुकाये।।
चरण शरण में हम भी आये, कर दो प्रभु उद्धार।
कि आरती करते बारम्बार-2

* * *

प्रशस्ति

आदि नाम आदीश का, अन्त नाम महावीर।
चौबीसों जिनराज का, करो ध्यान धर धीर।।1।।
जिनवाणी जिनदेव की, करती जग कल्याण।
भाते हैं हम भावना, पाएँ केवल ज्ञान।।2।।
वृषभसेन आदि हुए, गणधर पूज्य महान्।
उनका भी हम कर रहे, भाव सहित गुणगान।।3।।
महावीर भगवान के, गणधर हुए प्रधान।
इन्द्रभूति गौतम कहे, ज्ञानी श्रेष्ठ महान्।।4।।
इसी श्रृंखला में हुए, कई आचार्य विशेष।
महाव्रतों को धारकर, धरे दिगम्बर भेष।।5।।
सदी बीसवीं में हुए, आदिसिन्धु आचार्य।
अंकलीकर कहलाए जो, कहते ऐसा आर्य।।6।।
पट्टाधीश उनके हुए, महावीरकीर्ति आचार्य।
प्रथम शिष्य उनके बने, विमल सिन्धु आचार्य।।7।।
भरत सिन्धु उनके हुए, पट्टाचार्य महान्।
विराग सिन्धु गुरु भ्रात हैं, जिनके अति गुणवान।।8।।
द्वय गुरुओं ने किया है, मेरा भी उद्धार।
शिक्षा-दीक्षा दी तथा, दिया सुपद आचार्य।।9।।
उनके शुभ आशीष से, बिगड़े बनते काम।
बिन्दु से सिन्धु किया, विशद सिन्धु दे नाम।।10।।
दो हजार सन् दश रहा, दशें शुक्ल वैशाख।
सुमतिनाथ पूजा लिखी, बढ़े धर्म की साख।।11।।
भारत देश का प्रान्त है, नाम है राजस्थान।
कोटा है सम्भाग यह, किया पूर्ण गुणगान।।12।।

।। श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः ।।

ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक

श्री पद्मप्रभ विधान

मध्य में-ह्रीं
प्रथम वलय-5
द्वितीय वलय-10
तृतीय वलय-20
चतुर्थ वलय-40
पंचम वलय-80

रचयिता
प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

श्री पद्मप्रभ स्तवन

श्री पद्म जिनवर, पदम अंकित, पद्मवर्ण सुधानिधम्।
नर इन्द्र चन्द्र मुनीन्द्र वन्दित, पद्मनाथ जिनेश्वरम् ।। 1 ।।
शिवधेश वेश विकार वर्जित, क्लेशहर मन रंजनम्।
मद मोह मान महान दुख निधि, प्रबल मन्मथ भंजनम्।। 2।।
प्रभु पाप पंक कलंक वर्जित, सित मयंक गुणागरम,।
अघरूप वनदव भस्म कर्त्ता, अक्ष विजयी जिनवरम् ।। 3।।
विधि मेघश्याम समूह नाशक, बीत पवन प्रचण्डनम्।
भवतापहर सुख साजकर, वरदीप नभ मार्तण्डनम्।। 4।।
तुम दिव्य ज्योति दिनेश कोटिक, दिव्यरूप प्रमाहरम्।
तुम दिव्यवाणी दिव्यज्ञानी, दिव्यमूर्ति निरंजनम्।। 5।।
सत् मग प्रकाशक पाप नाशक, श्रेष्ठ शासक वन्दनम्।
फल मुक्ति दायक विश्वनायक, जन सहायक अघहरम्।। 6।।
मिथ्यात्व मोह कषाय शंका, वेद अविरत खण्डनम्।
श्रद्धान संयम आचरण तप, वीर्य सद्गुण मण्डनम् ।। 7।।
अघ कर्म हरता जगत् कर्त्ता, धर्म धारी मंगलम्।
सर्वज्ञ परमेष्ठी सनातन, सरल नित्य निरंजनम्।। 8।।
अज्ञान मूढ़ अनायतन तज, कर्म दाह विनाशनम्।
सद्ज्ञान ध्यान महान् वन्दन, आत्मधर्म प्रकाशनम्।। 9।।
कल-मल विमोचन ज्ञान लोचन, दरिद्र मोचन ईश्वरम्।
कह प्रेमपूर्वक दास भगवत्, नित्य वन्दे जिनवरम् ।। 10।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

श्री पद्मप्रभ जिन पूजन

स्थापना

हे त्याग मूर्ति करुणा निधान ! हे धर्म दिवाकर तीर्थंकर !
हे ज्ञान सुधाकर तेज पुंज ! सन्मार्ग दिवाकर करुणाकर ।।
हे परमब्रह्म ! हे पद्मप्रभ ! हे भूप ! श्रीधर के नन्दन ।
हे सूर्य अरिष्ट ग्रह नाशक जिन, करते हैं उर में आह्वानन् ।।
हे नाथ ! हमारे अंतर में, आकर के धीर बँधा जाओ ।
हम भूले भटके भक्तों को, प्रभुवर सन्मार्ग दिखा जाओ ।।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त,सर्व मंगलकारी ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, जगत् शरण ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव- भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

निर्मल जल को प्रासुक करके, अनुपम सुन्दर कलश भराय ।
जन्म जरा मृतु दुख मैटन को, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय ।।
सूर्य अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय ।
हे करुणाकर ! भव दुखहर्ता, चरण पूजते मन वच काय ।।

ॐ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर का चन्दन शीतल, कंचन झारी में भर ल्याय ।
भव आताप मिटावन कारण, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय ।।
सूर्य अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय ।
हे करुणाकर ! भव दुखहर्ता, चरण पूजते मन वच काय ।।

ॐ भ्रां भीं भ्रूं भ्रौं भ्रः सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक जल से धोकर तन्दुल, परम सुगन्धित थाल भराय ।
अक्षय पद को पाने हेतू, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय ।।
सूर्य अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय ।
हे करुणाकर ! भव दुखहर्ता, चरण पूजते मन वच काय ।।

ॐ म्रां म्रीं म्रूं म्रौं म्रः सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुन्दर सुरभित और मनोहर, भाँति-भाँति के पुष्प मँगाय ।
कामबाण विध्वंस करन को, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
सूर्य अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय ।
हे करुणाकर ! भव दुखहर्ता, चरण पूजते मन वच काय ।।

ॐ रां रीं रूं रौ रः सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय काम बाण विध्वशंनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

घृत से पूरित परम सुगन्धित, शुद्ध सरस नैवेद्य बनाय ।
क्षुधा नाश का भाव बनाकर, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय ।।
सूर्य अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय ।
हे करुणाकर ! भव दुखहर्ता, चरण पूजते मन वच काय ।।

ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रौं घ्रः सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रत्न जड़ित ले दीप मालिका, घृत कपूर की ज्योति जलाय ।
मोह तिमिर के नाशन हेतू, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय ।।
सूर्य अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय ।
हे करुणाकर ! भव दुखहर्ता, चरण पूजते मन वच काय ।।

ॐ झ्रां झ्रीं झ्रूं झ्रौं झ्रः सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

दश प्रकार के द्रव्य सुगंधित, सर्व मिलाकर धूप बनाय।
अष्टकर्म चउगति नाशन को, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय ।।

सूर्य अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय ।
हे करुणाकर ! भव दुखहर्ता, चरण पूजते मन वच काय ।।

ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

ऐला केला और सुपाड़ी, आम अनार श्री फल लाय ।
पाने हेतू मोक्ष महाफल, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।
सूर्य अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय ।
हे करुणाकर ! भव दुखहर्ता, चरण पूजते मन वच काय ।।

ॐ खां खीं खूं खौं खः सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक नीर सुगंध सुअक्षत, पुष्प चरू ले दीप जलाय।
धूप और फल अष्ट द्रव्य ले, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।
सूर्य अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय ।
हे करुणाकर ! भव दुखहर्ता, चरण पूजते मन वच काय ।।

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ हूँ उ ह्रौं सा ह्रः सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **पद्मप्रभ के चरण में, होती पूरण आस ।**
कल्मष होंगे दूर सब, है पूरा विश्वास ।।
तीन योग से प्रभू पद, वन्दन करूँ त्रिकाल ।
पूजा करके भाव से, गाता हूँ जयमाल ।।

जय पद्मनाथ पद माथ नमस्ते, जोड़- जोड़ द्वय हाथ नमस्ते ।
ज्ञान ध्यान विज्ञान नमस्ते, गुण अनन्त की खान नमस्ते ।।
भव भय नाशक देव नमस्ते, सुर-नर कृत पद सेव नमस्ते ।
पद्म प्रभ भगवान नमस्ते, गुण अनन्त की खान नमस्ते ।।

आतम ब्रह्म प्रकाश नमस्ते, सर्व चराचर भास नमस्ते ।
पद झुकते शत इन्द्र नमस्ते, ज्ञान पयोदधि चन्द्र नमस्ते ।।
भवि नयनों के नूर नमस्ते, धर्म सुधारस पूर नमस्ते ।
धर्म धुरन्धर धीर नमस्ते, जय-जय गुण गम्भीर नमस्ते ।।
भव्य पयोदधि तार नमस्ते, जन-जन के आधार नमस्ते ।
रागद्वेष मद हनन नमस्ते, गगनाङ्गण में गमन नमस्ते ।।
जय अम्बुज कृत पाद नमस्ते, भरत क्षेत्र उपपाद नमस्ते ।
मुक्ति रमापति वीर नमस्ते, काम जयी महावीर नमस्ते ।।
विघ्न विनाशक देव नमस्ते, देव करें पद सेव नमस्ते ।
सिद्ध शिला के कंत नमस्ते, तीर्थंकर भगवन्त नमस्ते ।।
वाणी सर्व हिताय नमस्ते, ज्ञाता गुण पर्याय नमस्ते ।
वीतराग अविकार नमस्ते, मंगलमय सुखकार नमस्ते ।।

(छंद धत्ता)

जय जय हितकारी, करुणाधारी, जग उपकारी जगत् विभु।
जय नित्य निरंजन, भव भय भंजन, पाप निकन्दन पद्मप्रभु।।

ॐ ह्रीं श्री सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **पद्म प्रभ के चरण में, झुका भाव से माथ ।**
रोग शोक भय दूर हों, कृपा करो हे नाथ ! ।।

शान्तये शांतिधारा (दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

प्रथम वलयः

दोहा- **कल्याणक शुभ पांच के, चढ़ा रहे हम अर्घ्य ।**
पुष्पांजलि क्षेपण करें, पाने विशद अनर्घ्य ।।

(प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपामि।)

पहले वलय के ऊपर पुष्प क्षेपण करना है।

स्थापना

हे त्याग मूर्ति करुणा निधान ! हे धर्म दिवाकर तीर्थंकर !
हे ज्ञान सुधाकर तेज पुंज ! सन्मार्ग दिवाकर करुणाकर ।।
हे परमब्रह्म ! हे पद्मप्रभ ! हे भूप ! श्रीधर के नन्दन ।
हे सूर्य अरिष्ट ग्रह नाशक जिन, करते हैं उर में आह्वानन् ।।
हे नाथ ! हमारे अंतर में, आकर के धीर बँधा जाओ ।
हम भूले भटके भक्तों को, प्रभुवर सन्मार्ग दिखा जाओ ।।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त,सर्व मंगलकारी ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, जगत् शरण ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव- भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

माघ कृष्ण षष्ठी के दिन प्रभु माता के उर में आए ।
उपरिम ग्रैवेयक से चय कीन्हा, पृथ्वी पर मंगल छाए ।।1।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक माघ कृष्ण षष्ठीयां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक शुक्ला त्रयोदशी को, भू पर पावन सुमन खिला ।
भूले भटके नर नारी को, शुभम् एक आधार मिला ।।2।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक कार्तिक शुक्ला त्रयोदश्यां जन्म कल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक शुक्ला त्रयोदशी को, प्रभु के मन वैराग्य जगा ।
दीक्षा लेकर निज आतम के, चिंतन मनन में चित्त लगा ।।3 ।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक चैत्र शुक्ला त्रयोदश्यां तप कल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुक्ल पूनम को प्रभु ने, केवलज्ञान जगाया था ।
देवों ने जय जयकारों से, सारा भू-भाग गुंजाया था ।।4 ।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक चैत्र शुक्ला पूर्णिमायां ज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी को प्रभु, वसु कर्मों का हनन किए ।
सम्मेद शिखर की मोहन कूट से, मोक्ष महल को वरण किए ।।5।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी दिने मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- **कल्याणक शुभ पाँच, पद्म प्रभु जी पाए हैं ।**
हुए धर्म के नाथ, अर्घ्य चढ़ा पूज करूँ ।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक पंचकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा (दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्)

द्वितिय वलयः

क्षमा आदि दश धर्म का, धरूँ हृदय में भाव ।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, पाऊँ निज स्वभाव ।।

(द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपामि।) यहाँ दूसरे वलय पर पुष्प क्षेपण करें।

स्थापना

हे त्याग मूर्ति करुणा निधान ! हे धर्म दिवाकर तीर्थंकर !
हे ज्ञान सुधाकर तेज पुंज ! सन्मार्ग दिवाकर करुणाकर ।।
हे परमब्रह्म ! हे पद्मप्रभ ! हे भूप ! श्रीधर के नन्दन ।
हे सूर्य अरिष्ट ग्रह नाशक जिन, करते हैं उर में आह्वानन् ।।
हे नाथ ! हमारे अंतर में, आकर के धीर बँधा जाओ ।
हम भूले भटके भक्तों को, प्रभुवर सन्मार्ग दिखा जाओ ।।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त,सर्व मंगलकारी ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, जगत् शरण ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव- भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

दश धर्म के अर्घ्य

(गीता छन्द)

क्रोध को मैं जीत पाऊँ, कौन सा उद्यम करूँ ।
उत्तम क्षमा का भाव प्रभुवर, निज हृदय में मैं धरूँ ।।
जल फलादिक अर्घ्य लेकर, प्रभू पद अर्चन करूँ ।
पद्म प्रभु के पाद पंकज, में विशद वन्दन करूँ ।।1 ।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक उत्तम क्षमा धर्म सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

उत्तम सुमार्दव धर्म पाएँ, मान का मर्दन करें ।
विनय गुण को प्राप्त करके, ज्ञान का अर्जन करें ।।
जल फलादिक अर्घ्य लेकर, प्रभू पद अर्चन करूँ ।
पद्म प्रभु के पाद पंकज, में विशद वन्दन करूँ ।।2 ।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक उत्तम मार्दव धर्म सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

उत्तम सुआर्जव धर्म पाएँ, छल कपट का नाश हो ।
मन वचन अरु काय से, जिन धर्म पर विश्वास हो ।।
जल फलादिक अर्घ्य लेकर, प्रभू पद अर्चन करूँ ।
पद्म प्रभु के पाद पंकज, में विशद वन्दन करूँ ।।3 ।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक उत्तम आर्जव धर्म सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

लोभ का परिहार करके, हृदय में सन्तोष हो ।
शौच उत्तम धर्म पाकर, पूर्णतः निर्दोष हो ।।
जल फलादिक अर्घ्य लेकर, प्रभू पद अर्चन करूँ ।
पद्म प्रभु के पाद पंकज, में विशद वन्दन करूँ ।।4।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक उत्तम शौच धर्म सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत् समय में रमण होवे, असत् का परिहार हो ।
धर्म उत्तम सत्य पाएँ, मन वचन अविकार हो ।।
जल फलादिक अर्घ्य लेकर, प्रभू पद अर्चन करूँ ।
पद्म प्रभु के पाद पंकज, में विशद वन्दन करूँ ।।5।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक उत्तम सत्य धर्म सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

त्रस-स्थावर की सुरक्षा, इन्द्रियों पर विजय हो ।
प्राप्त हो उत्तम सुसंयम, धर्म में मन विलय हो ।।
जल फलादिक अर्घ्य लेकर, प्रभू पद अर्चन करूँ ।
पद्म प्रभु के पाद पंकज, में विशद वन्दन करूँ ।।6।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक उत्तम संयम धर्म सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

बाह्य अभ्यन्तर सुतप से, कर्म का संहार हो ।
धर्म तप उत्तम जो पाएँ, आत्म का उद्धार हो ।।
जल फलादिक अर्घ्य लेकर, प्रभू पद अर्चन करूँ ।
पद्म प्रभु के पाद पंकज, में विशद वन्दन करूँ ।।7।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक उत्तम तप धर्म सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

त्याग कर चौबिस परिग्रह, ध्यान आतम का लगे ।
त्याग उत्तम धर्म पाएँ, ज्ञान की ज्योती जगे ।।
जल फलादिक अर्घ्य लेकर, प्रभू पद अर्चन करूँ ।
पद्म प्रभु के पाद पंकज, में विशद वन्दन करूँ ।।8।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक उत्तम त्याग धर्म सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

राग न हो द्वेष न हो, मोह न किंचित् रहे ।
उत्तम आकिंचन्य धर्म पाकर, ज्ञान की गंगा बहे ।।
जल फलादिक अर्घ्य लेकर, प्रभू पद अर्चन करूँ ।
पद्म प्रभु के पाद पंकज, में विशद वन्दन करूँ ।।9।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक उत्तम आकिंचन्य धर्म सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

काम की ना नाम की ना, धाम की ना आश हो ।
ब्रह्मचर्य उत्तम सु पाकर, आत्मा में वास हो ।।
जल फलादिक अर्घ्य लेकर, प्रभू पद अर्चन करूँ ।
पद्म प्रभु के पाद पंकज, में विशद वन्दन करूँ ।।10।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

उत्तम क्षमादिक धर्म पाकर, कर्म वसु की हानि हो ।
भव के भ्रमण का अन्त हो, अरु प्राप्त केवल ज्ञान हो ।।
जल फलादिक अर्घ्य लेकर, प्रभू पद अर्चन करूँ ।
पद्म प्रभु के पाद पंकज, में विशद वन्दन करूँ ।।11।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक उत्तम क्षमा मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य आदि दश धर्म सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शांतिधारा (पुष्पांजलिं क्षिपामि।)

तृतिय वलयः

दोहा- **जीवों में त्रय लोक के, दोष अनन्तानन्त ।**
कर्म घातिया नाशकर, पाप किए प्रभु अन्त ।।

(तृतीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपामि) तीसरे वलय के ऊपर पुष्प क्षेपण करें।

स्थापना

हे त्याग मूर्ति करुणा निधान ! हे धर्म दिवाकर तीर्थंकर !
हे ज्ञान सुधाकर तेज पुंज ! सन्मार्ग दिवाकर करुणाकर ।।
हे परमब्रह्म ! हे पद्मप्रभ ! हे भूप ! श्रीधर के नन्दन ।
हे सूर्य अरिष्ट ग्रह नाशक जिन, करते हैं उर में आह्वानन् ।।
हे नाथ ! हमारे अंतर में, आकर के धीर बँधा जाओ ।
हम भूले भटके भक्तों को, प्रभुवर सन्मार्ग दिखा जाओ ।।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त,सर्व मंगलकारी ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, जगत् शरण ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव- भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

अष्टादश दोष मिथ्यात्व वेदरहित जिन

(रोला छन्द)

क्षुधा व्याधि में घात, जग जीवों का होवे ।
संज्ञा होय आहार, चेतन गुण को खोवे।।
विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।
पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।1।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक क्षुधा रोग विनाशक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तृषा वेदना व्याप्त, जग जीवों के होवे ।
तन में पीड़ा होय, मन की शांती खोवे ।।
विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।
पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।2।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक क्षुधा रोग विनाशक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लगे जीव के साथ, सात महाभयभारी ।
संयम तप से नाश, कर्म कर हों अविकारी ।।
विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।
पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।3।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक सप्त भयरोग विनाशक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

चिन्ता चिता समान, जिसको भी लग जावे ।
करती जीवन हान,जीवित उसे जलावे ।।
विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।
पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।4।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक चिन्ता रोग रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जर्जर करती देह, जरा जीव की आकर ।
शिथिल करे सब अंग, वृद्ध अवस्था पाकर ।।
विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।
पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।5।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक जरा रोग रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउ प्राणों के साथ, प्राणी जीवन पावे ।
प्राण छूटते साथ, उनका मरण कहावे ।।

विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।
पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।6।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक मरण रोग रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जले राग की आग, सारे सुगुण जलावे ।
हो प्रभु से अनुराग, जग से मुक्ती पावे ।।
विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।
पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।7।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक राग रोग रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मोह महाबलवान, कोई जीत न पावे ।
जीते जो बलवान, महावीर कहलावे ।।
विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।
पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।8।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक मोह दोष रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भरे करोड़ों रोग, इस प्राणी के तन में ।
पाते हैं बहु क्लेष, स्वयं अपने जीवन में ।।
विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।
पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।9।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक रोग दोष रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तन से बहकर श्वेद, करे तन मन को आकुल ।
पावें केवलज्ञान, श्वेद बिन रहे निराकुल ।।
विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।
पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।10।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्वेद दोष रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रम करके जग जीव, निज की शांती खोवे ।
करे कर्म का नाश, कभी फिर खेद न होवे ।।
विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।
पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।11।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक खेद दोष रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कहे महामद आठ, मान जग में उपजावें ।
करें मान की हान, जीव वह मुक्ती पावें ।।
विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।
पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।12।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक मद दोष रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रही दोष से प्रीत, उपजती पर प्राणी से ।
जानो इसका दोष, बन्धु तुम जिनवाणी से ।।
विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।
पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।13।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक रति दोष रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कोतूहल को देख, करें जो विस्मय भारी ।
स्थिर न हो ध्यान, रहें ना वे अनगारी ।।
विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।
पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।14।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक विस्मय दोष रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निवपामीति स्वाहा ।

निद्रा के वश जीव, स्वयं को जान न पावें।
निद्रादिक का नाश, किए निज में रम जावें।।
विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।
पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।15।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक निद्रा दोष रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जन्म अनन्तों बार पाय, पाए दुख भारी ।
कर्म नाशकर जीव, हो जाते अविकारी ।।
विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।
पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।16।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक जन्म दोष रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अरति दोष के साथ, होता मन अतिभारी ।
मन में हो संताप, दुखी होय नर नारी ।।
विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।
पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।17।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अरति दोष रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

महाक्रोध की अग्नी, मन में द्वेष जगावे ।
तज के ईर्ष्या द्वेष, चेतन में रम जावे ।।
विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।
पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।18।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक द्वेष दोष रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

करता है मिथ्या घात, सम्यक् दर्शन का ।
भ्रमण अनन्तानन्त, काल हो जग में जन का ।।

विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।
पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।19।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक मिथ्यात्व दोष रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्त्री आदिक वेद जग में, भ्रमण करावें ।
करके वेद विनाश, मोक्ष की पदवी पावें ।।
विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।
पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।20।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक स्त्री वेद दोष आदिक रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(शंभु छन्द)

यह दोष अठारह वेद, तथा मिथ्यात्व जगत भटकाते हैं ।
संसार में रहते जो प्राणी, इससे वह न बच पाते हैं ।।
जो इनको जीते वह जिनेन्द्र, शत इन्द्रों से पूजे जाते हैं ।
हम जीत सकें इन दोषों को, प्रभु चरणों शीश झुकाते हैं ।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अठारह दोष, मिथ्यात्व, स्त्री आदि लिंग रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शांतिधारा (दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

चतुर्थ वलयः (10 जन्म के अतिशय)

दोहा– चौंतिस अतिशय पाए हैं, अनन्त चतुष्टय साथ ।
संयम–पा अर्हत् हुए, चरण झुकाऊँ माथ ।।

(अथ चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपामि।) चौथे वलय के ऊपर पुष्प क्षेपण करें।

स्थापना

हे त्याग मूर्ति करुणा निधान ! हे धर्म दिवाकर तीर्थंकर !
हे ज्ञान सुधाकर तेज पुंज ! सन्मार्ग दिवाकर करुणाकर ।।

हे परमब्रह्म ! हे पद्मप्रभ ! हे भूप ! श्रीधर के नन्दन ।
हे सूर्य अरिष्ट ग्रह नाशक जिन, करते हैं उर में आह्वानन् ।।
हे नाथ ! हमारे अंतर में, आकर के धीर बँधा जाओ ।
हम भूले भटके भक्तों को, प्रभुवर सन्मार्ग दिखा जाओ ।।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त,सर्व मंगलकारी ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, जगत् शरण ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव- भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

(चौंतिश अतिशय अनन्त चतुष्टय संयम के अर्घ्य)

स्वेद रहित तन पाते जिनवर, ये अतिशय हैं सुखकारी ।
भक्त वन्दना करें भाव से, जीवन हो मंगल कारी ।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।1।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक स्वेद रहित शोभायमान सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

गर्भ जन्म को पाते फिर भी, श्री जिन मल से रहित कहे ।
किञ्चित् मल अरु मूत्र नहीं है, पूर्ण रूप से अमल रहे ।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।2।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक निर्मलत्व सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्वेत रूधिर होता है तन का, वात्सल्य दर्शाता है ।
दर्शन करके श्री जिनवर का, सबका मन हर्षाता है ।।

पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।3।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक गौक्षीर वत् स्वेत रुधिरत्व सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु का तन सुन्दर सुडौल है, होता है अतिशय कारी ।
शुभ परमाणू से निर्मित जो, समचतुस्र विस्मय कारी ।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।4।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक समचतुरस्र संस्थान सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वज्र वृषभ नाराच संहनन, जन्म समय से पाते हैं ।
अतिशय शक्ती पाने वाले, श्री जिनेन्द्र कहलाते हैं ।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।5।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक वज्रवृषभनाराच संहनन सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तन की सुन्दरता है इतनी, सारे रूप लजाते हैं ।
काम देव भी जिनके आगे, अति फीके पड़ जाते हैं ।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।6।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अतिशय रूप सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु जन्म के अतिशय में इक, यह भी अतिशय आता है ।
अति सुगन्ध मय तन होता है, तीन लोक महकाता है ।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।7।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक सौगन्ध शरीर सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सहस आठ लक्षण प्रभु तन में, अतिशय शोभा पाते हैं।
सहस्र नाम के द्वारा भविजन, उनकी महिमा गाते हैं ।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।8।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अष्टोतर सहस्र शुभ लक्षण शरीर धारक सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अप्रमित वीर्य को धार रहे बल, होता अतिशय कारी है ।
इनके आगे सुर चक्रवर्ति अरु, इन्द्र की शक्ति हारी है ।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।9।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अप्रतिमवीर्य सहित सहजातिशय धारक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु की हित मित अरु प्रियवाणी, सबको सन्तोष दिलाती है ।
शत इन्द्र चरण आ झुकते हैं, उन सबका मन हर्षाती है ।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।10।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक प्रियहित वादित्व सहजातिशय धारक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

10 केवलज्ञान कृत अतिशय

जब केवल ज्ञान प्रकट होता, तो अतिशय नया दिखाता है ।
करके सुभिक्ष पृथ्वी तल को, सौ योजन तक महकाता है ।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।11।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक गव्यूतिशत् चतुष्टय सुभिक्षत्व सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्यों सूर्य उदय होता नभ में, त्यों प्रभु अधर हो जाते हैं ।
बस पाँच हजार धनुष ऊपर, वह गगन गमन को पाते हैं ।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।12।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक आकाशगमनत्व सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु दया भाव के कोष रहे, अदया का नाम निशान नहीं ।
जो चरण शरण को पा जाते, उनको नाहिं होता खेद कहीं ।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।13।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अदयाभाव सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह केवलज्ञान का अतिशय है, प्रभु कवलाहार नहीं करते ।
फिर भी तन वदन प्रशस्त रहे, जीवों के खेद सभी हरते ।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।14।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक कवलाहार सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जब केवलज्ञान प्रकट होता, तब यह अतिशय हो जाता है ।
फिर चेतन और अचेतन कृत, उपसर्ग नहीं हो पाता है ।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।15।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक उपसर्गाभाव सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ समोशरण में श्री जिन का, मुख उत्तर पूर्व में रहता है ।
दिखता चारों हैं ओर विशद, शुभ जैनागम यह कहता है ।।

पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।16।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक चतुर्मुखत्व सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु सब विद्या के ईश्वर हैं, अरु सर्व कला कौशल धारी ।
जन-जन पर करुणा करते हैं, प्रभु सर्व लोक में उपकारी ।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।17।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक सर्वविद्येश्वरत्व सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

है परमौदारिक तन प्रभु का, न पड़ती है उसकी छाया ।
जो पुद्गल से ही बना हुआ, यह प्रभु की है कैसी माया ।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।18।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक छायारहित सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पलकें न कभी झपकती हैं, प्रभु नाशा पर दृष्टी रखते ।
बिन देखे द्रव्य चराचर के, वह स्वयं ज्ञान से सब लखते ।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।19।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अक्षस्पन्द रहित सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

ये महिमा अतिशय शाली है, प्रभु केवल ज्ञान जगाते हैं।
नहिं बढ़े केश नख किंचित भी, ज्यों के त्यों ही रह जाते हैं।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।20।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक समान नखकेषत्व सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चौदह देवकृत अतिशय

(चौबोला छंद)

तीर्थंकर की दिव्य देशना, सर्वार्द्ध मागधी भाषा में।
है चमत्कार देवों का ये, समझो सुरकृत परिभाषा में ।।
शुभ पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।21।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक सर्वार्धमागधी भाषा देवोपुनीतातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस ओर प्रभु के चरण पड़ें, जन-जन में मैत्री भाव रहे ।
सब बैर विरोध मिटे मन का, करुणा का उर में स्रोत बहे ।।
शुभ पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।22।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक सर्व जीवमैत्री भाव देवोपुनीतातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनवर का गमन जहाँ होता, इक साथ फूल खिल जाते हैं ।
सौरभ सुगन्ध के द्वारा वह, अवनी तल को महकाते हैं ।।
शुभ पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।23।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक सर्वर्तुफलादि शोभित तरु परिणाम देवोपुनीतातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु चरण पड़ें जिस वसुधा पर, भू कंचनवत् हो जाती है ।
ज्यों-ज्यों आगे बढ़ते जाते, वह दर्पणवत् होती जाती है ।।
शुभ पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।24।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक आदर्षतलप्रतिमा रत्नमयी देवोपुनीतातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अतिशय यह देवोंकृत होता, सुरभित वायू अनुकूल रहे ।
सब विषम व्याधि का नाश करे, शुभ मंद सुगन्ध समीर बहे ।।
शुभ पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।25।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक सुगन्धित विहरण मनुगत वायुत्व देवोपुनीतातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनन्द सरोवर लहराए, मन में उत्साह उमंग भरे ।
प्रभु का दर्पण सारे जग में, जन जन का कल्मष दूर करे ।।
शुभ पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।26।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक सर्वजन परमानन्दत्व देवोपुनीतातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायूकुमार सुर आकर के, अतिशय ये खूब दिखाते हैं ।
धूली कंटक से रहित भूमि, करके प्रभु गमन कराते हैं ।।
शुभ पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।27।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक वायुकुमारोपषमित धूलि कंटकादि देवोपुनीतातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर मेघकुमार सुवृष्टि करें, शुभ गंधोदक वर्षाते हैं ।
मेघों कृत बही सुगन्धी से, जन-जन के मन हर्षाते हैं ।।
शुभ पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।28।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक मेघकुमारकृत गन्धोदकवृष्टि देवोपुनीतातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु गगन गमन जब करते हैं, सुर स्वर्ण कमल रचते जाते ।
पन्द्रह का वर्ग कमल रचना, यह जैनागम में बतलाते ।।

शुभ पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।29।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक चरणकमल तल रचित स्वर्णकमल देवोपुनीतातिशय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सब ऋतुओं के फल फूल खिले, जहँ जिनवर के शुभ चरण पड़ें ।
फल से तरु डाली झुक जाती, खेतों में धान्य के पौध बढ़ें।।
शुभ पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।30।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक फलभारि नम्रषालि देवोपुनीतातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सर्व दिशाएँ निर्मल होतीं, शरद काल सम हो आकाश ।
भक्ति भाव से करें अर्चना, हो जाती है पूरी आस ।।
शुभ पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।31।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक शरदकाल वन्निर्मल गगन देवोपुनीतातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आओ आओ भक्ती कर लो, सबका करते हैं आह्वान ।
भक्ती करते स्वयं भाव से, चरणों में करते वन्दन ।।
शुभ पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।32।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक एतैतेति चतुर्णिकायामर परापराह्वान देवोपुनीतातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मचक्र मस्तक पर लेकर, सर्वाण्हयक्ष आगे चलता ।
अतिशय दिखलाता यक्ष स्वयं, भविजन को बहु आनंद मिलता।।
शुभ पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।33।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक धर्म चक्र चतुष्टय देवोपुनीतातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

छत्र चँवर दर्पण ध्वज ठोना, पंखा झारी कलश महान् ।
मंगल द्रव्य अष्ट ले आते, स्वर्ग लोक से देव प्रधान ।।
शुभ पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।34।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अष्टमंगल द्रव्य देवोपुनीतातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अनन्त चतुष्टय एवं संयम के अर्घ्य *(नरेन्द्र छंद)*

तीन लोक के द्रव्य चराचर, एक साथ ही जान रहे ।
गुण पर्याय सहित द्रव्यों को, समीचीन पहिचान रहे ।।
ज्ञान अनन्तानन्त प्राप्त कर, केवलज्ञानी कहलाये ।
गुण अनन्त के धारी जिनपद, वन्दन करने हम आये ।।35।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अनन्तज्ञान संयुक्त श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्म दर्शनावरणी नाशा, केवल दर्शन प्रकटाया ।
दिव्य देशना द्वारा जग में, सर्व लोक को दर्शाया ।।
पाए दर्श अनन्त श्री जिन, ज्ञाता दृष्टा कहलाए ।
गुण अनन्त के धारी जिनपद, वन्दन करने हम आए ।।36।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अनन्तदर्शन संयुक्त श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मोहनीय कर्मों को नाशा, सुख अनन्त को पाया है ।
नश्वर सुख को त्याग प्रभु ने, शाश्वत सुख उपजाया है ।।
पाए सौरभ गुण अनन्त, जिन पद्म प्रभु जी कहलाए ।
गुण अनन्त के धारी जिनपद, वन्दन करने हम आए ।।37।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अनन्तसुख संयुक्त श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्म नाशकर अन्तराय का, आतम शौर्य जगाया है ।
आतम की शक्ती खोई थी, उसको भी प्रभु ने पाया है ।।
पाए वीर्य अनन्त श्री जिन, पद्मप्रभु जी कहलाए ।
गुण अनन्त के धारी जिनपद, वन्दन करने हम आए ।।38।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अनन्तवीर्य संयुक्त श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्पर्शन रसना घ्राण चक्षु, अरु श्रोतृ इन्द्रिय मन को जीत ।
इन्द्रिय संयम को धारण कर, पाया सौख्य इन्द्रियातीत ।।
वीतराग निर्ग्रंथ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।
उनके गुण की प्राप्ति हेतु, चरणों में बलि बलि जाएँ ।।39।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक इन्द्रियसंयम प्राप्त श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पृथ्वी जल अग्नी वायु अरु, त्रस जीवों पर दया विचार ।
प्राणी संयम को धारण कर, रत्नत्रय धारे अनगार ।।
वीतराग निर्ग्रंथ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।
उनके गुण की प्राप्ति हेतु, चरणों में बलि बलि जाएँ ।।40।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक प्राणीसंयम प्राप्त श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पूर्णार्घ्यं

चौंतिस अतिशय और चतुष्टय, ज्ञान अनंतादिक पाए ।
संयम से सर्वज्ञ हुए प्रभु , तव पद में हम सिर नाए ।।
वीतराग निर्ग्रंथ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।
उनके गुण की प्राप्ति हेतु , हम चरणों में बलि बलि जाएँ ।।41।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय महाअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा (दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्)

पंचम वलयः

सोरठा– **चौंसठ ऋद्धि समूह, गुण के आश्रय जानिये ।**
पुष्पांजलि अर्पण करें, गुण को पाने गुणी जन ।।

(अथ पंचम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपामि।) पाँचवे वलय के ऊपर पुष्प क्षेपण करना है।

स्थापना

हे त्याग मूर्ति करुणा निधान ! हे धर्म दिवाकर तीर्थंकर !
हे ज्ञान सुधाकर तेज पुंज ! सन्मार्ग दिवाकर करुणाकर ।।
हे परमब्रह्म ! हे पद्मप्रभ ! हे भूप ! श्रीधर के नन्दन ।
हे सूर्य अरिष्ट ग्रह नाशक जिन, करते हैं उर में आह्वानन् ।।
हे नाथ ! हमारे अंतर में, आकर के धीर बँधा जाओ ।
हम भूले भटके भक्तों को, प्रभुवर सन्मार्ग दिखा जाओ ।।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त,सर्व मंगलकारी ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम ऋद्धि–सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, जगत् शरण ऋद्धि–सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव– भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

चौंसठ ऋद्धी के अर्घ्य *(रोला छंद)*

बुद्धि ऋद्धि के भेद, अठारह भाई माने ।
अवधिज्ञान से अणू, आदि स्कन्ध सुजाने ।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।1।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अवधिबुद्धि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मनः पर्यय हो ज्ञान, और के मन की जानें ।
अतिशय सूक्ष्म मूर्त, द्रव्यों को यति पहिचानें ।।

वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।2।।

ॐ ह्रींसर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक मनःपर्ययबुद्धि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

लोकालोक प्रकाशी, केवल ज्ञानी माने ।
त्रैकालिक वस्तु क्षण में, प्रत्यक्ष सुजाने ।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।3।।

ॐ ह्रीं ऋद्धि सिद्धि प्रदायक केवलबुद्धि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

विविध शब्द के अर्थ, अनन्तों भाई पावें ।
बीज भूत पद सब, श्रुत के आधार कहावें ।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।4।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक बीज बुद्धि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शब्द रूप बीजों को, मति से मुनिवर जानें ।
कोष्ठ बुद्धि से पृथक्, पृथक् उनको पहिचानें ।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।5।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक कोष्ठबुद्धि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

इक पद सुन तिय पद के, अर्थ मुनीश्वर जाने ।
पादानुसारिणी बुद्धी, ऋद्धीधर पहिचाने ।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।6।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक पादानुसारिणी बुद्धि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

युगपद बहु शब्दों को, सुन धारण हो जावे ।
पृथक-पृथक संभिन्न, श्रोतृत्व बुद्धि से गावें ।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।7।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक संभिन्नश्रोतृत्व ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्पर्शन इन्द्रिय से, नौ योजन की भाई।
दूर स्पर्श की शक्ती, ऋद्धीधर मुनि पाई ।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।8।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक दूरस्पर्षनबुद्धि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रसना इन्द्रिय द्वारा, नौ योजन की भाई ।
दूर स्पर्श की शक्ती, ऋद्धीधर मुनि पाई ।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।9।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक दूरास्वादन ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

घ्राणेन्द्रिय के द्वारा, नौ यौजन की भाई।
गंध ग्रहण की शक्ती, ऋद्धीधर मुनि पाई ।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।10।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक दूरगन्ध ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दो सौ सैंतालीस हजार, त्रेसठ योजन भाई ।
दूरदर्शिता की शक्ती, ऋद्धीधर मुनि पाई ।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।11।।

ॐ ह्रीं श्री सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक दूरावलोकन ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रोतेन्द्रिय से द्वादश योजन की सुन भाई ।
दूर श्रवण की शक्ती, ऋद्धीधर मुनि पाई ।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।12।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक दूरश्रवण ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रोहिणी आदिक सब, विद्यायें आज्ञा माँगें।
दशम पूर्व ऋद्धी धारी, साधू के आगे ।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।13।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक दशमपूर्व ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

द्रव्यभाव श्रुत के ज्ञाता, श्रुत धारी गाये ।
ग्यारह अंग पूर्व चौदह, का ज्ञान जगाये ।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।14।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक ग्यारह अंग चतुर्दश पूर्व ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अंग भौम आदिक लक्षण का, सुफल बताए ।
मुनि अष्टांग महा निमित्त, ऋद्धीधर गाए ।।

वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।15।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अष्टांग निमित्त बुद्धि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो ऋषि अध्यन बिना, पूर्वधारी हो जावें।
चार भेद युत प्रज्ञा श्रमण, ऋद्धी को पावें।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।16।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक प्रज्ञाश्रमण ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

गुरु उपदेश बिना, तप बल से ऋद्धी पावें ।
वह प्रत्येक बुद्धि, ऋद्धी धारक हो जावें ।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।17।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दुरमति परमत वादी जग में, चउ दिश छाए ।
वाद कुशल मुनि के, द्वारा वह सभी हराए ।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।18।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक वादित्य बुद्धि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अणू बराबर छिद्र में जो, ऋषिवर घुस जावें ।
अणिमा ऋद्धीवान, चक्री का कटक समावें ।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।19।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अणिमा ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मेरु बराबर देह सुतप, बल से जो बनावें ।
महिमा ऋद्धीवान मुनी, यह ऋद्धि पावें ।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।20।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक महिमा ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आक तूल सम हल्की, अपनी देह बनावें।
लघिमा ऋद्धि विशिष्ट, मुनी यह ऋद्धि पावें।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।21।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक लघिमा ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वज्र समान भार युत, भारी देह बनावें ।
गरिमा ऋद्धीवान, मुनी ये अतिशय पावें ।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।22।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक गरिमा ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खड़े जमीं पर सूर्य, चन्द्रमा को छू लेवें ।
मेरु शिखर को छुएँ, प्राप्त ऋद्धी को सेवें ।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।23।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक प्राप्ति ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भू में जल, जल में भू, सम मुनि गमन करन्ते ।
प्राकम्प विक्रिया ऋद्धी, जो मुनिराज धरन्ते ।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।24।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक प्राकम्प ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में होय प्रभुत्व, यही ईशत्व कहावें ।
यशः कीर्ति को पाय, जगत अतिशय ये पावें ।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।25।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक ईशत्व ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृष्टी पड़ते लोग सभी, वश में हो जाते ।
ऋद्धी पाय वषित्व, ऋषी के दर्शन पाते ।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।26।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक वशित्व ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शैल शिला अरु तरुवर, मधि से पार करन्ते ।
अप्रतिघात विक्रिया ऋद्धि, मुनिराज धरन्ते ।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।27।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अप्रतिघात ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस ऋद्धी से ऋषी, स्वयं अदृश्य हो जावें ।
ऋद्धी अन्तर्धान मुनी, तप बल से पावें ।।

वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।28।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अन्तर्धान ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

एक साथ कई रूप, स्वयं ऋषिराज बनावें ।
कामरूप ऋद्धी से, मुनि यह शक्ती पावें ।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।29।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक काम रूपित्व ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

गमनागमन पद्मासन से, व्युत्सर्ग करन्ते ।
नभ चारण ऋद्धी तप से, मुनिराज धरन्ते ।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।30।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक नभ चारण ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल चारण ऋद्धीधर, जल के ऊपर जावें ।
जल जीवों का घात, नहीं उनसे हो पावें ।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।31।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक जल चारण ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चउ अंगुल ऊपर भू से ऋषि, अधर चलन्ते ।
जंघा चारण ऋद्धी श्री, ऋषिराज धरन्ते ।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।32।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक जंघा चारण ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पत्र पुष्प फल के ऊपर, यह ऋद्धीधारी ।
नहीं जीव को पीड़ा हो, मुनि चलें सुखारी ।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।33।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक पुष्प चारण ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अग्नि शिखा पर चलें, जीव बाधा नहिं पावें ।
अग्नि धूम चारण ऋद्धिधर, बढ़ते जावें ।।
वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।
श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।34।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अग्नि चारण ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(राधेश्याम छन्द)

जलधारा जो मेघ बरसती, मुनि उस पर चलते जावें ।
मेघ चारणी ऋद्धीधर से, जल जन्तु नहिं दुख पावें ।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि-बलि जाएँ ।।35।।

ॐ ह्रीं श्री सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक मेघचारण ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मकड़ी के तन्तु पर मुनिवर, सहज कदम रखते जावें ।
तन्तू चारण ऋद्धीधर मुनि, से बाधाएँ न आवें ।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि-बलि जाएँ ।।36।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक तन्तु चारण ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सूर्य चन्द्र तारा आदिक की, किरणों का ले आलम्बन ।
ज्योतिष चारण ऋद्धीधारी, कई योजन तक करें गमन ।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि-बलि जाएँ ।।37।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक ज्योतिष चारण ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वायू की पंक्ति का मुनिवर, लेकर चलते आलम्बन ।
वायू चारण ऋद्धीधारी, कई योजन तक करे गमन ।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि-बलि जाएँ ।।38।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक वायु चारण ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तप ऋद्धी के सात भेद में, प्रथम उग्र तप कहलाए ।
दीक्षा से उपवास निरन्तर, मरणान्त काल बढ़ता जाए ।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि-बलि जाएँ ।।39।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक तप्त तपोतिशय ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

बेला आदि उपवास किए फिर, दीप्त तपः ऋद्धी पावें ।
बिन आहार बढ़े बल तेजरू, नहीं भूख व्याधी आवे ।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि-बलि जाएँ ।।40।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक दीप्त तपोतिशय ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

उग्र तपो तप ऋद्धिधारी, आहार ग्रहण तो करते हैं ।
नहीं होय नीहार धातु मल, मूत्र आदि सब हरते हैं ।।

वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि-बलि जाएँ ।।41।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक उग्रतपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

महातपो तप ऋद्धिधारी, अणिमा आदि ऋद्धी पाएँ ।
सिंह निष्क्रीडन आदी व्रत जो, बिना खेद करते जाएँ ।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि-बलि जाएँ ।।42।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक महातपोतिशय ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अनशन आदिक द्वादश विधि तप, उग्र-उग्र करते जावें ।
घोर तपो तप ऋद्धिधारी, कष्ट सहज सहते जावें ।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि-बलि जाएँ ।।43।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक घोरतपोतिशय ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

घोर पराक्रम ऋद्धी द्वारा, अतिशय शक्ती पाते हैं ।
तीन लोक से रण की शक्ती, ऋषिवर स्वयं जगाते हैं ।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि-बलि जाएँ ।।44।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक घोर पराक्रम ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अघोर ब्रह्मचर्य धारी मुनिवर, गुप्ति समिति व्रत पाल रहे ।
ब्रह्मचर्य व्रत का पालन कर, दुर्भिक्षादिक टाल रहे ।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि-बलि जाएँ ।।45।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अघोर ब्रह्मचर्य तपोतिशय ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

बल ऋद्धी के तीन भेद हैं, ऋषियों ने जो गाए हैं ।
दोय घड़ी में सब श्रुत चिन्तें, मनबल ऋद्धी पाए हैं ।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि-बलि जाएँ ।।46।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक मनोबल ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हीन कंठ अरु श्रम नहिं होवे, सब श्रुत को मुनि उच्चारें ।
यही वचन बल की शक्ती है, तप बल से मुनिवर धारें ।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि-बलि जाएँ ।।47।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक वचनबल ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ऋषिवर पाएँ काय बल ऋद्धी, कायोत्सर्ग को मुनि धारें ।
त्रिभुवन उठा सके हाथों में, खेद करे न वे हारें ।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि-बलि जाएँ ।।48।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक कायबल ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भेद आठ औषधि ऋद्धी के, आमर्षौषधि प्रथम गाई।
मुनि स्पर्श किए ही तन में, रोग रहे न गम भाई।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि-बलि जाएँ ।।49।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक आमर्षौषधि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

लार थूक नख आदिक जिनका, हरे और की व्याधी ।
खेल्लौषधि ऋद्धीधर मुनिवर, धारण करें समाधी ।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि-बलि जाएँ ।।50।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक खेल्लौषधि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल्ल स्वेद अरु रज से बनता, हरे और की व्याधि ।
जल्लौषधि ऋद्धीधर मुनिवर, धारण करें समाधि ।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि-बलि जाएँ ।।51।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक जल्लौषधि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिसके जिह्वा कर्ण आदि मल, हरे और की व्याधि ।
मल्लौषधि के धारी मुनिवर, धारण करें समाधि ।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि-बलि जाएँ ।।52।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक मल्लौषधि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मल अरु मूत्र ऋषी के तन का, हरे और की व्याधी ।
विडौषधी धारी मुनिवर जी, धारण करें समाधी ।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि-बलि जाएँ ।।53।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक विडौषधि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नीर वायु तन से स्पर्शित, हरे और की व्याधी ।
सर्वौषधि ऋद्धीधर मुनिवर, धारण करें समाधी ।।

वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि-बलि जाएँ ।।54।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक सर्वौषधि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कटु विष व्याप्त अन्य वच सुनकर, नर निर्विष हो जावें ।
मुख निर्विष ऋद्धीधर मुनिवर, मंगल वचन सुनावें ।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि-बलि जाएँ ।।55।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक निर्विष ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रोग और विष आदिक जिनके, अवलोकन से जावें ।
दृष्टी निर्विष ऋद्धीधारी, के हम दर्शन पावें ।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि-बलि जाएँ ।।56।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक दृष्टिविषौषधि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रस ऋद्धी के छह भेदों में, आशीर्विष भी होवे ।
मरो वचन कहते मर जावें, मुनी वचन यह खोवें ।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि-बलि जाएँ ।।57।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक आशीर्विष ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दृष्टी विष ऋद्धी के धारी, ऐसी शक्ती पावें ।
मरें जीव दृष्टी पड़ते ही, दृष्टी नहीं दिखावें ।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि-बलि जाएँ ।।58।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक दृष्टिविष ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रूक्ष भोज अंजलि में आते, मिष्ठ क्षीरवत् होवे ।
क्षीरस्रावी ऋद्धीधर मुनिवर, जग की जड़ता खोवें ।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।59।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक क्षीरस्त्रावि रस ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रूक्ष भोज अंजलि में आते, मीठा मधुवत् होवे ।
मधुस्रावी ऋद्धीधर मुनिवर, जग की जड़ता खोवें ।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।60।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक मधुस्रावि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मुनिवर के वचनों से पल में, विष अमृत हो जावे ।
अमृतस्रावी ऋद्धीधर मुनि, मंगल वचन सुनावें ।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।61।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अमृतस्रावि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रुक्ष भोज अंजलि में आतें, घृत सदृश हो जावे ।
घृतस्रावी ऋद्धीधर जग में, मंगल वचन सुनावें ।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।62।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक घृतस्त्रावि रस ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ऋद्धीधर अक्षीण महानस, जिस घर ले आहारा ।
जीमें कटक चक्रवर्ती का, अरू जीमें गृह सारा ।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।63।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अक्षीणमहानस ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चार धनुष चौकोर जमीं पे, रहे मुनी का आलय ।
रहें असंख्य पशु नर नरपति, ऋद्धि अक्षीण महालय ।।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।64।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अक्षीणसंवास ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अष्ट प्रातिहार्य (शम्भू छंद)

शोक निवारी तरु अशोक यह, प्रातिहार्य कहलाता है ।
रत्न जड़ित है डाल पात सब, मनहर पवन बहाता है ।।
प्रातिहार्य को पाए श्री जिन, पद्म प्रभु जी कहलाए ।
गुण अनन्त के धारी जिनपद, वन्दन करने हम आए ।।65।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अशोक वृक्ष सत्प्रातिहार्य सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प वृष्टि सुरगण जब करते, शोभा होती अपरम्पार ।
चारों ओर फैलती सुरभित, अतिशय कारी गंध अपार ।।
प्रातिहार्य को पाए श्री जिन, पद्म प्रभु जी कहलाए ।
गुण अनन्त के धारी जिनपद, वन्दन करने हम आए ।।66।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक पुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दिव्य ध्वनि प्रहसित होती है, सब भाषामय चारों ओर ।
ॐकार मय होय देशना, करती सबको भाव विभोर ।।

प्रातिहार्य को पाए श्री जिन, पद्म प्रभु जी कहलाए ।
गुण अनन्त के धारी जिनपद, वन्दन करने हम आए ।।67।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक दिव्यध्वनि सत्प्रतिहार्य सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अक्षय कोष पुण्य से भरते, चौंसठ चँवर ढौरकर देव ।
प्रभु चरणों में देव समर्पित, तीन योग से रहें सदैव ।।
प्रातिहार्य को पाए श्री जिन, पद्म प्रभु जी कहलाए ।
गुण अनन्त के धारी जिनपद, वन्दन करने हम आए ।।68।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक धवलोज्वल चौंसठ चँवर सत्प्रातिहार्य सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रत्नों से मण्डित होता है, श्री जिनेन्द्र का सिंहासन ।
उसके ऊपर अधर में होता, तीर्थंकर जिन का आसन ।।
प्रातिहार्य को पाए श्री जिन, पद्म प्रभु जी कहलाए ।
गुण अनन्त के धारी जिनपद, वन्दन करने हम आए ।।69।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक रत्नजड़ित सिंहासन सत्प्रातिहार्य सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भू मण्डल को मोहित करता, श्री जिन का आभा मण्डल ।
सप्त भवों का दिग्दर्शक है, श्री जिनेन्द्र का भामण्डल ।।
प्रातिहार्य को पाए श्री जिन, पद्म प्रभु जी कहलाए ।
गुण अनन्त के धारी जिनपद, वन्दन करने हम आए ।।70।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक भामण्डल सत्प्रातिहार्य सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव दुन्दभि बजती मनहर, मन को आह्लादित करती ।
जड़ होकर भी भव्य जीव के, मन का सब कल्मष हरती ।।
प्रातिहार्य को पाए श्री जिन, पद्म प्रभु जी कहलाए ।
गुण अनन्त के धारी जिनपद, वन्दन करने हम आए ।।71।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक देवदुन्दभि सत्प्रातिहार्य सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन छत्र दर्शायक हैं यह, श्री जिन रहे त्रिलोकी नाथ ।
तीन लोक के अधिनायक के, झुका रहे सब चरणों माथ ।।
प्रातिहार्य को पाए श्री जिन, पद्म प्रभु जी कहलाए ।
गुण अनन्त के धारी जिनपद, वन्दन करने हम आए ।।72।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक क्षत्रत्रय सत्प्रातिहार्य सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुए एक सौ ग्यारह गणधर, चौंसठ ऋद्धी के धारी ।
मुख्य सुगणधर वज्र चमर थे, प्राणी मात्र के उपकारी ।।
अतिशय वन्दित पद्मप्रभु को, अपने हृदय बिठाते हैं ।
चरण कमल में वन्दन करते, सादर शीश झुकाते हैं ।।73।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक एक सौ ग्यारह गणधर सहित श्री पद्मप्रभ जिनेद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश सहस मुनीश्वर राजे, केवल ज्ञान के अधिकारी ।
समवशरण में शोभा पाते, प्राणि मात्र के उपकारी ।।
अतिशय वन्दित पद्मप्रभु को, अपने हृदय बिठाते हैं ।
चरण कमल में वन्दन करते, सादर शीश झुकाते हैं ।।74।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक द्वादष सहस केवलज्ञानी मुनीश्वर सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तीन शतक द्वय सहस पूर्वधर, श्री जिनवर के चरण तले ।
समवशरण में शोभा पाते, शिव रमणी को वरण चले ।।
अतिशय वन्दित पद्मप्रभु को, अपने हृदय बिठाते हैं ।
चरण कमल में वन्दन करते, सादर शीश झुकाते हैं ।।75।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक तीन शतक सहस द्वय पूर्वधर मुनीश्वर सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

छब्बिस सहस नव शतक मुनीश्वर, शिक्षक पद के अधिकारी।
रत्नत्रय का पालन करते, प्राणी मात्र के उपकारी ।।
अतिशय वन्दित पद्मप्रभु को, अपने हृदय बिठाते हैं ।
चरण कमल में वन्दन करते, सादर शीश झुकाते हैं ।।76।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक छब्बीस सहस नव शतक मुनीश्वर शिक्षक सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश हजार निर्ग्रन्थ मुनीश्वर, अवधिज्ञान के अधिकारी ।
समवशरण में शोभा पाते, प्राणी मात्र के उपकारी ।।
अतिशय वन्दित पद्मप्रभु को, अपने हृदय बिठाते हैं ।
चरण कमल में वन्दन करते, सादर शीश झुकाते हैं ।।77।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक दषहजार निर्ग्रन्थ अवधिज्ञानी मुनीश्वर सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सोलह सहस अष्ट शत मुनिवर, विक्रिया ऋद्धी के धारी ।
समवशरण में शोभा पाते, प्राणी मात्र के उपकारी ।।
अतिशय वन्दित पद्मप्रभु को, अपने हृदय बिठाते हैं ।
चरण कमल में वन्दन करते, सादर शीश झुकाते हैं ।।78।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक सोलह सहस अष्टशत विक्रियाधारी मुनीश्वर सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दश हजार त्रय शत् मुनिवर जी, श्री जिनवर के चरण तले ।
मनःपर्यय सुज्ञान के धारी, शिव रमणी को वरण चले ।।
अतिशय वन्दित पद्मप्रभु को, अपने हृदय बिठाते हैं ।
चरण कमल में वन्दन करते, सादर शीश झुकाते हैं ।।79।।

ॐ ह्रीं सर्व ह्रीं ऋद्धि सिद्धि प्रदायक दश हजार त्रय शत् मनःपर्ययज्ञानी मुनीश्वर सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहस छियानवे वादी मुनिवर, श्री जिनवर के चरण तले ।
समवशरण में शोभा पाते, षिव रमणी को वरण चले ।।

अतिशय वन्दित पद्मप्रभु को, अपने हृदय बिठाते हैं ।
चरण कमल में वन्दन करते, सादर शीश झुकाते हैं ।।80।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक सहस छियानवे हजार वादी मुनीश्वर सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **चौंसठ ऋद्धी हैं विमल, प्रातिहार्य हैं साथ ।**
अष्ट विधि मुनिराज को, विशद झुकाऊँ माथ ।।81।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक चौंसठ ऋद्धि, अष्ट प्रातिहार्य, अष्टविध मुनीश्वर सहित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा (दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्)

जाप्य मंत्र–(1) ॐ आं क्रौं ह्रीं श्रीं क्लीं सूर्यारिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः सर्व शांतिं कुरु कुरु स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

दोहा– पद्म प्रभ का पद्म रंग, पद्म चिन्ह पहिचान ।
पद्म प्रभु पद नमन् है, पाने पद निर्वाण ।।
पद्माकर सम पद्म प्रभु, पाये सुगुण विशाल ।
पद्म प्रभु के पद्म पद, की कहते जयमाल ।।

(राधेश्याम छंद)

हे वीतरागता धारी प्रभु, निर्ग्रंथ स्वरूप तुम्हारा है ।
सब क्रोध मान माया आदी अरु, मोह भी तुमसे हारा है ।।
तुमने जग वैभव को छोड़ा, शुभ भेष दिगम्बर धारा है ।
हम भूले भटके राही हैं, तुमको हे नाथ! पुकारा है ।।
तुम हो प्रभु नाथ अनाथों के, जग विधि के आप विधाता हैं।
प्रभु सत मारग दर्शायक हैं, अरु मोक्ष महल के दाता हैं।।
तुमने मन इन्द्रियों को जीता, हे नाथ ! जितेन्द्रिय कहलाए ।
हम मोह जाल मे फँसे प्रभु, छुटकारा पाने को आए ।।

दुखियों का दुख हरने वाला, पावन प्रभु दर्श तुम्हारा है ।
मन वांछित फल देने वाला, श्री पद्म नाम अति प्यारा है ।।
शुभ माघ कृष्ण षष्ठी कौशाम्बी, मात सुसीमा उर आए ।
नृप धारण को प्रभु धन्य किया, उसके घर में मंगल छाए ।।
कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को, प्रभु जन्म महोत्सव पाए हैं ।
सुर नर किन्नर मुनिवर गणधर, मिलकर के सब हर्षाए हैं ।।
प्रभु तीस लाख पूरब की आयु, पाकर जग को बोध दिया ।
जग में रहकर जग जीवों के, प्रभु ने मन को भी मोद किया ।।
जो नाथ आपको ध्याते हैं, दुख उनके पास न आते है ।
जो चरण शरण में आते हैं, उनके संकट कट जाते हैं ।।
शुभ निर्विकल्प चैतन्य रूप, आतम स्वरूप को पाए हो ।
हे भव्य ! तुम्हारा यही रूप, सारे जग को दर्षाए हो ।।
अपने समान जग जीवों को, मुक्ती की राह दिखाते हो ।
तुम सिद्ध शिला के अधिनायक, भव्यों को सिद्ध बनाते हो ।।
तुम हो त्रिकालदर्शी प्रभुवर, तुम तीन लोक के ज्ञाता हो ।
तुम तीन वेद से रहित प्रभु, तीनों के आप विधाता हो ।।
प्रभु राग द्वेष से दूर रहे, मोहादि तुम्हें न छू पावें ।
अतएव सुरेन्द्र नरेन्द्र सभी, शुभ भाव सहित प्रभु गुण गावें ।।
तुम विशद गुणों के धारी हो, हम विशद गुणों को पा जावें ।
हम भाव बनाकर आये हैं, प्रभु भव-भव में भक्ती पावें ।।
कह रहे भक्ति के वशीभूत, मेरी भक्ती स्वीकार करो ।
तुम पार हुए भव सागर से, अब मेरा भी उद्धार करो ।।
जो शरण आपकी आता है, वह खाली हाथ न जाता है ।
अपनी इच्छाएँ पूरण कर, मनवाँछित फल को पाता है ।।
जो भाव सहित पूजा करते, पूजा उनको फल देती है ।
पूजा की पुण्य निधी पावन, भक्तों के दुख हर लेती है ।।

यह वीतराग का मार्ग शुभम्, सीधा शिवपुर को जाता है ।
जो बढ़े भाव से इस पथ पर, वह परम मोक्ष पद पाता है ।।
यह दास आपके चरणों में, अनुगामी बनकर आया है ।
उस सिद्ध शुद्ध पद पाने का, हमने भी लक्ष्य बनाया है ।।

छन्द : घत्तानन्दः

जय पद्म जिनन्दा, आनन्द कन्दा, पाप निकन्दा ज्ञानपति ।
जय कर्म हनन्ता, सौख्य अनन्ता, ध्यावत सन्ता सिद्धपति ।।

ॐ ह्रीं श्री सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- चरण शरण के दास की, भक्ति फले अविराम।
पद्म प्रभु के पद् युगल, करते 'विशद' प्रणाम।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

आरती पद्मप्रभ की

श्री पद्मप्रभु जिनराज, आज थारी आरती उतारूँ ।
आरती उतारूँ, थारी मूरत निहारूँ ।।
प्रभु करो मेरा उद्धार, आज थारी......
मात सुसीमा के सुत प्यारे, धरणराज के राज दुलारे ।
जन्मे कौशाम्बी ग्राम, आज थारी आरती उतारूँ।। श्री पद्मप्रभु....
प्रभुजी भेष दिगम्बर धारे, वस्त्राभूषण आप उतारे ।
कीन्हा है आतम ध्यान, आज थारी आरती उतारूँ ।। श्री पद्मप्रभु....
तुमने कर्म घातिया नाशे, आत्म ध्यान से ज्ञान प्रकाशे।
करते जग कल्याण, आज थारी आरती उतारूँ ।। श्री पद्मप्रभु....
जग-मग दीपक हाथ में लाते, प्रभु चरणों में शीश झुकाते
तुम हो कृपा निधान, आज थारी आरती उतारूँ ।। श्री पद्मप्रभु....
प्रभु तुम तीन लोक के स्वामी, ज्ञाता दृष्टा अन्तर्यामी।
विशद ज्ञान के नाथ, आज थारी आरती उतारूँ ।। श्री पद्मप्रभु....

प्रशस्ति

दोहा– लोकालोक के मध्य में, जम्बूद्वीप महान् ।
भरत क्षेत्र दक्षिण रहा, आर्य खंड शुभमान।।1।।
पुण्य पुरुष जिसमें हुए, भारत देश महान् ।
एक प्रांत जिसका रहा, नाम है राजस्थान ।।2।।
बिन मात्रा का शहर है, अलवर जिसका नाम ।
क्षेत्र तिजारा का जिला, ऋषियों का है धाम ।।3।।
दो हजार सन् छह रहा, करके चातुर्मास ।
जैन भवन स्कीम दश, पार्श्व नाथ हैं पास ।।4।।
नगर बीच मंदिर बड़ा, पद्म प्रभु भगवान ।
गंध कुटी पर राजते, शोभा रही महान् ।।5।।
यह मंदिर उसके तले, कहते ऐसा लोग ।
पद्म प्रभ के दर्ष कर, बना एक संयोग ।।6।।
भक्ती कीन्ही भाव से, बन गया एक विधान ।
लोग सभी पूजा करें, पुण्य का होय निधान ।।7।।
विक्रम सम्वत् सहस दो, अरू तिरेसठ की साल ।
वीर निर्वाण पच्चीस सौ, बत्तिस रहा विशाल ।।8।।
कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी, धन तेरस की शाम ।
पूर्ण हुआ शुभ कार्य यह, लिया विशद विश्राम ।।9।।
ऋद्धि सिद्धि दायक लिखा, पद्म प्रभू विधान ।
भूल चूक को भूलकर, पूज रचो धीमान् ।।10।।
कवि नहीं पण्डित नहीं, मैं हूँ लघु आचार्य ।
धर्म सहित शुभ आचरण, करो सभी जन आर्य ।।11।।

।। इति ।।

विशद सुपार्श्वनाथ विधान

मध्य-ह्रीं
प्रथम-4
द्वितीय-8
तृतीय-16
चतुर्थ-32
पंचम-64

रचयिता

प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

सिद्ध स्तवन

सोरठा– तीर्थ क्षेत्र निर्वाण, मंगलमय मंगल परम।
करते हम गुणगान, मुक्त हुए जिन सिद्ध का।।

(शम्भू छंद)

जीवादिक तत्त्वों का जिसने, समीचीन श्रद्धान किया।
सम्यक् ज्ञान आचरण पाकर, निज आतम का ध्यान किया।।
संवर और निर्जरा करके, अष्ट कर्म का नाश किया।
अनन्त चतुष्टय को पाकर के, केवलज्ञान प्रकाश किया।।1।।

करके योग निरोध आपने, कर्मों का कीन्हा संहार।
शुद्ध बुद्ध चैतन्य स्वरूपी, आतम का कीन्हा उद्धार।।
किए कर्म का नाश जहाँ वह, बना तीर्थ अतिशय पावन।
कहलाए निर्वाण क्षेत्र वह, सर्व लोक में मन भावन।।2।।

संत साधना से तीर्थों का, कण–कण पावन हुआ अहा।
पार हुआ भव सागर से वह, अतः क्षेत्र वह तीर्थ कहा।।
तीर्थ क्षेत्र की रज को प्राणी, अपने शीश चढ़ाते हैं।
श्रद्धा सहित वन्दना करके, अनुपम जो फल पाते हैं।।3।।

तीर्थ क्षेत्र का वन्दन करके, तीर्थ रूप हम हो जावें।
कर्माश्रव हो नाश हमारा, भव वन में न भटकावें।।
संत और भगवन्तों के हम, पथगामी बन जाएँ अहा।
उनके गुण पा जाएँ हम भी, अन्तिम यह उद्देश्य रहा।।4।।

संत साधना करके अपने, करते हैं कर्मों का नाश।
रत्नत्रय के द्वारा करते, निज आतम का पूर्ण विकाश।।
मोक्ष महाफल 'विशद' प्राप्त कर, बन जाते हैं अनुपम सिद्ध।
शाश्वत सुख पाने वाले वह, हो जाते हैं जगत प्रसिद्ध।।5।।

श्री सुपार्श्वनाथ पूजन

(स्थापना)

हे सुपार्श्व ! तुम लोक में, बने श्री के नाथ।
आह्वानन् करते प्रभो, आये खाली हाथ।।
झुका चरण में आपके, मेरा भी यह माथ।
तव चरणों के भक्त हम, ले लो अपने साथ।।
करते हैं हम प्रार्थना, करो प्रभु स्वीकार।
भव सागर से भक्त को, शीघ्र लगाओ पार।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र–अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितौ भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

हम जन्म जन्म के प्यासे हैं, जल से निज प्यास बुझाई है।
मम प्यास शांत न हो पाई, अतएव शरण तव पाई है।।
न जन्म मरण होवे फिर–फिर, हम यही भावना भाते हैं।
अतएव चरण में जिन सुपार्श्व, यह निर्मल नीर चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप से तप्त हुए, चन्दन से शीतलता पाई।
आताप शांत न हुआ प्रभो, अतएव शरण हमने पाई।।
हो भव आतप का नाश प्रभो, हम यही भावना भाते हैं।
अतएव चरण में जिन सुपार्श्व, यह पावन गंध चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भव–भव में पद की लालच से, अपना पुरुषार्थ गँवाया है।
पर अक्षय शुभ अविनाशी पद, न हमें कभी मिल पाया है।।
अब अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम यही भावना भाते हैं।
अतएव चरण में जिन सुपार्श्व, यह अक्षत धवल चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हम काम अग्नि की ज्वाला में, सदियों से जलते आये हैं।
न काम वासना शांत हुई, हमने कई जन्म गवाएँ हैं।।
हो काम बाण विध्वंस प्रभो, हम यही भावना भाते हैं।
अतएव चरण में जिन सुपार्श्व, यह पुष्पित पुष्प चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन हमने दिन रात किया, न क्षुधा शांत हो पाई है।
पुद्गल ने पुद्गल को जोड़ा, न चेतन की सुधि आई है।
हो क्षुधा रोग का नाश प्रभो, हम यही भावना भाते हैं।
अतएव चरण में जिन सुपार्श्व, ताजा नैवेद्य चढ़ाते हैं।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोह जाल में अटक रहे, न मुक्ती उससे मिल पाई।
इस तन के साज सम्हालों में, न आतम की निधि खिल पाई।
हो मोह अंध का नाश प्रभो, हम यही भावना भाते हैं।
अतएव चरण में जिन सुपार्श्व, यह पावन दीप जलाते हैं।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के बन्धन से अब तक, स्वाधीन नहीं हो पाए हैं।
हमने संसार सरोवर में, फिर-फिर कर गोते खाए हैं।
हो अष्ट कर्म का नाश प्रभो, हम यही भावना भाते हैं।
अत एव चरण में जिन सुपार्श्व, यह मनहर धूप जलाते हैं।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोक्ष महाफल न पाया, फल और सभी हमने पाए।
हम सर्व लोक में भटक लिए, अब नाथ शरण में हम आए ।
हो मोक्ष महाफल प्राप्त हमें, हम यही भावना भाते हैं।
अतएव चरण में जिन सुपार्श्व, हम फल यह विविध चढ़ाते हैं ।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

संसार सुखों की चाहत में, मन मेरा बहु ललचाया है।
हम भ्रमर बने भटके दर-दर, पर पद अनर्घ न पाया है।
अब प्राप्त हमें हो पद अनर्घ, हम यही भावना भाते हैं।
अतएव चरण में जिन सुपार्श्व, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

शुक्ल पक्ष भादव की षष्ठी, हुई लोक में मंगलकार।
श्री सुपार्श्व माता वसुन्धरा, के उर आ कीन्हें उपकार।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्ला षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ज्येष्ठ सुदी द्वादशी तिथि को, श्री सुपार्श्व जी जन्म लिए।
सुप्रतिष्ठ नृप माता पृथ्वी, को आकर प्रभु धन्य किए।।
जन्म कल्याणक की पूजा हम, करके भाग्य जगाते हैं।
मोक्षलक्ष्मी हमें प्राप्त हो, यही भावना भाते हैं।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ज्येष्ठ सुदी द्वादशी सुहावन, श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थेश।
केशलोंच कर दीक्षा धारे, प्रभु ने धरा दिगम्बर भेष।।
हम चरणों में वन्दन करते, मम् जीवन मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

(चौपाई)

षष्ठी फाल्गुन की अंधियारी, चार घातिया कर्म निवारी।
जिन सुपार्श्व ने ज्ञान जगाया, इस जग को संदेश सुनाया।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा षष्ठम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ कृष्ण फाल्गुन सप्तमी को, जिन सुपारसनाथ जी।
मोक्ष श्री सम्मेद गिरि से, पाए मुनि कई साथ जी।।
हम कर रहे पूजा प्रभू की, श्रेष्ठ भक्ती भाव से।
मस्तक झुकाते जोड़ कर द्रव्य, प्रभू पद में चाव से।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – जिन सुपार्श्व की अब यहाँ, गाने को जयमाल।
भक्त चरण में आए हैं, मिलकर बालाबाल।।

(काव्य छन्द)

श्री सुपार्श्व जिनराज, सर्व दुखों के हर्त्ता।
भक्तों के सरताज, सौख्य समृद्धी कर्त्ता।।
भव रोगों से तृप्त, जीव के हैं प्रभु त्राता।
जिन अनाथ के नाथ, जगत को देते साता।।
नृप प्रतिष्ठ के लाल, पृथ्वी देवी माता।
नगर बनारस जन्म लिए, जिन भाग्य विधाता।।
षष्ठी भादव शुक्ल, गर्भ में आये स्वामी।
अन्तिम पाये गर्भ, मोक्ष के हो अनुगामी।।
ज्येष्ठ शुक्ल बारस को, जन्मे श्री जिन देवा।
करते सह परिवार, इन्द्र जिनवर की सेवा।।
स्वर्गों से सौधर्म इन्द्र, ऐरावत लाया।
पाण्डुक शिला पे जाके, प्रभु का न्हवन कराया।।
स्वस्तिक देखा चिन्ह, इन्द्र ने दांये पग में।
जिन सुपार्श्व का जयकारा, गूंजा इस जग में।।

ज्येष्ठ शुक्ल बारस को जिनवर, संयम धारे।
केशों का लुन्चन करके प्रभु, वस्त्र उतारे।।
छठी कृष्ण फाल्गुन को घाती, कर्म नशाए।
अक्षय अनुपम अविनाशी प्रभु, ज्ञान जगाए।।
सातें कृष्ण फाल्गुन को प्रभु जी, मोक्ष सिधाए।
तीर्थराज सम्मेद शिखर से, मुक्ती पाए।।
हे सुपार्श्व ! तव चरणों में हम, शीश झुकाते।
विशद मोक्ष हो प्राप्त हमें हम, तव गुण गाते।।

दोहा – पार्श्वमणि सम हैं प्रभू, जिन सुपार्श्व है नाम।
हमको भी निज सम करो, शत्–शत् बार प्रणाम।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

(अडिल्य छन्द)

जिन सुपार्श्व हमको मुक्तिवर दीजिए, भव बाधा मेरी जिनवर हर लीजिए।
चरण कमल में करते हैं हम अर्चना, तीन योग से पद में करते वन्दना।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

प्रथम वलयः (संज्ञा विनाशक)

दोहा– चउ संज्ञाए नाशकर, जग में हुए महान।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, करो मेरा कल्याण।।

प्रथम वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(स्थापना)

हे सुपार्श्व ! तुम लोक में, बने श्री के नाथ।
आह्वानन करते प्रभो, आये खाली हाथ।।
झुका चरण में आपके, मेरा भी यह माथ।
तव चरणों के भक्त हम, ले लो अपने साथ।।
करते हैं हम प्रार्थना, करो प्रभू स्वीकार।
भव सागर से भक्त को, शीघ्र लगाओ पार।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छंद)

भोजन की वाञ्छा रखते हैं, तीन लोक में सारे जीव।
संज्ञा वह आहार प्राप्त कर, आश्रव करते सदा अतीव।।
केवलज्ञानी तीर्थंकर जिन, संज्ञा करते पूर्ण विनाश।
कर्म नाशकर अपने सारे, करते सिद्ध शिला पर वास।।1।।

ॐ ह्रीं आहार संज्ञा रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वस्तू देख भयानक कोई, भय से हो जाते भयभीत।
भय संज्ञा को पाने वाले, होते नहीं किसी के मीत।।
केवलज्ञानी तीर्थंकर जिन, संज्ञा करते पूर्ण विनाश।
कर्म नाशकर अपने सारे, करते सिद्ध शिला पर वास।।2।।

ॐ ह्रीं भय संज्ञा रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काम वासना से व्याकुल हो, भटक रहा सारा संसार।
मैथुन संज्ञा पाने वाले, दुःख उठाते यहाँ अपार।।
केवलज्ञानी तीर्थंकर जिन, संज्ञा करते पूर्ण विनाश।
कर्म नाशकर अपने सारे, करते सिद्ध शिला पर वास।।3।।

ॐ ह्रीं मैथुन संज्ञा रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मूर्छा से मूर्छित होकर के, भटक रहे हैं जग के जीव।
परिग्रह संज्ञा पाने वाले, आश्रव करते यहाँ अतीव।।
केवलज्ञानी तीर्थंकर जिन, संज्ञा करते पूर्ण विनाश।
कर्म नाशकर अपने सारे, करते सिद्ध शिला पर वास।।4।।

ॐ ह्रीं परिग्रह संज्ञा रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आहारादिक संज्ञाओं को, पाकर जग के जीव प्रधान।
कर्म बन्ध कर दुःख भोगते, जन्म मरण कर यहाँ महान्।।

केवलज्ञानी तीर्थंकर जिन, संज्ञा करते पूर्ण विनाश।
कर्म नाशकर अपने सारे, करते सिद्ध शिला पर वास।।5।।

ॐ ह्रीं चतुःसंज्ञा रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः (कर्म विनाशक)

दोहा- अष्ट कर्म को नाशकर, आप हुए भगवान।
पुष्पाञ्जलि करते 'विशद', करो मेरा कल्याण।।

द्वितीय वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(स्थापना)

हे सुपार्श्व ! तुम लोक में, बने श्री के नाथ।
आह्वानन करते प्रभो, आये खाली हाथ।।
झुका चरण में आपके, मेरा भी यह माथ।
तव चरणों के भक्त हम, ले लो अपने साथ।।
करते हैं हम प्रार्थना, करो प्रभू स्वीकार।
भव सागर से भक्त को, शीघ्र लगाओ पार।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छंद)

सम्यक् ज्ञान को ढ़कने वाला, ज्ञानावरणी कर्म कहा।
अज्ञानी बनकर के प्राणी, तीन लोक में भटक रहा।।
कर्म नाशकर अपने सारे, प्रभु ने पाया केवलज्ञान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते हम जिन का गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्म रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दर्शनावरण जीव के, दर्शन गुण का घात करे।
क्षायिक दर्शन की शक्ति को, कर्म जीव की पूर्ण हरे।।

कर्म नाशकर अपने सारे, प्रभु ने पाया केवलज्ञान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते हम जिन का गुणगान ।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरणी कर्म रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख-दुख के झूले पर चढ़कर, फूले नहीं समाए हैं।
वेदनीय के द्वारा जग में, हम दुख सहते आए हैं।।
कर्म नाशकर अपने सारे, प्रभु ने पाया केवलज्ञान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते हम जिन का गुणगान ।।3।।

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म मोहनीय से मोहित हो, जग में गोते खाए हैं।
सम्यक् श्रद्धा के अभाव में, चतुर्गती भटकाए हैं।।
कर्म नाशकर अपने सारे, प्रभु ने पाया केवलज्ञान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते हम जिन का गुणगान ।।4।।

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयु कर्म दुख देने वाला, भव-भव में रोके रहता है।
उस आयु कर्म के दुख भारी, यह जीव वहाँ पर सहता है।।
कर्म नाशकर अपने सारे, प्रभु ने पाया केवलज्ञान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते हम जिन का गुणगान ।।5।।

ॐ ह्रीं आयु कर्म रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम कर्म शिल्पी के जैसी, तन की रचना करता है।
भाँति-भाँति के तन पाकर ये, जीव कष्ट कई सहता है।।
कर्म नाशकर अपने सारे, प्रभु ने पाया केवलज्ञान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते हम जिन का गुणगान ।।6।।

ॐ ह्रीं नामकर्म रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गोत्र कर्म से उच्च नीच का, भेद जीव यह पाता है।
चारों गतियों में प्राणी को, बारम्बार सताता है।।

कर्म नाशकर अपने सारे, प्रभु ने पाया केवलज्ञान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते हम जिन का गुणगान ।।7।।

ॐ ह्रीं गोत्र कर्म रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विघ्न डालता कर्म अनेकों, अन्तराय दुख देता है।
रहने वाले जग जीवों की, सुख-शांती हर लेता है।।
कर्म नाशकर अपने सारे, प्रभु ने पाया केवलज्ञान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते हम जिन का गुणगान ।।8।।

ॐ ह्रीं अन्तराय कर्म रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म के कारण प्राणी, जग में कई दुख पाते हैं।
जन्म मरण कर तीन लोक में, बारम्बार भ्रमाते हैं।।
कर्म नाशकर अपने सारे, प्रभु ने पाया केवलज्ञान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते हम जिन का गुणगान ।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टकर्म रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः (षोडश कारण भावना)

दोहा- षोडष कारण भावना, भाते हैं जिन ईश।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, चरण झुकाकर शीश।।

तृतीय वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(स्थापना)

हे सुपार्श्व ! तुम लोक में, बने श्री के नाथ।
आह्वानन् करते प्रभो, आये खाली हाथ।।
झुका चरण में आपके, मेरा भी यह माथ।
तव चरणों के भक्त हम, ले लो अपने साथ।।
करते हैं हम प्रार्थना, करो प्रभु स्वीकार।
भव सागर से भक्त को, शीघ्र लगाओ पार।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छंद)

सम्यक् श्रद्धा हो जावे, सम्यग्दर्शन को पावे।
तव दर्श विशुद्धी आवे, नर भेद ज्ञान प्रगटावे।।1।।

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धि भावना सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो विनय महा गुणधारी, प्रभु बनते हैं अविकारी।
गुण विनय हृदय में आया, निज आतम गुण प्रगटाया।।2।।

ॐ ह्रीं विनय सम्पन्नता भावना सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो शील महाव्रत धारे, वह सारे काज सम्हारे।
हे शील महाव्रत धारी, हम पूजा करें तिहारी।।3।।

ॐ ह्रीं शीलव्रत भावना सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो आतम ज्ञान जगावें, वे ही ज्ञानी कहलावें।
वे अभीक्ष्ण ज्ञान उपयोगी, शिवपद पाते हैं योगी।।4।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावना सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगों से नाता तोड़ा, आतम से नाता जोड़ा।
जो धर्म करें हर्षावें, संवेग भाव वे पावें।।5।।

ॐ ह्रीं संवेग भावना सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो शक्ती नहीं छिपाते, वे त्याग धर्म को पाते।
हम त्याग भावना भाएँ, निज आतम गुण प्रगटाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्याग भावना सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शक्तिशः तप के धारी, मुनि करें निर्जरा भारी।
तब चेतन को चमकाए, तप करके मुक्ती पाए।।7।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्तप भावना सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो साधु समाधि कराते, शिवपद की राह बनाते।
हम साधु समाधि पाएँ, अनुक्रम से शिवपुर जाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं साधु-समाधि भावना सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैय्यावृत्ती शुभकारी, करते हैं जो नर-नारी।
सेवा का भाव जगावें, वे तीर्थंकर पद पावें।।9।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ति भावना सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् भक्ती सुखकारी, हैं जग में मंगलकारी।
भक्ती कर मुक्ती पाएँ, न भव वन में भटकाएँ।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्ति भावना सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य भक्ती जो करते, वह कोष पुण्य से भरते।
आचार्य की महिमा न्यारी, होते हैं शिवमग चारी।।11।।

ॐ ह्रीं आचार्यभक्ति भावना सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो द्वादशांग के ज्ञाता, पाते जो प्रवचन माता।
मुनि उपाध्याय अविकारी, उनकी भक्ती शुभकारी।।12।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुत भक्ति भावना सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन वचन में श्रद्धा आये, प्रवचन भक्ती कहलाये।
प्रवचन भक्ती का धारी, मैटे निज विपदा सारी।।13।।

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्ति भावना सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवश्यक पूरे करते, वह कर्म श्रृंखला हरते।
उनकी भक्ती हम पाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।14।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहार्य भावना सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिवमार्ग कहा शुभकारी, इस जग में मंगलकारी।
शुभ जैन धर्म का धारी, मैटे निज विपदा सारी।।15।।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावना भावना सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वात्सल्य हृदय में धारे, जो द्वेष भाव निरवारे।
सच्ची जिनवर की वाणी, सारे जग में कल्याणी।।16।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्य भावना सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो भव्य भावना भावे, वह मुक्ति वधु को पावे।
यह सोलह कारण जानो, शिवपद के हेतू मानो।।17।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्यादि षोडश भावना सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा- बाईस परीषह जय करें, दश धर्मों के ईश।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, चरण झुकाते शीश।।

चतुर्थ वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(स्थापना)

हे सुपार्श्व ! तुम लोक में, बने श्री के नाथ।
आह्वानन् करते प्रभो, आये खाली हाथ।।
झुका चरण में आपके, मेरा भी यह माथ।
तव चरणों के भक्त हम, ले लो अपने साथ।।
करते हैं हम प्रार्थना, करो प्रभू स्वीकार।
भव सागर से भक्त को, शीघ्र लगाओ पार।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

22 परिषहजय एवं 10 धर्मयुत जिन
(छन्द जोगीरासा)

क्षुधा परीषह जय पाते हैं, मुनी वृन्द होके अविकार।
ज्ञान ध्यान तप में रत रहकर, करें साधना मुनि अनगार।।1।।
ॐ ह्रीं क्षुधा परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृषा परीषह जय करते हैं, वीतराग साधू अनगार।
ज्ञान ध्यान तप के धारी मुनि, जग में होते मंगलकार।।2।।
ॐ ह्रीं तृषा परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुश्किल शीत परीषह जय है, वह भी सहते संत महान्।
सम्यक् चारित पाने वाले, होते संयम के स्थान।।3।।
ॐ ह्रीं शीत परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्मी की लपटों को सहते, निष्पृह साधू हो अविकार।
उष्ण परीषह जय के धारी, जग में गाए मंगलकार।।4।।
ॐ ह्रीं उष्ण परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दंशमशक परिषह जय करते, समता धारी संत प्रधान।
कठिन साधना करने वाले, तीन लोक में रहे महान्।।5।।
ॐ ह्रीं दंशमशक परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तर बाह्य लाज का कारण, नग्न परीषह सहते हैं।
ज्ञान ध्यान तप के धारी मुनि, समता भाव से रहते हैं।।6।।
ॐ ह्रीं नग्न परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरति परीषह जय के धारी, होते हैं साधू निर्ग्रन्थ।
विशद साधना करने वाले, करते हैं कर्मों का अन्त।।7।।
ॐ ह्रीं अरति परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हाव-भाव लखकर स्त्री के, समता से रहते अनगार।
स्त्री परिषह जय करते हैं, वीतराग साधू मनहार।।8।।
ॐ ह्रीं स्त्री परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चर्या परिषह जय धारी मुनि, पैदल करते सदा विहार।
यत्नाचार धरें चर्या में, जिनकी चर्या अपरम्पार।।9।।
ॐ ह्रीं चर्या परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान ध्यान आदी को बैठें, विविक्त आसन के आधार।
निषद्या परीषह जय करते हैं, जैन मुनी होके अविकार।।10।।
ॐ ह्रीं निषद्या परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षिति शयन एकाशन में मुनि, करते हैं समता को धार।
शैय्या परिषह जय करते हैं, ज्ञानी ध्यानी ऋषि अनगार।।11।।
ॐ ह्रीं शैय्या परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कटु वचन बोले यदि कोई, फिर भी न करते हैं रोष।
जैन मुनीश्वर समता वाले, परिषह जय धारी आक्रोश।।12।।

ॐ ह्रीं आक्रोश परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल–छन्द)

वध करे यदि कोइ प्राणी, न बोलें मुनि कटु वाणी।
मुनि बध परीषह जय धारी, हैं जग में मंगलकारी।।13।।

ॐ ह्रीं वध परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन मुनी याचना धारी, परीषह जय करते भारी।
इनकी है महिमा न्यारी, होते हैं मंगलकारी।।14।।

ॐ ह्रीं याचना परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ना लाभ प्राप्त कर पावें, मन में समता उपजावें।
मुनि अलाभ परीषह वाले, इस जग में रहे निराले।।15।।

ॐ ह्रीं अलाभ परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन में कोई रोग सतावे, मुनि शांत भाव को पावे।
जय रोग परीषह धारी, होते जग मंगलकारी।।16।।

ॐ ह्रीं रोग परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृण शूल आदि चुभ जावे, फिर भी मन समता आवे।
तृणस्पर्श जयी कहलावें, परिषह में न घबड़ावें।।17।।

ॐ ह्रीं तृणस्पर्श परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन मल से लिप्त हो जावे, मन में आकुलता आवे।
मुनि मल परीषह जय धारी, जग में रहते अविकारी।।18।।

ॐ ह्रीं मल परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्कार पुरस्कार जानो, परीषह जय धारी मानो।
हैं मुनिवरजी शुभकारी, इस जग में मंगलकारी।।19।।

ॐ ह्रीं सत्कार पुरस्कार परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर शुभ प्रज्ञा पावें, प्रज्ञा में न हर्षावें।
मुनि प्रज्ञा परिषह धारी, जय पाते हैं अविकारी।।20।।

ॐ ह्रीं प्रज्ञा परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान परीषह गाया, मुनिवर ने जय शुभ पाया।
न खेद हृदय में लावें, मन में समता उपजावें।।21।।

ॐ ह्रीं अज्ञान परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिराज अदर्शन धारी, होते उसके जयकारी।
मुनिवर परिषह जय पावें, मन में समता उपजावें।।22।।

ॐ ह्रीं दर्शन परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दस धर्म (चौपाई)

जो भी क्रोध कषाय नशाए, उत्तम क्षमा धर्म वह पाए।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।23।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्म सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान हृदय से जिसके जाए, मार्दव धर्म वही प्रगटाए।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।24।।

ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्म सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मायाचार हटाए प्राणी, आर्जव पावे वह सद्ज्ञानी।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।25।।

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्म सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ त्याग कर हो अविकारी, शौच धर्म पाए मनहारी।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।26।।

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्म सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

असद् कटुक शब्दों को त्यागे, सत्य धर्म में प्राणी लागे।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।27।।

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्म सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दयावान इन्द्रिय जय धारी, संयम पावे वह अनगारी।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।28।।

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्म सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छा रोध करे जो भाई, उत्तम तप पावे सुखदाई।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी ।।29 ।।

ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्म सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग त्याग कर बनता दानी, उत्तम त्याग धरे वह ज्ञानी।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी ।।30 ।।

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्म सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन में किंचित् राग न लावें, धर्माकिञ्चन प्राणी पावें।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी ।।31 ।।

ॐ ह्रीं उत्तम आकिञ्चन धर्म सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज से जिन का ध्यान लगावें, उत्तम ब्रह्मचारी कहलावें।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी ।।32 ।।

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाईस परीषह पर जय पाएँ, दश धर्मों से सहित कहाएँ।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी ।।33 ।।

ॐ ह्रीं द्वाविंशति परीषहजय दशधर्म सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम वलयः

दोहा– दोष अठारह से रहित, छियालिस गुण के नाथ।
पूजा करते भाव से, पुष्पाञ्जलि के साथ।।

पंचम वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(स्थापना)

हे सुपार्श्व ! तुम लोक में, बने श्री के नाथ।
आह्वानन् करते प्रभो, आये खाली हाथ।।
झुका चरण में आपके, मेरा भी यह माथ।
तव चरणों के भक्त हम, ले लो अपने साथ।।

करते हैं हम प्रार्थना, करो प्रभू स्वीकार।
भव सागर से भक्त को, शीघ्र लगाओ पार।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

18 दोषरहित जिन

(चौपाई)

क्षुधा रोग को पूर्ण नशाए, अतः प्रभू शिव पदवी पाए।
चरण पूजते हम हे स्वामी !, मुक्ती पथ के हे शिवगामी !।।1 ।।

ॐ ह्रीं क्षुधादोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृषा दोष के नाशनकारी, तीर्थंकर जिन हैं अविकारी
चरण पूजते हम हे स्वामी !, मुक्ती पथ के हे शिवगामी !।।2 ।।

ॐ ह्रीं तृषादोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म दोष को खोने वाले, केवलज्ञानी होने वाले।
चरण पूजते हम हे स्वामी !, मुक्ती पथ के हे शिवगामी !।।3 ।।

ॐ ह्रीं जन्मदोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जरा दोष के होते नाशी, अनुपम केवलज्ञान प्रकाशी।
चरण पूजते हम हे स्वामी !, मुक्ती पथ के हे शिवगामी !।।4 ।।

ॐ ह्रीं जरादोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विस्मय दोष नहीं रह पाए, जो नर केवल ज्ञान जगाए।
चरण पूजते हम हे स्वामी !, मुक्ती पथ के हे शिवगामी !।।5 ।।

ॐ ह्रीं विस्मयदोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरति दोष को पूर्ण नशाया, जिनने तीर्थंकर पद पाया।
चरण पूजते हम हे स्वामी !, मुक्ती पथ के हे शिवगामी !।।6 ।।

ॐ ह्रीं अरतिदोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होते खेद दोष के नाशी, बनते सिद्ध शिला के वासी।
चरण पूजते हम हे स्वामी !, मुक्ती पथ के हे शिवगामी !।।7।।

ॐ ह्रीं खेददोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोग दोष सारा नश जाए, जो तीर्थंकर पदवी पाए।
चरण पूजते हम हे स्वामी !, मुक्ती पथ के हे शिवगामी !।।8।।

ॐ ह्रीं रोगदोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शोक नशाने वाले प्राणी, होते हैं शुभ केवल ज्ञानी।
चरण पूजते हम हे स्वामी !, मुक्ती पथ के हे शिवगामी !।।9।।

ॐ ह्रीं शोकदोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छंद)

मद दोष नहीं रह पाए, जो केवल ज्ञान जगाए।
वह अर्हत् पदवी पाते, इस जग से पूजे जाते।।10।।

ॐ ह्रीं मददोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मोह दोष को खोवें, वे केवल ज्ञानी होवें।
वह अर्हत् पदवी पाते, इस जग से पूजे जाते।।11।।

ॐ ह्रीं मोहदोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भय दोष नहीं रह पाये, जो केवल ज्ञान जगाये।
वह अर्हत् पदवी पाते, इस जग से पूजे जाते।।12।।

ॐ ह्रीं भयदोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं निद्रा दोष के त्यागी, जिन वीतराग विज्ञानी।
वह अर्हत् पदवी पाते, इस जग से पूजे जाते।।13।।

ॐ ह्रीं निद्रादोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिंता जो पूर्ण नशाएँ, वे तीर्थंकर पद पाएँ।
वह अर्हत् पदवी पाते, इस जग से पूजे जाते।।14।।

ॐ ह्रीं चिंतादोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु स्वेद दोष के नाशी, हो जाते शिवपुर वासी।
वह अर्हत् पदवी पाते, इस जग से पूजे जाते।।15।।

ॐ ह्रीं स्वेददोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो जाए राग की हानी, बन जाते केवलज्ञानी।
वह अर्हत् पदवी पाते, इस जग से पूजे जाते।।16।।

ॐ ह्रीं रागदोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन रहे द्वेष परिहारी, केवल ज्ञानी अविकारी।
वह अर्हत् पदवी पाते, इस जग से पूजे जाते।।17।।

ॐ ह्रीं द्वेषदोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मरण दोष को खोते, फिर जिन तीर्थंकर होते।।
वह अर्हत् पदवी पाते, इस जग से पूजे जाते।।18।।

ॐ ह्रीं मरणदोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म के दस अतिशय अर्घ्य

दश अतिशय जनमत जिन पाय, पूजत सुर नर हर्ष मनाय।
स्वेद रहित जिनवर तन पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।।19।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा निःस्वेदत्वसहजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल नहिं होय प्रभु तन मांहि, निर्मल रही देह सुख दाय।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।।20।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा निर्मलत्वसहजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम चतुष्क संस्थान जो पाय, हीनाधिक तन होवे नाय।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।।21।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा समचतुष्कसंस्थान सहजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वज्र वृषभ संहनन जो होय, अद्भुत शक्ती धारे सोय।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।।22।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा वज्रवृषभनाराचसंहनन सहजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम सुगंधित पाते देह, भव्य जीव सब पावें स्नेह।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय ।।23 ।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सौगन्ध्यसहजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशयकारी सुंदर रूप, फीके पड़ें जगत् के भूप।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय ।।24 ।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा रूपसहजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्षण एक सहस हैं आठ, सहस नाम जो पढ़ते पाठ।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय ।।25 ।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सौलक्षण्य सहजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्वेत रक्त प्रभु के तन होय, वात्सल्य महिमा युत सोय।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय ।।26 ।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा श्वेतरक्तसहजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हित मित प्रिय वचन सुखदाय, सुनकर हर प्राणी सुख पाय।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय ।।27 ।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा प्रियहितवादित्वसहजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बल अतुल्य पाये जिनदेव, जग के जीव करें पद सेव।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय ।।28 ।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अप्रमितवीर्यसहजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान के अतिशय अर्घ्य

(अडिल्ल छंद)

अतिशय जिनवर केवलज्ञान के दश कहे।
योजन शत् इक में सुभिक्षता हो रहे।
केवलज्ञान का अतिशय जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में शीश झुकाए हैं।।29 ।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा गव्यूतिशतचतुष्टय सुभिक्षत्व घातिक्षयजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल ज्ञानी होय, गमन नभ में करें।
प्रभू चलें जिस ओर, देवगण अनुसरें।
केवलज्ञान का अतिशय जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में शीश झुकाए हैं।।30 ।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा गगन गमनत्व घातिक्षयजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर का हो गमन, सदा हितदाय जी।
तिस थानक नहिं कोय, मारने पाय जी।।
केवलज्ञान का अतिशय जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में शीश झुकाए हैं।।31 ।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अप्राणिवधत्व घातिक्षयजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर नर पशु जड़ कृत उपसर्ग चऊ कहे।
इनकी बाधा प्रभु के ऊपर नहीं रहे।
केवलज्ञान का अतिशय जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में शीश झुकाए हैं।।32 ।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा उपसर्गाभाव घातिक्षयजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा आदि की पीड़ा से जग दुख सह्यो।
सो जिन कवलाहार जान सब परि-हर्‌यो।
केवलज्ञान का अतिशय जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में शीश झुकाए हैं।।33।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा भुक्त्यभाव घातिक्षयजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में श्री जिनवर स्थित रहे।
पूर्व दिशा मुख होय चतुर्दिक दिख रहे।।
केवलज्ञान का अतिशय जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में शीश झुकाए हैं।।34।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा चतुर्मुखत्व घातिक्षयजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राकृत संस्कृत सकल देश भाषा कही।
सब विद्या अधिपत्य सकल जानत सही।
केवलज्ञान का अतिशय जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में शीश झुकाए हैं।।35।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वविद्येश्वर घातिक्षयजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मूर्तिक तन पुद्गल के अणु से बन रह्यो।
पड़े नहीं छाया, महा अचरज भयो।
केवलज्ञान का अतिशय जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में शीश झुकाए हैं।।36।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अच्छायत्व घातिक्षयजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर के नख केश, नाहिं वृद्धी करें।
ज्यों के त्यों ही रहें, प्रभू यह गुण धरें।
केवलज्ञान का अतिशय जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में शीश झुकाए हैं।।37।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा समाननखकेशत्व घातिक्षयजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्रों में टिमकार, केश भौं नहिं हिलें।
दृष्टी नाशा रहे, कोई हेतू मिलें।
केवलज्ञान का अतिशय जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में शीश झुकाए हैं।।38।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अपक्ष्मस्पंदत्व घातिक्षयजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवकृत अतिशय अर्घ्य *(दोहा)*

अतिशय देवों कृत कहे, चौदह सर्व महान्।
सर्व जीव को सुख करे, अर्धमागधी बान।।39।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वार्धमागधीय भाषा देवोपनीतातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवों में मैत्री रहे, जहँ जिन की थिति होय।
देव निमित्तक जानिए, अतिशय जिनके जोय।।40।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्व जीव मैत्रीभाव देवोपनीतातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फूल फलें षट् ऋतू के, जहँ जिन की थिति होय।
देवों का तो निमित्त है, अतिशय जिनका सोय।।41।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वर्तुफलादि तरु परिणाम देवोपनीतातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्पणवत् भूमी रहे, जहँ जिन करें विहार।
अतिशय देवों कृत रहा, होय मंगलाचार ।।42।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा आदर्शतल प्रतिमा रत्नमही सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंद सुगंधित शुभ सुखद, पुनि-पुनि चले बयार।
अतिशय श्री जिनदेव का, करता मंगलकार ।।43।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सुगंधित विहरण मनुगत वायुत्व देवोपनीतातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व जीव आनंदमय, होवें मंगलकार।
अतिशय होवे यह परम, प्रभु का होय विहार ।।44।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वानंद कारक देवोपनीतातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय से जिनदेव के, भू गत कंटक होय।
ये अतिशय भी जहाँ में, देव निमित्तक सोय ।।45।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा वायुकुमारोपशमित धूलि कंटकादि देवोपनीतातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंधोदक की वृष्टि हो, अतिशय करते देव।
महिमा यह जिनदेव की, सेवा करें सदैव ।।46।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा मेघकुमार कृत गंधोदक वृष्टि देवोपनीतातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव रचें पद तल कमल, गगन गमन जब होय।
अतिशय श्री जिनदेव का, देव निमित्तक सोय ।।47।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा चरण कमल तल रचित स्वर्ण कमल देवोपनीतातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुखकारी सब जीव को, निर्मल दिश आकाश।
देव करें भक्ती विमल, अतिशय जिन सुख राश ।।48।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा गगन निर्मल देवोपनीतातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धूम मेघ वर्जित सुभग, सब दिश निर्मल होय।
देव करें भक्ती परम, अतिशय जिन की जोय ।।49।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्व दिशा निर्मल देवोपनीतातिशय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ती के वश देव शुभ, करते जय-जयकार।
पृथ्वी से आकाश तक, होवे मंगलकार ।।50।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा आकाशे जय-जयकार देवोपनीतातिशय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वाण्ह यक्ष आगे चले, धर्म चक्र धर शीश।
अतिशय श्री जिनदेव का, चरण झुकें शत् ईश ।।51।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा धर्म चक्र चतुष्टय देवोपनीतातिशय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल द्रव्य वसु देवगण, लेकर चलते साथ।
अतिशय कर सुर नर सभी, चरण झुकाते माथ ।।52।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अष्ट मंगल द्रव्य देवोपनीतातिशय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्त चतुष्टय

(चौपाई)

कर्म दर्शनावरणी नाशे, दर्शन गुण जिन प्रभु प्रकाशे।
देखे सर्व चराचर सारा, निज स्वरूप को निज में धारा।।
जिन तीर्थंकर केवलज्ञानी, जिनकी वाणी जग कल्याणी।
अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।53।।

ॐ ह्रीं अनंतदर्शनगुण प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो निज आतम ज्ञान जगावें, केवलज्ञान स्वयं प्रगटावें।
सर्व चराचर को वह जाने, स्वपर वस्तु को पहिचाने।।
जिन तीर्थंकर केवलज्ञानी, जिनकी वाणी जग कल्याणी।
अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।54।।

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञानगुण प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह कर्म जग में दुखदायी, वह विनाश हो जावे भाई।
गुण सम्यक्त्व प्रकट हो जावे, सुख अनन्त प्राणी यह पावे।।
जिन तीर्थंकर केवलज्ञानी, जिनकी वाणी जग कल्याणी।
अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।55।।

ॐ ह्रीं अनन्तसुख प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाधाओं ने डाला डेरा, अन्तराय ने हमको घेरा।
हे अनन्त शक्ति के धारी, मेटो विपदा शीघ्र हमारी।।
जिन तीर्थंकर केवलज्ञानी, जिनकी वाणी जग कल्याणी।
अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।56।।

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्यगुण प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्य

(शम्भू छंद)

समवशरण में तरु अशोक सब, शोक हरण करता भाई।
जिनवर की महिमा दिखलाए, मणि मुक्तायुत सुखदाई।।
जिन सुपार्श्व के पद वंदन से, लोगों के संकट घटते हैं।
जो कर्म अनादि लगे 'विशद', वह कर्म शीघ्र ही कटते हैं।।57।।

ॐ ह्रीं अशोकतरु सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन छत्र महिमा गाते प्रभु, तीन लोक के नाथ रहे।
यह सारा जग महिमा गाये, प्रभु की महिमा कौन कहे।।

जिन सुपार्श्व के पद वंदन से, लोगों के संकट घटते हैं।
जो कर्म अनादि लगे 'विशद', वह कर्म शीघ्र ही कटते हैं।।58।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रय सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

है रत्न जड़ित सिंहासन शुभ, प्रभु उस पर अधर विराज रहे।
महिमा अनुपम दिखलाता है, प्रभु तीन लोक में पूज्य रहे।।
जिन सुपार्श्व के पद वंदन से, लोगों के संकट घटते हैं।
जो कर्म अनादि लगे 'विशद', वह कर्म शीघ्र ही कटते हैं।।59।।

ॐ ह्रीं सिंहासन सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

प्रभु दिव्य ध्वनि के द्वारा शुभ, तत्त्वों का शुभ उपदेश करें।
निज भाषा में समझो प्राणी, जीवों का सब संक्लेश हरें।।
जिन सुपार्श्व के पद वंदन से, लोगों के संकट घटते हैं।
जो कर्म अनादि लगे 'विशद', वह कर्म शीघ्र ही कटते हैं।।60।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

शुभ देव दुन्दुभि भव्यों को, प्रभु की महिमा बतलाती है।
जय जय की गूँज उठे नभ में, जिन की महिमा को गाती है।।
जिन सुपार्श्व के पद वंदन से, लोगों के संकट घटते हैं।
जो कर्म अनादि लगे 'विशद', वह कर्म शीघ्र ही कटते हैं।।61।।

ॐ ह्रीं देवदुंदुभि सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

नभ में शुभ सुमन बरसते हैं, प्रभु का यश मंगल गाते हैं।
अपनी अनुपम आभा द्वारा, जो चतुर्दिशा महकाते हैं।।
जिन सुपार्श्व के पद वंदन से, लोगों के संकट घटते हैं।
जो कर्म अनादि लगे 'विशद', वह कर्म शीघ्र ही कटते हैं।।62।।

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

लज्जित हो जाते सूर्य चन्द्र, भामण्डल को लखकर सारे।
जो भव दिखलाते भव्यों को, प्रभू ने कई भव्य स्वयं तारे।।

जिन सुपार्श्व के पद वंदन से, लोगों के संकट घटते हैं।
जो कर्म अनादि लगे 'विशद', वह कर्म शीघ्र ही कटते हैं।।63।।

ॐ ह्रीं भामण्डल सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सुर चँवर ढुराते हैं अनुपम, जो चन्दा जैसे चमक रहे।
प्रभु की आभा को दिखलाते, प्रभु सूरज जैसे दमक रहे।।
जिन सुपार्श्व के पद वंदन से, लोगों के संकट घटते हैं।
जो कर्म अनादि लगे 'विशद', वह कर्म शीघ्र ही कटते हैं।।64।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठिचामर सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोष अठारह रहित जिनेश्वर, छियालिस गुण प्रगटाते हैं।
तीन लोक तीनों कालों में, इस जग से पूजे जाते हैं।।
जिन सुपार्श्व के पद वंदन से, लोगों के संकट घटते हैं।
जो कर्म अनादि लगे 'विशद', वह कर्म शीघ्र ही कटते हैं।।65।।

ॐ ह्रीं अष्टादश दोष रहित षट् चत्वारिंशद गुण संयुक्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐम् अर्हं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा– सप्तम तीर्थंकर हुए, जिन सुपार्श्व है नाम।
जयमाला गाते यहाँ, करके चरण प्रणाम।।

(मोतियादाम छंद)

त्रैलोक हितंकर धर्म प्रधान, धरें सदृष्टी जीव महान्।
करें निज दर्शन की पहिचान, तबै हो जीवों को निज भान।।
करें जब प्राणी पुण्य विशाल, सुपद आए तब पूज्य त्रिकाल।
तजें प्रभु जी जब स्वर्ग विमान, तबैं हो प्रभु का गर्भकल्याण।।
करें रत्नों की वृष्टि महान्, स्वर्गों से आके देव प्रधान।
प्रभू जब जन्मे तब सुर आय, ऐरावत् साथ में अपने ल्याय।।

शचि शिशु को फिर लेकर आय, सुइन्द्र तबै प्रभु दर्शन पाय।
तबै सुर मेरु गिरि ले जाय, खुशी हो प्रभु का न्हवन कराय।।
प्रभू के पग में स्वस्तिक देख, किए प्रभु का शुभ नाम उल्लेख।
गये सुरराज बनारस जाय, प्रभू को राजमहल पहुँचाए।।
प्रभू कई पाए भोग विलास, तजे फिर भोगन की प्रभु आस।
किए प्रभु जी चउ कर्म विनाश, लिए तब केवल ज्ञान प्रकाश।।
तबै फिर आये इन्द्र अपार, किए प्रभू की तब जय-जयकार।
शुभ समवशरण रचना सुप्रधान, कुबेर जो कीन्हें श्रेष्ठ महान्।।
खिरी ध्वनि प्रभू की अपरम्पार, किए प्रभू तत्त्वों का विस्तार।
जगे कई जीवन में श्रद्धान, जगाए वह सब सम्यक् ज्ञान।।
सु सम्यक् चारित्र का स्वरूप, रत्नत्रय पाए भव्य अनूप।
किए प्रभु जी फिर ध्यान विशेष, नशाए क्षण में कर्म अशेष।।
'विशद' हम जपते तव गुण सार, प्रभू हमको भवसागर तार।
बने शरणागत दीन दयाल, करी तव चरणों में गुण माल।।
जगी है मन में मेरे आस, मिले हमको भी शिवपुर वास।
करें हम निशदिन प्रभू का ध्यान, मिले ना जब तक पद निर्वाण।।

(छन्द : धत्तानन्द)

जय-जय जिन स्वामी, त्रिभुवन नामी, जन्म मृत्यु का रोग हरो।
मुक्ती पथगामी, शिव अनुगामी, हमको भी भवपार करो।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– श्री सुपार्श्व के पद युगल, जो पूजे धर ध्यान।
'विशद' ज्ञान पाए शुभम्, पाए पद निर्वाण।।

इत्याशीर्वादः

श्री 1008 सुपार्श्वनाथ भगवान की आरती

(तर्ज– आज करें हम.....)

जिन सुपार्श्व की करते हैं शुभ, आरति मंगलकारी।
दीप जलाकर लाए हैं हम, जिनवर के दरबार।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति–2 ।।1।।

स्वर्ग लोक से इन्द्र अनेकों, नगर बनारस आए।
रत्न वृष्टि करके हर्षित हो, नगरी खूब सजाए।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति–2 ।।2।।

पृथ्वीमति माता की कुक्षी, को प्रभु धन्य बनाए।
पिता प्रतिष्ठित सुनकर के तब, मन ही मन हर्षाए।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति–2 ।।3।।

षष्ठी शुक्ला भादो को प्रभु, स्वर्ग से चयकर आये।
ज्येष्ठ शुक्ल बारस को प्रभू का, जन्म कल्याण मनाये।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति–2 ।।4।।

दो सौ धनुष की रही ऊँचाई, लक्षण स्वस्तिक जानो।
बीस लाख पूरब की आयू, जिन सुपार्श्व की मानो।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति–2 ।।5।।

ज्येष्ठ सुदी बारस को प्रभु ने, उत्तम तप को पाया।
षष्ठी कृष्ण माह फाल्गुन को, केवलज्ञान जगाया।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति–2 ।।6।।

करें आरती 'विशद' भाव से, वह सौभाग्य जगाएँ।
सुख–शान्ती आनन्द प्राप्त कर, अन्तिम शिवपद पाएँ।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति–2 ।।7।।

श्री सुपार्श्वनाथ चालीसा

दोहा– परमेष्ठी जिन पाँच हैं, जग में अपरम्पार।
चैत्य चैत्यालय धर्म जिन, आगम मंगलकार।।
चालीसा लिखते यहाँ, जिन सुपार्श्व के नाम।
तीन योग से चरण में, करके विशद प्रणाम।।

(चौपाई)

जिन सुपार्श्व महिमा के धारी, तीन लोक में मंगलकारी।
तुम हो सर्व चराचर ज्ञाता, भवि जीवों के अनुपम त्राता।।
मोह मान माया को त्यागा, केवल ज्ञान हृदय में जागा।
अतः आपके गुण सब गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।
जम्बू द्वीप रहा शुभकारी, भरत क्षेत्र जिसमें मनहारी।
काशी देश बनारस नगरी, प्रजा सुखी जानो तुम सगरी।।
सुप्रतिष्ठ राजा शुभ गाए, पृथ्वी सेना रानी पाए।
भादव शुक्ला षष्ठी जानो, प्रत्यूष बेला शुभ पहिचानो।।
मध्यम ग्रैवेयक से चय आये, समुद्र विमान वहाँ पर पाए।
विशाख नक्षत्र रहा शुभकारी, गर्भ प्रभु पाए मनहारी।।
देव स्वर्ग से चलकर आए, रत्नों की वृष्टी करवाए।
ज्येष्ठ शुक्ल बारस शुभ जानो, शुभ नक्षत्र विशाख बखानो।।
अग्निमित्र योग शुभकारी, तुला राशि जानो मनहारी।
शुक्र राशि का स्वामी गाया, जिसमें जन्म प्रभु ने पाया।।
हरित वर्ण तन का शुभ जानो, स्वस्तिक चिह्न आपका मानो।
इन्द्रराज चरणों में आया, पद में सादर शीश झुकाया।।
सहस आठ कलशा शुभ लाया, मेरू गिरि पर न्हवन कराया।
बीस लाख पूरब की भाई, आयू पाये हैं सुखदायी।।
दो सौ धनुष रही ऊँचाई, प्रभु के तन की मंगलदायी।
पतझड़ देख भावना भाए, मन में प्रभु वैराग्य जगाए।।

ज्येष्ठ शुक्ल बारस पहिचानो, सायंकाल श्रेष्ठ शुभ मानो।
विशाख नक्षत्र श्रेष्ठ शुभ पाए, देव स्वर्ग से चलकर आए।।
पालकी श्रेष्ठ मनोगति लाए, सहस्राभ्र वन में पहुँचाए।
वृक्ष शिरीष रहा शुभ भाई, धनुष श्रेष्ठ दो सौ ऊँचाई।।
एक सहस्र भूपति संग आए, प्रभु के साथ में दीक्षा पाए।
सोम खेट नगरी शुभ जानो, महेन्द्रदत्त नृप के गृह मानो।।
प्रभु आहार क्षीर का कीन्हें, विषयों की आशा तज दीन्हें।
शुभ छद्मस्थ काल सुखदायी, प्रभु नौ वर्ष बताया भाई।।
फाल्गुन कृष्णा षष्ठी जानो, तिथि शुभ केवलज्ञान की मानो।
सौ–सौ इन्द्र शरण में आए, चरणों में नत शीश झुकाए।।
धनपति साथ में इन्द्र के आया, जो शुभ समवशरण बनवाया।
सौ योजन का है शुभकारी, तरुवर श्रेष्ठ अशोक मनहारी।।
गणधर पञ्चानवे शुभ गाये, बलदत्त प्रथम गणी कहलाए।
मुनिवर ढाई लाख बतलाए, जो शुभ उत्तम संयम पाए।।
काली यक्षी प्रभु की गाई, यक्ष विजय था अनुपम भाई।
गिरि सम्मेद शिखर जिन आए, कूट प्रभास प्रभूजी पाए।।
फाल्गुन वदि साते शुभ जानो, शुभ नक्षत्र विशाखा मानो।
खड्गासन से श्री जिन स्वामी, जिन मुक्ती पाए अनुगामी।।
जिनवर श्री सुपार्श्व कहलाए, जो उपसर्ग जयी शुभ गाए।
प्रभु की प्रतिमाएँ शुभकारी, इस जग में अति मंगलकारी।।
कई इक जगह नागफण वाली, प्रतिमाएँ शुभ रही निराली।
प्राणी शुभ जिन दर्शन पाएँ, शिवपद का जो बोध कराएँ।।

दोहा– चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
शुभ तन मन सौभाग्य पा, बने श्री के नाथ।।
सुख समृद्धि बुद्धि बल, बढ़ता अपने आप।
'विशद' ज्ञान जागे परम, कट जाते हैं पाप।।

प्रशस्ति

मध्य लोक के मध्य है, जम्बू द्वीप महान्।
भारत देश के मध्य में, उत्तर देश प्रधान।।
जिला श्रेष्ठ मेरठ कहा, भारत में विख्यात।
तीर्थ हस्तिनापुर रहा, जिसमें होवे ज्ञात।।
शान्ति कुन्थु जिन अरह के, हुए तीन कल्याण।
समवशरण जिन मल्लि का, आया जिस स्थान।।
दुर्गाबाड़ी सदर में, हुआ ग्रीष्म अवकाश।
लेखन चिन्तन मनन में, समय बिताया खास।।
वीर निर्वाण पच्चीस सौ, अड़तिस है शुभकार।
दो हजार बारह शुभम्, मई माह मनहार।।
जेठ माह की अष्टमी, दिन है शुभ रविवार।
जिन सुपार्श्व की अर्चना, हुई सुमंगलकार।।
पावन अवसर पर विशद, लिक्खा गया विधान।
शुभ भावों के साथ में, किया प्रभू गुणगान।।
लघु धी से जो भी लिखा, जानो यही प्रमाण।
भव्य जीव पढ़के इसे, पावें सम्यक् ज्ञान।।
कवि नहीं वक्ता नहीं, मैं हूँ लघु आचार्य।
'विशद' धर्मयुत आचरण, करें जगत् जन आर्य।।
पूजा के फल से सभी, होते कर्म विनाश।
सर्व कर्म का नाश हो, होवे आत्म प्रकाश।।

।। श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः ।।

चमत्कारक
श्री चन्द्रप्रभ पूजन विधान

प्रथम वलय-4
द्वितीय वलय-8
तृतीय वलय-16
चतुर्थ वलय-32
पंचम वलय-64

रचयिता :
प.पू. क्षमामूर्ति 108 आचार्य विशदसागरजी महाराज

चन्द्रप्रभु स्तवन

चन्द्रप्रभः प्रभाधीशं, चन्द्रशेखर चन्दनम्।
चन्द्र लक्ष्म्यांकं चन्द्रांकं, चन्द्रबीजं नमोस्तु ते।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चन्द्रप्रभः, श्रीं ह्रीं कुरु-कुरु स्वाहा।
इष्टसिद्धि महाऋद्धि, तुष्टिं पुष्टिं कुरु मम्।।

द्वादश सहस्र जपतो मंत्रः, वांछितार्थ फलप्रदः।
महंतं त्रिसंध्यं जपतः, सर्वार्ति व्याधि नाशनम्।।

महासुरेन्द्र श्री सहितः, श्री पाण्डव नृपस्तुतः।
श्री चन्द्रप्रभः तीर्थेशं, श्रियं चन्द्रो ज्वालां कुरु।।

श्री चन्द्रप्रभ विधेयं, स्मृतामेय फलप्रदाः।
भवाब्धि व्याधि विध्वंस, दायिनीमेव रक्षदा।।

पवित्रं परमं ध्येयं, परमानंद दायकम्।
भुक्तिमुक्ति प्रदातारं, पठतां मंगल प्रदम्।।

ऋद्धिसिद्धि-महाबुद्धि, धृतिकीर्तिसुकांतिदम्।
मृत्युं जयं शिवात्मानं, जगदानंदनं, जिनम्।।

सर्वकल्याण पूर्णेयं, जरामृत्युविवर्जितं।
अणिमार्द्धि महासिद्धि, र्लक्षजाप्येन चाप्नुयात्।।

हर्षदः कामदश्चेति, रिपुघ्नः सर्वसौख्यदः।
पातु नः परमानंदः, तत्क्षणं संस्तुति जिनः।।

तत्त्वरूपमिदं स्तोत्रम्, सर्वमांगल्य सिद्धिदम्।
त्रिसंध्यं यः पठेन्नित्यं, नित्यं प्राप्नोति स श्रियम्।।

(इति चन्द्रप्रभु स्तोत्रम्) पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

मंगलाचरण-स्तवन

दोहा- पूजा करने भक्त यह, आए आपके द्वार।
निज सम इनको भी करो, बनो प्रभो आधार।।

हम चन्द्रप्रभ के श्री चरणों में, श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।
जो चन्द्र समान समुज्ज्वल हैं, हम उनके गुण को गाते हैं।।
जो परम पूज्य हैं जगत श्रेष्ठ, उनके चरणों सिर नाते हैं।
हम 'विशद' ज्ञान के धारी जिन, के चरणों शीश झुकाते हैं।।

प्रभु दिनकर हैं करुणाकर हैं, ये ही जन-जन के त्राता हैं।
ये तीन लोक में पूज्य रहे, ये तीन काल के ज्ञाता हैं।।
प्रभु के चरणों की भक्ती से, सब रोग-शमन हो जाते हैं।
इनके चरणों में लीन रहें तो, कर्म सभी खो जाते हैं।।

गुणगान आपका करूँ विशद, मुझको प्रभु ऐसी शक्ती दो।
मैं रहूँ भक्ति में सराबोर, हमको प्रभु ऐसी भक्ती दो।।
मैं पतित रहा तुम पावन हो, मैं पावन होने को आया।
जिस पद को तुमने पाया है, मैं उस पद को पाने आया।।

हे दीनबन्धु ! हे कृपासिन्धु ! बस इतना सा उपकार करो।
मुझ भूले भटके राही को, सद्‌राह दिखा उद्धार करो।।
हे दयासिन्धु ! तुम दया करो, विनती मेरी स्वीकार करो।
मेरे जीवन की नौका को, भवसागर से प्रभु पार करो।।

तुम सिद्ध सनातन अविनाशी, जग जन के सिद्धी दाता हो।
तुम भूमण्डल के चिरज्योती, शुभ विधि के आप विधाता हो।।
हे प्रभू ! आपके द्वारे पर, ये भक्त खड़ा अरदास लिए।
मम् बिगड़ी नाथ बना दीजे, ये भक्त खड़ा है आश लिए।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री 1008 चन्द्रप्रभु पूजन

(स्थापना)

हे चन्द्रप्रभू ! हे चन्द्रानन ! महिमा महान् मंगलकारी।
तुम चिदानन्द आनन्द कंद, दुख द्वन्द फंद संकटहारी।।
हे वीतराग ! जिनराज परम ! हे परमेश्वर ! जग के त्राता।
हे मोक्ष महल के अधिनायक ! हे स्वर्ग मोक्ष सुख के दाता।।
मेरे मन के इस मंदिर में, हे नाथ ! कृपा कर आ जाओ।
आह्वानन करता हूँ प्रभुवर, मुझको सद् राह दिखा जाओ।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छन्द)

भव सिन्धु में भटका फिरा, अब पार पाने के लिए।
क्षीरोदधि का जल ले आया, मैं चढ़ाने के लिए।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत्-शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने चतुर्गति में भ्रमण कर, दुःख अति ही पाए हैं।
हम चउ गति से छूट जाएँ, गंध सुरभित लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत्-शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भटके जगत् में कर्म के वश, दुःख से अकुलाए हैं।
अब धाम अक्षय प्राप्ति हेतू, धवल अक्षत लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत्-शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भव भोग से उद्विग्न हो, कई दुःख हमने पाए हैं।
अब छूटने को भव दुखों से, पुष्प चरणों लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत्-शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

मन की इच्छाएँ मिटी न, व्यंजन अनेकों खाए हैं।
अब क्षुधा व्याधी नाश हेतू, सरस व्यंजन लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत्-शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यात्व अरु अज्ञान से, हम जगत में भरमाए हैं।
अब ज्ञान ज्योती उर जले, शुभ रत्न दीप जलाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत्-शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय महामोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अघ कर्म के आतंक से, भयभीत हो घबराए हैं।
वसु कर्म के आघात हेतू, अग्नि में धूप जलाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत्-शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकिक सभी फल खाए लेकिन, मोक्ष फल न पाए हैं।
अब मोक्षफल की भावना से, चरण श्री फल लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत्-शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध आदिक द्रव्य वसु ले, अर्घ्य शुभम् बनाए हैं।
शाश्वत् सुखों की प्राप्ति हेतू, थाल भरकर लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत्-शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

सोलह स्वप्न देखती माता, हर्षित होती भाव विभोर।
रत्न वृष्टि करते हैं सुरगण, सौ योजन में चारों ओर।।
चैत वदी पंचम तिथि प्यारी, गर्भ में प्रभुजी आये थे।
चन्द्रपुरी नगरी को सुन्दर, आकर देव सजाए थे।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा पंचम्यां गर्भकल्याणकप्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशि पावन, महासेन नृप के दरबार।
जन्म हुआ था चन्द्रप्रभू का, होने लगी थी जय-जयकार।।
बालक को सौधर्म इन्द्र ने, ऐरावत पर बैठाया।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया, मन मयूर तब हर्षाया।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष वदी ग्यारस को प्रभु ने, राज्य त्याग वैराग्य लिया।
पञ्च मुष्टि से केश लुञ्च कर, महाव्रतों को ग्रहण किया।।
आत्मध्यान में लीन हुए प्रभु, निज में तन्मय रहते थे।
उपसर्ग परीषह बाधाओं को, शांतभाव से सहते थे।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदी सप्तमी के दिन, कर्म घातिया नाश किए।
निज आतम में रमण किया अरु, केवल ज्ञान प्रकाश किए।।
अर्ध अधिक वसु योजन परिमित, समवशरण था मंगलकार।
इन्द्र नरेन्द्र सभी मिल करते, चन्द्रप्रभु की जय-जयकार।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा सप्तम्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ललितकूट सम्मेदशिखर पर, फाल्गुन शुक्ल सप्तमी वार।
वसुकर्मों का नाश किया अरु, नर जीवन का पाया सार।।
निर्वाण महोत्सव किया इन्द्र ने, देवों ने बोला जयकार।
चन्द्रप्रभु ने चन्द्र समुज्ज्वल सिद्धशिला पर किया विहार।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा – लेकर प्रासुक नीर, जल की धारा दे रहे।
होय नाश भव पीर, आये हम तव चरण में।। *शान्तये शांतिधारा*
सुरभित पुष्प महान, चन्द्र प्रभु के चरण में।
पाने पद निर्वाण, चढ़ा रहे हैं भाव से।। *दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्*

जयमाला

दोहा – चन्द्रप्रभु के चरण में, करता हूँ नत भाल।
गुणमणि माला हेतु मैं, कहता हूँ जयमाल।।

(राधेश्याम छंद)

ऋषि मुनी यति सुरगण मिलकर, जिनका ध्यान लगाते हैं।
वह सर्व सिद्धियों को पाकर, भवसागर से तिर जाते हैं।।
जो ध्यान प्रभु का करते हैं, दुख उनके पास न आते हैं।
जो चरण शरण में रहते हैं, उनके संकट कट जाते हैं।।
अघ कर्म अनादी से मिलकर, भव वन में भ्रमण कराते हैं।
जो चरण शरण प्रभु की पाते, वह उनके पास न आते हैं।।
अध्यात्म आत्मबल का गौरव, उनका स्वमेव वृद्धी पाता।
श्रद्धान ज्ञान आचरण सुतप, आराधन में मन रम जाता।।
तुमने सब बैर विरोधों में, समता का ही रस पान किया।
उस समता रस को पाने हेतू, मैंने प्रभु का गुणगान किया।।

तुम हो जग में सच्चे स्वामी, सबको समान कर लेते हो।
तुम हो त्रिकालदर्शी भगवन्, सबको निहाल कर देते हो।।
तुमने भी तीर्थ प्रवर्तन कर, तीर्थंकर पद को पाया है।
तुम हो महान् अतिशयकारी, तुममें विज्ञान समाया है।।
तुम गुण अनन्त के धारी हो, चिन्मूरत हो जग के स्वामी।
तुम शरणागत को शरणरूप, अन्तर ज्ञाता अन्तर्यामी।।
तुम दूर विकारी भावों से, न राग द्वेष से नाता है।
जो शरण आपकी आ जाए, मन में विकार न लाता है।।
सूरज की किरणों को पाकर ज्यों, फूल स्वयं खिल जाते हैं।
फूलों की खूशबू को पाने, मधुकर मधु पाने आते हैं।।
हे चन्द्रप्रभू ! तुम चंदन हो, जग को शीतल कर देते हो।
चन्दन तो रहा अचेतन जड़, तुम पर की जड़ता हर लेते हो।।
सुनते हैं चन्द्र के दर्शन से, रात्रि में कुमुदनी खिल जाती।
पर चन्द्र प्रभु के दर्शन से, चित् चेतन की निधि मिल जाती।।
तुम सर्व शांति के धारी हो, मेरी विनती स्वीकार करो।
जैसे तुम भव से पार हुए, मुझको भी भव से पार करो।।
जो शरण आपकी आता है, मन वांछित फल को पाता है।
ज्यों दानवीर के द्वारे से, कोइ खाली हाथ न आता है।।
जिसने भी आपका ध्यान किया, बहुमूल्य सम्पदा पाई है।
भगवान आपके भक्तों में, सुख साता आन समाई है।।
जो भाव सहित पूजा करते, पूजा उनको फल देती है।
पूजा की पुण्य निधि आकर, संकट सारे हर लेती है।।
जिस पथ को तुमने पाया है, वह पथ शिवपुर को जाता है।
उस पथ का जो अनुगामी है, वह परम मोक्ष पद पाता है।।
यह अनुपम और अलौकिक है, इसका कोई उपमान नहीं।
वह जीव अलौकिक शुद्ध रहे, जग में कोई और समान नहीं।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय-जय जिन चन्दा, पाप निकन्दा, आनन्द कन्दा सुखकारी।
जय करुणाधारी, जग हितकारी, मंगलकारी अवतारी।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - शिवमग के राही परम, शिव नगरी के नाथ।
शिवसुख को पाने विशद, चरण झुकाते माथ।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

अथ प्रथम वलयः

दोहा- पूजन कर करते यहाँ, अर्घ्यों का प्रारम्भ।
अनन्त चतुष्टय के सुगुण, करते हैं आरम्भ।।

(अथ प्रथम वलयोपरिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(पहले वलय के ऊपर पुष्प क्षेपण करें।)

(स्थापना)

हे चन्द्रप्रभू ! हे चन्द्रानन ! महिमा महान् मंगलकारी।
तुम चिदानन्द आनन्द कंद, दुख द्वन्द फंद संकटहारी।।
हे वीतराग ! जिनराज परम ! हे परमेश्वर ! जग के त्राता।
हे मोक्ष महल के अधिनायक ! हे स्वर्ग मोक्ष सुख के दाता।।
मेरे मन के इस मंदिर में, हे नाथ ! कृपा कर आ जाओ।
आह्वानन करता हूँ प्रभुवर, मुझको सद् राह दिखा जाओ।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त सर्वलोकोत्तम चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त जगतशरण चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अनंत चतुष्टय के अर्घ्य

तीन लोक के सुगुण, द्रव्य पर्यायें जानी।
ज्ञानावरणी कर्म नाश, हुए केवल ज्ञानी।।
ज्ञानानन्त के धारी, चन्द्र प्रभू कहलाए।
गुण अनन्त की प्राप्ति हेतु, हम शीश झुकाए।।1।।

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञानगुणप्राप्त सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन भुवन के द्रव्य सभी, जिनको दर्शायें।
कर्म दर्शनावरण नाश कर, जो हर्षायें।।
केवल दर्शन स्वयं आप, चन्द्र प्रभू पाए।
गुण अनन्त की प्राप्ति हेतु, हम शीश झुकाए।।2।।

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनगुणप्राप्त सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह कर्म को नाश सुख, शाश्वत उपजाया।
नश्वर सुख को त्याग विशद, सुख जिनवर पाया।।
सुख अनन्त के धारी, चन्द्र प्रभू कहलाए।
गुण अनन्त की प्राप्ति हेतु, हम शीश झुकाए।।3।।

ॐ ह्रीं अनन्तसुखगुणप्राप्त सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तराय है कर्म जीव का, बहु दुख दाता।
कर्म नाश से वीर्य अनन्त, प्रकट हो जाता।।
वीर्य अनन्त के धारी, चन्द्र प्रभू कहलाए।
गुण अनन्त की प्राप्ति हेतु, हम शीश झुकाए।।4।।

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्यगुणप्राप्त सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(कुसुमलता छन्द)

हे तीन लोक के ज्ञाता जिन !, हे तीन काल के सद्दृष्टा !
हे सौख्य अनन्त के धारी जिन !, हे वीर बली ! हे उपदेष्टा !
हे कर्मघातिया नाशक जिन !, हे अनन्त चतुष्टय के धारी !
हम शीश झुकाते चरणों में, हे प्रभु ! जन-जन के उपकारी।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ द्वितिय वलयः

दोहा- प्रातिहार्य पाए सु जिन, अनुपम अष्ट प्रकार।
अर्घ्य चढ़ाते भावसों, आठों अंग सम्हार।।

(अथ द्वितीय वलयोपरिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(दूसरे वलय के ऊपर पुष्प क्षेपण करें।)

(स्थापना)

हे चन्द्रप्रभू ! हे चन्द्रानन ! महिमा महान् मंगलकारी।
तुम चिदानन्द आनन्द कंद, दुख द्वन्द फंद संकटहारी।।
हे वीतराग ! जिनराज परम ! हे परमेश्वर ! जग के त्राता।
हे मोक्ष महल के अधिनायक ! हे स्वर्ग मोक्ष सुख के दाता।।
मेरे मन के इस मंदिर में, हे नाथ ! कृपा कर आ जाओ।
आह्वानन करता हूँ प्रभुवर, मुझको सद् राह दिखा जाओ।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त सर्वलोकोत्तम चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त जगतशरण चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्ट प्रातिहार्य के अर्घ्य

(रोला छन्द)

प्रातिहार्य है प्रथम कल्पतरु, शोक निवारी।
रत्नों से सुरभित फल पत्ते, पावन मनहारी।।
अतिशय कारी प्रातिहार्य, हरते सब क्रन्दन।
चन्द्रप्रभु के चरण कमल में, शत्-शत् वन्दन।।1।।

ॐ ह्रीं अशोक तरु सत्प्रातिहार्य सहित सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प वृष्टि देवों के द्वारा, हुई मनोहर।
गगन मध्य में झरता हो, जैसे शुभ निर्झर।।
अतिशय कारी प्रातिहार्य, हरते सब क्रन्दन।
चन्द्रप्रभु के चरण कमल में, शत्-शत् वन्दन।।2।।

ॐ ह्रीं सुर पुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य सहित सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्यध्वनि है श्री जिनेन्द्र की, ओम्कार मय।
सब भाषा मय परिणत होकर, करे मोह क्षय।।
अतिशय कारी प्रातिहार्य, हरते सब क्रन्दन।
चन्द्रप्रभु के चरण कमल में, शत्-शत् वन्दन।।3।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्य सहित सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्तिभाव से सुरगण चौंसठ, चँवर ढुराते।
प्रभु चरणों में तीन योग से, शीश झुकाते।।
अतिशय कारी प्रातिहार्य, हरते सब क्रन्दन।
चन्द्रप्रभु के चरण कमल में, शत्-शत् वन्दन।।4।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टि चँवर सत्प्रातिहार्य सहित सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पीठ के ऊपर शोभित होता, है कमलासन।
नाना रत्नों से मण्डित, ऊपर सिंहासन।।
अतिशय कारी प्रातिहार्य, हरते सब क्रन्दन।
चन्द्रप्रभु के चरण कमल में, शत्-शत् वन्दन।।5।।

ॐ ह्रीं सिंहासन सत्प्रातिहार्य सहित सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु की आभा से शोभित, होता भूमण्डल।
सप्त भवों का दिग्दर्शक, पावन भामण्डल।।
अतिशय कारी प्रातिहार्य, हरते सब क्रन्दन।
चन्द्रप्रभु के चरण कमल में, शत्-शत् वन्दन।।6।।

ॐ ह्रीं भामंडल सत्प्रातिहार्य सहित सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव दुन्दुभि सर्व लोक में, करती है मंगल।
प्रभु के दर्शन से हो जाते, सब दूर अमंगल।।
अतिशय कारी प्रातिहार्य, हरते सब क्रन्दन।
चन्द्रप्रभु के चरण कमल में, शत्-शत् वन्दन।।7।।

ॐ ह्रीं देव दुन्दुभि सत्प्रातिहार्य सहित सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक की छत्रत्रय, प्रभुता दर्शाते।
उभय लोक की श्री जिनवर, भगवत्ता पाते।।
अतिशय कारी प्रातिहार्य, हरते सब क्रन्दन।
चन्द्रप्रभु के चरण कमल में, शत्-शत् वन्दन।।8।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रय सत्प्रातिहार्य सहित सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वीर छन्द)

तरु अशोक सुर पुष्पवृष्टि अरु, दिव्य देशना मंगलमय।
चौंसठ चँवर शुभम् सिंहासन, भामण्डल है आभामय।।
गगन मध्य सुर दुन्दुभि बाजे, छत्रत्रय शोभित अविराम।
अष्ट प्रातिहार्यों के धारी, चन्द्रप्रभु के चरण प्रणाम।।9।।

ॐ ह्रीं अष्ट महाप्रातिहार्य सहित सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ तृतिय वलय

दोहा- सोलह कारण भावना, तीर्थंकर पद देय।
तृतिय वलय में भाव से, पुष्पाञ्जलि करेय।।

(अथ तृतीय वलयोपरिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(अब तीसरे वलय के ऊपर पुष्प क्षेपण करें।)

(स्थापना)

हे चन्द्रप्रभू ! हे चन्द्रानन ! महिमा महान् मंगलकारी।
तुम चिदानन्द आनन्द कंद, दुख द्वन्द फंद संकटहारी।।
हे वीतराग ! जिनराज परम ! हे परमेश्वर ! जग के त्राता।
हे मोक्ष महल के अधिनायक ! हे स्वर्ग मोक्ष सुख के दाता।।
मेरे मन के इस मंदिर में, हे नाथ ! कृपा कर आ जाओ।
आह्वानन करता हूँ प्रभुवर, मुझको सद् राह दिखा जाओ।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त सर्वलोकोत्तम चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त जगतशरण चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सोलह कारण भावना के अर्घ्य

(ताटंक छन्द)

मिथ्या भाव रहेगा जब तक, दृष्टी सम्यक् नहीं बने।
दरश विशुद्धी हो जाये तो, कर्म घातिया शीघ्र हने।।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव-शास्त्र-गुरु के प्रति भक्ती, कर्म पाप का हरण करे।
दर्शन ज्ञान चरित उपचारिक, विनय भाव जो हृदय धरे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित विनयसम्पन्नभावनायै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव कोटी से शील व्रतों का, निरतिचार पालन करता।
सुर नर किन्नर से पूजित हो, कोष पुण्य से वह भरता।।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित अनतिचारशीलव्रतभावनायै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर की ॐकार मय, दिव्य देशना है पावन।
नित्य निरन्तर ज्ञान योग से, भाता है जो मनभावन।।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावनायै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म और उसके फल में भी, हर्षभाव जिसको आवे।
सुत दारा धन का त्यागी हो, वह सुसंवेग भाव पावे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित संवेगभावनायै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वशक्ती को नहीं छिपाकर, त्याग भाव मन में लावे।
दान करे जो सत् पात्रों में, त्याग शक्तिशः कहलावे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित शक्तितस्त्यागभावनायै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाह्याभ्यन्तर सुतप करे जो, निज शक्ती को प्रगटावे।
निज आतम की शुद्धी हेतू, सुतप शक्तिशः वह पावे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित शक्तितस्तपभावनायै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साता और असाता पाकर, मन में समता उपजावे।
मरण समाधी सहित करे तो, साधु समाधि कहलावे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित साधुसमाधिभावनायै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधक तन से करे साधना, उसमें कोइ बाधा आवे।
दूर करे अनुराग भाव से, वैय्यावृत्ती कहलावे।।

तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित वैय्यावृत्तिभावनायै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म घातिया अरि के नाशक, श्री जिन अर्हत् पद पावें।
दोषरहित उनकी भक्ती शुभ, अर्हत् भक्ती कहलावे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।10।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित अर्हद्भक्तिभावनायै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चाचार का पालन करते, दीक्षा देते शिवदायी।
उनकी भक्ती करना भाई, आचार्य भक्ती कहलाई।।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।11।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित आचार्यभक्तिभावनायै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुश्रुतधारी गुरु अनगारी, मुनि जिनसे शिक्षा पावें।
उपाध्याय की भक्ती करना, बहुश्रुत भक्ती कहलावे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।12।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशांग वाणी जिनवर की, द्रव्य तत्त्व को दर्शावे।
माँ जिनवाणी की भक्ती ही, प्रवचन भक्ती कहलावे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।13।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित प्रवचनभक्तिभावनायै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यत्नाचार सहित चर्या से, षट् आवश्यक पाल रहे।
आवश्यक अपरिहार्य भावना, मुनिवर स्वयं सम्हाल रहे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।14।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित आवश्यकापरिहार्यभावनायै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव वन्दना भक्ति महोत्सव, रथ यात्रा पूजा तप दान।
मोह-तिमिर का नाश प्रकाशक, ये ही धर्म प्रभावना मान।।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।15।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित मार्गप्रभावनाभावनायै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आर्य पुरुष त्यागी मुनिवर से, वात्सल्य का भाव रहे।
गाय और बछड़े सम प्रीति, प्रवचन वात्सल्य देव कहे।।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।16।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित प्रवचनवात्सल्यभावनायै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलह कारण भाय भावना, तीर्थंकर पद पाते हैं।
अर्घ्य चढ़ाते भक्ति भाव से, उनके गुण को गाते हैं।।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ्य समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे।।17।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित दर्शनविशुद्धि आदि सोलहकारणभावनायै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ चतुर्थ वलयः

सोरठा- चन्द्रप्रभु चरणार, बत्तिस देव पूजा करें।
चतुःवलय मनहार, मिलकर पुष्पाञ्जलि करें।।

(अथ चतुर्थ वलयोपरिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)
(अब चौथे वलय के ऊपर पुष्प क्षेपण करें।)

(स्थापना)

हे चन्द्रप्रभू ! हे चन्द्रानन ! महिमा महान् मंगलकारी।
तुम चिदानन्द आनन्द कंद, दुख द्वन्द फंद संकटहारी।।
हे वीतराग ! जिनराज परम ! हे परमेश्वर ! जग के त्राता।
हे मोक्ष महल के अधिनायक ! हे स्वर्ग मोक्ष सुख के दाता।।
मेरे मन के इस मंदिर में, हे नाथ ! कृपा कर आ जाओ।
आह्वानन करता हूँ प्रभुवर, मुझको सद् राह दिखा जाओ।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त सर्वलोकोत्तम चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त जगतशरण चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

भवन वासियों के भेदों में, पहला होता असुर कुमार।
पंक भाग पहली पृथ्वी से, आता है जो सहपरिवार।।
चन्द्रप्रभू के चरण कमल की, पूजा करते भाव-विभोर।
नृत्य-गान भक्ती के द्वारा, मंगल होता चारों ओर।।1।।

ॐ ह्रीं असुरकुमार इन्द्रपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय इन्द्र भवन वासी का, कहलाता है नागकुमार।
रत्नप्रभा में खर पृथ्वी के, भवन से आता सहपरिवार।।

चन्द्रप्रभू के चरण कमल की, पूजा करते भाव-विभोर।
नृत्य-गान भक्ती के द्वारा, मंगल होता चारों ओर।।2।।

ॐ ह्रीं नागेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय इन्द्र भवन वासी का, विद्युतेन्द्र कहलाता है।
रत्नप्रभा में खर पृथ्वी से, परिवार सहित ही आता है।।
चन्द्रप्रभू के चरण कमल की, पूजा करते भाव-विभोर।
नृत्य-गान भक्ती के द्वारा, मंगल होता चारों ओर।।3।।

ॐ ह्रीं विद्युतेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौथा इन्द्र भवन वासी का, सुपर्णेन्द्र कहलाता है।
रत्नप्रभा में खर पृथ्वी से, परिवार सहित ही आता है।।
चन्द्रप्रभू के चरण कमल की, पूजा करते भाव-विभोर।
नृत्य-गान भक्ती के द्वारा, मंगल होता चारों ओर।।4।।

ॐ ह्रीं सुपर्णेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चम इन्द्र भवन वासी का, अग्नि इन्द्र कहलाता है।
रत्नप्रभा में खर पृथ्वी से, परिवार सहित ही आता है।।
चन्द्रप्रभू के चरण कमल की, पूजा करते भाव-विभोर।
नृत्य-गान भक्ती के द्वारा, मंगल होता चारों ओर।।5।।

ॐ ह्रीं अग्निइन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठम् इन्द्र भवन वासी का, मारुतेन्द्र कहलाता है।
रत्नप्रभा में खर पृथ्वी से, परिवार सहित ही आता है।।
चन्द्रप्रभू के चरण कमल की, पूजा करते भाव-विभोर।
नृत्य-गान भक्ती के द्वारा, मंगल होता चारों ओर।।6।।

ॐ ह्रीं मारुतेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तम इन्द्र भवन वासी का, स्तनितेन्द्र कहलाता है।
रत्नप्रभा में खर पृथ्वी से, परिवार सहित ही आता है।।
चन्द्रप्रभू के चरण कमल की, पूजा करते भाव-विभोर।
नृत्य-गान भक्ती के द्वारा, मंगल होता चारों ओर।।7।।

ॐ ह्रीं स्तनितेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम इन्द्र भवन वासी का, सागरेन्द्र कहलाता है।
रत्नप्रभा में खर पृथ्वी से, परिवार सहित ही आता है।।
चन्द्रप्रभू के चरण कमल की, पूजा करते भाव-विभोर।
नृत्य-गान भक्ती के द्वारा, मंगल होता चारों ओर।।8।।

ॐ ह्रीं उदधि कुमारेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौवा इन्द्र भवन वासी का, दीप इन्द्र कहलाता है।
रत्नप्रभा में खर पृथ्वी से, परिवार सहित ही आता है।।
चन्द्रप्रभू के चरण कमल की, पूजा करते भाव-विभोर।
नृत्य-गान भक्ती के द्वारा, मंगल होता चारों ओर।।9।।

ॐ ह्रीं दीपेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दसवाँ इन्द्र भवनवासी का, दिक्सुरेन्द्र कहलाता है।
रत्नप्रभा में खर पृथ्वी से, परिवार सहित ही आता है।।
चन्द्रप्रभू के चरण कमल की, पूजा करते भाव-विभोर।
नृत्य-गान भक्ती के द्वारा, मंगल होता चारों ओर।।10।।

ॐ ह्रीं दिक्सुरेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम इन्द्र व्यन्तर देवों का, किन्नरेन्द्र कहलाता है।
रत्नप्रभा में खर पृथ्वी से, परिवार सहित ही आता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।11।।

ॐ ह्रीं किन्नरेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय व्यन्तर देव का स्वामी, किंपुरुषेन्द्र कहलाता है।
रत्नप्रभा में खर पृथ्वी से, परिवार सहित ही आता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।12।।

ॐ ह्रीं किंपुरुषेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय व्यन्तर देव का स्वामी, महोरगेन्द्र कहलाता है।
रत्नप्रभा में खर पृथ्वी से, परिवार सहित ही आता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।13।।

ॐ ह्रीं महोरगेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौथा व्यन्तर देव का स्वामी, गन्धर्व इन्द्र कहलाता है।
रत्नप्रभा में खर पृथ्वी से, परिवार सहित ही आता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।14।।

ॐ ह्रीं गन्धर्व इन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चम व्यन्तर देव का स्वामी, यक्ष इन्द्र कहलाता है।
रत्नप्रभा में खर पृथ्वी से, परिवार सहित ही आता है।।

चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।15।।

ॐ ह्रीं यक्षेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठम व्यन्तर देव का स्वामी, राक्षसेन्द्र कहलाता है।
रत्नप्रभा में पंक भाग से, परिवार सहित ही आता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।16।।

ॐ ह्रीं राक्षसेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तम व्यन्तर देव का स्वामी, भूत इन्द्र कहलाता है।
रत्नप्रभा में खर पृथ्वी से, परिवार सहित ही आता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।17।।

ॐ ह्रीं भूतेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम व्यन्तर देव का स्वामी, पिशाचेन्द्र कहलाता है।
रत्नप्रभा में खर पृथ्वी से, परिवार सहित ही आता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।18।।

ॐ ह्रीं पिशाचेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ सौ अस्सी योजन नभ में, ज्योतिष्देवों का स्वामी।
निज परिवार सहित आता है, चन्द्र देव जिन पथगामी।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।19।।

ॐ ह्रीं चन्द्रेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योतिष देवों का स्वामी रवि, प्रति इन्द्र कहलाता है।
निज परिवार सहित भक्ती से, धराधाम पर आता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।20।।

ॐ ह्रीं रविप्रतीन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सौधर्म इन्द्र स्वर्गों से चलकर, ऐरावत पर आता है।
निज परिवार सहित भक्ती से, श्रीफल चरण चढ़ाता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।21।।

ॐ ह्रीं सौधर्मेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गजारूढ़ ईशान इन्द्र शुभ, पूंगी फल ले आता है।
निज परिवार सहित भक्ती से, प्रभु के चरण चढ़ाता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।22।।

ॐ ह्रीं ईशानेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंहारूढ़ सुकुण्डल मण्डित, इन्द्र जो आए सनत कुमार।
आम्रफलों के गुच्छे लेकर, पूजा करता सह परिवार।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।23।।

ॐ ह्रीं सानतेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्वारूढ़ सुभूषण मण्डित, केले लेकर आता है।
माहेन्द्र इन्द्र परिवार सहित, जिनवर के चरण चढ़ाता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।24।।

ॐ ह्रीं माहेन्द्रेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मइन्द्र भी हंस पे चढ़कर, पुष्प केतकी लाता है।
निज परिवार सहित भक्ती से, प्रभु के चरण चढ़ाता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।25।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लान्तवेन्द्र भक्ती से मण्डित, दिव्य फलों को लाता है।
निज परिवार सहित भक्ती से,प्रभु के चरण चढ़ाता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।26।।

ॐ ह्रीं लान्तवेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्र इन्द्र चकवा पर चढ़कर, पुष्प सेवन्ती लाता है।
निज परिवार सहित भक्ती से, प्रभु के चरण चढ़ाता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।27।।

ॐ ह्रीं शुक्रेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोयल वाहन के विमान पर, नीलकमल ले आता है।
शतारेन्द्र परिवार सहित शुभ, जिनवर चरण चढ़ाता है।।

चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।28।।

ॐ ह्रीं शतारेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनत इन्द्र गरुड़ पर चढ़कर, पनस फलों को लाता है।
निज परिवार सहित भक्ती से, प्रभु के चरण चढ़ाता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।29।।

ॐ ह्रीं आनतेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्म विमानारूढ़ सुसज्जित, तुम्बरू फल जो लाता है।
प्राणतेन्द्र परिवार सहित, प्रभु पूजा करने आता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।30।।

ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुमुद विमान पर आरणेन्द्र भी, गन्ने लेकर आता है।
निज परिवार सहित भक्ति से प्रभु, के चरण चढ़ाता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।31।।

ॐ ह्रीं आरणेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अच्युतेन्द्र चढ़कर मयूर पर, धवल चँवर ले आता है।
निज परिवार सहित भक्ती से, चौंसठ चँवर ढुराता है।।
चरण कमल में अर्चा करके, मन ही मन हर्षाता है।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर जो, सादर शीश झुकाता है।।32।।

ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

श्री चन्द्रप्रभु की अर्चना को, साज सुन्दर सज रहे।
शुभ सप्तस्वर में सप्त मंगल, वाद्य सुन्दर बज रहे।।
सुरलोक से सुर इन्द्र सारे, आ गये जिनवर चरण।
जो भक्ती में तल्लीन होकर, कर रहे शत्-शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री द्वात्रिंशत इन्द्र परिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचम वलयः

सोरठा- चौंतिसअतिशय धर्म, समवशरण की भूमियाँ।
करूँ समर्पित अर्घ्य, पञ्चम वलय में भाव से।।

(अथ पंचम वलयोपरिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्) (अब पाँचवें वलय के ऊपर पुष्प क्षेपण करें।)

(स्थापना)

हे चन्द्रप्रभू ! हे चन्द्रानन ! महिमा महान् मंगलकारी।
तुम चिदानन्द आनन्द कंद, दुख द्वन्द फंद संकटहारी।।
हे वीतराग ! जिनराज परम ! हे परमेश्वर ! जग के त्राता।
हे मोक्ष महल के अधिनायक ! हे स्वर्ग मोक्ष सुख के दाता।।
मेरे मन के इस मंदिर में, हे नाथ ! कृपा कर आ जाओ।
आह्वानन करता हूँ प्रभुवर, मुझको सद् राह दिखा जाओ।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त सर्वलोकोत्तम चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त जगतशरण चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जन्म के अतिशय

(ताटंक छन्द)

प्रभू का शरीर अतिशय सुन्दर, होता अनुपम विस्मयकारी।
तीर्थंकर पद का बन्ध किया, शुभ पुण्य की है यह बलिहारी।।
श्री चन्द्र प्रभू के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं सुन्दरतनसहजातिशयधारक सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर जन्म के अतिशय में, इक यह भी अतिशय पाते हैं।
प्रभुवर के तन की खुशबू से, लोकत्रय सुरभित हो जाते हैं।।
श्री चन्द्र प्रभू के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं सुगंधित तनसहजातिशयधारक सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ पुण्य उदय से पूरव के, कई ऐसे अतिशय हो जाते।
न स्वेद रहे तन में किंचित्, कई इन्द्र चरण आश्रय पाते।।
श्री चन्द्र प्रभू के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं स्वेदरहित सहजातिशयधारक सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दस अतिशय में यह भी अतिशय, मल-मूत्र रहित तन पाते हैं।
आहार ग्रहण करते फिर भी, जिनवर निहार नहिं जाते हैं।।
श्री चन्द्र प्रभू के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं निहार रहित सहजातिशयधारक सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हित-मित-प्रिय जिनवर की वाणी, मन को संतोष दिलाती है।
करती प्रसन्न सारे जग को, जन-जन का मन हर्षाती है।।
श्री चन्द्र प्रभू के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं प्रियहितवचन सहजातिशयधारक सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नर सुर के इन्द्र सभी जिनकी, शक्ती के आगे हारे हैं।
अद्भुत अतुल्य बल के स्वामी, जग में जिनदेव हमारे हैं।।
श्री चन्द्र प्रभू के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अतुल्यबल सहजातिशयधारक सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रग-रग में जिनके करुणा अरु, वात्सल्य झलकता रहता है।
है श्वेत रुधिर जिनका पावन, जो सारे तन में बहता है।।
श्री चन्द्र प्रभू के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्वेत रुधिर सहजातिशयधारक सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ लक्षण एक हजार आठ, श्री जिन के तन में होते हैं।
ये मंगलमय सर्वोत्तम हैं, भव्यों की जड़ता खोते हैं।।
श्री चन्द्र प्रभू के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं सहस्राष्ट शुभलक्षण सहजातिशयधारक सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकार मनोहर समचतुस्र, सुन्दर सुडौल तन पाते हैं।
परमाणू जितने जग में शुभ, मानो सब मिलकर आते हैं।।
श्री चन्द्र प्रभू के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं समचतुष्कसंस्थान सहजातिशयधारक सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ वज्र वृषभनाराच संहनन, अतिशय शक्तीशाली है।
जिनवर हैं जग में सर्वश्रेष्ठ, महिमा कुछ अजब निराली है।।
श्री चन्द्र प्रभू के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं।।10।।

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराचसंहनन सहजातिशयधारक सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान के 10 अतिशय

शुभ केवल ज्ञान प्रकट होते, अतिशय सुभिक्ष हो जाता है।
सौ योजन सर्वदिशाओं में, अपनी सुवास बिखराता है।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, सब ही प्रमुदित हो जाते हैं।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।11।।

ॐ ह्रीं गव्यूतिशतचतुष्टय सुभिक्षत्व सहजातिशयधारक सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब केवलज्ञान उदित होता, तब गगन गमन हो जाता है।
सुर पाँच हजार धनुष ऊपर, शुभ कमल रचाने आता है।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, सब ही प्रमुदित हो जाते हैं।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।12।।

ॐ ह्रीं आकाशगमन सहजातिशयधारक सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु का अतिशय महिमाशाली, इक मुख के चार दिखाते हैं।
बस उत्तर पूर्व सुमुख प्रभु का, हम समवशरण में पाते हैं।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, सब ही प्रमुदित हो जाते हैं।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।13।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुख सहजातिशयधारक सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो बैर विरोध रहा जग में, प्रभु दर्शन से नश जाता है।
आपस में प्रीति झलकती है, करुणा का स्रोत उभरता है।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, सब ही प्रमुदित हो जाते हैं।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।14।।

ॐ ह्रीं अदयाऽभाव सहजातिशयधारक सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब कर्म घातिया नश जाते, कैवल्य प्रगट हो जाता है।
तब चेतन और अचेतन कृत, उपसर्ग नहीं हो पाता है।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, सब ही प्रमुदित हो जाते हैं।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।15।।

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव सहजातिशयधारक सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अतिशय रहा परम पावन, प्रभु कवलाहार नहीं करते।
नो कर्म वर्गणाओं द्वारा, प्रभु चेतन में ही आचरते।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, सब ही प्रमुदित हो जाते हैं।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।16।।

ॐ ह्रीं कवलाहार रहित सहजातिशयधारक सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मंत्र तंत्र में नीति निपुण, सब विद्याओं के ईश्वर हैं।
न जग में रहा कोई बाकी, प्रभु पृथ्वी पति महीश्वर हैं।।

सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, सब ही प्रमुदित हो जाते हैं।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।17।।

ॐ ह्रीं विद्येश्वरत्व सहजातिशयधारक सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह केवलज्ञान की महिमा है, प्रभु हो जाते अन्तर्यामी।
नख केश नहीं बढ़ते किंचित्, तन होता है जग में नामी।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, सब ही प्रमुदित हो जाते हैं।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।18।।

ॐ ह्रीं समाननखकेशत्व सहजातिशयधारक सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु की है सौम्य शांत दृष्टी, नासा पर सदा लगी रहती।
प्रभु वीतरागता धारी हैं, अन्तर की बात मुखर कहती।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, सब ही प्रमुदित हो जाते हैं।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।19।।

ॐ ह्रीं अक्ष स्पंदरहित सहजातिशयधारक सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु का तन परमौदारिक है, पुद्गल निमित्त बन पाता है।
छाया से रहित रहा फिर भी, जो सबके मन को भाता है।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, सब ही प्रमुदित हो जाते हैं।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।20।।

ॐ ह्रीं छायारहित सहजातिशयधारक सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह देवकृत अतिशय

शुभ दिव्य देशना जिनवर की, सर्वार्ध मागधी भाषा में।
यह देवों का अतिशय मानो, समझो मागध परिभाषा में।।

सुर लोक से आकर देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी।।21।।

ॐ ह्रीं सर्वार्धमागधीभाषादेवोपुनीतातिशयधारक सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस ओर प्रभू के चरण पड़े, जन-जन में मैत्री भाव रहे।
न बैर विरोध रहे क्षणभर, जग में खुशियों की धार बहे।।
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी।।22।।

ॐ ह्रीं सर्वजीवमैत्रीभावदेवोपुनीतातिशयधारक सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर का गमन जहाँ होता, तो सर्व दिशाएँ हों निर्मल।
तब देव सभी अतिशय करते, धो देते हैं सारा कलमल।।
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी।।23।।

ॐ ह्रीं सर्वदिग्निर्मलत्व देवोपुनीतातिशयधारक सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर का समवशरण लगते, आकाश श्रेष्ठ निर्मल होवे।
यह चमत्कार है देवों का, सारे जो दोषों को खोवे।।
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी।।24।।

ॐ ह्रीं शरदकालवन्निर्मलगगनदेवोपुनीतातिशयधारक सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ समवशरण प्रभु का आते, खिलते हैं एक साथ फल-फूल।
भर जाते हैं खेत धान्य से, तरुवर भी झुक जाते अनुकूल।।
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी।।25।।

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादितरुपरिणाम देवोपुनीतातिशयधारक सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन प्रभु के चरण जहाँ पड़ जाते, भू कंचनवत हो जाती हैं।
वह ज्यों-ज्यों आगे बढ़ते जाते, दर्पणवत् होती जाती है।।
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी।।26।।

ॐ ह्रीं आदर्शतलप्रतिमारत्नमयीदेवोपुनीतातिशयधारक सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गगन मध्य ज्यों पग रखते, सुर स्वर्ण कमल रचते पावन।
वह सात-सात आगे पीछे, इक मध्य पञ्चदश मनभावन।।
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी।।27।।

ॐ ह्रीं चरणकमलतलरचितस्वर्णकमलदेवोपुनीतातिशयधारक सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर इन्द्र नरेन्द्र सभी मिलकर, भक्ती से जय-जयकार करें।
आओ-आओ सब भक्ति करें, चारों ही ओर पुकार करें।।
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी।।28।।

ॐ ह्रीं श्री एतैतैतिचतुर्णिकायामर परापराह्वान देवोपुनीतातिशयधारक सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चलती है मन्द सुगन्ध पवन, सब व्याधी विषम विनाश करे।
जन-जन को अति सुरभित करती, मन में अतिशय उल्लास भरे।।
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी।।29।।

ॐ ह्रीं सुगंधितविहरण मनुगतवायुत्व देवोपुनीतातिशयधारक सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर वृष्टि करें गंधोदक की, मन में अति मंगल मोद भरें।
ये चमत्कार शुभ भक्ती का, वह भक्ती मेघकुमार करें।।
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी।।30।।

ॐ ह्रीं मेघकुमारकृतगंधोदकवृष्टिदेवोपुनीतातिशयधारक सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पवन कुमार देव मिलकर शुभ, अतिशय खूब दिखाते हैं।
धूली कंटक से रहित भूमि पर, वह प्रभु का गमन कराते हैं।।
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी।।31।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमितधूलिकंटकादि देवोपुनीतातिशयधारक सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमानन्द मिले जन-जन को, मन आनन्दित हो जाते हैं।
रोम-रोम पुलकित हो जाए, जब प्रभु का दर्शन पाते हैं।।
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी।।32।।

ॐ ह्रीं सर्वजनपरमानंदत्वदेवोपुनीतातिशयधारक सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म चक्र को सिर पर रखकर, चलते यक्ष आगे-आगे।
यह है प्रताप अतिशयकारी, शुभ बाधा स्वयं दूर भागे।।
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी।।33।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्रचतुष्टयदेवोपुनीतातिशयधारक सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कलश ताल दर्पण प्रतीक शुभ, छत्र चँवर ध्वज अरु भृंगार।
मंगल द्रव्य आठ देवों के, होते हैं जग में सुखकार।।

सुर लोक से आकर देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी।।34।।

ॐ ह्रीं अष्टमंगलद्रव्यदेवोपुनीतातिशयधारक सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश धर्म के अर्घ्य *(गीतिका छन्द)*

क्रोध की अग्नी हमेशा, मम् हृदय जलती रही।
भूल से मम् आत्मा को, नित्य ही छलती रही।।
अब क्षमा उत्तम धर्म पाएँ, प्राप्त हो सद् आचरण।
प्रभु भव जलधि से पार कर दो, आप हो तारण तरण।।35।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्मप्राप्त सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान को निज मानकर, हम गर्व से फूले रहे।
हम अहं के ही वहं में निज, लक्ष्य को भूले रहे।।
अब धर्म मार्दव प्राप्ति हेतू, करें हम सद् आचरण।
प्रभु भव जलधि से पार कर दो, आप हो तारण तरण।।36।।

ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्मप्राप्त सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छल कपट हमको जहाँ में, कई भवों से छल रहा।
चक्र माया का अनादी, काल से यह चल रहा।।
अब धर्म आर्जव प्राप्ति हेतू, करें हम सद् आचरण।
प्रभु भव जलधि से पार कर दो, आप हो तारण तरण।।37।।

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्मप्राप्त सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ के कारण हमेशा, क्षोभ अन्दर में रहा।
भिन्न हैं जो द्रव्य सारे, उनको अपना ही कहा।।

अब शौच उत्तम धर्म पाएँ, प्राप्त हो सद् आचरण।
प्रभु भव जलधि से पार कर दो, आप हो तारण तरण ।।38 ।।

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्मप्राप्त सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

झूठ के कई घूंट हमने, भूल से अब तक पिए।
पाप की सरिता में बहकर, लोक में अब तक जिए।।
अब सत्य उत्तम धर्म पाएँ, प्राप्त हो सद् आचरण।
प्रभु भव जलधि से पार कर दो, आप हो तारण तरण ।।39 ।।

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्मप्राप्त सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रियों के फेर में, मन भी मचलता ही रहा।
त्रस जीव स्थावर सभी को, मैं कुचलता ही रहा।।
अब धर्म संयम प्राप्ति हेतू, करें हम सद् आचरण।
प्रभु भव जलधि से पार कर दो, आप हो तारण तरण ।।40 ।।

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्मप्राप्त सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूल से अज्ञानता वश, कुतप को तपते रहे।
छोड़कर द्वादश तपों को, कुमति को जपते रहे।।
अब सुतप उत्तम धर्म पाएँ, प्राप्त हो सद् आचरण।
प्रभु भव जलधि से पार कर दो, आप हो तारण तरण ।।41 ।।

ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्मप्राप्त सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग के ही नाग ने, हमको सदा घायल किया।
दुष्कृत्य करने के लिए, उसने हमें कायल किया।।
अब त्याग उत्तम धर्म पाएँ, प्राप्त हो सद् आचरण।
प्रभु भव जलधि से पार कर दो, आप हो तारण तरण ।।42 ।।

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्मप्राप्त सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रह परिग्रह का लगा, जो कर्म का ही मूल है।
उसमें सदा भटके रहे, यह आत्मा की भूल है।।
अब आकिंचन धर्म पाएँ, प्राप्त हो सद् आचरण।
प्रभु भव जलधि से पार कर दो, आप हो तारण तरण ।।43 ।।

ॐ ह्रीं उत्तम आकिंचन्य धर्मप्राप्त सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिया है तीनों की घातक, मन वचन अरु देह की।
लोक में पेड़ी कही है, राग अरु स्नेह की।।
अब ब्रह्मचर्य शुभ धर्म पाएँ, प्राप्त हो सद् आचरण।
प्रभु भव जलधि से पार कर दो, आप हो तारण तरण ।।44 ।।

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मप्राप्त सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानस्तम्भ सम्बन्धी अर्घ्य

जब केवलज्ञान हुआ प्रभु को, तब समवशरण शुभ रचा गया।
सर्वार्थ नगर में हुआ चमन, इतिहास वहाँ पर बना नया।।
हम पूर्व दिशा में मानस्तम्भ के, प्रभु पद शीश झुकाते हैं।
हो मोह महामद नाश प्रभू, बस यही भावना भाते हैं।।45 ।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित पूर्वदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक चतुर्जिन प्रतिमाभ्यः सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभ की चन्द्र किरण से, महका धरती का कण-कण।
सुर नर किन्नर सब हर्षित थे, हर्षित थे सारे साधुगण।।
हम दक्षिण दिश में मानस्तम्भ के, प्रभु पद शीश झुकाते हैं।
हो मोह महामद नाश प्रभू, बस यही भावना भाते हैं।।46 ।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित दक्षिणदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक चतुर्जिन प्रतिमाभ्यः सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महासेन के नन्दन का, करता सारा जग अभिनन्दन।
उनके चरणों की रज पावन, बन गई विशद शीतल चंदन।।
हम पश्चिम दिश में मानस्तम्भ के, प्रभु पद शीश झुकाते हैं।
हो मोह महामद नाश प्रभू, बस यही भावना भाते हैं।।47।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित पश्चिमदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक चतुर्जिन प्रतिमाभ्यः सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ समवशरण का मानस्तम्भ, मानी का मान गलाता है।
जो मिथ्यातम का नाशक है, सबको सम्यक्त्व दिलाता है।।
हम उत्तर दिश में मानस्तम्भ के, प्रभु पद शीश झुकाते हैं।
हो मोह महामद नाश प्रभू, बस यही भावना भाते हैं।।48।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित उत्तरदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक चतुर्जिन प्रतिमाभ्यः सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समोशरण के अर्घ्य

प्रभु के दर्शन से रोग शोक, दारिद्र कलह कट जाते हैं।
प्रासाद चैत्य भूमी में जाकर, भक्त विशद सुख पाते हैं।।
जो परम पूज्य परमेश्वर हैं, त्रिभुवन स्वामी कहलाते हैं।
हम अर्घ्य चढ़ाकर चरणों में, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।49।।

ॐ ह्रीं श्री समवशरणस्थित चैत्यप्रसादभूमिसम्बन्धी जिनमंदिर जिन प्रतिमाभ्यः सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है भूमि खातिका मनमोहक, द्वितिय भूमि कहलाती है।
जहाँ फूल रहे हैं पुष्प पुञ्ज, लखकर जनता हरषाती है।।
जो परम पूज्य परमेश्वर हैं, त्रिभुवन स्वामी कहलाते हैं।
हम अर्घ्य चढ़ाकर चरणों में, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।50।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित खातिकाभूमिसम्बन्धी जिनमंदिर जिन प्रतिमाभ्यः सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है लता भूमि तृतिय पावन, शुभ पुष्प लताओं से सुरभित।
प्रभु का दर्शन कर लेने से, हो जाता है तन-मन हर्षित।।
जो परम पूज्य परमेश्वर हैं, त्रिभुवन स्वामी कहलाते हैं।
हम अर्घ्य चढ़ाकर चरणों में, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।51।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित लतावनभूमिसम्बन्धी जिनमंदिर जिन प्रतिमाभ्यः सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वन उपवन भूमी अनुपम है, हैं वृक्ष कई अतिशयकारी।
जिनबिम्ब जिनालय से मण्डित, शोभा है अति विस्मयकारी।।
जो परम पूज्य परमेश्वर हैं, त्रिभुवन स्वामी कहलाते हैं।
हम अर्घ्य चढ़ाकर चरणों में, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।52।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित उपवनभूमिसम्बन्धी जिनमंदिर जिन प्रतिमाभ्यः सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्वज भूमी सर्व दिशाओं में, दश चिह्नों से शोभा पाती।
दश विधि के आठ एक सौ ध्वज, लघु महा प्रति दिश लहराती।।
जो परम पूज्य परमेश्वर हैं, त्रिभुवन स्वामी कहलाते हैं।
हम अर्घ्य चढ़ाकर चरणों में, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।53।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित ध्वजभूमिसम्बन्धी जिनमंदिर जिन प्रतिमाभ्यः सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है कल्पवृक्ष भूमी छठवी, जो सुर वृक्षों से मण्डित है।
पूर्वादिक सर्व दिशाओं में, सिद्धों के बिम्ब अखण्डित हैं।।
जो परम पूज्य परमेश्वर हैं, त्रिभुवन स्वामी कहलाते हैं।
हम अर्घ्य चढ़ाकर चरणों में, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।54।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित कल्पवृक्षभूमिसम्बन्धी जिनमंदिर जिन प्रतिमाभ्यः सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तम भूमि है भवन भूमी, भवनों में देव विचरते हैं।
सब देव-देवियाँ भवनों से, आकर के क्रीड़ा करते हैं।।
जो परम पूज्य परमेश्वर हैं, त्रिभुवन स्वामी कहलाते हैं।
हम अर्घ्य चढ़ाकर चरणों में, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।55।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित भवनभूमिसम्बन्धी जिनमंदिर जिन प्रतिमाभ्यः सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभ का समवशरण, विस्तृत है अर्ध वसू योजन।
बारह कोठों से भव्य जीव, सुर-नर पशु रहते हैं मुनिगण।।
जो परम पूज्य परमेश्वर हैं, त्रिभुवन स्वामी कहलाते हैं।
हम अर्घ्य चढ़ाकर चरणों में, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।56।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित मण्डपभूमिसम्बन्धी जिनमंदिर जिन प्रतिमाभ्यः सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नों से मंडित प्रथम पीठ, शुभ समवशरण में है पावन।
सुर धर्म चक्र ले खड़े हुए, आह्लादित करते हैं तन-मन।।
जो परम पूज्य परमेश्वर हैं, त्रिभुवन स्वामी कहलाते हैं।
हम अर्घ्य चढ़ाकर चरणों में, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।57।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित प्रथमपीठोपरि धर्मचक्राय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमुक्ता युक्त पीठ द्वितिय, आठों दिश में ध्वज लहराएँ।
नव निधी द्रव्य मंगल आठों, घट धूप शुभम् शोभा पाएँ।।
जो परम पूज्य परमेश्वर हैं, त्रिभुवन स्वामी कहलाते हैं।
हम अर्घ्य चढ़ाकर चरणों में, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।58।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित द्वितीयपीठोपरि महाध्वजाभ्यः सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय वंदित शुभ गंध कुटी, है तृतिय पीठ पर कमलासन।
चउ अंगुल अधर श्री जिनवर, उनका चलता जग में शासन।।

जो परम पूज्य परमेश्वर हैं, त्रिभुवन स्वामी कहलाते हैं।
हम अर्घ्य चढ़ाकर चरणों में, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं।।59।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित तृतीयपीठोपरि गंधकुट्यै सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर हैं तीन अधिक नब्बे, श्री चन्द्रप्रभु के समवशरण।
वैदर्भ प्रथम गणधर स्वामी, रहते हैं प्रभु के चरण-शरण।।
श्री चन्द्रप्रभू के चरणों में, शत इन्द्र भक्ति से आते हैं।
वन्दन करते हैं भाव सहित, पद सादर शीश झुकाते हैं।।60।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित वैदर्भ आदित्रिनवतिगणधरेभ्यो सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टादश सहस्र केवलज्ञानी, शुभ समवशरण में राज रहे।
जो कर्म घातिया नाश किये, अब पाने मोक्ष स्वराज रहे।।
श्री चन्द्रप्रभू के चरणों में, शत इन्द्र भक्ति से आते हैं।
वन्दन करते हैं भाव सहित, पद सादर शीश झुकाते हैं।।61।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित अष्टादशसहस्र केवलज्ञानी मुनिन्द्राय सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो लाख पचास हजार मुनी, श्री चन्द्रप्रभु के साथ रहे।
प्रभु समवशरण में उन सबके, चरणों में मेरा माथ रहे।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरणों में, शत इन्द्र भक्ति से आते हैं।
वन्दन करते हैं भाव सहित, पद सादर शीश झुकाते हैं।।62।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित द्विलक्षपंचाशत सहस्र सर्वमुनिश्वरेभ्योः सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ ॐकारमय दिव्य ध्वनि, सब भाषा में समझाती है।
दस आठ महाभाषा समेत, लघु सप्त शतक में आती है।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरणों में, शत इन्द्र भक्ति से आते हैं।
वन्दन करते हैं भाव सहित, पद सादर शीश झुकाते हैं।।63।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित जिनमुखोद्भव ॐकारयुक्त सर्वभाषामय दिव्यध्वनिभ्योः सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं द्रव्य भाव श्रुत के ज्ञाता, जिन श्रुत केवली कहलाए।
जो समवशरण में चन्द्रप्रभु के, भाव सहित शुभ गुण गाए।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरणों में, शत इन्द्र भक्ति से आते हैं।
वन्दन करते हैं भाव सहित, पद सादर शीश झुकाते हैं।।64।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित श्रुतकेवलीसमूह सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तीन काल के ज्ञाता हैं, अरु तीन लोक में पूज्य हुए।
हम तीन योग से करें वन्दना, त्रय भक्ति से चरण छुए।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरणों में, शत इन्द्र भक्ति से आते हैं।
वन्दन करते हैं भाव सहित, पद सादर शीश झुकाते हैं।।65।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप :- (1) ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं अजित मनोवेगा यक्ष-यक्षिणी सहिताय श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्रायः नमः (स्वाहा) (2) ॐ ह्रीं श्रीं अष्टम तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्हम् नमः। (स्वाहा)

समुच्चय जयमाला

दोहा- तीन लोक में श्रेष्ठ हैं, चन्द्रप्रभू भगवान।
विशद भाव से कर रहे, जिनवर का गुणगान।।

चन्द्रप्रभू के श्री चरणों में, करते हैं शत्-शत् वंदन।
उनके चरण कमल की धूली, पावन है शीतल-चंदन।।
चन्द्रपुरी उत्तरप्रदेश में, अनायास खुशियाँ छाईं।
सूखे ताल सरोवर नदियाँ, शीतल जल से भर आईं।।1।।

देवों ने कई रत्न मनोहर, आसमान से बरसाये।
सुन्दरता लखकर नर-नारी, मन ही मन में हरषाये।।
छह माह पूर्व से देवों ने, नगरी को खूब सजाया था।
धरती को मानो इन्द्रों ने, स्वर्गों का रूप बनाया था।।2।।
तब वैजयन्त से च्युत होकर, इस धरती पर अवतार लिया।
लक्ष्मीमति माता की कुक्षि को, श्री प्रभुवर ने धन्य किया।।
छप्पन कुमारियों ने मिलकर, माता के गर्भ का शोध किया।
नौ मास गर्भ में रहकर के, माता के मन को मोद किया।।3।।
तब पौष कृष्ण ग्यारस के दिन, को गूँज उठी शहनाई थी।
श्री महासेन के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी।।
जब चन्द्रप्रभू का जन्म हुआ, सौधर्म इन्द्र ऐरावत लाया।
तब शची ने शिशु को लिया हाथ, मायामय बालक पधराया।।4।।
सौधर्म इन्द्र ने बालक का, पाण्डुक वन में अभिषेक किया।
अरु शचि ने चंदन चर्चित कर, बालक का शुभ श्रृंगार किया।।
सौधर्म इन्द्र ने बालक को, माता के गृह में सौंप दिया।
तब इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्रों ने, मिलकर के उत्सव महत् किया।।5।।
प्रभु मित्रों के संग क्रीड़ा करते, तब हर्षित हुए मित्र सारे।
जब आठ वर्ष की उम्र हुई, तब स्वयं आप अणुव्रत धारे।।
दस लाख पूर्व की आयु पा, जिन मन वांछित सुख भोग किए।
अनुप्रेक्षा का चिन्तन करके, इस जग से प्रभु वैराग्य लिए।।6।।
लौकान्तिक देवों ने आकर, श्री जिनवर को सम्बोध दिया।
शिविका लेकर आये सुरगण, उस पर चढ़कर वन गमन किया।।
शुभ पौष कृष्ण ग्यारस तिथि को, प्रभु ने गृहवास को छोड़ दिया।
तब स्वजन और परिजन बन्धू, उन सबसे नाता तोड़ दिया।।7।।
संग एक सहस्र राजाओं के, प्रभु स्वयं आप संन्यास लिया।
तव आप गये सर्वार्थ सुवन, वहाँ तेला का उपवास किया।।

फिर पञ्च मुष्टि से केश लौंच, कर पञ्च महाव्रत भी धारे।
तब सुर नर इन्द्रों ने बोले, श्री चन्द्रप्रभू के जयकारे ।।8।।
नृप शील शिरोमणि चन्द्रदत्त, ने पय का शुभ आहार दिया।
तब देवों ने खुश होकर के, उस नगर में पञ्चाश्चर्य किया।।
फिर घोर सुतप कर तीन माह, में कर्म घातिया नाश किए।
तब फाल्गुन कृष्ण सप्तमी को, प्रभु केवलज्ञान प्रकाश किए।।9।।
फिर समवशरण की रचना कर, देवों ने उत्सव महत् किये।
वसु प्रातिहार्य शुभ मंगल द्रव्य, अरु यक्ष खड़े थे चक्र लिये।।
है शोक निवारक तरु अशोक, अरु दुन्दुभि करती मधुर गान।
शुभ सिंहासन है कमलयुक्त, अरु छत्र तीन अतिशय महान्।।10।।
जहाँ पुष्प वृष्टि होती पावन, अरु दिव्य ध्वनी खिरती मंगल।
शुभ चँवर ढुराते देव शुभम्, अरु शोभित होता भामण्डल।।
इत्यादि विभूति युक्त प्रभू, ने भवि जीवों को तारा है।
शुभ दर्शन ज्ञान चरण देकर, इस भव से पार उतारा है।।11।।
फिर योग निरोध किया प्रभु ने, अरु कर्म अघाती नाश किए।
सम्मेद शिखर पर जाकर के, प्रभु सिद्धशिला पर वास किए।।
हम सिद्ध शिला के अधिनायक, का करते हैं शुभ अभिनन्दन।
अब 'विशद' भाव से करते हैं, हम चरणों में शत्-शत् वन्दन।।12।।

(छन्द घत्तानन्द)

जिनवर पद ध्याऊँ, भक्ति बढ़ाऊँ, प्रभु गुण गाऊँ, शिव जाऊँ।
मैं कर्म नशाऊँ, ज्ञान बढ़ाऊँ, रत्नत्रय निधि को पाऊँ।।

ॐ ह्रीं समवशरणस्थित सर्वकर्मबंधन विमुक्त सर्वमंगलकारी चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- चन्द्रप्रभू के चरण में, भक्ति करूँ कर जोर।
हरी-भरी खुशहाल हो, धरती चारों ओर।।

चन्द्रप्रभु चालीसा

दोहा- परमेष्ठी की वन्दना, करते योग सम्हाल।
चन्द्र प्रभू के चरण में, वन्दन है नत भाल।।

(शम्भू -छन्द)

तर्ज- आल्हा

भव दुख से संतप्त मरुस्थल, में यह भटक रहा संसार।
चन्द्र प्रभू की छत्र छाँव में, आश्रय मिलता है शुभकार।।
जम्बू द्वीप के भरत क्षेत्र में, चन्द्रपुरी है मंगलकार।
यहाँ सुखी थी जनता सारी, महासेन नृप का दरबार।।1।।
महिषी जिनकी रही सुलक्षणा, शुभ लक्षण से युक्त महान्।
वैजयन्त से चयकर माँ के, गर्भ में आये थे भगवान।।
इक्ष्वाकू शुभ वंश आपका, सारे जग में अपरम्पार।
चैत कृष्ण पाँचे को प्रभु ने, भारत भू पर ले अवतार।।2।।
शुभ नक्षत्र विशाखा पावन, अन्तिम रात्रि थी मनहार।
देव-देवियों ने हर्षित हो, आके किया मंगलाचार।।
पौष कृष्ण ग्यारस को जन्में, हर्षित हुआ राज परिवार।
इन्द्रों ने जाकर सुमेरु पर, न्हवन कराया बारम्बार।।3।।
दाँये पग में अर्द्ध चन्द्रमा, देख इन्द्र ने बोला नाम।
चन्द्र प्रभु की जय बोली फिर, चरणों कीन्हा विशद प्रणाम।।
बढ़ने लगे प्रभू नित प्रतिदिन, गुण के सागर महति महान।
आयु लाख पूर्व दश की शुभ, पाए चन्द्र प्रभू भगवान।।4।।
धनुष डेढ़ सौ थी ऊँचाई, धवल रंग स्फटिक समान।
तड़ित चमकता देख गगन में, हुआ प्रभू को निज का भान।।
पौष कृष्ण एकादशि को, धारण कीन्हें प्रभु वैराग्य।
अनुराधा नक्षत्र में भाई, सहस्र भूप के जागे भाग्य।।5।।

वन सर्वार्थ नाग तरु तल में, प्रभु ने कीन्हा आतम ध्यान।
फाल्गुन कृष्ण सप्तमी को प्रभू, पाए अनुपम केवलज्ञान।।
समवशरण की रचना आकर, देवों ने की मंगलकार।
साढ़े आठ योजन का भाई, समवशरण का था विस्तार।।6।।
गणधर रहे तिरानवे प्रभु के, उनमें रहे वैदर्भ प्रधान।
गिरि सम्मेद शिखर पर प्रभु जी, ललित कूट पर किये प्रयाण।।
योग निरोध किया था प्रभु ने, एक माह तक करके ध्यान।
फाल्गुन शुक्ल सप्तमी को शुभ, प्रभु ने पाया पद निर्वाण।।7।।
ज्येष्ठा शुभ नक्षत्र बताया, काल बताया है पौर्वाह्ण।
एक हजार साथ में मुनियों, ने भी पाया पद निर्वाण।।
वीतराग मुद्रा को लखकर, बने देव चरणों के भक्त।
मनोयोग से जिन चरणों की, भक्ति में रहते अनुरक्त।।8।।
समन्तभद्र मुनिवर को भाई, भस्म व्याधि जब हुई महान्।
शिव को भोग खिलाऊँगा मैं, राजा से वह बोले आन।।
छुपकर उत्तम भोजन खाया, हुआ व्याधि का पूर्ण विनाश।
पता चला राजा को जब तो, राजा मन में हुआ उदास।।9।।
राजा समन्तभद्र से बोला, शिव पिण्डी को करो नमन।
पिण्डी नमन झेल न पाए, कर दो सांकल से बन्धन।।
आप स्वयंभू पाठ बनाए, शीश झुकाकर किए नमन।
पिण्डी फटी चन्द्र प्रभु स्वामी, के पाए सबने दर्शन।।10।।
प्रगट हुए देहरा में प्रभु जी, लोग किए तब जय-जयकार।
सोनागिर में आप विराजे, समवशरण ले सोलह बार।।
टोंक जिला के मैंदवास में, प्रकट हुए भूमि से नाथ।
जयपुर में बैनाड़ क्षेत्र पर, भक्त झुकाते चरणों माथ।।11।।

नगर-नगर के मंदिर में, प्रभु शोभित होते हैं अविकार।
पूजा आरती वन्दन करते, भक्त चरण में बारम्बार।।
सब जीवों में मैत्री जागे, सुख-शांतिमय हो संसार।
'विशद' भावना भाते हैं हम, होवे भव से बेड़ा पार।।12।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़ें भक्ति के साथ।
सुख-शांति आनन्द पा, होय श्री का नाथ।।

* * *

श्री 1008 चन्द्रप्रभु भगवान की आरती

ॐ जय चन्द्रप्रभु स्वामी, जय चन्द्रप्रभु स्वामी।
चन्द्रपुरी अवतारी, मुक्ति पथगामी।। ॐ जय.....
महासेन घर जन्मे, धर्म ध्वजाधारी।
स्वर्ग मोक्षपदवी के दाता, ऋषिवर अनगारी।। ॐ जय.....
आतमज्ञान जगाए, सद् दृष्टि धारी।
मोह महामदनाशी, स्व-पर उपकारी।। ॐ जय.....
पंच महाव्रत प्रभुजी, तुमने जो धारे।
समिति गुप्ति के द्वारा, कर्म शत्रु जारे।। ॐ जय.....
इन्द्रिय मन को जीता, आतम ध्यान किया।
केवलज्ञान जगाकर, पद निर्वाण लिया।। ॐ जय.....
तुमको ध्याने वाला, सुख-शांति पावे।
विशद आरती करके मन में हर्षावे।। ॐ जय.....
प्रभु की महिमा सुनकर, द्वारे हम आये।
भाव सहित प्रभु तुमरे, हमने गुण गाये।। ॐ जय.....
तुम करुणा के सागर, हम पर कृपा करो।
भक्त खड़ा चरणों में, सारे कष्ट हरो।। ॐ जय.....

प्रशस्ति

लोकालोक के मध्य में, जम्बूद्वीप सुजान।
भरत क्षेत्र दक्षिण रहा, आर्य खण्ड शुभमान।।
पुण्य पुरुष जिसमें हुए, भारत देश महान।
एक प्रांत जिसमें रहा, नाम है राजस्थान।।
बिन मात्रा का शहर है, अलवर जिसका नाम।
क्षेत्र तिजारा का जिला, ऋषियों का है धाम।।
चमत्कार चन्द्रप्रभु, के होता दरबार।
भाव बनाकर दूर से, आते हैं नर-नार।।
दो हजार सन् छह रहा, करके चातुर्मास। (वर्षायोग)
जैन भवन स्कीम दस, पार्श्वनाथ हैं पास।।
चन्द्रप्रभु के चरण में, वंदन करूँ त्रिकाल।
पूजा करके भाव से, जग से होऊँ निहाल।।
भक्ती कीन्ही भाव से, बन गया एक विधान।
लोग सभी पूजा करें, पुण्य का होय निधान।।
विक्रम संवत सहस दो, अरु तिरेसठ की साल।
वीर निर्वाण पच्चीस सो, बत्तिस रहा विशाल।।
दशलक्षण शुभ पर्व पर, पूर्ण हुआ यह कार्य।
ज्ञान ध्यान चिंतन मनन, पूजा रचाओ आर्य।।
ऋद्धि-सिद्धि दायक लिखा, चन्द्रप्रभु विधान।
भूल चूक को भूलकर, बनो सभी धीमान।।
कवि नहीं पंडित नहीं, मैं हूँ लघु आचार्य।
धर्म सहित शुभ आचरण, करो सभी जन आर्य।।

* * *

परम पुण्डरीक
1008 श्री पुष्पदन्त विधान

मण्डल

शुक्रग्रहारिष्ट निवारक
श्री पुष्पदन्त विधान

मध्य में	-	ॐ
प्रथम	-	4
द्वितीय	-	8
तृतीय	-	16
चतुर्थ	-	32
पञ्चम	-	64

aM{`Vm :
प.पू. क्षमामूर्ति, साहित्य रत्नाकर आचार्यश्री 108 विशदसागरजी महाराज

श्री पुष्पदंत स्तवन

दोहा– हुए त्रिलोकी नाथ जिन, जगती पति जगदीश।
पुष्पदन्त जिनराज पद, झुका रहे हम शीश।।

(शम्भू छंद)

संत बने जब पुष्पदन्तजी, सकल व्रतों को धार लिया।
रत्नत्रय को स्वयं बोध से, द्रव्य भाव युत ग्रहण किया।।
अम्बर तजकर हुए दिगम्बर, ध्यान लगाया आतम का।
तीर्थंकर बनकर के प्रभु ने, पद पाया परमातम का।।1।।

सप्त तत्त्व अरु नव पदार्थ का, श्री जिनेन्द्र ने कथन किया।
निश्चय अरु व्यवहार मार्ग पर, बढ़ने का सन्देश दिया।।
शरद चन्द्र चंदन से चर्चित, करता जिनके चरण कमल।
नहीं जहाँ में दिखता कुछ भी, पुष्पदन्त सम धवल अमल।।2।।

भव बन्धन से छूट गये प्रभु, बने आप शिव के नन्दन।
सर्व चराचर जीव जगत् के, करते हैं शत्–शत् वन्दन।।
निरालम्ब निर्मल निर्भय हो, नील गगन में रहते नाथ।
सुविधि नाथ पद विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।3।।

धवल पुष्प पंक्ती सरवर में, मोहित करती जग जन को।
पुष्पदंत की सुंदर सूरत, करती मोहित तन मन को।।
सूर्य उदय को देख कमल ज्यों, नत मस्तक हो जाता है।
पुष्पदंत के शुभादर्श से, मम् मस्तक झुक जाता है।।4।।

पुष्प सुकोमल और सुंगधित, सरवर को शोभित करता।
अपनी आभा के द्वारा जो, जन–जन के मन को हरता।।
शंख पुष्प की शोभा प्रभुजी, पुष्पदंत का तन पाता।
चरण वंदना करता हूँ मैं, विशद भाव से गुण गाता।।5।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

परम पुण्डरीक श्री पुष्पदन्त जिन पूजन

स्थापना

सुर नर किन्नर विद्याधर भी, पुष्पदंत को ध्याते हैं।
महिमा जिनकी जग में अनुपम, उनके गुण को गाते हैं।।
पुष्पदंत हैं कन्त मोक्ष के, उनके चरणों में वंदन।
'विशद' भाव से करते हैं हम, श्री जिनवर का आह्वानन्।।
हे जिनेन्द्र ! करुणा करके, मेरे अन्तर में आ जाओ।
हे पुष्पदंत ! हे कृपावन्त !, प्रभु हमको दर्श दिखा जाओ।।

ॐ ह्रीं परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणं।

कर्मोदय के कारण हमने, विषयों का व्यापार किया।
मिथ्या और कषायों के वश, हेय तत्त्व से प्यार किया।।
जन्म जरा मृतु नाश हेतु हम, चरणों नीर चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदन्त को, विशद भाव से ध्याते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

योगों की चंचलता द्वारा, कर्मों का आस्रव होता।
अशुभ कर्म के कारण प्राणी, जग में खाता है गोता।।
भव आतप के नाश हेतु हम, चंदन चरण चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदन्त को, विशद भाव से ध्याते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय विषय रहे क्षणभंगुर, बिजली सम अस्थिर रहते।
पुण्य के फल से मिल पाते हैं, पापी कई इक दुख सहते।।

पद अखंड अक्षय पाने को, अक्षत चरण चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदन्त को, विशद भाव से ध्याते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

शील विनय जप तप व्रत संयम, प्राप्त नहीं कर पाया है।
मोह महामद में फँसकर के, जीवन व्यर्थ गंवाया है।।
काम बाण के नाश हेतु हम, चरणों पुष्प चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदन्त को, विशद भाव से ध्याते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगों की मृग तृष्णा में ही, सारे जग में भ्रमण किया।
विषयों की ज्वाला में जलकर, जन्म लिया अरु मरण किया।।
क्षुधा व्याधि के नाश हेतु हम, व्यंजन सरस चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदन्त को, विशद भाव से ध्याते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव शास्त्र गुरु सप्त तत्त्व में, जिसको भी श्रद्धान नहीं।
भवसागर में रहे भटकता, उसका हो निर्वाण नहीं।।
मोह तिमिर के नाश हेतु हम, मणिमय दीप जलाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदन्त को, विशद भाव से ध्याते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टकर्म का फल है दुष्फल, निष्फल जो पुरुषार्थ करे।
अष्ट गुणों के हरने वाले, प्राणी का परमार्थ हरे।।
अष्ट कर्म के नाश हेतु हम, अनुपम धूप जलाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदन्त को, विशद भाव से ध्याते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ कर्मों के फल से जग के, सारे फल हमने पाए ।
मोक्ष महाफल नहीं मिला यह, फल खाकर के पछताए ।।

मोक्ष महाफल प्राप्ति हेतु हम, श्रीफल चरण चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदन्त को, विशद भाव से ध्याते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल जल सम शुद्ध हृदय, चंदन सम मनहर शीतलता।
अक्षत सम अक्षय भाव रहें, है सुमन समान सुकोमलता।।
हैं मिष्ठ वचन मोदक जैसे, दीपक सम ज्ञान प्रकाश रहा।
यश धूप समान सुविकसित कर, फल श्रीफल जैसे सुफल अहा।।
अपने मन के शुभ भावों का, यह चरणों अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हम परम पूज्य जिन पुष्पदन्त को, विशद भाव से ध्याते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्याणक के अर्घ्य

दोहा– नौमी फाल्गुन कृष्ण की, लिए गर्भ कल्याण।
जयरामा उर अवतरे, काकंदीपुर आन।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण नवम्यां गर्भमंगल प्राप्त परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

मगसिर शुक्ला प्रतिपदा, हुआ जन्म कल्याण।
सुर नर पशु के इन्द्र सब, करते जय-जयगान।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्ष शुक्ल प्रतिपदायां जन्ममंगल प्राप्त परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

मेघ विलय को देखकर, मन में हुआ विराग।
एकम् मगसिर शुक्ल की, दीक्षा ली सब त्याग।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्ष शुक्ल प्रतिपदायां तपोमंगल प्राप्त परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

कार्तिक शुक्ला दूज को, पाया केवलज्ञान।
ज्ञाता तीनों लोक के, आप हुए भगवान।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्ल द्वितीयायां ज्ञानमंगल प्राप्त परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

भादों शुक्ला अष्टमी, पाया पद निर्वाण।
तीर्थराज सम्मेदगिरि, सुप्रभ कूट महान्।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्लाष्टम्यां मोक्षमंगल प्राप्त परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

जयमाला

दोहा– **मुक्ति वधू के कंत तुम, पुष्पदंत भगवान।**
गुण गाऊँ जयमाल कर, पाऊँ मोक्ष निधान।।

पद्धडि छंद

जय–जय श्री जिन पुष्पदंत, तुम मुक्ति वधु के हुए कंत।
जय शीश झुकाते चरण संत, जय भवसागर का किए अंत।।
जय फाल्गुन वदि नौमी सुजान, सुरपति कीन्हे प्रभु गर्भ कल्याण।
जय मगसिर वदि एकम् सुकाल, जय जन्म लिया प्रभु प्रातकाल।।
जय जन्म महोत्सव इन्द्र देव, खुश होकर करते हैं सदैव।
जय ऐरावत सौधर्म लाय, जय मेरू गिरि अभिषेक कराय।।
जय वज्रवृषभ नाराच देह, जय सहस आठ लक्षण सुगेह।
प्रभु दीर्घकाल तक राज कीन, मगसिर सित एकम् सुपथ लीन।।
जय पुष्पक वन पहुँचे सुजाय, प्रभु शालिवृक्ष ढिग ध्यान पाय।
जय कर्म घातिया किए नाश, निज आतम शक्ती कर प्रकाश।।
जय कार्तिक सुदि द्वितिया महान्, प्रभु पाये केवलज्ञान भान।
जय–जय भविजन उपदेश पाय, प्रभु के चरणों में शीश नाय।।
प्रभु देते जग को ज्ञानदान, पाते कई प्राणी दृढ़ श्रद्धान।
प्रभु की महिमा का नहीं पार, जीवों को करते विभव पार।।
कई ज्ञान सहित चारित्रधार, करुणाकर जग जन जलधिसार।

जय भादों सुदि आठें प्रसिद्ध, प्रभु कर्म नाश कर हुए सिद्ध।।
जय–जय जगदीश्वर जगत् ईश, तव चरणों में नत नराधीश।
जय द्रव्यभाव नो कर्म नाश, जय सिद्ध शिला पर किए वास।।
जय ज्ञान मात्र ज्ञायक स्वरूप, तुम हो अनंत चैतन्य रूप।
निर्द्वन्द निराकुल निराधार, निर्मल निष्कल प्रभु निराकार।।

दोहा– **आलोकित प्रभु लोक में, तव परमात्म प्रकाश।**
आनंदामृत पानकर, मिटे आस की प्यास।।

ॐ ह्रीं शुक्र ग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सोरठा– **पुष्पदंत भगवान, ज्ञान सुमन प्रभु दीजिए।**
पुष्पांजलि अर्पित विशद, नाथ क्लेश हर लीजिए।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्

प्रथम वलयः

सोरठा– **संज्ञाए हैं चार, आश्रव की हेतू रहीं।**
प्राणी को दुखकार, जिनवर नाशे सर्वथा।।

इतिमण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्थापना

सुर नर किन्नर विद्याधर भी, पुष्पदंत को ध्याते हैं।
महिमा जिनकी जग में अनुपम्, उनके गुण को गाते हैं।
पुष्पदंत हैं कन्त मोक्ष के, उनके चरणों में वंदन।
विशद भाव से करते हैं हम, श्री जिनवर का आह्वानन्।
हे जिनेन्द्र ! करुणा करके, मेरे अन्तर में आ जाओ।
हे पुष्पदन्त ! हे कृपावन्त !, प्रभु हमको दर्श दिखा जाओ।।

ॐ ह्रीं परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौष्ट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

चार संज्ञाओं के अर्घ्य

भोजन की इच्छा, करें प्रतिक्षा, संज्ञा यह आहार कही।
इच्छा को नाशे, ज्ञान प्रकाशे, संज्ञा न आहार रही।।
उनके गुण गाऊँ, हृदय बसाऊँ, चरणों की भक्ती पाऊँ।
न जग भटकाऊँ, ज्ञान जगाऊँ, इस जग से मुक्ती पाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं आहार संज्ञा रहित परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है द्रव्य दुखारी, अति भयकारी, उससे प्राणी भय खाते ।
जो भय को नाशे, कर्म विनाशे, विशद ज्ञान को वह पाते ।।
उनके गुण गाऊँ, हृदय बसाऊँ, चरणों की भक्ती पाऊँ।
न जग भटकाऊँ, ज्ञान जगाऊँ, इस जग से मुक्ती पाऊँ।।2।।

ॐ ह्रीं भय संज्ञा रहित परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

नारी को चाहें, भरते आहें, मैथुन संज्ञा यह जानो।
संज्ञा के नाशी, ज्ञान प्रकाशी, मुक्ति वधु के वर मानो।।
उनके गुण गाऊँ, हृदय बसाऊँ, चरणों की भक्ती पाऊँ।
न जग भटकाऊँ, ज्ञान जगाऊँ, इस जग से मुक्ती पाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं मैथुन संज्ञा रहित परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मूर्छा दुखदाई, कही है भाई, परिग्रह संज्ञा कहलाए।
मूर्छा के त्यागी, हुए विरागी, आकिन्चन्य को प्रभु पाए।।
उनके गुण गाऊँ, हृदय बसाऊँ, चरणों की भक्ती पाऊँ।
न जग भटकाऊँ, ज्ञान जगाऊँ, इस जग से मुक्ती पाऊँ।।4।।

ॐ ह्रीं परिग्रह संज्ञा रहित परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– **पुष्पदन्त ने नाश की, यह संज्ञाएँ चार।**
हमको प्रभु आशीष दो, पाएँ भव से पार।।

ॐ ह्रीं चतुः संज्ञा रहित परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा– **अष्ट कर्म को नाशकर, हुए ज्ञान के नाथ।**
अष्ट द्रव्य से पूजते, झुका चरण में माथ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत

स्थापना

सुर नर किन्नर विद्याधर भी, पुष्पदंत को ध्याते हैं।
महिमा जिनकी जग में अनुपम, उनके गुण को गाते हैं।।
पुष्पदंत हैं कन्त मोक्ष के, उनके चरणों में वंदन।
'विशद' भाव से करते हैं हम, श्री जिनवर का आह्वानन्।।
हे जिनेन्द्र ! करुणा करके, मेरे अन्तर में आ जाओ।
हे पुष्पदंत ! हे कृपावन्त !, प्रभु हमको दर्श दिखा जाओ।।

ॐ ह्रीं परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौष्ट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टकर्म के अर्घ्य

ज्ञानावरणी कर्म नाशकर, प्रभु ने पाया ज्ञान अनन्त।
द्रव्य चराचर एक साथ ही, जाने आप अनन्तानन्त।।
भक्त चरण में आया भगवन्, भक्ती की शुभ आश लिए।
कर्म नाश अब होंगे मेरे, आया है विश्वास लिए।।1।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्म विनाशक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दर्शनावरणी नाशा, दर्शन पाए आप अनन्त।
द्रव्य चराचर एक साथ ही, देखे आप अनन्तानन्त।।
भक्त चरण में आया भगवन्, भक्ती की शुभ आश लिए।
कर्म नाश अब होंगे मेरे, आया है विश्वास लिए।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरणी कर्म विनाशक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म वेदनीय नाश किए प्रभु, पाए अव्याबाध स्वरूप।
वीतराग जिनराज प्रभु के, पद में झुकते हैं शत् भूप।।
भक्त चरण में आया भगवन्, भक्ती की शुभ आश लिए।
कर्म नाश अब होंगे मेरे, आया है विश्वास लिए।।3।।

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म विनाशक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहित करता कर्म मोहनीय, उसका प्रभु जी घात किए।
'विशद' ज्ञान के द्वारा जिनवर, सुख अनन्त को प्राप्त किए।।
भक्त चरण में आया भगवन्, भक्ती की शुभ आश लिए।
कर्म नाश अब होंगे मेरे, आया है विश्वास लिए।।4।।

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म विनाशक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयु कर्म के भेद चार हैं, उनका आप विनाश किए।
अवगाहन गुण पाने वाले, केवलज्ञान प्रकाश किए।।
भक्त चरण में आया भगवन्, भक्ती की शुभ आश लिए।
कर्म नाश अब होंगे मेरे, आया है विश्वास लिए।।5।।

ॐ ह्रीं आयु कर्म विनाशक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम कर्म के भेद अनेकों, उनका प्रभू विनाश किए।
सूक्ष्मत्व गुण प्रगटाने वाले, केवलज्ञान प्रकाश किए।।
भक्त चरण में आया भगवन्, भक्ती की शुभ आश लिए।
कर्म नाश अब होंगे मेरे, आया है विश्वास लिए।।6।।

ॐ ह्रीं नाम कर्म विनाशक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गोत्र कर्म से जग के प्राणी, उच्च नीच पद पाते हैं।
अगुरुलघु गुण गोत्र कर्म के, नाश किए प्रगटाते हैं।।

भक्त चरण में आया भगवन्, भक्ती की शुभ आश लिए।
कर्म नाश अब होंगे मेरे, आया है विश्वास लिए।।7।।

ॐ ह्रीं गोत्र कर्म विनाशक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तराय विघ्नों का कर्त्ता, विघ्न डालता कई प्रकार।
अन्तराय के नाशक जिनको, वन्दन करता बारम्बार।।
भक्त चरण में आया भगवन्, भक्ती की शुभ आश लिए।
कर्म नाश अब होंगे मेरे, आया है विश्वास लिए।।8।।

ॐ ह्रीं अन्तराय कर्म विनाशक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **अष्ट कर्म का नाशकर, अष्ट गुणों को पाय।**
अष्टम भू पर जा बसे, सिद्ध प्रभू कहलाय।।

ॐ ह्रीं अष्टकर्म विनाशक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः

दोहा– **सोलह कहीं कषाय जिन, उनका किए विनाश।**
मोह महातम नाश कर, कीन्हे ज्ञान प्रकाश।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्थापना

सुर नर किन्नर विद्याधर भी, पुष्पदंत को ध्याते हैं।
महिमा जिनकी जग में अनुपम, उनके गुण को गाते हैं।।
पुष्पदंत हैं कन्त मोक्ष के, उनके चरणों में वंदन।
'विशद' भाव से करते हैं हम, श्री जिनवर का आह्वानन्।।
हे जिनेन्द्र ! करुणा करके, मेरे अन्तर में आ जाओ।
हे पुष्पदंत ! हे कृपावन्त !, प्रभु हमको दर्श दिखा जाओ।।

ॐ ह्रीं परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

सोलह कषायों के अर्घ्य

क्रोध अनन्तानुबन्धी का, नाश किए हैं श्री भगवान।
क्षायिक सम्यक् दर्शन पाए, सर्व जगत् में हुए महान्।।
जिन चरणों में वन्दन करते, हो कषाय का प्रभू विनाश।
सर्व जहाँ से हार मानकर, चरणों में आया है दास।।1।।

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी क्रोध कषाय विनाशक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान अनन्तानुबन्धी का, पुष्पदन्त जिन नाश किए।
क्षायिक दर्शन पाने वाले, सिद्ध शिला पर वास किए।।
जिन चरणों में वन्दन करते, हो कषाय का प्रभू विनाश।
सर्व जहाँ से हार मानकर, चरणों में आया है दास।।2।।

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी मान कषाय विनाशक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया अनन्तानुबन्धी का, नाश किए हैं श्री भगवान।
क्षायिक सम्यक् दर्शन पाए, सर्व जगत में हुए महान्।।
जिन चरणों में वन्दन करते, हो कषाय का प्रभू विनाश।
सर्व जहाँ से हार मानकर, चरणों में आया है दास।।3।।

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी माया कषाय विनाशक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ अनन्तानुबन्धी को, पुष्पदन्त जिन शांत किए।
क्षायिक दर्शन पाने वाले, निज कषाय उपशांत किए।।
जिन चरणों में वन्दन करते, हो कषाय का प्रभू विनाश।
सर्व जहाँ से हार मानकर, चरणों में आया है दास।।4।।

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी लोभ कषाय विनाशक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देशव्रती बनने ना देवे, क्रोध रहे अप्रत्याख्यान।
सम्यक् चारित पाने हेतू, उसका करते प्रत्याख्यान।।
जिन चरणों में वन्दन करते, हो कषाय का प्रभू विनाश।
सर्व जहाँ से हार मानकर, चरणों में आया है दास।।5।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान क्रोध कषाय विनाशक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देशव्रती बनने से रोके, मान रहे अप्रत्याख्यान।
सम्यक् चारित हमें प्राप्त हो, करूँ मान का प्रत्याख्यान।।
जिन चरणों में वन्दन करते, हो कषाय का प्रभू विनाश।
सर्व जहाँ से हार मानकर, चरणों में आया है दास।।6।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान मान कषाय विनाशक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देशव्रती बनने न देवे, माया रहे अप्रत्याख्यान।
सम्यक् चारित पाने हेतू, करता हूँ मैं प्रत्याख्यान।।
जिन चरणों में वन्दन करते, हो कषाय का प्रभू विनाश।
सर्व जहाँ से हार मानकर, चरणों में आया है दास।।7।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान माया कषाय विनाशक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देशव्रती बनने से रोके, लोभ रहे अप्रत्याख्यान।
सम्यक् चारित्र पाने हेतू, करते हैं हम प्रत्याख्यान।।
जिन चरणों में वन्दन करते, हो कषाय का प्रभू विनाश।
सर्व जहाँ से हार मानकर, चरणों में आया है दास।।8।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान लोभ कषाय विनाशक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाव्रती होने से रोके, प्रत्याख्यान क्रोध भाई।
नाश किया है क्रोध प्रभू ने, पाई है जग प्रभुताई।।
जिन चरणों में वन्दन करते, हो कषाय का प्रभू विनाश।
सर्व जहाँ से हार मानकर, चरणों में आया है दास।।9।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान क्रोध कषाय विनाशक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाव्रती होने न देवे, प्रत्याख्यान मान भाई।
उसको नाश किए जिन स्वामी, पाए जग में प्रभुताई।।
जिन चरणों में वन्दन करते, हो कषाय का प्रभू विनाश।
सर्व जहाँ से हार मानकर, चरणों में आया है दास।।10।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान मान कषाय विनाशक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाव्रती होने न देवे, प्रत्याख्यान माया भाई।
नाश किए माया कषाय का, पाए जग में प्रभुताई।।
जिन चरणों में वन्दन करते, हो कषाय का प्रभू विनाश।
सर्व जहाँ से हार मानकर, चरणों में आया है दास।।11।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान माया कषाय विनाशक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाव्रती होने न देवे, प्रत्याख्यान लोभ भाई।
नाश किए लोभ जिन स्वामी, पाए जग में प्रभुताई।।
जिन चरणों में वन्दन करते, हो कषाय का प्रभू विनाश।
सर्व जहाँ से हार मानकर, चरणों में आया है दास।।12।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान लोभ कषाय विनाशक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यथाख्यात् चारित का घाती, क्रोध संज्वलन कहलाए।
उसका नाश किए जिन स्वामी, तीर्थंकर पदवी पाए।।

जिन चरणों में वन्दन करते, हो कषाय का प्रभू विनाश।
सर्व जहाँ से हार मानकर, चरणों में आया है दास।।13।।

ॐ ह्रीं संज्वलन क्रोध कषाय विनाशक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यथाख्यात् चरित का घातक, मान संज्वलन कहलाए।
नाश किए हैं मान महामद, तीर्थंकर पद को पाए।।
जिन चरणों में वन्दन करते, हो कषाय का प्रभू विनाश।
सर्व जहाँ से हार मानकर, चरणों में आया है दास।।14।।

ॐ ह्रीं संज्वलन मान कषाय विनाशक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यथाख्यात् चरित का घातक, माया संज्वलन कहलाए।
उसका नाश किए जिन स्वामी, तीर्थंकर पदवी पाए।।
जिन चरणों में वन्दन करते, हो कषाय का प्रभू विनाश।
सर्व जहाँ से हार मानकर, चरणों में आया है दास।।15।।

ॐ ह्रीं संज्वलन माया कषाय विनाशक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यथाख्यात् चरित का घातक, लोभ संज्वलन कहलाए।
लोभ कषाय का नाश किए जिन, तीर्थंकर पद को पाए।।
जिन चरणों में वन्दन करते, हो कषाय का प्रभू विनाश।
सर्व जहाँ से हार मानकर, चरणों में आया है दास।।16।।

ॐ ह्रीं संज्वलन लोभ कषाय विनाशक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **दर्शन अरु चारित्र की, घातक कही कषाय।**
घात किए जिनराज वह, मुक्ति वधू को पाय।।

ॐ ह्रीं षोडषकषाय विनाशक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा- **पुष्पदंत के चरण में, आते बत्तिस देव।**
मन वच तन से भक्ति में, तत्पर रहें सदैव।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्थापना

सुर नर किन्नर विद्याधर भी, पुष्पदंत को ध्याते हैं।
महिमा जिनकी जग में अनुपम, उनके गुण को गाते हैं।।
पुष्पदंत हैं कन्त मोक्ष के, उनके चरणों में वंदन।
'विशद' भाव से करते है हम, श्री जिनवर का आह्वानन्।।
हे जिनेन्द्र ! करुणा करके, मेरे अन्तर में आ जाओ।
हे पुष्पदंत ! हे कृपावन्त !, प्रभु हमको दर्श दिखा जाओ।।

ॐ ह्रीं परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौष्ट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

32 देव पूजित जिन

भवन वासियों के भवनों से, देव जो आते असुर कुमार।
अधो लोक के पंक भाग से, आते हैं वह सपरिवार।।
अतिशयकारी भक्ती करने, चरण शरण में आते हैं।
चरण वंदना करते हैं सब, पद में शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं असुरकुमार इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवन वासियों के भवनों से, नागकुमार आते हैं देव।
खर पृथ्वी से अधोलोक के, लाते निज परिवार सदैव।।
अतिशयकारी भक्ती करने, चरण शरण में आते हैं।
चरण वंदना करते हैं सब, पद में शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं नागकुमार इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवन वासियों के भवनों से, विद्युत कुमार आते हैं देव।
अधोलोक की खर पृथ्वी से, लाते निज परिवार सदैव।।
अतिशयकारी भक्ती करने, चरण शरण में आते हैं।
चरण वंदना करते हैं सब, पद में शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं विद्युतकुमार इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुपर्ण कुमार देव भवनों के, खर पृथ्वी से सपरिवार।
जिन पूजा को आते मिलकर, वन्दन करते बारम्बार।।
अतिशयकारी भक्ती करने, चरण शरण में आते हैं।
चरण वंदना करते हैं सब, पद में शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं सुपर्णेन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि कुमार देव भवनों के, खर पृथ्वी से सपरिवार।
जिन पूजा को आते मिलकर, वन्दन करते बारम्बार।।
अतिशयकारी भक्ती करने, चरण शरण में आते हैं।
चरण वंदना करते हैं सब, पद में शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमार इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वात कुमार देव भवनों के, खर पृथ्वी से सपरिवार।
जिन पूजा को आते मिलकर, वन्दन करते बारम्बार।।
अतिशयकारी भक्ती करने, चरण शरण में आते हैं।
चरण वंदना करते हैं सब, पद में शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं वातकुमार इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव स्तनित आते मिलकर, खर पृथ्वी से सपरिवार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, वन्दन करते बारम्बार।।
अतिशयकारी भक्ती करने, चरण शरण में आते हैं।
चरण वंदना करते हैं सब, पद में शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं स्तनित कुमार इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवन वासियों के भवनों से, उदधि कुमार आते हैं देव।
अधोलोक की खर पृथ्वी से, लाते निज परिवार सदैव।।
अतिशयकारी भक्ती करने, चरण शरण में आते हैं।
चरण वंदना करते हैं सब, पद में शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं उदधि कुमार इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वीप कुमार देव मिलकर के, खर पृथ्वी से आते हैं।
निज परिवार साथ में अपने, पूजा करने लाते हैं।।
अतिशयकारी भक्ती करने, चरण शरण में आते हैं।
चरण वंदना करते हैं सब, पद में शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं द्वीप इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिक् सुरेन्द्र आते हैं मिलकर, खर पृथ्वी से सपरिवार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, वन्दन करते बारम्बार।।
अतिशयकारी भक्ती करने, चरण शरण में आते हैं।
चरण वंदना करते हैं सब, पद में शीश झुकाते हैं।।10।।

ॐ ह्रीं दिक् सुरेन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अधोलोक के पंक भाग से, किन्नर आते देव प्रधान।
निज परिवार सहित जिन पूजा, करते हैं मिलकर गुणगान।।

अतिशयकारी भक्ती करने, चरण शरण में आते हैं।
चरण वंदना करते हैं सब, पद में शीश झुकाते हैं।।11।।

ॐ ह्रीं किन्नर इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अधोलोक की खर पृथ्वी से, किम्पुरुषेन्द्र देव आते।
निज परिवार सहित जिन पूजा, करके प्रभु के गुण गाते।।
अतिशयकारी भक्ती करने, चरण शरण में आते हैं।
चरण वंदना करते हैं सब, पद में शीश झुकाते हैं।।12।।

ॐ ह्रीं किम्पुरुषेन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महोरगेन्द्र देव व्यन्तर के, खर पृथ्वी से आते हैं।
निज परिवार सहित भक्ती से, जिनवर के गुण गाते हैं।।
अतिशयकारी भक्ती करने, चरण शरण में आते हैं।
चरण वंदना करते हैं सब, पद में शीश झुकाते हैं।।13।।

ॐ ह्रीं महोरगेन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव इन्द्र गन्धर्व जाति के, खर पृथ्वी से आते हैं।
निज परिवार साथ में अपने,जिन पूजा को लाते हैं।।
अतिशयकारी भक्ती करने, चरण शरण में आते हैं।
चरण वंदना करते हैं सब, पद में शीश झुकाते हैं।।14।।

ॐ ह्रीं गन्धर्व इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष इन्द्र व्यन्तर के स्वामी, खर पृथ्वी से आते हैं।
निज परिवार साथ में अपने, जिन पूजा को लाते हैं।।
अतिशयकारी भक्ती करने, चरण शरण में आते हैं।
चरण वंदना करते हैं सब, पद में शीश झुकाते हैं।।15।।

ॐ ह्रीं यक्ष इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अधोलोक के पंक भाग से, आते राक्षस इन्द्र प्रधान।
निज परिवार सहित जिन पूजा, करते हैं जिन का गुणगान।।
अतिशयकारी भक्ती करने, चरण शरण में आते हैं।
चरण वंदना करते हैं सब, पद में शीश झुकाते हैं।।16।।

ॐ ह्रीं राक्षस इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूत इन्द्र व्यन्तर के स्वामी, खर पृथ्वी से आते हैं।
निज परिवार साथ में अपने, जिन पूजा को लाते हैं।।
अतिशयकारी भक्ती करने, चरण शरण में आते हैं।
चरण वंदना करते हैं सब, पद में शीश झुकाते हैं।।17।।

ॐ ह्रीं भूत इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पिशाचेन्द्र व्यन्तर देवों के, खर पृथ्वी से आते हैं।
निज परिवार साथ में अपने, जिन पूजा को लाते हैं।।
अतिशयकारी भक्ती करने, चरण शरण में आते हैं।
चरण वंदना करते हैं सब, पद में शीश झुकाते हैं।।18।।

ॐ ह्रीं पिशाचेन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्र देव ज्योतिष का स्वामी, आता निज परिवार समेत।
आठ सौ अस्सी योजन नभ से, आता जिन पूजा के हेत।।
अतिशयकारी भक्ती करने, चरण शरण में आते हैं।
चरण वंदना करते हैं सब, पद में शीश झुकाते हैं।।19।।

ॐ ह्रीं चन्द्र इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योतिष देवों का स्वामी रवि, प्रति इन्द्र परिवार समेत।
आठ सौ योजन ऊपर नभ से, आता जिन पूजा के हेत।।
अतिशयकारी भक्ति करने, चरण शरण में आते हैं।
चरण वंदना करते हैं सब, पद में शीश झुकाते हैं।।20।।

ॐ ह्रीं रवि इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वीर छन्द)

श्री फल ले सौधर्म इन्द्र, ऐरावत पर चढ़कर आवे।
पूजा करने श्री जिनेन्द्र की, निज परिवार साथ लावे।।
पुष्पदंत की पूजा में शुभ, पुष्पादिक करता अर्चन।
'विशद' भाव से चरण कमल में, करता हूँ शत्-शत् वन्दन।।21।।

ॐ ह्रीं सौधर्म इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गज पर हो आरूढ़ इन्द्र, ईशान भक्ति करने आवे।
निज परिवार साथ में लाकर, जिनवर की महिमा गावे।।
पुष्पदंत की पूजा में शुभ, पुष्पादिक करता अर्चन।
'विशद' भाव से चरण कमल में, करता हूँ शत्-शत् वन्दन।।22।।

ॐ ह्रीं ईशान इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंहारूढ़ सुकुण्डल मण्डित, सनत कुमार इन्द्र आवे।
सह परिवार आम्र के गुच्छे, लेकर जिनके गुण गावे।।
पुष्पदंत की पूजा में शुभ, पुष्पादिक करता अर्चन।
'विशद' भाव से चरण कमल में, करता हूँ शत्-शत् वन्दन।।23।।

ॐ ह्रीं सनतकुमार इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आभूषण से सज्जित होकर, माहेन्द्र कुमार इन्द्र आवे।
निज परिवार सहित भक्ती को, केले के गुच्छे लावे।।
पुष्पदंत की पूजा में शुभ, पुष्पादिक करता अर्चन।
'विशद' भाव से चरण कमल में, करता हूँ शत्-शत् वन्दन।।24।।

ॐ ह्रीं माहेन्द्र इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्म स्वर्ग के इन्द्र हंस के, ऊपर चढ़कर के आवे।
निज परिवार सहित भक्ती को, पुष्प केतकी के लावे।।
पुष्पदंत की पूजा में शुभ, पुष्पादिक करता अर्चन।
'विशद' भाव से चरण कमल में, करता हूँ शत्-शत् वन्दन।।25।।

ॐ ह्रीं ब्रह्म इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फल लेकर के दिव्य भाव से, लान्तव इन्द्र शरण आवे।
निज परिवार सहित भक्ती से, जिनवर की महिमा गावे।।
पुष्पदंत की पूजा में शुभ, पुष्पादिक करता अर्चन।
'विशद' भाव से चरण कमल में, करता हूँ शत्-शत् वन्दन।।26।।

ॐ ह्रीं लान्तव इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सेवन्ती शुक्र इन्द्र ले, चकवा पर चढ़कर आवे।
निज परिवार सहित भक्ती से, श्री जिनेन्द्र के गुण गावे।।
पुष्पदंत की पूजा में शुभ, पुष्पादिक करता अर्चन।
'विशद' भाव से चरण कमल में, करता हूँ शत्-शत् वन्दन।।27।।

ॐ ह्रीं शुक्र इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शतारेन्द्र कोयल पर चढ़कर, नील कमल लेकर आवे।
जिनवर की भक्ती करने को, निज परिवार साथ लावे।।

पुष्पदंत की पूजा में शुभ, पुष्पादिक करता अर्चन।
'विशद' भाव से चरण कमल में, करता हूँ शत्-शत् वन्दन।।28।।

ॐ ह्रीं शतारेन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गरूड़ के ऊपर पनस के फल ले, आनत इन्द्र स्वयं आवे।
निज परिवार साथ में लेकर, जिनवर के शुभ गुण गावे।।
पुष्पदंत की पूजा में शुभ, पुष्पादिक करता अर्चन।
'विशद' भाव से चरण कमल में, करता हूँ शत्-शत् वन्दन।।29।।

ॐ ह्रीं आनत इन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्म विमानारूढ़ तुम्बरू, के फल लेकर के आवे।
प्राणतेन्द्र परिवार सहित शुभ, जिनवर की महिमा गावे।।
पुष्पदंत की पूजा में शुभ, पुष्पादिक करता अर्चन।
'विशद' भाव से चरण कमल में, करता हूँ शत्-शत् वन्दन।।30।।

ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुमुद विमानारूढ़ भाव से, आरणेन्द्र गन्ने लावे।
निज परिवार सहित भक्ती से, श्री जिनेन्द्र के गुण गावे।।
पुष्पदंत की पूजा में शुभ, पुष्पादिक करता अर्चन।
'विशद' भाव से चरण कमल में, करता हूँ शत्-शत् वन्दन।।31।।

ॐ ह्रीं आरणेन्द्र परिवार सहितेन पाद पद्मार्चिताय परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल चँवर लेकर मयूर पर, चढ़के अच्युतेन्द्र आवे।
जिनवर की भक्ती में झूमे, निज परिवार साथ लावे।।
पुष्पदंत की पूजा में शुभ, पुष्पादिक करता अर्चन।
'विशद' भाव से चरण कमल में, करता हूँ शत्-शत् वन्दन।।32।।

ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्र परिवार सहितेन पाद पदमार्चिताय परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पदंत जिनवर की भक्ती, करने आते बत्तिस देव।
अष्ट द्रव्य से पूजन करते, श्री जिनेन्द्र के चरण सदैव।।
पुष्पदंत की पूजा में शुभ, पुष्पादिक करता अर्चन।
'विशद' भाव से चरण कमल में, करता हूँ शत्-शत् वन्दन।।33।।

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशत् इन्द्र परिवार सहितेन पाद पदमार्चिताय परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम वलयः

दोहा– **छियालिस पाए मूलगुण, समवशरण जिनदेव।**
अष्ट द्रव्य से पूजते, शत्-शत् इन्द्र सदैव।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्थापना

सुर नर किन्नर विद्याधर भी, पुष्पदंत को ध्याते हैं।
महिमा जिनकी जग में अनुपम, उनके गुण को गाते हैं।।
पुष्पदंत हैं कन्त मोक्ष के, उनके चरणों में वंदन।
'विशद' भाव से करते हैं हम, श्री जिनवर का आह्वानन्।।
हे जिनेन्द्र ! करूणा करके, मेरे अन्तर में आ जाओ।
हे पुष्पदंत ! हे कृपावन्त !, प्रभु हमको दर्श दिखा जाओ।।

ॐ ह्रीं परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौष्ट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

10 जन्म के अतिशय

(रोला छंद)

दश अतिशय पावें प्रभु पावन, निर्मल सुखदाई।
स्वेद रहित जिनवर का तन है, अति पावन भाई।।

श्री अरहंत सकल परमातम, 'विशद' ज्ञान धारी।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं स्वेद रहित सहजातिशय धारक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तन है मल मूत्र रहित शुभ, अतिपावन भाई।
भव्यों को आह्लादित करता, निर्मल सुखदाई।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान धारी।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं नीहार रहित सहजातिशय धारक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समचतुस्र संस्थान प्रभु का, सुंदर सुखदाई।
घट बढ़ अंग ना होवे कोई, जिन की प्रभुताई।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान धारी।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं सम चतुष्क संस्थान सहजातिशय धारक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वज्रवृषभ नाराच संहनन, श्री जिनेन्द्र पाए।
परमौदारिक तन का बल प्रभु, अतिशय प्रगटाए।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान धारी।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं वज्र वृषभ नाराच संहनन सहजातिशय धारक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित परम सुगंधित श्री जिन, मनहर तन पाए।
तीर्थंकर प्रकृति के कारण, अतिशय दिखलाए।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान धारी।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं सुगंधित तन सहजातिशय धारक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूप सुसुंदर महा मनोहर, श्री जिनवर पाए।
अतिशय रूप के धारी जिनके, पावन गुण गाए।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान धारी।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अतिशय रूप सहजातिशय धारक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ अधिक इक सहस सुलक्षण, तन में कहलाए।
जन्म होत ही श्री जिनवर ने, मंगलमय पाए।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान धारी।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं सहस्राष्ट लक्षण सहजातिशय धारक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के तन में रक्त मनोहर, श्वेत वर्ण भाई।
यह अतिशय अनुपम कहलाए, प्रभु की प्रभुताई।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान धारी।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं श्वेत रुधिर सहजातिशय धारक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन-जन का मन मोहित करती, हित-मित प्रिय वाणी।
अतिशय अनुपम मंगलमय है, जग की कल्याणी।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान धारी।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं प्रिय हित वचन सहजातिशय धारक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व जहाँ में अतिशयकारी, बल जिनवर पाए।
भक्ति भाव से सुर नर प्रभु के, चरणों सिर नाए।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान धारी।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलकारी।।10।।

ॐ ह्रीं अतुल्य बल सहजातिशय धारक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

10 केवलज्ञान के अतिशय

केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय पावें।
शत् योजन दुष्काल वहाँ का, शीघ्र विनश जावे।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।11।।

ॐ ह्रीं गव्यूति शत् चतुष्टय सुभिक्षत्व घातिक्षयजातिशय धारक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होय गमन आकाश प्रभू का, अति विस्मयकारी।
भक्ति भाव से आते मिलकर, वहाँ देव भारी।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।12।।

ॐ ह्रीं आकाश गमन घातिक्षयजातिशय धारक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, भक्ती हितकारी।
मार सके न कोई किसी को, हैं अदया हारी।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।13।।

ॐ ह्रीं अदयाभाव घातिक्षयजातिशय धारक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होय नहीं उपसर्ग प्रभू पर, किसी तरह भाई।
विशद ज्ञान की महिमा है यह, प्रभु की प्रभुताई।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।14।।

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव घातिक्षयजातिशय धारक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा रोग से पीड़ित सारे, जग में जीव कहे।
क्षुधा वेदना को जीते प्रभु, बिन आहार रहे।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।15।।

ॐ ह्रीं कवलाहाराभाव घातिक्षयजातिशय धारक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में अधर विराजे, पूर्व दृष्टि कीजे।
भवि जीवों को चतुर्दिशा में, प्रभु दर्शन दीजे।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।16।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुखदर्श घातिक्षयजातिशय धारक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब विद्या के ईश्वर प्रभु जी, सकल ज्ञानधारी।
ध्यावें प्रभु को भक्ति भाव से, होवे सुखकारी।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।17।।

ॐ ह्रीं सर्व विद्येश्वरत्व घातिक्षयजातिशय धारक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुद्गल के परमाणु मिलकर, बने देह भाई।
छाया नहीं पड़े प्रभु तन की, प्रभु अतिशय पाई।।

श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।18।।

ॐ ह्रीं छाया रहित घातिक्षयजातिशय धारक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बढ़ें नहीं नख केश जरा भी, विशद ज्ञान जगते।
उपमा नहीं है जग में कोई, अति मनहर लगते।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।19।।

ॐ ह्रीं समान नख केशत्व घातिक्षयजातिशय धारक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पलक झपकती नहीं बंद न, खुलती है भाई।
नाशादृष्टी रहे निरंतर, यह शुभ प्रभुताई।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।20।।

ॐ ह्रीं अक्षस्पंद रहित घातिक्षयजातिशय धारक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

14 देवकृत अतिशय

चौदह अतिशय कहे देवकृत, श्री जिन के भाई।
अर्धमागधी भाषा प्रभु की, भविजन सुखदाई।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।21।।

ॐ ह्रीं सर्वार्धमागधी भाषा देवोपनीतातिशय धारक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैत्रीभाव सभी जीवों में, स्वयं जगे भाई।
महिमा विस्मयकारी है शुभ, प्रभु की प्रभुताई।।

तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।22।।

ॐ ह्रीं सर्व मैत्रीभाव देवोपनीतातिशय धारक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् ऋतु के फल फूल स्वयं ही, खिल जाते भाई।
श्री जिन का हो गमन जहाँ पर, प्रभु की प्रभुताई।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।23।।

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादि तरु परिणाम देवोपनीतातिशय धारक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्पण सम भूमी हो जावे, अति मंगलकारी।
जहाँ चरण पड़ते श्री जिनके, हो विस्मयकारी।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।24।।

ॐ ह्रीं आदर्शतल प्रतिमा रत्नमयी देवोपनीतातिशय धारक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित मंद पवन बहती है, भविजन सुखदाई।
श्रीजिन की महिमा का फल है, प्रभु की प्रभुताई।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।25।।

ॐ ह्रीं सुगंधित विहरण मनुगत वायुत्व देवोपनीतातिशय धारक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वानंद होय इस जग में, जिन दर्शन पाके।
सुरपति नरपति धन्य मानते, जिन के गुण गाके।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।26।।

ॐ ह्रीं सर्वानंद कारक देवोपनीतातिशय धारक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कंटक रहित भूमि हो जावे, श्री जिन पद पाके।
सुरपति नरपति हर्ष मनावें, श्री जिन गुण गाके।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।27।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमित धूलि कंटकादि देवोपनीतातिशय धारक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नभ में जय जयकार करें सुर, महिमा दिखलावें।
हो अपार सुखकारी जग में, प्रभु के गुण गावें।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।28।।

ॐ ह्रीं आकाशे जय-जयकार देवोपनीतातिशय धारक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंधोदक की वृष्टि करें सुर, मन में हर्षावें।
जन-जन को हितकारी पावन, महिमा दिखलावें।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।29।।

ॐ ह्रीं मेघकुमार कृत गंधोदक वृष्टि देवोपनीतातिशय धारक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चरण कमल तल कमल रचाते, पावन सुखदाई।
सुर नरेन्द्र की महिमा है यह, प्रभु की प्रभुताई।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।30।।

ॐ ह्रीं चरण कमल तल रचित स्वर्ण कमल देवोपनीतातिशय धारक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गगन सुनिर्मल हो जावे अति, श्री जिन के आवें।
नर सुरेन्द्र अति नाचे गावें, मन में हर्षावें।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।31।।

ॐ ह्रीं शरदकाल वन्निर्मल गगन देवोपनीतातिशय धारक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व दिशाएँ धूम रहित हों, मनहर सुखदाई।
नाचें गावें हर्ष मनावें, सुर नर गुण गाई।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।32।।

ॐ ह्रीं सर्वानंदकारक देवोपनीतातिशय धारक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म चक्र चलता है आगे, शुभ महिमाधारी।
भवि जीवों के मन को मोहे, अति मंगलकारी।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुर कृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।33।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्र चतुष्टय देवोपनीतातिशय धारक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल द्रव्य अष्ट शुभ लावें, भक्ति सहित भाई।
देव समर्पित रहें भाव से, जिन महिमा गाई।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुर कृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।34।।

ॐ ह्रीं अष्ट मंगल द्रव्य देवोपनीतातिशय धारक परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

8 प्रातिहार्य के अर्घ्य (हरिगीतिका छंद)

तरु अशोक सुंदर सुखदाई, दीखे मनहर भाई।
सब जीवों के शोक हरे जो, यह प्रभु की प्रभुताई।।
श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसु धारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।35।।

ॐ ह्रीं अशोक तरु सत्प्रातिहार्य सहित परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुवृष्टि करते सुरगण, मन में अति हर्षावें।
पूजा अर्चा करें वंदना, शुभ अतिशय गुण गावें।।
श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसु धारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ती भाव से, अतिशय मंगलकारी।।36।।

ॐ ह्रीं पुष्प वृष्टि सत्प्रातिहार्य सहित परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य ध्वनि खिरती जिनवर की, ओम्कार मय प्यारी।
पाप विनाशी धर्म प्रकाशी, जग में मंगलकारी।।
श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसु धारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।37।।

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि सत्प्रातिहार्य सहित परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौंसठ चँवर ढुरें प्रभु आगे, सुंदर शुभम् सुखारी।
महिमा दिखलाते श्री जिन की, होते विस्मयकारी।।
श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसु धारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।38।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि चामर सत्प्रातिहार्य सहित परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्न जड़ित सुंदर सिंहासन, श्री जिनवर का सोहे।
अधर विराजे उस पर श्री जिन, सब जग को मोहे।।
श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसु धारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।39।।

ॐ ह्रीं सिंहासन सत्प्रातिहार्य सहित परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भामण्डल के आगे लज्जित, कोटि सूर्य होवे।
सप्त भवों को जाने भविजन, मन की जड़ता खोवे।।
श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसु धारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।40।।

ॐ ह्रीं भामण्डल सत्प्रातिहार्य सहित परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव दुंदुभि बाजे बजते, सब आकाश गुंजावें।
देव करें गुणगान भक्ति से, मन में अति हर्षावें।।
श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसु धारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।41।।

ॐ ह्रीं देवदुंदुभि सत्प्रातिहार्य सहित परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन छत्र शुभ रत्न जड़ित हैं, चन्द्र कांति छवि धारी।
तीन लोक की महिमा गावें, शुभ अतिशय सुखकारी।।
श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसु धारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।42।।

ॐ ह्रीं छत्र त्रय सत्प्रातिहार्य सहित परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

4 अनंत चतुष्टय

दर्श अनंत पाए जिनवर जी, सर्व लोक दर्शाये।
कर्म दर्शनावरणी नाशे, तिन पद शीश झुकाये।।
श्री अरहंत सकल परमातम, अनंत चतुष्टय धारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।43।।

ॐ ह्रीं अनंत दर्शन गुण प्राप्त परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरणी कर्म नाशकर, केवलज्ञान प्रकाशे।
सर्व लोक के ज्ञाता श्रीजिन, सर्व चराचर भासे।।
श्री अरहंत सकल परमातम, अनंत चतुष्टय धारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।44।।

ॐ ह्रीं अनंत ज्ञान गुण प्राप्त परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहनीय को मोहित करके, ऐसा सबक सिखाया।
हार मान झुक गया चरण में, पास नहीं फिर आया।।
श्री अरहंत सकल परमातम, अनंत चतुष्टय धारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।45।।

ॐ ह्रीं अनंत सुख गुण प्राप्त परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोला छन्द)

अंतराय का नाश किए प्रभु, बल अनंत प्रगटाया।
चरण शरण में आन झुकी है, सारे जग की माया।।
श्री अरहंत सकल परमातम, अनंत चतुष्टय धारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।46।।

ॐ ह्रीं अनंत वीर्य गुण प्राप्त परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण की पूर्व दिशा में, मानस्तंभ बना मनहार।
चतुर्दिशा में श्री जिनेन्द्र के, बिम्ब विराजित मंगलकार।।

भाव सहित हम वन्दन करके, चरणों चढ़ा रहे है अर्घ्य।
पूजा के फल से हम पाएँ, अतिशयकारी सुपद अनर्घ।।47।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित पूर्व दिक्मानस्तंभ चतुर्दिक चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण के दक्षिण में शुभ, मानस्तंभ बना मनहार।
चतुर्दिशा में श्री जिनेन्द्र के, बिम्ब विराजित मंगलकार।।
भाव सहित हम वन्दन करके, चरणों चढ़ा रहे हैं अर्घ्य।
पूजा के फल से हम पाएँ, अतिशयकारी सुपद अनर्घ।।48।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित दक्षिण दिक्मानस्तंभ चतुर्दिक चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानस्तम्भ बना पश्चिम में, समवशरण के मंगलकार।
जिनबिम्बों का दर्शन जग में, प्राणी के होता सुखकार।।
भाव सहित हम वन्दन करके, चरणों चढ़ा रहे हैं अर्घ्य।
पूजा के फल से हम पाएँ, अतिशयकारी सुपद अनर्घ।।49।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित पश्चिम दिक्मानस्तंभ चतुर्दिक चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानस्तंभ बना उत्तर में, समवशरण के मंगलकार।
जिनबिम्बों का दर्शन जग में, प्राणी को होता सुखकार।।
भाव सहित हम वन्दन करके, चरणों चढ़ा रहे हैं अर्घ्य।
पूजा के फल से हम पाएँ, अतिशयकारी सुपद अनर्घ।।50।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित उत्तर दिक्मानस्तंभ चतुर्दिक चतुर्जिन प्रतिमाभ्य: परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

है चैत्य भूमी परम पावन, जीव को सुखकार है।
चारों दिशा में बिम्ब जिसके, श्रेष्ठ मंगलकार हैं।।

दर्श करने को प्रभू हम, द्वार तेरे आए हैं।
अर्घ्य देकर के चरण में, गुण प्रभू के गाए हैं।।51।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित चैत्य प्रसाद भूमि सम्बन्धी जिन मंदिर जिन प्रतिमाभ्य: परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खातिका भूमी मनोहर, श्रेष्ठ मंगलमय रही।
कमल पुष्पों से सुशोभित, दूसरी भूमी कही।।
दर्श करने को प्रभू हम, द्वार तेरे आए हैं।
अर्घ्य देकर के चरण में, गुण प्रभू के गाए हैं।।52।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित खातिका भूमि सम्बन्धी जिन मंदिर जिन प्रतिमाभ्य: परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लता भूमी तीसरी है, भव्य अति सुखकार है।
रम्य बेलों से सुशोभित, जगत मंगलकार है।।
दर्श करने को प्रभू हम, द्वार तेरे आए हैं।
अर्घ्य देकर के चरण में, गुण प्रभू के गाए हैं।।53।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित लता वन भूमि सम्बन्धी जिन मंदिर जिन प्रतिमाभ्य: परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूमि उपवन है चतुर्थी, दिव्य अतिशयकार है।
फूल फल से तरु सुशोभित, रम्य अति मनहार है।।
दर्श करने को प्रभू हम, द्वार तेरे आए हैं।
अर्घ्य देकर के चरण में, गुण प्रभू के गाए हैं।।54।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित उपवन भूमि सम्बन्धी जिन मंदिर जिन प्रतिमाभ्य: परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्वजा भूमी है मनोहर, चिह्न दश विधि की रही।
आठ इक शत् ध्वजाएँ शुभ, जैन आगम में कही।।
दर्श करने को प्रभू हम, द्वार तेरे आए हैं।
अर्घ्य देकर के चरण में, गुण प्रभू के गाए हैं।।55।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित ध्वज भूमि सम्बन्धी जिन मंदिर जिन प्रतिमाभ्य: परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पतरु भूमी मनोहर, श्रेष्ठ मंगलकार है।
सिद्ध जिनके बिम्ब जिसमें, श्रेष्ठ अपरम्पार है।।
दर्श करने को प्रभू हम, द्वार तेरे आए हैं।
अर्घ्य देकर के चरण में, गुण प्रभू के गाए हैं।।56।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित कल्पवृक्ष भूमि सम्बन्धी जिन मंदिर जिन प्रतिमाभ्य: परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवन भूमी के भवन में, देव आते भाव से।
नृत्य करके गीत गाते, जिन प्रभू के चाव से।।
दर्श करने को प्रभू हम, द्वार तेरे आए हैं।
अर्घ्य देकर के चरण में, गुण प्रभू के गाए हैं।।57।।

ॐ ह्रीं समवशरण भूमि स्थित भवन भूमि सम्बन्धी जिन मंदिर जिन प्रतिमाभ्य: परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठवीं भूमी है अनुपम, नाम श्री मण्डप रहा।
सभा द्वादश का कथन शुभ, जैन आगम में कहा।।
दर्श करने को प्रभू हम, द्वार तेरे आए हैं।
अर्घ्य देकर के चरण में, गुण प्रभू के गाए हैं।।58।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित मण्डप भूमि सम्बन्धी जिन मंदिर जिन प्रतिमाभ्य: परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पीठ रत्नों से सुसज्जित, श्रेष्ठ अतिशय कार है।
धर्म चक्र लेकर खड़े हैं, यक्ष जिसके द्वार हैं।।
दर्श करने को प्रभू हम, द्वार तेरे आए हैं।
अर्घ्य देकर के चरण में, गुण प्रभू के गाए हैं।।59।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित प्रथम पीठोपरि धर्मचक्राय परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पीठ द्वितिय पर ध्वजाएँ, द्रव्य मंगल आठ हैं।
धूप घट नव निधि सुसंयुत, श्रेष्ठ जिसके ठाठ हैं।।
दर्श करने को प्रभू हम, द्वार तेरे आए हैं।
अर्घ्य देकर के चरण में, गुण प्रभू के गाए हैं।।60।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित द्वितीय पीठोपरि महाध्वजाभ्य: परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पीठ तृतिय महा मंगल, कमल का आसन रहा।
अधर जिस पर श्री जिन हैं, परम यह अतिशय कहा।।
दर्श करने को प्रभू हम, द्वार तेरे आए हैं।
अर्घ्य देकर के चरण में, गुण प्रभू के गाए हैं।।61।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित तृतीय पीठोपरि गंधकुट्यै परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अठ अशीति परम गणधर, साथ में जिनके कहे।
जिन प्रभू की भक्ति करने, में सदा ही रत रहे।।
दर्श करने को प्रभू हम, द्वार तेरे आए हैं।
अर्घ्य देकर के चरण में, गुण प्रभू के गाए हैं।।62।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित अष्ट अशीति गणधर सहित परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च सप्तति सहस केवल, ज्ञान के धारी रहे।
सभा में जिनदेव की शुभ, परम अविकारी कहे।।
दर्श करने को प्रभू हम, द्वार तेरे आए हैं।
अर्घ्य देकर के चरण में, गुण प्रभू के गाए हैं।।63।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित पञ्च सप्तति सहस्त्र केवलज्ञानी मुनि सहित परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्ष द्वय ऋषिराज जिनकी, भक्ति में तत्पर रहे।
मोक्ष मंजिल के विशद वह, भी तो अधिकारी कहे।।
दर्श करने को प्रभू हम, द्वार तेरे आए हैं।
अर्घ्य देकर के चरण में, गुण प्रभू के गाए हैं।।64।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित द्वय लक्ष्य ऋषि सहित परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतु:षष्टी मूलगुण हैं, सभा मंगल कार है।
ज्ञान केवल प्राप्त जिन को, नमन् शत्-शत् बार है।।
दर्श करने को प्रभु हम, द्वार तेरे आए हैं।
अर्घ्य देकर के चरण में, गुण प्रभु के गाए हैं।।65।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित षट् चत्वारिंशत् मूलगुण सहित परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्यह (1) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐंम् अर्हं परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः। (2) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं शुक्र अरिष्ट निवारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय नमः कुरु-कुरु स्वाहा। (11000)

समुच्चय जयमाला

दोहा- धवल रंग से शोभते, पुष्पदंत भगवान।
धवल गुणों के भाव से, करते हैं गुणगान।।

(छन्द ताटंक)

जय पुष्पदंत जिन राज महा, जो पाए केवलज्ञान अहा।
प्रभु दर्शन ज्ञान प्रदायक हैं, भवि जीवों को सुखदायक हैं।।1।।
जिनको असुरेन्द्र सुरेन्द्र भजे, अहमिन्द्र नरेन्द्र गणेन्द्र जजें।
प्रभु तीन लोक के नायक हैं, भवि जीवों को सुखदायक हैं।।2।।
प्रभु जग में अतिशय धारी हैं, जिन वीतराग अविकारी हैं।
जो भक्ती पूजा लायक हैं, भवि जीवों को सुखदायक हैं।।3।।
प्रभु केवलज्ञान जगाए हैं, शुभ दर्श विशद प्रगटाए हैं।
जिन सम्यक् पाए क्षायक हैं, भवि जीवों को सुखदायक हैं।।4।।
जिन बल अनन्त के धारी हैं, प्रभु शिवपुर के अधिकारी हैं।
प्रभु आठों कर्म नशायक हैं, भवि जीवों को सुखदायक हैं।।5।।

वसु प्रातिहार्य जिनधारे हैं, शुभ दिव्य ध्वनि उच्चारे हैं।
जिन लोकालोक विज्ञायक हैं, भवि जीवों को सुखदायक हैं।।6।।
शुभ गंध कुटी पर राजत हैं, कई दिव्य नगाड़े बाजत हैं।
जिन राज प्रसिद्धि बढ़ायक हैं, भवि जीवों को सुखदायक हैं।।7।।
अघ कर्म जो नाच नचावत हैं, त्रिय लोक में भ्रमण करावत हैं।
जिन घाति कर्म नशायक हैं, भवि जीवों को सुखदायक हैं।।8।।
जिनके आहार विहार नहीं, परमौदारिक मंगल देह कही।
जग में सबके मन भायक हैं, भवि जीवों को सुखदायक हैं।।9।।
प्रभु कर्म कलंक विनाशक हैं, निज केवलज्ञान प्रकाशक हैं।
जिन मोह की फौज भगायक हैं, भवि जीवों को सुखदायक हैं।।10।।
सब इष्ट अनिष्ट विनाशक हैं, निज आतम के जिन शासक हैं।
कृत कृत्य जगत् त्रय नायक हैं, भवि जीवों को सुखदायक हैं।।11।।
प्रभु देवों के भी देव कहे, शरणागत देव सदैव रहे।
शत् इन्द्र चरण सिर नावत हैं, भवि जीवों को सुखदायक हैं।।12।।
तुमरी शरणागत आन पड़े, चरणों में आके भक्त खड़े।
हम तो तुमरे गुण गायक हैं, भवि जीवों को सुखदायक हैं।।13।।
हे दान पति ! कुछ दान करो, अपने गुण हमें प्रदान करो।
हम तो प्रभु गुण के ग्राहक हैं, भवि जीवों को सुखदायक हैं।।14।।
अब मुझ पर दया प्रदान करो, प्रभु विशद ज्ञान का दान करो।
हम नाथ गुणन के पायक है, भवि जीवों को सुखदायक हैं।।15।।

दोहा- करुणाकर करुणा करो, प्रभु करुणा के साथ।
'विशद' गुणों के हेतु मैं, चरण झुकाता माथ।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित परम पुण्डरीक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- पूर्ण करो मम् आश यह, पुष्पदंत भगवान।
पुष्प चढ़ाऊँ भाव से, पाने पद निर्वाण।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत् (इत्याशीर्वाद :)

आरती

(तर्ज:– नर तन रतन अमोल इसे...)

रत्न जड़ित मंगलमय पावन, दीप जलाओ जी।
पुष्पदंत तीर्थंकर जिन की, आरती गाओ जी।।
रत्न जड़ित......

1. जन्म लिया काकन्दी नगरी, आनन्द मंगल छाया जी।
इन्द्र ने पाण्डुक शिला के ऊपर, मंगल न्हवन कराया जी।
जिनवर की आरति करने, ओऽऽ थाल सजाओ जी।
पुष्पंदत तीर्थंकर जिन...... ।।
2. उल्कापात देखकर प्रभु के, मन वैराग्य समाया जी।
पञ्चमुष्ठि से केशलुंच कर, महाव्रतों को पायाजी।
आतम की सिद्धि करने, ओ ऽऽऽ ध्यान लगाओ जी।
पुष्पंदत तीर्थंकर जिन...... ।।
3. कार्तिक शुक्ला दोज तिथि को, केवलज्ञान जगाया जी।
पुष्पक वन में शत् इन्द्रों ने, समवशरण बनवाया जी।
पुष्पदंत की दिव्य ध्वनि को, ओऽऽऽ सब मिल पाओ जी।
पुष्पंदत तीर्थंकर जिन...... ।।
4. भादों शुक्ल अष्टमी को प्रभु, सारे कर्म नशाए जी।
सिद्ध शिला पर जाने वाले, मोक्ष लक्ष्मी पाएजी।
पुष्पदंत के पद में मिलकर, ओऽऽऽ शीश झुकाओजी।
पुष्पंदत तीर्थंकर जिन...... ।।
5. जिस पदवी को प्रभु ने पाया, हमको भी अब पाना है।
ज्ञान ध्यान तप के द्वारा अब, केवलज्ञान जगाना है।
सर्व कर्म के नाश हेतु तुम, ओऽऽऽ जिन गुण गाओ जी।
पुष्पंदत तीर्थंकर जिन...... ।।

प्रशस्ति

दोहा

लोकाकाश के मध्य में, जम्बू द्वीप महान्।
जम्बू वृक्ष से हो रही, जिसकी शुभ पहचान।।1।।
दक्षिण में जिसके रहा, भरत क्षेत्र सुखकार।
लवण समुद्र के पास है, धनुष रूप आकार।।2।।
गंगा सिन्धु विजयार्द्ध से, हो जाते छह भाग।
आर्य खण्ड है मध्य में, जिसमें हो तप त्याग।।3।।
तीर्थंकर होते सदा, हो जब चौथा काल।
जिनकी महिमा जगत् में, अतिशय रही विशाल।।4।।
चौबिस जिनवर में हुए, पुष्पदंत भगवान।
जिनकी महिमा है अगम, कौन करे गुणगान।।5।।
काकन्दी में जन्म ले, जग को किया निहाल।
उनके चरणों में विशद, वन्दन करूँ त्रिकाल।।6।।
पुष्पदन्त भगवान का, करने को गुणगान।
भक्ती के शुभ भाव से, लिक्खा विशद विधान।।7।।
विक्रम सम्वत् बीस सौ, चौंसठ रहा विशाल।
अश्विन कृष्णा त्रयोदशी, दिन का सायं काल।।8।।
वीर निर्वाण पच्चीस सौ चौंतिस का यह वर्ष।
प्रभु का शुभ गुणगान कर, हुआ हृदय में हर्ष।।9।।
पूजा भक्ती भाव से, पढ़ें सुने धीमन्त।
क्षमा करें हमको सुधी, जिन आगम सब संत।।10।।
पूजा कर जिनदेव की, करूँ कर्म का नाश।
'विशद' ज्ञान को प्राप्त कर, होवे मुक्ती वास।।11।।

●●●

।। श्री शीतलनाथाय नमः ।।

सौभाग्यप्रदायक
श्री शीतलनाथ विधान

प्रथम वलय–8
द्वितीय–16
तृतिय–24
चतुर्थ–32
पंचम्–40

रचयिता :
प.पू. क्षमामूर्ति 108 आचार्य विशदसागरजी महाराज

स्तवन

दोहा- परमेष्ठी की वन्दना, करते योग सम्हार।
पंचम गति का दीजिए, हमको शुभ उपहार।।

(शम्भू छन्द)

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु जग में पावन।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जैनागम को शत् वन्दन।।
इनकी भक्ती जो भी करता, मंगल हो उनका जीवन।
इनके प्रति श्रद्धा करने से, हो जाए सम्यक् दर्शन।।

चत्तारि मंगल हैं जग में, अरहंत सिद्ध साहू मंगल।
रत्नत्रय से सहित धर्म शुभ, उत्तम क्षमा आदि मंगल।।
चत्तारि उत्तम हैं जग में, अरहंत सिद्ध साहू उत्तम।
राग रहित शुभ वीतराग युत, धर्म रहा जग में उत्तम।।

विषहर संसारोच्छेदक शुभ, कर्मों का शत्रु अनुपम।
चत्तारि हैं शरण जगत् में, अरहंत सिद्ध साहू शरणं।।
सिद्धी प्रदायक महामंत्र है, शिव सुखकर्त्ता रहा महान्।
महामंत्र को जपने वाला, पा जाता है केवलज्ञान।।

अन्य शरण कोई नहीं जगत् में, परमेष्ठी हैं एक शरण।
करुणाकारी हे करुणानिधि ! हृदय बसें तव दोय चरण।।
परमेष्ठी शुभ पाँच हमारे, उनकी हम जयकार करें।
परम शांति हो जाय जगत में, जग के सारे कष्ट हरें।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री शीतलनाथ पूजन

(स्थापना)

शीतलनाथ अनाथों के हैं, स्वामी अनुपम अविकारी।
शांति प्रदायक सब सुखकर्त्ता, ग्रह अरिष्ट पीड़ाहारी।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा अनुपम, करे कर्म का पूर्ण शमन।
भाव सहित हम करते प्रभु का, हृदय कमल में आह्वानन्।।
यह भक्त खड़े हैं आश लिए, उनकी विनती स्वीकार करो।
तुम हृदय कमल पर आ तिष्ठो, बस इतना सा उपकार करो।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तर्ज - सोलहकारण की)

चरण चढ़ाऊँ निर्मल नीर, त्रयधारा देकर गंभीर।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
जन्मादी का रोग नशाय, कर्म नाश मुक्ती पद पाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घिसकर के चन्दन गोशीर, मैटे जो भव-भव की पीर।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
प्राणी का भवताप नशाय, अतिशयकारी सौख्य दिलाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अमल अखण्ड महान्, पद पाएँ हम हे भगवान !
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

सुरभित अक्षत धोकर लाय, प्रभु चरणों में दिए चढ़ाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुगन्धित ले मनहार, रंग बिरंगे विविध प्रकार।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
काम बाण का रोग नशाय, चेतन की शक्ती खिल जाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के ताजे ले पकवान, चढ़ा रहे करके गुणगान।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
क्षुधा रोग मेरा नश जाय, तव चरणों की भक्ती पाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर का होय विनाश, पाएँ सम्यक् ज्ञान प्रकाश।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
रत्नमयी शुभ दीप जलाय, प्रभु के चरणों दिए चढ़ाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट गंध युत धूप महान्, करने अष्ट कर्म की हान।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
अष्ट कर्म को पूर्ण नशाय, सिद्ध शिला हमको मिल जाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री फल केला आम अनार, भाँति-भाँति के ले मनहार।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
श्री जिनेन्द्र के चरण चढ़ाय, मोक्ष सुफल पाने को भाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य ले मंगलकार, अर्घ्य चढ़ाएँ अपरम्पार।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
पद अनर्घ हमको मिल जाय, रत्नत्रय पा मुक्ती पाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

चैत वदी आठें शीतल जिन, मात सुनंदा उर धारे।
रत्नवृष्टि करके इन्द्रों ने, बोले प्रभु के जयकारे।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ वदी द्वादशी सुहावन, भद्दलपुर में शीतलनाथ।
मात सुनंदा के गृह जन्मे, जिनके चरण झुकाऊँ माथ।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ कृष्ण द्वादशी सुहावन, जिनवर श्री शीतल स्वामी।
जैन दिगम्बर दीक्षा धारे, बने मोक्ष के अनुगामी।।
चरणों में वन्दन करते मम्, जीवन यह मंगलमय हो।
गुण गाते हम भाव सहित अब, मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

पौष कृष्ण की चौदश आई, शीतलनाथ जिनेश्वर भाई।
बने उसी दिन केवलज्ञानी, ज्ञान सुधामृत के वरदानी।।
जिस पद को प्रभू तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा चतुर्दश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

अश्विन शुक्ला अष्टमी, जिन श्री शीतलनाथ जी।
मोक्ष गिरि सम्मेद से पाए, कई मुनि भी साथ जी।।
हम कर रहे पूजा प्रभू की, श्रेष्ठ भक्ती भाव से।
मस्तक झुकाते जोड़ कर द्वय, प्रभू पद में चाव से।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - तीन लोक में पूज्य हैं, शीतल नाथ त्रिकाल।
विशद भाव से गा रहे, उनकी हम जयमाल।।

(पद्धरि छन्द)

जय शीतलनाथ सुधीर धीर, जय ज्ञान सुधामृत धरणधीर।
जय धर्म शिरोमणि परम वीर, जय भव सागर के श्रेष्ठ तीर।।

जय भद्दलपुर में जन्म लीन, जय दृढ़रथ नृप शुभ राज कीन।
जय मात सुनन्दा गर्भ पाय, सपने सोलह देखे सुखाय।।
जय चैत कृष्ण आठे जिनेश, जिन गर्भ प्राप्त कीन्हे विशेष।
जय माघ वदी बारस सुजान, प्रभु जन्म लिए जग में महान्।।
खुशियाँ छाई जग में अपार, वन्दन कीन्हे सुर बार-बार।
सौधर्म इन्द्र तव चरण आय, ऐरावत अपने साथ लाय।।
आई थी उसके शची साथ, लीन्हा बालक को स्वयं हाथ।
पाण्डुक वन को चल दिया इन्द्र, थे साथ वहाँ पर कई सुरेन्द्र।।
फिर न्हवन किए प्रभु का अपार, महिमा का जिसकी नहीं पार।
तव कल्पवृक्ष लक्षण सुजान, भक्ती कीन्हीं प्रभु की महान्।।
चरणों में सब कीन्हे प्रणाम, प्रभु का शीतल जिन दिए नाम।
फिर माघ वदी बारस सुजान, प्रभु तप धारे जग में महान्।।
कीन्हें निज आतम का सुध्यान, फिर पाए केवल ज्ञान भान।
तिथि पौष वदी चौदस जिनेश, शत् इन्द्र किए भक्ती विशेष।।
तव समवशरण रचना महान्, सुरगण मिलकर कीन्हें प्रधान।
फिर दिव्य देशना दिए नाथ, गणधर झेले तब झुका माथ।।
तब भव्य जीव पाए सुज्ञान, संयम धारे कई जीव आन।
फिर अश्विन सुदि आठे जिनेश, जिन कर्म नाश कीन्हे अशेष।।
सम्मेद शिखर से मुक्ति पाय, फिर सिद्ध शिला पहुँचे जिनाय।
शिवपुर का कीन्हे प्रभु राज, जिन पर हम करते सभी नाज।।

दोहा – शीतल नाथ जिनेन्द्र के, चरण झुकाएँ माथ।
मोक्ष मार्ग में दीजिए, हम सबका प्रभु साथ।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – भाव सहित वन्दन करें, चरणों में हे ईश।
विशद भाव से पाद में, झुका रहे हम शीश।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

प्रथम वलयः

दोहा– काल अनादी से किया, कर्मों ने बेहाल।
नष्ट हेतु करते यहाँ, पुष्पाञ्जली त्रिकाल।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

शीतलनाथ अनाथों के हैं, स्वामी अनुपम अविकारी।
शांति प्रदायक सब सुखकर्त्ता, ग्रह अरिष्ट पीड़ाहारी।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा अनुपम, करे कर्म का पूर्ण शमन।
भाव सहित हम करते प्रभु का, हृदय कमल में आह्वानन्।।
यह भक्त खड़े हैं आस लिए, उनकी विनती स्वीकार करो।
तुम हृदय कमल पर आ तिष्ठो, बस इतना सा उपकार करो।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टकर्म विनाशक श्री जिन के अर्घ्य

(चौपाई)

ज्ञानावर्ण कर्म दुखदाई, ज्ञान सुगुण को ढाके भाई।
श्री जिनेन्द्र ने उसको नाशा, अतिशय केवल ज्ञान प्रकाशा।।1।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावर्णी कर्म विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दर्शनावर्णी जानो, दर्शन गुण का घाती मानो।
दर्श अनन्त प्रभु जी पाए, सिद्धालय में धाम बनाए।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनावर्णी कर्म विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेदनीय अघ कर्म सताए, सुख-दुख का वेदन करवाए।
श्री जिनेन्द्र उसके हैं नाशी, गुण अनन्त पाए अविनाशी।।3।।

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहनीय दो रूप बताया, दर्शन चारित मोह कहाया।
मोहकर्म नाशी जिन गाए, सुख अनन्त प्रभुजी प्रगटाए।।4।।

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयु कर्म यह जगत भ्रमाए, भव-भव जन्म मरण करवाए।
निज स्वरूप शीतल जिन पाए, गुण अवगाहन जो प्रगटाए।।5।।

ॐ ह्रीं आयु कर्म विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम कर्म का काम निराला, नाना देह बनाने वाला।
नामकर्म नाशी जिन गाए, प्रभु सूक्ष्मत्व सुगुण प्रगटाए।।6।।

ॐ ह्रीं नाम कर्म विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊँच-नीच पद देता भाई, गोत्र कर्म जग में दुखदायी।
शीतल जिनवर कर्म नशाए, अगुरुलघु गुण जो प्रगटाए।।7।।

ॐ ह्रीं गोत्र कर्म विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तराय की महिमा न्यारी, विघ्न डालता है जो भारी।
जिन शीतल ने उसे नशाया, वीर्य अनन्त स्वयं प्रगटाया।।8।।

ॐ ह्रीं अन्तराय कर्म विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ने आठों कर्म नशाए, गुण अविनाशी जो प्रगटाए।
शीतल जिनपद शीश झुकाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टकर्म कर्म विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

सोरठा- अशुभ छोड़ शुभ ध्यान, कीन्हें शीतल जिन प्रभू।
पाये केवल ज्ञान, पुष्पाञ्जलि करते चरण।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

शीतलनाथ अनाथों के हैं, स्वामी अनुपम अविकारी।
शांति प्रदायक सब सुखकर्त्ता, ग्रह अरिष्ट पीड़ाहारी।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा अनुपम, करे कर्म का पूर्ण शमन।
भाव सहित हम करते प्रभु का, ह्रदय कमल में आह्वानन्।।
यह भक्त खड़े हैं आस लिए, उनकी विनती स्वीकार करो।
तुम ह्रदय कमल पर आ तिष्ठो, बस इतना सा उपकार करो।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अशुभादि ध्यान रहित श्री जिन के अर्घ्य

(नाराच छन्द)

इष्ट वियोग आर्त्त ध्यान, से जिनेन्द्र मुक्त हों।
हेतुओं से ध्यान के, पूर्णताः विमुक्त हों।।
जग में तुम हो महान्, शिवपुर में धाम है।
शीतल जिन चरणों में, आपके प्रणाम है।।1।।

ॐ ह्रीं इष्ट वियोग आर्त्त ध्यान रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं ध्यान आपको, अनिष्ट संयोग है।
न ही कोई ध्यान के, हेतुओं का योग है।।
जग में तुम हो महान्, शिवपुर में धाम है।
शीतल जिन चरणों में, आपके प्रणाम है।।2।।

ॐ ह्रीं अनिष्ट संयोग आर्त्त ध्यान रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान पीड़ा चिन्तन का, किए आप अन्त हो।
ज्ञान विशद पाकर के, हुए भगवन्त हो।।

जग में तुम हो महान्, शिवपुर में धाम है।
शीतल जिन चरणों में, आपके प्रणाम है।।3।।

ॐ ह्रीं पीड़ा चिंतन आर्त्त ध्यान रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान है निदान बन्ध, उससे भी हीन हो।
हेतुओं से ध्यान के, नाथ तुम विहीन हो।।
जग में तुम हो महान्, शिवपुर में धाम है।
शीतल जिन चरणों में, आपके प्रणाम है।।4।।

ॐ ह्रीं निदान बन्ध आर्त्त ध्यान रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छन्द)

हिंसानन्दी रौद्र ध्यान से, जिनवर मुक्त कहे हैं।
रौद्र ध्यान के हेतू भाई, कोई नहीं रहे हैं।।
शीतल नाथ प्रभू के चरणों, सादर शीश झुकाते।
मुक्ती पथ पर बढ़ें हमेशा, यही भावना भाते।।5।।

ॐ ह्रीं हिंसानन्दी रौद्र ध्यान रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मृषानन्द से मुक्त कहे हैं, तीर्थंकर जिन स्वामी।
रौद्र ध्यान के हेतु नाशकर, बने मोक्ष पथ गामी।।
शीतल नाथ प्रभू के चरणों, सादर शीश झुकाते।
मुक्ती पथ पर बढ़ें हमेशा, यही भावना भाते।।6।।

ॐ ह्रीं मृषानन्दी रौद्र ध्यान रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौर्यानन्दी रौद्र ध्यान के, जिनवर नाशन हारे।
दे उपदेश जगत् के प्राणी, प्रभु ने कइ इक तारे।।
शीतल नाथ प्रभू के चरणों, सादर शीश झुकाते।
मुक्ती पथ पर बढ़ें हमेशा, यही भावना भाते।।7।।

ॐ ह्रीं चौर्यानन्दी रौद्र ध्यान रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिग्रह संरक्षण आनन्दी, रौद्र ध्यान दुखदायी।
नाश किया है प्रभु ने उसका, मुक्त हुए फिर भाई।।
शीतल नाथ प्रभू के चरणों, सादर शीश झुकाते।
मुक्ती पथ पर बढ़ें हमेशा, यही भावना भाते।।8।।

ॐ ह्रीं परिग्रहानन्दी रौद्र ध्यान रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आज्ञा विचय ध्यान के धारी, जिन की आज्ञा माने।
भेद ज्ञान के द्वारा अपने, आतम को पहचाने।।
शीतल नाथ प्रभू के चरणों, सादर शीश झुकाते।
मुक्ती पथ पर बढ़ें हमेशा, यही भावना भाते।।9।।

ॐ ह्रीं आज्ञा विचय धर्म ध्यान रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव भोगों के दुख का चिंतन, धर्म ध्यान से जानो।
विचय अपाय ध्यान के द्वारा, होता है यह मानो।।
शीतल नाथ प्रभू के चरणों, सादर शीश झुकाते।
मुक्ती पथ पर बढ़ें हमेशा, यही भावना भाते।।10।।

ॐ ह्रीं अपाय विचय धर्म ध्यान रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं किए कर्मों के फल का, चिन्तन होवे भाई।
विचय विपाक ध्यान के द्वारा, मोक्ष महाफल दायी।।
शीतल नाथ प्रभू के चरणों, सादर शीश झुकाते।
मुक्ती पथ पर बढ़ें हमेशा, यही भावना भाते।।11।।

ॐ ह्रीं विपाक विचय धर्म ध्यान रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान कहा संस्थान विचय शुभ, आगम में सुखदाई।
चिंतन करने हेतु लोक के, कारण जानो भाई।।
शीतल नाथ प्रभू के चरणों, सादर शीश झुकाते।
मुक्ती पथ पर बढ़ें हमेशा, यही भावना भाते।।12।।

ॐ ह्रीं संस्थान विचय धर्म ध्यान रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(विष्णु पद छंद)

हो वितर्क वीचार सहित शुभ, शुक्ल ध्यान वह मानो।
पृथक वितर्क वीचार नाम का, शुभ आगम से जानो।।
शीतल नाथ प्रभू के चरणों, सादर शीश झुकाते।
मुक्ती पथ पर बढ़ें हमेशा, यही भावना भाते।।13।।

ॐ ह्रीं पृथक्त्व वितर्क शुक्लध्यान रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो वितर्क से रहित कहा है, शुक्ल ध्यान शुभ भाई।
वह एकत्व वीचार ध्यान है, अतिशय जो सुखदायी।।
शीतल नाथ प्रभू के चरणों, सादर शीश झुकाते।
मुक्ती पथ पर बढ़ें हमेशा, यही भावना भाते।।14।।

ॐ ह्रीं एकत्व वितर्क शुक्लध्यान रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काय योग की सूक्ष्म क्रिया का, आलम्बन जो पाए।
सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती भाई, ध्यान कहा वह जाए।।
शीतल नाथ प्रभू के चरणों, सादर शीश झुकाते।
मुक्ती पथ पर बढ़ें हमेशा, यही भावना भाते।।15।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति शुक्लध्यान सहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सर्व क्रिया की निवृत्ती से, ध्यान होय जो भाई।
व्युपरत क्रिया निवृत्ती है वह, शुभ मुक्ती पद दायी।।
शीतल नाथ प्रभू के चरणों, सादर शीश झुकाते।
मुक्ती पथ पर बढ़ें हमेशा, यही भावना भाते।।16।।

ॐ ह्रीं व्युपरत क्रिया निवृत्ति शुक्लध्यान सहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- अशुभ त्याग शुभ ध्यान से, किए कर्म का नाश।
विशद ज्ञान को प्राप्त कर, शिवपुर कीन्हें वास।।17।।

ॐ ह्रीं सर्व षोडश ध्यान रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः

दोहा- कर्मास्रव अरु बन्ध में, कारण बने कषाय।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, नाश पूर्ण हो जाय।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

शीतलनाथ अनाथों के हैं, स्वामी अनुपम अविकारी।
शांति प्रदायक सब सुखकर्त्ता, ग्रह अरिष्ट पीड़ाहारी।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा अनुपम, करे कर्म का पूर्ण शमन।
भाव सहित हम करते प्रभु का, हृदय कमल में आह्वानन्।।
यह भक्त खड़े हैं आस लिए, उनकी विनती स्वीकार करो।
तुम हृदय कमल पर आ तिष्ठो, बस इतना सा उपकार करो।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(कषाय, बन्ध और संज्ञा विनाशक श्री जिन के अर्घ्य)

क्रोध अनन्तानुबन्धी का, करते हैं जो प्राणी अन्त।
सम्यक् श्रद्धा धार कर्म का, नाश किए होते भगवन्त।।
सर्व कषाएँ नाशन हारे, बने प्रभू जी शीतलनाथ।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम अपना माथ।।1।।

ॐ ह्रीं अनन्तानुबंधी क्रोध कषाय विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

क्रोध अप्रत्याख्यान जीव के, देशव्रतों का करता घात।
अविरत रहने से प्राणी पर, होती कर्मों की बरसात।।
सर्व कषाएँ नाशन हारे, बने प्रभू जी शीतलनाथ।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम अपना माथ।।2।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान क्रोध कषाय विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्याख्यान क्रोध के कारण, महाव्रती न बनते लोग।
आश्रव पूर्ण नहीं रुकता है, कर्मों का होता संयोग।।
सर्व कषाएँ नाशन हारे, बने प्रभू जी शीतलनाथ।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम अपना माथ।।3।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान क्रोध कषाय विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध संज्वलन के कारण से, यथाख्यात न हो चारित्र।
आतम मलिन बनी रहती है, पूर्ण रूप न बने पवित्र।।
सर्व कषाएँ नाशन हारे, बने प्रभू जी शीतलनाथ।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम अपना माथ।।4।।

ॐ ह्रीं संज्वलन क्रोधकषाय विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान अनन्तानुबन्धी ना, होने देता सत् श्रद्धान।
जिसके कारण भव्य जीव भी, आस्रव करते बन्ध महान्।।
सर्व कषाएँ नाशन हारे, बने प्रभू जी शीतलनाथ।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम अपना माथ।।5।।

ॐ ह्रीं अनन्तानुबंधी मान कषाय विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मान अप्रत्याख्यान जीव के, देशव्रतों का करता नाश।
देशव्रती बनने की प्राणी, करते नहीं कभी भी आस।।
सर्व कषाएँ नाशन हारे, बने प्रभू जी शीतलनाथ।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम अपना माथ।।6।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान मान कषाय विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्याख्यान मान के कारण, महाव्रतों का होय विनाश।
संवर पूर्ण न हो पाने से, नहीं निर्जरा होवे खास।।
सर्व कषाएँ नाशन हारे, बने प्रभू जी शीतलनाथ।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम अपना माथ।।7।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान मान कषाय विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

मान संज्वलन उदय रहे तो, यथाख्यात न हो चारित्र।
चेतन तत्त्व प्रकट न होवे, बने पूर्ण न परम पवित्र।।
सर्व कषाएँ नाशन हारे, बने प्रभू जी शीतलनाथ।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम अपना माथ।।8।।

ॐ ह्रीं संज्वलन मान कषाय विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

मायानन्तानुबन्धी का, घात करें जो जग के जीव।
सम्यक् दर्शन पाने वाले, करते हैं वह पुण्य अतीव।।
सोलह भेद कषायों के सब, नाश किए श्री शीतलनाथ।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम अपना माथ।।9।।

ॐ ह्रीं अनन्तानुबंधी माया कषाय विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मायाप्रत्याख्यान जीव के, देश व्रतों का करे विघात।
इन्द्रिय विषयों में अटकाये, बंध कराये दिन व रात।।
सोलह भेद कषायों के सब, नाश किए श्री शीतलनाथ।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम अपना माथ।।10।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान माया कषाय विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया प्रत्याख्यानोदय में, महाव्रती न बनते जीव।
त्रस हिंसा के त्यागी बनकर, पुण्य कमाते सदा अतीव।।

सोलह भेद कषायों के सब, नाश किए श्री शीतलनाथ।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम अपना माथ।।11।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान माया कषाय विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदय संज्वलन हो माया का, यथाख्यात् न हो चारित्र।
केवल ज्ञान प्रकट ना होवे, उस प्राणी के जग में मित्र।।
सोलह भेद कषायों के सब, नाश किए श्री शीतलनाथ।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम अपना माथ।।12।।

ॐ ह्रीं संज्वलन माया कषाय विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ अनन्तानुबन्धी से, होता है मिथ्यात्व उदय।
सम्यक्त्वी न बनते प्राणी, भव का ना हो पावे क्षय।।
सोलह भेद कषायों के सब, नाश किए श्री शीतलनाथ।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम अपना माथ।।13।।

ॐ ह्रीं अनन्तानुबंधी लोभ कषाय विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ अप्रत्याख्यान उदय से, नहीं देशव्रत पावें लोग।
रहते हैं अव्रती हमेशा, चाहें इन्द्री के सब भोग।।
सोलह भेद कषायों के सब, नाश किए श्री शीतलनाथ।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम अपना माथ।।14।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान लोभ कषाय विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्याख्यान लोभ के कारण, देशव्रतों के हो आधीन।
मोक्ष मार्ग में हेतू संवर, से रहते हैं सदा विहीन।।

सोलह भेद कषायों के सब, नाश किए श्री शीतलनाथ।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम अपना माथ।।15।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान लोभ कषाय विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ संज्वलन उदय रहे तो, कर्म न होवें पूर्ण शमन।
यथाख्यात् चारित्र न प्रगटे, शिव पद में न होय गमन।।
सोलह भेद कषायों के सब, नाश किए श्री शीतलनाथ।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम अपना माथ।।16।।

ॐ ह्रीं संज्वलन लोभ कषाय विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द : मोतियादाम)

नहीं संज्ञा जिनको आहार, कहाए जग के पालनहार।
नाम है जिन का शीतल नाथ, झुकाते उनके पद में माथ।।17।।

ॐ ह्रीं आहार संज्ञा नाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहे जो भय संज्ञा से हीन, स्वयं में रहते है लवलीन।
नाम है जिन का शीतल नाथ, झुकाते जिनके पद में माथ।।18।।

ॐ ह्रीं भय संज्ञा नाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किए मैथुन संज्ञा का नाश, करें निज केवल ज्ञान प्रकाश।
नाम है जिन का शीतल नाथ, झुकाते जिनके पद में माथ।।19।।

ॐ ह्रीं मैथुन संज्ञा नाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिग्रह संज्ञा से हैं हीन, सदा रहते हैं जो स्वाधीन।
नाम है जिन का शीतल नाथ, झुकाते जिनके पद में माथ।।20।।

ॐ ह्रीं परिग्रह संज्ञा नाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किए प्रकृति बन्ध का अन्त, बने जो मुक्ती रमा के कंत।
नाम है जिन का शीतल नाथ, झुकाते जिनके पद में माथ।।21।।

ॐ ह्रीं प्रकृति बन्ध नाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बन्ध न होता जिन्हें प्रदेश, रहे न कर्म कोई अवशेष।
नाम है जिन का शीतल नाथ, झुकाते जिनके पद में माथ।।22।।

ॐ ह्रीं प्रदेश बन्ध नाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहा न स्थिति बन्ध का काम, गये हैं जो शिवपुर के धाम।
नाम है जिन का शीतल नाथ, झुकाते जिनके पद में माथ।।23।।

ॐ ह्रीं स्थिति बन्ध नाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बन्ध न होता है अनुभाग, रहा न जिनके किन्चित राग।
नाम है जिन का शीतल नाथ, झुकाते जिनके पद में माथ।।24।।

ॐ ह्रीं अनुभाग बन्ध नाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

प्रभू कषाएँ सोलह नाशे, संज्ञाएँ भी नाशे चार।
चार बन्ध का नाश किए प्रभु, हुए जगत के पालनहार।।
तीन लोक में पूज्य हुए हैं, तीर्थंकर श्री शीतलनाथ।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम अपना माथ।।

ॐ ह्रीं कषाय संज्ञा बन्ध नाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा- मिथ्या अविरति योग यह, आश्रव के हैं द्वार।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, नशे शीघ्र संसार।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

शीतलनाथ अनाथों के हैं, स्वामी अनुपम अविकारी।
शांति प्रदायक सब सुखकर्त्ता, ग्रह अरिष्ट पीड़ाहारी।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा अनुपम, करे कर्म का पूर्ण शमन।
भाव सहित हम करते प्रभु का, हृदय कमल में आह्वानन्।।

यह भक्त खड़े हैं आस लिए, उनकी विनती स्वीकार करो।
तुम हृदय कमल पर आ तिष्ठो, बस इतना सा उपकार करो।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

आस्रव के हेतु विनाशक श्री जिन के अर्घ्य

(विष्णु पद छंद)

श्रद्धा जो विपरित मार्ग में, धारण करते प्राणी।
मिथ्यादृष्टी जीव कहे वह, कहती है जिनवाणी।।
सम्यक् श्रद्धा धारण करके, पद पाए अविनाशी।
परम पूज्य शीतल जिन स्वामी, सिद्धशिला के वासी।।1।।

ॐ ह्रीं विपरीत मिथ्यात्व विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो एकान्त मार्ग में श्रद्धा, धारण करते भाई।
वह मिथ्यात्व प्राप्त करते हैं, इस जग में दुखदायी।।
सम्यक् श्रद्धा धारण करके, पद पाए अविनाशी।
परम पूज्य शीतल जिन स्वामी, सिद्धशिला के वासी।।2।।

ॐ ह्रीं एकान्त मिथ्यात्व विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीतराग या रागी द्वेषी, को समान पहिचानें।
विनय मिथ्यात्व धारने वाले, प्राणी सभी बखाने।।
सम्यक् श्रद्धा धारण करके, पद पाए अविनाशी।
परम पूज्य शीतल जिन स्वामी, सिद्धशिला के वासी।।3।।

ॐ ह्रीं विनय मिथ्यात्व विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तत्त्व अतत्त्व शास्त्र जिन गुरु में, संशय धारें प्राणी।
संशय मिथ्यावादी हैं वह, कहती है जिनवाणी।।

सम्यक् श्रद्धा धारण करके, पद पाए अविनाशी।
परम पूज्य शीतल जिन स्वामी, सिद्धशिला के वासी।।4।।

ॐ ह्रीं संशय मिथ्यात्व विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कभी हिताहित का निर्णय जो, करते नहीं हैं भाई।
मिथ्याज्ञान धारने वाले, हैं मिथ्या अनुयाई।।
सम्यक् श्रद्धा धारण करके, पद पाए अविनाशी।
परम पूज्य शीतल जिन स्वामी, सिद्धशिला के वासी।।5।।

ॐ ह्रीं अज्ञान मिथ्यात्व विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छंद)

पृथ्वी ही तन होता जिनका, वह हैं पृथ्वी कायिक जीव।
स्पर्शन इन्द्रिय पाने वाले, पाते हैं जो दुःख अतीव।।
हिंसा अविरति के त्यागी प्रभु, कहे गये श्री शीतलनाथ।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर हम, पद में झुका रहे हैं माथ।।6।।

ॐ ह्रीं पृथ्वी कायिक जीव अविरति विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जलकायिक जीवों का तन ही, जल बनकर के बहता नित्य।
अल्प काल का जीवन पाते, वह भी होता सदा अनित्य।।
हिंसा अविरति के त्यागी प्रभु, कहे गये श्री शीतलनाथ।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर हम, पद में झुका रहे हैं माथ।।7।।

ॐ ह्रीं जल कायिक जीव अविरति विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नीकायिक जीवों के तन, से हो अग्नी का निर्माण।
जलकर स्वयं जलाते पर को, एकेन्द्रिय जिनकी पहिचान।।
हिंसा अविरति के त्यागी प्रभु, कहे गये श्री शीतलनाथ।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर हम, पद में झुका रहे हैं माथ।।8।।

ॐ ह्रीं अग्नि कायिक जीव अविरति विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन जीवों का तन है वायू, वह वायू कायिक हैं जीव।
जीवों का हो जाय मरण तो, वह वायू हो जाय अजीव।।
हिंसा अविरति के त्यागी प्रभु, कहे गये श्री शीतलनाथ।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर हम, पद में झुका रहे हैं माथ।।9।।

ॐ ह्रीं वायु कायिक जीव अविरति विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वनस्पति कायिक जीवों के, तन का वनस्पति है नाम।
यदी नष्ट हो जाय वनस्पति, तो जीवन हो जाए हराम।।
हिंसा अविरति के त्यागी प्रभु, कहे गये श्री शीतलनाथ।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर हम, पद में झुका रहे हैं माथ।।10।।

ॐ ह्रीं वनस्पति कायिक जीव अविरति विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो इन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक, चलने वाले हैं त्रस जीव।
कर्मोदय से भ्रमण करें जो, दुःख भोगते सभी अतीव।।
हिंसा अविरति के त्यागी प्रभु, कहे गये श्री शीतलनाथ।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर हम, पद में झुका रहे हैं माथ।।11।।

ॐ ह्रीं दो इन्द्रिय आदिक त्रस काय अविरति विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्शन इन्द्रिय के द्वारा, छूकर हो वस्तु का ज्ञान।
होते आठ विषय उन पर जय, करना होता कठिन महान्।।
पञ्चेन्द्रिय अरु मन को जय कर, बने जिनेश्वर शीतलनाथ।
भव्य जीव जिन पूजा करके, चरणों झुका रहे हैं माथ।।12।।

ॐ ह्रीं स्पर्शन इन्द्रिय अविरति विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रसना इन्द्री पञ्च रसों के, स्वाद में रहती है लवलीन।
विषय पूर्ण करते रहते हैं, अज्ञानी होकर के दीन।।
पञ्चेन्द्रिय अरु मन को जय कर, बने जिनेश्वर शीतलनाथ।
भव्य जीव जिन पूजा करके, चरणों झुका रहे हैं माथ।।13।।

ॐ ह्रीं रसना इन्द्रिय अविरति विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विषय कहे घ्राणेन्द्रिय के दो, गंध का होता जिससे ज्ञान।
जो सुगन्ध दुर्गन्ध युक्त हैं, राग-द्वेष नर करें महान्।।
पञ्चेन्द्रिय अरु मन को जय कर, बने जिनेश्वर शीतलनाथ।
भव्य जीव जिन पूजा करके, चरणों झुका रहे हैं माथ।।14।।

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रिय इन्द्रिय अविरति विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विषय पञ्च चक्षु इन्द्रिय के, जैनागम में कहे जिनेश।
हर्ष विषाद करें लख प्राणी, देख देखकर जिन्हें विशेष।।
पञ्चेन्द्रिय अरु मन को जय कर, बने जिनेश्वर शीतलनाथ।
भव्य जीव जिन पूजा करके, चरणों झुका रहे हैं माथ।।15।।

ॐ ह्रीं चक्षु इन्द्रिय अविरति विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सा रे गा मा पा धा नि यह, कर्णेन्द्रिय के विषय महान्।
गीत वाद्य सुनकर हर्षाते, प्राणी सुनकर मंगल गान।।
पञ्चेन्द्रिय अरु मन को जय कर, बने जिनेश्वर शीतलनाथ।
भव्य जीव जिन पूजा करके, चरणों झुका रहे हैं माथ।।16।।

ॐ ह्रीं कर्णेन्द्रिय अविरति विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहा अनिन्द्रिय मन को भाई, विषय रहा जिसका श्रुतज्ञान।
मन मर्कट सम चंचल जानो, भ्रमण कराए सर्व जहान।।
पञ्चेन्द्रिय अरु मन को जय कर, बने जिनेश्वर शीतलनाथ।
भव्य जीव जिन पूजा करके, चरणों झुका रहे हैं माथ।।17।।

ॐ ह्रीं अनिन्द्रिय अविरति विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छन्द)

जो धर्म आगम से समन्वित, सोचते मन में सही।
वह सत्य है मनयोग भाई, धर्म की कथनी रही।।
प्रभु योग तज उपयोग निज का, ध्यान करके शिव गये।
जिनराज शीतलनाथ अपने, कर्म क्षण में सब क्षये।।18।।

ॐ ह्रीं सत्य मनयोग रहिताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सत्य से विपरीत मन में, जीव का चिंतन रहा।
वह असत्य मनयोग भाई, जैन आगम में कहा।।
प्रभु योग तज उपयोग निज का, ध्यान करके शिव गये।
जिनराज शीतलनाथ अपने, कर्म क्षण में सब क्षये।।19।।

ॐ ह्रीं असत्य मनयोग रहिताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सत्य भी हो झूठ भी हो, चिंतवन ऐसा कभी।
वह उभय मनयोग भाई, भव्य तुम जानो सभी।।
प्रभु योग तज उपयोग निज का, ध्यान करके शिव गये।
जिनराज शीतलनाथ अपने, कर्म क्षण में सब क्षये।।20।।

ॐ ह्रीं उभय मनयोग रहिताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ना सत्य है ना झूठ है यह, सोच मन का जो रहा।
मनयोग अनुभय शास्त्र में, जिनदेव ने उसका कहा।।
प्रभु योग तज उपयोग निज का, ध्यान करके शिव गये।
जिनराज शीतलनाथ अपने, कर्म क्षण में सब क्षये।।21।।

ॐ ह्रीं अनुभय मनयोग रहिताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नय धर्म आगम से समन्वित, वचन जो बोलें सही।
हैं वचन योगी सत्य के वह, सत्य तुम मानो यही।।
प्रभु योग तज उपयोग निज का, ध्यान करके शिव गये।
जिनराज शीतलनाथ अपने, कर्म क्षण में सब क्षये।।22।।

ॐ ह्रीं सत्य वचनयोग रहिताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सत्य से विपरीत मानव, की सदा कथनी रही।
वह वचन योगी असत्य के हैं, यही तुम मानो सही।।
प्रभु योग तज उपयोग निज का, ध्यान करके शिव गये।
जिनराज शीतलनाथ अपने, कर्म क्षण में सब क्षये।।23।।

ॐ ह्रीं असत्य वचनयोग रहिताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सत्य भी हो झूठ भी हो, वचन ऐसा जो कहे।
वह उभययोगी वचन के हैं, लोक में कई नर रहे।।
प्रभु योग तज उपयोग निज का, ध्यान करके शिव गये।
जिनराज शीतलनाथ अपने, कर्म क्षण में सब क्षये।।24।।

ॐ ह्रीं उभय वचनयोग रहिताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ना सत्य है न झूठ है जो, कथन मानव का रहा।
अनुभय वचन का योग धारी, श्रेष्ठ वह मानव कहा।।
प्रभु योग तज उपयोग निज का, ध्यान करके शिव गये।
जिनराज शीतलनाथ अपने, कर्म क्षण में सब क्षये।।25।।

ॐ ह्रीं अनुभय वचनयोग रहिताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

है स्थूल देह औदारिक, उसके द्वारा हो जो योग।
वह औदारिक काय योग है, नर पशु के उसका संयोग।।
श्री जिनेन्द्र ने योग नाशकर, शिवपद में पाया विश्राम।
अर्घ्य चढ़ाकर पद में उनके, करते बारम्बार प्रणाम।।26।।

ॐ ह्रीं औदारिक काययोग रहिताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपर्याप्त नर पशू गर्भ में, मिश्र देह औदारिक पाय।
उसके द्वारा योग प्राप्त हो, काय योग वह मिश्र कहाय।।

श्री जिनेन्द्र ने योग नाशकर, शिवपद में पाया विश्राम।
अर्घ्य चढ़ाकर पद में उनके, करते बारम्बार प्रणाम।।27।।

ॐ ह्रीं औदारिक मिश्र काययोग रहिताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैक्रियक तन देव नारकी, का बतलाए वीर जिनेश।
उसके द्वारा योग होय जो, वैक्रियक है काय विशेष।।
श्री जिनेन्द्र ने योग नाशकर, शिवपद में पाया विश्राम।
अर्घ्य चढ़ाकर पद में उनके, करते बारम्बार प्रणाम।।28।।

ॐ ह्रीं वैक्रियक काययोग रहिताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व जन्म के देव नारकी, मिश्र वैक्रियक पाते देह।
उसके द्वारा योग वैक्रियक, मिश्र काय तुम जानो येह।।
श्री जिनेन्द्र ने योग नाशकर, शिवपद में पाया विश्राम।
अर्घ्य चढ़ाकर पद में उनके, करते बारम्बार प्रणाम।।29।।

ॐ ह्रीं वैक्रियक मिश्र काययोग रहिताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि के सिर से निर्वाधित शुभ, सूक्ष्म निकलता पुतला एक।
आहारक शुभ देह कहाए, उससे योग होय शुभ नेक।।
श्री जिनेन्द्र ने योग नाशकर, शिवपद में पाया विश्राम।
अर्घ्य चढ़ाकर पद में उनके, करते बारम्बार प्रणाम।।30।।

ॐ ह्रीं आहारक काययोग रहिताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आहारक तन पूर्ण न होवे, मिश्र आहारक तन यह जान।
मिश्र आहारक काय योग हो, उससे भाई ऐसा मान।।
श्री जिनेन्द्र ने योग नाशकर, शिवपद में पाया विश्राम।
अर्घ्य चढ़ाकर पद में उनके, करते बारम्बार प्रणाम।।31।।

ॐ ह्रीं आहारक मिश्र काययोग रहिताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म समूह जो विग्रह गति में, कार्माण कहलाए देह।
उसके द्वारा योग होय जो, कार्माण काय योग है येह।।

श्री जिनेन्द्र ने योग नाशकर, शिवपद में पाया विश्राम।
अर्घ्य चढ़ाकर पद में उनके, करते बारम्बार प्रणाम।।32।।

ॐ ह्रीं कार्माण काययोग रहिताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच कहे मिथ्यात्व अविरति, बारह पन्द्रह जानो योग।
कर्माश्रव होवे जीवों को, इन सब बत्तिस के संयोग।।
श्री जिनेन्द्र ने योग नाशकर, शिवपद में पाया विश्राम।
अर्घ्य चढ़ाकर पद में उनके, करते बारम्बार प्रणाम।।33।।

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशत् कर्म आस्रव विनाशक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम वलयः

दोहा- बाईस परीषह जीतकर, पाते केवल ज्ञान।
दोष अठारह से रहित, होते हैं भगवान।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

शीतलनाथ अनाथों के हैं, स्वामी अनुपम अविकारी।
शांति प्रदायक सब सुखकर्त्ता, ग्रह अरिष्ट पीड़ाहारी।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा अनुपम, करे कर्म का पूर्ण शमन।
भाव सहित हम करते प्रभु का, हृदय कमल में आह्वानन्।।
यह भक्त खड़े हैं आस लिए, उनकी विनती स्वीकार करो।
तुम हृदय कमल पर आ तिष्ठो, बस इतना सा उपकार करो।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

परिषह एवं दोष रहित श्री जिन के अर्घ्य

(काव्य छंद)

शांत भाव से क्षुधा वेदना, सहते हैं जो बारम्बार।
क्षुधा परीषह जय के धारी, मुनिवर होते हैं अविकार।।
शीतल जिन के चरण कमल की, भक्ती करने हम आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरण शरण में हम लाए।।1।।

ॐ ह्रीं क्षुधा परिषह रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृषा वेदना शांत भाव से, सहने वाले मुनि अविकार।
तृषा परीषह जय करते हैं, विशद भाव से अपरम्पार।।
शीतल जिन के चरण कमल की, भक्ती करने हम आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरण शरण में हम लाए।।2।।

ॐ ह्रीं तृषा परिषह रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीत वेदना शांत भाव से, सहने वाले संत महान्।
शीत वेदना जय करने को, करते हैं हम भी गुणगान।।
शीतल जिन के चरण कमल की, भक्ती करने हम आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरण शरण में हम लाए।।3।।

ॐ ह्रीं शीत परिषह रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांत भाव से उष्ण वेदना, सहते हैं जो बारम्बार।
उष्ण परीषह जय करते मुनि, जग में होते मंगलकार।।
शीतल जिन के चरण कमल की, भक्ती करने हम आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरण शरण में हम लाए।।4।।

ॐ ह्रीं उष्ण परिषह रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मच्छर डांस आदि जीवों की, दंश वेदना सहते घोर।
दश मशक परीषह जय करते, अविकारी मुनि भाव विभोर।।

शीतल जिन के चरण कमल की, भक्ती करने हम आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरण शरण में हम लाए।।5।।

ॐ ह्रीं दंश मशक परिषह रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नग्न भेष धारण करके भी, मन में लाते नहीं विकार।
चारित्र मोह पर विजय प्राप्तकर, मुनिवर रहते हैं अविकार।।
शीतल जिन के चरण कमल की, भक्ती करने हम आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरण शरण में हम लाए।।6।।

ॐ ह्रीं नग्न परिषह रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हेतु अरति के होने पर भी, अप्रीति न करें मुनीष।
संयम से प्रीति करते हैं, अरति परीषह जयी ऋशीष।।
शीतल जिन के चरण कमल की, भक्ती करने हम आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरण शरण में हम लाए।।7।।

ॐ ह्रीं अरति परिषह रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हाव भाव या रूप देखकर, मुनि स्त्री के कई प्रकार।
स्त्री परिषहजयी उपद्रव, सहते हैं होके अविकार।।
शीतल जिन के चरण कमल की, भक्ती करने हम आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरण शरण में हम लाए।।8।।

ॐ ह्रीं स्त्री परिषह रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खेद खिन्न न होते मुनिवर, पैदल करते हुए गमन।
चर्या परिषह जयी मुनी के, पद में हम करते वन्दन।।
शीतल जिन के चरण कमल की, भक्ती करने हम आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरण शरण में हम लाए।।9।।

ॐ ह्रीं चर्या परिषह रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान हेतु मुनि नियत काल तक, आसन करते हैं स्वीकार।
परीषह जयी निषद्याधारी, च्युत न होते हैं अनगार।।
शीतल जिन के चरण कमल की, भक्ती करने हम आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरण शरण में हम लाए।।10।।

ॐ ह्रीं निषद्या परिषह रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

विषम कठोर भूमि पर जानो, करवट इक से निद्रा मानो।
शैय्या परीषह जय के धारी, चलित नहीं होते अविकारी।।
मुनिवर सर्व परीषह सहते, कर्म निर्जरा करते रहते।
परिषह रहित हुए जिन स्वामी, उनके चरणों विशद नमामी।।11।।

ॐ ह्रीं शैय्या परिषह रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर सर्व परीषह सहते, कर्म निर्जरा करते रहते।
मुनि आक्रोश परीषह सहते, निज स्वभाव में ही रत रहते।।
मुनिवर सर्व परीषह सहते, कर्म निर्जरा करते रहते।
परिषह रहित हुए जिन स्वामी, उनके चरणों विशद नमामी।।12।।

ॐ ह्रीं आक्रोश परिषह रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्त्र शस्त्र के द्वारा भाई, हो प्रहार अतिशय दुखदायी।
मुनिवर बध परिषह जयधारी, धारें शांत भाव अविकारी।।
मुनिवर सर्व परीषह सहते, कर्म निर्जरा करते रहते।
परिषह रहित हुए जिन स्वामी, उनके चरणों विशद नमामी।।13।।

ॐ ह्रीं बध परिषह रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो वियोग प्राणों का भाई, कष्ट कोई होवे दुखदायी।
मुनी याचना परिषह सहते, निज स्वभाव में ही रत रहते।।
मुनिवर सर्व परीषह सहते, कर्म निर्जरा करते रहते।
परिषह रहित हुए जिन स्वामी, उनके चरणों विशद नमामी।।14।।

ॐ ह्रीं याचना परिषह रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आसनादि भिक्षा न पावें, फिर भी खेद न मन में लावें।
मुनि अलाभ परीषह धारी, जग में होते हैं उपकारी।।
मुनिवर सर्व परीषह सहते, कर्म निर्जरा करते रहते।
परिषह रहित हुए जिन स्वामी, उनके चरणों विशद नमामी।।15।।

ॐ ह्रीं अलाभ परिषह रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन में रोग होय दुखदायी, कष्ट शांति से सहते भाई।
रोग परीषहजय के धारी, मुनिवर की है महिमा न्यारी।।
मुनिवर सर्व परीषह सहते, कर्म निर्जरा करते रहते।
परिषह रहित हुए जिन स्वामी, उनके चरणों विशद नमामी।।16।।

ॐ ह्रीं रोग परिषह रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पग में तृण कण्टक चुभ जावें, तन में तीव्र वेदना पावें।
तृण स्पर्श परीषह धारी, सहे शांत होके अविकारी।।
मुनिवर सर्व परीषह सहते, कर्म निर्जरा करते रहते।
परिषह रहित हुए जिन स्वामी, उनके चरणों विशद नमामी।।17।।

ॐ ह्रीं तृणस्पर्श परिषह रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन मैला होवे दुखदायी, न स्नान करें मुनि भाई।
मुनिवर मल परिषह जयधारी, हिंसा से बचते अविकारी।।
मुनिवर सर्व परीषह सहते, कर्म निर्जरा करते रहते।
परिषह रहित हुए जिन स्वामी, उनके चरणों विशद नमामी।।18।।

ॐ ह्रीं मल परिषह रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय गुण मुनिवर जी पावें, कोइ सत्कार न करने आवे।
चित्त में कालुषता न लावें, मुनिवर परीषह जयी कहावें।।
मुनिवर सर्व परीषह सहते, कर्म निर्जरा करते रहते।
परिषह रहित हुए जिन स्वामी, उनके चरणों विशद नमामी।।19।।

ॐ ह्रीं सत्कार पुरुस्कार परिषह रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि अतिशय प्रज्ञा के धारी, मद से रहित रहे अविकारी।
प्रज्ञा परिषह जयी कहाते, ज्ञान ध्यान में समय बिताते।।
मुनिवर सर्व परीषह सहते, कर्म निर्जरा करते रहते।
परिषह रहित हुए जिन स्वामी, उनके चरणों विशद नमामी।।20।।

ॐ ह्रीं प्रज्ञा परिषह रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान हीन बुद्धी के धारी, तिरस्कार सहते हैं भारी।
मुनि अज्ञान परीषह जीते, आत्म सुधारस को नित पीते।।
मुनिवर सर्व परीषह सहते, कर्म निर्जरा करते रहते।
परिषह रहित हुए जिन स्वामी, उनके चरणों विशद नमामी।।21।।

ॐ ह्रीं अज्ञान परिषह रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कठिन-कठिन तप तपते जावें, ऋद्धि-सिद्धि फिर भी न पावें।
चलित व्रतादिक से न होते, अश्रद्धान स्वयं का खोते।।
मुनिवर सर्व परीषह सहते, कर्म निर्जरा करते रहते।
परिषह रहित हुए जिन स्वामी, उनके चरणों विशद नमामी।।22।।

ॐ ह्रीं अदर्शन परिषह रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

है जन्म रोग दुखकारी, भव भ्रमण कराए भारी।
वह रोग नशाकर स्वामी, फिर बने हैं अन्तर्यामी।।
हम शीतल जिन को ध्याते, पद में शुभ अर्घ्य चढ़ाते।
हैं जिनवर जग हितकारी, उनके पद ढोक हमारी।।23।।

ॐ ह्रीं जन्म दोष रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है जरा रोग भयकारी, उससे है जीव दुखारी।
प्रभु ने वह रोग नशाया, शुभ तीर्थंकर पद पाया।।
हम शीतल जिन को ध्याते, पद में शुभ अर्घ्य चढ़ाते।
हैं जिनवर जग हितकारी, उनके पद ढोक हमारी।।24।।

ॐ ह्रीं जरा दोष रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवों को तृषा सताए, अतिशय संताप बढ़ाए।
जिन तृषा रोग के नाशी, होते हैं शिवपुर वासी।।
हम शीतल जिन को ध्याते, पद में शुभ अर्घ्य चढ़ाते।
हैं जिनवर जग हितकारी, उनके पद ढोक हमारी।।25।।

ॐ ह्रीं तृषा दोष रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है क्षुधा रोग दुखदायी, अतिशय इस जग में भाई।
जिनवर वह रोग नशाए, तीर्थंकर पदवी पाए।।
हम शीतल जिन को ध्याते, पद में शुभ अर्घ्य चढ़ाते।
हैं जिनवर जग हितकारी, उनके पद ढोक हमारी।।26।।

ॐ ह्रीं क्षुधा दोष रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो विस्मय करते प्राणी, वह करते निज की हानी।
प्रभु विस्मय रोग नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।
हम शीतल जिन को ध्याते, पद में शुभ अर्घ्य चढ़ाते।
हैं जिनवर जग हितकारी, उनके पद ढोक हमारी।।27।।

ॐ ह्रीं विस्मय दोष रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संयोग अनिष्ट मिल जावे, वह अप्रीति उपजावे।
तुम अरति दोष यह जानो, प्रभु नाश किए यह मानो।।
हम शीतल जिन को ध्याते, पद में शुभ अर्घ्य चढ़ाते।
हैं जिनवर जग हितकारी, उनके पद ढोक हमारी।।28।।

ॐ ह्रीं अरति दोष रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन में विषाद हो जावे, जो खेद हृदय उपजावे।
प्रभु खेद दोष के नाशी, होते हैं शिवपुर वासी।।
हम शीतल जिन को ध्याते, पद में शुभ अर्घ्य चढ़ाते।
हैं जिनवर जग हितकारी, उनके पद ढोक हमारी।।29।।

ॐ ह्रीं खेद दोष रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं रोग अनेको भाई, मानव तन में दुखदायी।
यह दोष नशाए स्वामी, फिर बने हैं अन्तर्यामी।।
हम शीतल जिन को ध्याते, पद में शुभ अर्घ्य चढ़ाते।
हैं जिनवर जग हितकारी, उनके पद ढोक हमारी।।30।।

ॐ ह्रीं रोग दोष रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यदि इष्ट वियोग हो जावे, तब शोक हृदय में आवे।
जिनवर यह दोष नशाए, तब तीर्थंकर पद पाए।।
हम शीतल जिन को ध्याते, पद में शुभ अर्घ्य चढ़ाते।
हैं जिनवर जग हितकारी, उनके पद ढोक हमारी।।31।।

ॐ ह्रीं शोक दोष रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मद करके जग में मानी, निजगुण की करते हानी।
मद पूर्ण नशाए स्वामी, प्रभु बने मोक्ष पथगामी।।
हम शीतल जिन को ध्याते, पद में शुभ अर्घ्य चढ़ाते।
हैं जिनवर जग हितकारी, उनके पद ढोक हमारी।।32।।

ॐ ह्रीं मद दोष रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मोह की महिमा न्यारी, मोहित है दुनियाँ सारी।
प्रभु मोह को पूर्ण नशाए, फिर केवल ज्ञान जगाए।।
हम शीतल जिन को ध्याते, पद में शुभ अर्घ्य चढ़ाते।
हैं जिनवर जग हितकारी, उनके पद ढोक हमारी।।33।।

ॐ ह्रीं मोह दोष रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं सात महाभय भारी, उनसे है जीव दुखारी।
प्रभु ने भय दोष नशाया, फिर मुक्ति वधू को पाया।।
हम शीतल जिन को ध्याते, पद में शुभ अर्घ्य चढ़ाते।
हैं जिनवर जग हितकारी, उनके पद ढोक हमारी।।34।।

ॐ ह्रीं भय दोष रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी को नींद सतावे, तो कुछ भी न दिख पावे।
जिसने यह कर्म नशाया, उसने अतिशय पद पाया।।
हम शीतल जिन को ध्याते, पद में शुभ अर्घ्य चढ़ाते।
हैं जिनवर जग हितकारी, उनके पद ढोक हमारी।।35।।

ॐ ह्रीं निद्रा दोष रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिंता में गाफिल होवे, तो निज की शक्ती खोवे।
चिंता का किया सफाया, चेतन स्वरूप प्रगटाया।।
हम शीतल जिन को ध्याते, पद में शुभ अर्घ्य चढ़ाते।
हैं जिनवर जग हितकारी, उनके पद ढोक हमारी।।36।।

ॐ ह्रीं चिंता दोष रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन का विकार यह जानो, बहता स्वेद पहिचानो।
प्रभु तन में स्वेद न होवे, यह दोष पूर्ण वह खोवे।।
हम शीतल जिन को ध्याते, पद में शुभ अर्घ्य चढ़ाते।
हैं जिनवर जग हितकारी, उनके पद ढोक हमारी।।37।।

ॐ ह्रीं स्वेद दोष रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है राग आग दुखदायी, जग भ्रमण करावे भाई।
प्रभु ने सब राग भगाया, तब ही शिव पद को पाया।।
हम शीतल जिन को ध्याते, पद में शुभ अर्घ्य चढ़ाते।
हैं जिनवर जग हितकारी, उनके पद ढोक हमारी।।38।।

ॐ ह्रीं राग दोष रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब कोइ अनिष्ट आ जावे, तब द्वेष हृदय में आवे।
यह दोष रहा न भाई, यह है प्रभु की प्रभुताई।।
हम शीतल जिन को ध्याते, पद में शुभ अर्घ्य चढ़ाते।
हैं जिनवर जग हितकारी, उनके पद ढोक हमारी।।39।।

ॐ ह्रीं द्वेष दोष रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मौत महाबल शाली, न कभी छोड़ने वाली।
वह जीते हैं जिन स्वामी, बन गये हैं शिव पथगामी।।
हम शीतल जिन को ध्याते, पद में शुभ अर्घ्य चढ़ाते।
हैं जिनवर जग हितकारी, उनके पद ढोक हमारी।।40।।

ॐ ह्रीं मरण दोष रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(भुजंग प्रयात)

परीषह जयी जो स्वयं हो गये हैं, अठारह कहे दोष सभी खो गये हैं।
जजैं नाथ शीतल चरण हम तुम्हारे, नशाओ सभी कष्ट जिनवर हमारे।।

ॐ ह्रीं सर्व परीषह अष्टादश दोष रहित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य – ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐम अर्हं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय सर्व शांतिं कुरु-कुरु स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

दोहा– तीन लोक के जीव सब, पूजें जिन्हें त्रिकाल।
शीतल नाथ जिनेन्द्र की, गाते हम जयमाल।।

(शम्भू छन्द)

हे शीतलनाथ अनाथों के तुम, भवि जीवों के हितकारी।
हे कृपावन्त करुणा निधान, हो जग जीवों के उपकारी।।
तुमने संसार सरोवर से, तरने की कला सिखाई है।
तुम पार हुए भव सागर से, अब बारी मेरी आई है।।
हम पूजा करने को जिनवर, अब द्वार आपके आए हैं।
प्रासुक करके यह द्रव्य श्रेष्ठ, शुभ थाल सजाकर लाए हैं।।
हम भक्त बने हैं हे भगवन !, जब से तुमको पहिचान लिया।
जो कुपथ कुपन्थी हैं जग में, उन सबको हमने त्याग दिया।।

इस जग में सुख शांती वैभव, सब आप कृपा से मिलता।
श्रद्धा का सम्यक् फूल हृदय, तव दर्शन करने से खिलता।।
तुमने निज का दर्शन करके, शुभ दर्शन गुण प्रगटाया है।
शुभ ज्ञान जगाकर अन्तस् का, प्रभु केवल ज्ञान जगाया है।।
करता है मोहित मोह कर्म, उसका भी मान गलाया है।
इस जग के वैभव को तजकर, प्रभु सुख अनन्त को पाया है।।
है कर्म घातिया अन्तराय, वह भी न कुछ कर पाया है।
पाकर के वीर्य अनन्त प्रभु, जग को सन्मार्ग दिखाया है।।
तुम बने जहाँ में वीर बली, न चली कर्म की माया है।
सुख दुख का वेदन किया प्रभू, फिर अव्याबाध सुख पाया है।।
भव बन्धन भी न बाँध सका, तुम कर्म आयु का नाश किया।
अवगाहन गुण को प्रगटाकर, निज अवगाहन में वास किया।।
न नाम कर्म भी रह पाया, सूक्ष्मत्व सुगुण प्रगटाया है।
कर लिया प्रकट गुण अगुरुलघु, न गोत्र कर्म रह पाया है।।
तुमने कर्मों का नाश किया, फिर शिव स्वरूप प्रगटाया है।
वह पद पाने को हे भगवन् ! अब मेरा मन ललचाया है।।
तव गौरव गाथा को पढ़कर, मेरे मन में यह आया है।
है सत्य यही स्वरूप मेरा, जिसको प्रभु तुमने पाया है।।
तुम सर्व शक्ति के धारी हो, वह शक्ती हम भी पाएँगे।
हम द्वार आपके आए हैं, वह क्षमता लेकर जाएँगे।।
जो शरण आपकी पा लेता, वह इच्छित फल को पाता है।
वह सर्व सम्पदा पाने का, अपना सौभाग्य जगाता है।।
हम भक्ती के वश आये हैं, तव चरणों में कुछ आस लिए।
प्रभु भाव सुमन लेकर आये, निज श्रद्धा अरु विश्वास लिए।।

हे नाथ ! भक्त पर करुणाकर, बस इतना सा उपकार करो।
तुम हुए पार भव सागर से, अब मुझको भी भव पार करो।।

दोहा- शीतल नाथ जिनेन्द्र ने, दिया यही संदेश।
शीतल भावों से विशद, जाना निज के देश।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- अविनाशी अविकार पद, पाए शीतलनाथ।
वह पद पाने के लिए, चरण झुकाते माथ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

शीतलनाथ चालीसा

दोहा- नमन् करें अरहंत को, करें सिद्ध का ध्यान।
आचार्योपाध्याय साधु का, करें विशद गुणगान।।
जैनागम जिनधर्म शुभ, जिन मंदिर नवदेव।
शीतलनाथ जिनेन्द्र को, वन्दूँ विनत सदैव।।

(चौपाई)

आरण स्वर्ग से चय कर आये, माहिलपुर को धन्य बनाए।
जय-जय शीतल नाथ हमारे, भव-भव के दुख नाशन हारे।।
तुमने कर्म घातिया नाशे, अतिशय केवल ज्ञान प्रकाशे।
दृढ़रथ नृप के पुत्र कहाए, मात सुनन्दा प्रभु की गाए।।
गर्भोत्सव तव इन्द्र मनाए, रत्न वृष्टि करके हर्षाए।।
क्षीर सिन्धु से जल भर लाए, जन्मोत्सव पर न्हवन कराए।।
आयु लाख पूर्व की जानो, कल्प वृक्ष लक्षण पहिचानो।
नब्बे धनुष रही ऊँचाई, महिमा जिनकी कही न जाई।।
पद युवराज आपने पाया, कई वर्षों तक राज्य चलाया।

हिम का नाश देखकर स्वामी, बने मोक्ष पथ के अनुगामी ।।
केशलोंच कर दीक्षा धारी, हुए दिगम्बर प्रभु अविकारी।
पंच महाव्रत प्रभु ने पाए, निज आतम का ध्यान लगाए ।।
संयम तप धारण कर लीन्हें, संवर और निर्जरा कीन्हें।
कर्म घातिया प्रभु जी नाशे, अतिशय केवल ज्ञान प्रकाशे ।।
इन्द्र अनेकों चरणों आये, भक्ति भाव से शीश झुकाए।
पूजा कीन्हीं मंगलकारी, अतिशय हुए वहाँ पर भारी ।।
समवशरण तव देव बनाए, प्रातिहार्य अतिशय प्रगटाए।
गणधर रहे सतासी भाई, जिनकी महिमा है अधिकाई ।।
कुन्थु गणधर प्रथम कहाए, चार ज्ञान के धारी गाए।
दिव्य देशना प्रभू सुनाए, भव्य जीव सुनने को आए ।।
गणधर झेले जिसको भाई, सब भाषा मय सरल बनाई।
सम्यक् दर्शन पाए प्राणी, सुनकर श्री जिनवर की वाणी ।।
कुछ लोगों ने संयम पाया, मोक्ष मार्ग उनने अपनाया।
गगन गमन करते थे स्वामी, केवल ज्ञानी अन्तर्यामी ।।
स्वर्ण कमल पग तल में जानो, देव श्रेष्ठ रचते थे मानो।
गिरि सम्मेद शिखर पर आये, योग रोधकर ध्यान लगाए ।।
विद्युतवर शुभ कूट कहाए, जिसकी महिमा कही न जाए।
अश्विन शुक्ल अष्टमी जानो, पूर्वाषाढ़ नक्षत्र पिछानो ।।
इक साधु के संग में भाई, शीतल जिन ने मुक्ती पाई।
विशद भावना हम यह भाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।
जिस पथ को तुमने अपनाया, मेरे मन में पथ वह भाया।
इसी राह पर हम बढ़ जाएँ, उसमें कोई विघ्न न आएँ ।।

साहस बढ़े हमारा स्वामी, बने मोक्ष के हम अनुगामी।
शिव पदवी को हम भी पाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ ।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, दिन में चालीस बार।
'विशद' भाव से जो पढ़े, होवे भव से पार ।।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, होवे बहु गुणवान।
कर्म नाशकर शीघ्र ही, उसका हो निर्वाण ।।

आरती

ॐ जय शीतल नाथ प्रभो ! स्वामी शीतल नाथ प्रभो !
तुम शिवपुर के वासी, परमानन्द विभो...ॐ...।
माहिलपुर में जन्में, दृढ़रथ के प्यारे-स्वामी-2
मात सुनन्दा की कुक्षी से, जिनवर अवतारे ।।...ॐ... ।।1 ।।
पाण्डुक शिला के ऊपर, इन्द्रों ने भारी-स्वामी-2
क्षीर नीर से न्हवन कराया, अति विस्मयकारी ।।...ॐ... ।।2 ।।
कल्पवृक्ष तव पद में लक्षण, इन्द्रों ने देखा-स्वामी-2
शीतलनाथ नाम देकर के, जय जयकार किया ।।...ॐ... ।।3 ।।
पञ्च मुष्ठि से केश लुंचकर, संयम को धारा-स्वामी-2
अम्बर तजकर हुए दिगम्बर, आतम ध्यान किया ।।...ॐ... ।।4 ।।
कर्म घातिया नाशे तुमने, 'विशद' ज्ञान पाया-स्वामी-2
ॐकार मय दिव्य देशना, दे उपकार किया ।।...ॐ... ।।5 ।।
दिव्य ध्यान के द्वारा तुमने, सर्व कर्म नाशे-स्वामी-2
मुक्ति वधु को पाकर, शिवपुर वास किया ।।...ॐ... ।।6 ।।
दर्श आपका करके, सम्यक् दर्श जगे-स्वामी-2
सुख शांती सौभाग्य पुण्य से, प्राणी प्राप्त करें ।।...ॐ... ।।7 ।।

प्रशस्ति

दोहा- मध्यलोक के मध्य है, जम्बूद्वीप महान्।
होती जम्बू वृक्ष से, जिसकी शुभ पहिचान।।1।।
भरत क्षेत्र में एक है, उत्तम भारत देश।
प्रांत एक जिसमें रहा, राजस्थान विशेष।।2।।
राजधानी उसकी रही, जयपुर है शुभ नाम।
जिला भीलवाड़ा निकट, रहा कोटड़ी ग्राम।।3।।
संत भवन है मध्य में, अतिशय शीतल धाम।
शीतलनाथ जिनेश के, करके चरण प्रणाम।।4।।
शीतलनाथ विधान के, लिखने का प्रारम्भ।
बीस जून नौ को किया, छोड़ दम्भ आरम्भ।।5।।
विन्ध्यश्री जी ने वहाँ, दीन्हा शुभ उपदेश।
मंदिर जीर्णोद्धार हो, फिर से बने विशेष।।6।।
प्रतिमा शांतिनाथ की, प्रगटी तभी महान्।
लोगों ने मिलकर वहाँ, कीन्हें कई विधान।।7।।
श्रावण कृष्णा पञ्चमी, वर्षायोग महान्।
नगर भीलवाड़ा रहा, मन्दिर अजारदारान।।8।।
पच्चिस सौ पैंतीस, शुभ रहा वीर निर्वाण।
विशद भाव से यह किया, जिनवर का गुणगान।।9।।
प्रेरित होकर लोग कई, आए हमारे पास।
आग्रह सब करने लगे, हमसे यह सब खास।।10।।
शीतल नाथ विधान की, रचना करो महान्।
जिसको पाकर हम सभी, का होवे कल्याण।।11।।
लघु धी लघुता से विशद, रचना हुई महान्।
जिन गुरु के आशीष से, किया गया गुणगान।।12।।
बुधजन पढ़कर के करें, इसका पूर्ण सुधार।
जिनवाणी का श्रेष्ठ यह, धारें कण्ठाहार।।13।।

विशद श्रेयांसनाथ विधान

प्रथम - ह्रीं
द्वितीय - 6
तृतीय - 12
चतुर्थ - 24
पञ्चम - 48

रचयिता

प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

श्रेयांसनाथ स्तवन

दोहा- दोष अठारह से रहित, घाती कर्म विहीन।
शत इन्द्रों से पूज्य हैं, निज स्वभाव में लीन।।

श्रेयांसनाथ कहलाये जग में, सर्व जगत् मंगलकारी।
सिद्ध दशा को पाने वाले, परम सिद्ध हैं शिवकारी।।
अर्हत् कल्पतरु कहलाए, इच्छित फल के दाता हैं।
भवि जीवों को अभय प्रदायक, अनुपम भाग्य विधाता हैं।।
जिनवर हुए अनन्त भूत में, आगे होते जाएँगे।
अर्हत् केवलज्ञानी आगे, सिद्ध परम पद पाएँगे।।
तीर्थंकर सामान्य केवली, उपसर्ग मूक केवली गाए।
समुद्घात केवलज्ञानी अरु, अन्तःकृत भी कहलाए।।2।।
कर्मोदय से यदि किसी के, रोग भयंकर भारी हो।
तन मन रहता हो अशांत या, अन्य कोई बीमारी हो।।
विघ्न कोई आ जाते हों या, कोई असाता आ जावे।
भक्ती पूजा करने वाला, निश्चित ही साता पावे।।3।।
श्री श्रेयांसनाथ विधान का, श्रवण पठन शुभकारी है।
भव-भव के जो लगे कर्म वह, कर्म प्रणासनकारी है।।
सारे जग का वैभव पाकर, इन्द्रादी पदवी पाते।
अचरज क्या जिन की पूजा से, अर्हत् ही नर बन जाते।।4।।
इस विधान की महिमा कोई, शब्दों में ना कह पावें।
अल्पमति नर की क्या शक्ति, बृहस्पति भी रह जावे।।
'विशद' भाव से जो विधान यह, एक बार भी करते हैं।
भव के बन्ध काटकर के वह, मुक्ति वधू को वरते हैं।।

दोहा- श्रेयांसनाथ भगवान की, महिमा अब हम अपार।
पूजा करके भाव से, हो भवदधि से पार।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री श्रेयांसनाथ पूजन

(स्थापना)

रवि केवल ज्ञान का शुभ अनुपम, अन्तर में जिनके चमक रहा।
भव्यों को रत्नत्रय द्वारा, जो पहुँचाते हैं मोक्ष अहा।।
संयम तप के पथ पर चलकर, जो पहुँच गये हैं शिवपुर में
वह तीर्थंकर श्रेयांस जिनेश्वर, आन पधारें मम उर में।।
हमने अपनाए मार्ग कई, पर हमें मिला न मार्ग सही।
प्रभू बढ़े आप जिस मारग पर, हम भी अपनाएँ मार्ग वही।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छन्द)

जन्मादि जरा से हारे, इस जग के प्राणी सारे।
हम उससे बचने आये, ये नीर चढ़ाने लाए।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भाई संसार असारा, सन्तप्त जगत है सारा।
हम चन्दन श्रेष्ठ घिसाते, चरणों में नाथ चढ़ाते।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद कभी न पाया, प्राणी जग में भटकाया।
यह अक्षत श्रेष्ठ धुलाए, प्रभू यहाँ चढ़ाने लाए।।

जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

है काम वासना भाई, सारे जग में दुखदायी।
हम उससे बचने आए, प्रभु पुष्प चढ़ाने लाए।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सब क्षुधा रोग के रोगी, हैं साधू योगी भोगी।
अब मैटो भूख हमारी, नैवेद्य चढ़ाते भारी।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मोह महातम भारी, मोहित है दुनियाँ सारी।
हम मोह नशाने आए, प्रभु दीप जलाकर लाए।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन को कीन्हा काला, कर्मों ने घेरा डाला।
हम कर्म नशाने आये, यह सुरभित गंध जलाए।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोक्ष महाफल पाएँ, भव बाधा पूर्ण नशाएँ।
यह फल ताजे हम लाए, चरणों में श्रेष्ठ चढ़ाए।।

जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पद अनर्घ को पाये, हम अनुपम थाल भराये।
यह आठों द्रव्य मिलाते, प्रभु चरणों श्रेष्ठ चढ़ाते।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य (शम्भू छंद)

ज्येष्ठ वदी षष्ठी है पावन, सिंहपुरी नगरी में आन।
गर्भकल्याण प्राप्त कीन्हें शुभ, श्री श्रेयांसनाथ भगवान।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदी तिथि ग्यारस को, पाए जन्म श्रेयांस कुमार।
विमलराज रानी विमला के, गृह में हुआ मंगलाचार।।
जन्म कल्याणक की पूजा हम, करते भक्ति भाव के साथ।
मोक्षलक्ष्मी हमें प्राप्त हो, चरण झुकाते हम तव माथ।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकादशी फाल्गुन कृष्णा की, श्री श्रेयांसनाथ भगवान।
राग-द्वेष तज दीक्षा धारे, सर्व लोक में हुए महान्।।
हम चरणों में वन्दन करते, मम जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्ताय श्री श्रेयासंनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द चामर)

माघ कृष्ण की अमावस, प्राप्त किए मंगलम्।
श्री श्रेयांस तीर्थेश, आप हुए सुमंगलम्।।
कर्म चार नाश आप, ज्ञान पाए मंगलम्।
दिव्यध्वनि आप दिए, सौख्यकार मंगलम्।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाऽमावस्यायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्ताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णमासी माह श्रावण, सम्मेदगिरि से ध्यान कर।
श्रेय जिन स्वधाम पहुँचे, जगत् का कल्याण कर।।
हम कर रहे पूजा प्रभू की, श्रेष्ठ भक्ती भाव से।
मस्तक झुकाते जोड़ कर द्वय, प्रभू पद में चाव से।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला पूर्णिमायां मोक्षकल्याणक प्राप्ताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – इन्द्र सुरासुर चरण में, झुकते हैं भूपाल।
श्री श्रेयांस जिनराज की, गाते हम जयमाल।।

(काव्य छन्द)

जय-जय श्रेयांसनाथ, प्रभू आप कहाए।
जय-जय जिनेन्द्र आप, तीर्थेश पद पाए।।
प्रभु सिंहपुरी नगरी में, जन्म लिया है।
विमला श्री माता को, प्रभू धन्य किया है।।
राजा विमल प्रभू के, प्रभू लाल कहाए।
शुभ ज्येष्ठ कृष्ण, अष्टमी को गर्भ में आए।।

फाल्गुन वदी ग्यारस, प्रभु जन्म पाए हैं।
सौधर्म आदी इन्द्र, चरण सिर झुकाए हैं।।
पाण्डुक शिला पे जाके, अभिषेक कराया।
गेण्डा का चिन्ह देख, सारे जग को बताया।।
श्रेयांस नाथ जिनवर का, नाम तब दिया।
आके शची ने प्रभु का, श्रृंगार शुभ किया।।
इक्कीस लाख वर्ष का, कुमार काल है।
युवराज सुपद पाया, प्रभू ने विशाल है।।
अस्सी धनुष की जिनवर, शुभ देह पाए हैं।
आयु चौरासी लाख वर्ष, की गिनाए हैं।।
श्री का विनाश देख, वैराग्य धर लिया।
फाल्गुन वदी सुग्यारस, प्रभु ध्यान शुभ किया।।
जाके मनोहर वन में, तेला किए प्रभो।
फिर घातिया विनाश करके, हो गये विभो।।
शुभ माघ की अमावस का, दिन शुभम् रहा।
कैवल्य ज्ञान पाये, श्रेयांस जिन अहा।।
रचना समवशरण की, तब देव शुभ किए।
प्रभु के चरण में ढोक आके, देव सब दिए।।
ॐकार रूप दिव्य ध्वनि, दीन्हे प्रभू अहा।
जीवों के लिए धर्म का, साधन महा रहा।।
धर्मादि सात सत्तर, गणधर थे पास में।
जो दिव्य देशना की, रहते थे आस में।।
करके विहार जिनवर, सम्मेद गिरि गये।
आश्चर्य वहाँ देवों ने, किए कुछ नये।।

श्रावण की पूर्णिमा को, सब कर्म नशाए।
फिर सिद्ध शिला पर, अपना धाम बनाए।।
शाश्वत् अखण्ड सुख फिर, पाए प्रभु अहा।
वह सौख्य प्राप्त करने का, भाव मम् रहा।।

दोहा- श्री श्रेयांस जिनदेव जी, करो श्रेय का दान।
दाता तीनों लोक के, श्रेयस् करो प्रदान।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- जो पद पाया आपने, शाश्वत् रहा महान्।
वह पद पाने के लिए, किया 'विशद' गुणगान।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

प्रथम वलयः

दोहा- पर्याप्ती के भेद छह, का होता संयोग।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पाने शिवपद योग।।

(मण्डस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

रवि केवल ज्ञान का शुभ अनुपम, अन्तर में जिनके चमक रहा।
भव्यों को रत्नत्रय द्वारा, जो पहुँचाते हैं मोक्ष अहा।।
संयम तप के पथ पर चलकर, जो पहुँच गये हैं शिवपुर में
वह तीर्थंकर श्रेयांस जिनेश्वर, आन पधारें मम उर में।।
हमने अपनाए मार्ग कई, पर हमें मिला न मार्ग सही।
प्रभू बढ़े आप जिस मारग पर, हम भी अपनाएँ मार्ग वही।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

6 पर्याप्ति

चतुर्गती के जीव मरण कर, अन्य गती में जाते हैं।
ग्रहण करें आहार वर्गणा, पर्याप्ती तब पाते हैं।।
पर्याप्ती आहार मैटकर, पाया तुमने मुक्ती धाम।
श्री श्रेयांस जिन के पद पंकज, मेरा बारम्बार प्रणाम।।1।।

ॐ ह्रीं आहारपर्याप्ति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर्याप्ती आहार ग्रहण से, हो शरीर का शुभ निर्माण।
योग्य देह के शक्ती पाते, है पर्याप्ती की पहचान।।
छोड़ आप संसारी झंझट पाया, तुमने शिवपुर धाम।
श्री श्रेयांस जिन के पद पंकज, मेरा बारम्बार प्रणाम।।2।।

ॐ ह्रीं शरीरपर्याप्ति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावें जीव इन्द्रियाँ तन में, संसारी की यह पहिचान।
करें पूर्णतः योग्य विषय की, अपने-अपने शुभ स्थान।।
जन्म मरण इन्द्रिय विषयों का, किया आपने पूर्ण विनाश।
अतः आपके पद पंकज में, रहे हमारा हरदम वास।।3।।

ॐ ह्रीं इन्द्रियपर्याप्ति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्वासोच्छ्वास प्राप्त करते हैं, इन्द्रिय पर्याप्ती के बाद।
प्राप्त करें उस योग्य पूर्णता, भाई रखना हरदम याद।।
पर्याप्ती आहार मैटकर, पाया तुमने मुक्ती धाम।
श्री श्रेयांस जिन के पद पंकज, मेरा बारम्बार प्रणाम।।4।।

ॐ ह्रीं श्वासोच्छ्वासपर्याप्ति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भाषा पर्याप्ती पाते हैं, संसारी जो हैं त्रस जीव।
वचन वर्गणा के द्वारा वह, कर्म बन्ध भी करें अतीव।।
पर्याप्ती पाने का झंझट, नाश हुए त्रिभुवन स्वामी।
अतः आपके पद पंकज में, नत होकर मम प्रणमामी।।5।।

ॐ ह्रीं भाषापर्याप्ति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचेन्द्रिय चारों गतियों में, मन पर्याप्ती के होते योग्य।
एकेन्द्रिय से चार इन्द्रिय तक, सारे मन के रहे अयोग्य।।
केवलज्ञानी हुए आप तब, पर्याप्ती का रहा न काम।
श्री श्रेयांस जिन के पद पंकज, मेरा बारम्बार प्रणाम।।6।।

ॐ ह्रीं मनपर्याप्ति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ आहार शरीर आदि यह, पर्याप्तियाँ पाते हैं जीव।
भ्रमण करें वह भव सागर में, पाकर के जो दुःख अतीव।।
संयम तप से कर्म निर्जरा, करके पाते केवल ज्ञान।
पर्याप्ति फिर नाश करें जिन, पावें अनुपम पद निर्वाण।।7।।

ॐ ह्रीं छहपर्याप्ति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा– अविरति का जिनदेव जी, करते पूर्ण विनाश।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, करने ज्ञान प्रकाश।।

(मण्डस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

रवि केवल ज्ञान का शुभ अनुपम, अन्तर में जिनके चमक रहा।
भव्यों को रत्नत्रय द्वारा, जो पहुँचाते हैं मोक्ष अहा।।
संयम तप के पथ पर चलकर, जो पहुँच गये हैं शिवपुर में।
वह तीर्थंकर श्रेयांस जिनेश्वर, आन पधारें मम उर में।।
हमने अपनाए मार्ग कई, पर हमें मिला न मार्ग सही।
प्रभू बढ़े आप जिस मारग पर, हम भी अपनाएँ मार्ग वही।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

12 अविरति

(चौपाई छन्द)

स्पर्शन इन्द्रिय अज्ञानी, वश में न कर पाते प्राणी।
अविरति हीन कहे जिन स्वामी, तीन लोक में अन्तर्यामी।।1।।

ॐ ह्रीं स्पर्शइन्द्रिय अविरति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रसना के आधीन बताए, अविरति धारी प्राणी गाए।
अविरति हीन कहे जिन स्वामी, तीन लोक में अन्तर्यामी।।2।।

ॐ ह्रीं रसनाइन्द्रिय अविरति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घ्राणेन्द्रिय के वश हो प्राणी, अविरति पाते हैं अज्ञानी।
अविरति हीन कहे जिन स्वामी, तीन लोक में अन्तर्यामी।।3।।

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रिय अविरति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्षु के आधीन रहे हैं, अविरति धारी जीव कहे हैं।
अविरति हीन कहे जिन स्वामी, तीन लोक में अन्तर्यामी।।4।।

ॐ ह्रीं चक्षुइन्द्रिय अविरति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्णेन्द्रिय को वश न करते, वे प्राणी अविरति को धरते।
अविरति हीन कहे जिन स्वामी, तीन लोक में अन्तर्यामी।।5।।

ॐ ह्रीं कर्णेन्द्रिय अविरति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन को वश में न कर पावें, अविरति धारी वे कहलावें।
अविरति हीन कहे जिन स्वामी, तीन लोक में अन्तर्यामी।।6।।

ॐ ह्रीं मन अनेन्द्रिय अविरति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूक्ष्म और स्थूल कहाए, पृथ्वी कायिक जीव बताए।
एकेन्द्रिय के धारी जानो, पृथ्वी ही तन उनका मानो।।
उनको जो बाधा हो जाए, अत्यासादन दोष कहाए।
जिनवर की अर्चा के द्वारा, दोष नाश हो जाए हमारा।।7।।

ॐ ह्रीं पृथ्वीकायिक अविरति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकेन्द्रिय जलकायिक जानो, स्थूलत्व सूक्ष्म पहिचानो।
जल ही जिनकी देह बताई, ओस बूँद सम आकृति गाई।।
उनको जो बाधा हो जाए, अत्यासादन दोष कहाए।
जिनवर की अर्चा के द्वारा, दोष नाश हो जाए हमारा।।8।।

ॐ ह्रीं जलकायिक अविरति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नीकायिक प्राणी गाए, सूक्ष्म और स्थूल बताए।
अग्नी ही तन उनका जानो, सुई की नोकों सम हों मानो।।
उनको जो बाधा हो जाए, अत्यासादन दोष कहाए।
जिनवर की अर्चा के द्वारा, दोष नाश हो जाए हमारा।।9।।

ॐ ह्रीं अग्निकायिक अविरति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायूकायिक जीव निराले, ध्वज समान जो उड़ने वाले।
सूक्ष्म और स्थूल बताए, एकेन्द्रिय तन वायू पाये।।
उनको जो बाधा हो जाए, अत्यासादन दोष कहाए।
जिनवर की अर्चा के द्वारा, दोष नाश हो जाए हमारा।।10।।

ॐ ह्रीं वायुकायिक अविरति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नित्य इतर साधारण जानो, सूक्ष्म स्थूल भेद पहिचानो।
सप्रतिष्ठित अप्रतिष्ठित भाई, वनस्पति प्रत्येक बताई।।
उनको जो बाधा हो जाए, अत्यासादन दोष कहाए।
जिनवर की अर्चा के द्वारा, दोष नाश हो जाए हमारा।।11।।

ॐ ह्रीं वनस्पतिकायिक अविरति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंखादी त्रस जीव बताए, दो त्रि चऊ पंचेन्द्रिय गाए।
जंगम चलने वाले प्राणी, वर्णन करती है जिनवाणी।।
उनको जो बाधा हो जाए, अत्यासादन दोष कहाए।
जिनवर की अर्चा के द्वारा, दोष नाश हो जाए हमारा।।12।।

ॐ ह्रीं पंचेन्द्रिय अविरति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– द्वादश अविरति त्याग कर, बनते हैं जिन संत।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पाने पद अर्हन्त।।

ॐ ह्रीं द्वादश अविरति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः

दोहा– चौबिस परिग्रह से रहित, होते जिन अर्हन्त।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पाने शिवपद पन्थ।।

(मण्डस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

रवि केवल ज्ञान का शुभ अनुपम, अन्तर में जिनके चमक रहा।
भव्यों को रत्नत्रय द्वारा, जो पहुँचाते हैं मोक्ष अहा।।
संयम तप के पथ पर चलकर, जो पहुँच गये हैं शिवपुर में
वह तीर्थंकर श्रेयांस जिनेश्वर, आन पधारें मम उर में।
हमने अपनाए मार्ग कई, पर हमें मिला न मार्ग सही।
प्रभू बढ़े आप जिस मारग पर, हम भी अपनाएँ मार्ग वही।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

परिग्रह 24 भेद

(ताटंक छन्द)

क्रोध कषाय करें जो प्राणी, वह दुःखों को पाते हैं।
कर्मोदय से दुर्गति पाकर, वे नरकों में जाते हैं।।
कर्म नाशकर यह तीर्थंकर, शिव पदवी को पाते हैं।
यह संसार वास को तजकर, शिवपुर धाम बनाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं क्रोधकषाय रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करके मान कषाय जगत में, शांती मन की खोते हैं।
दुर्गति के भागी बनते हैं, बीज कर्म के बोते हैं।।

कर्म नाशकर यह तीर्थंकर, शिव पदवी को पाते हैं।
यह संसार वास को तजकर, शिवपुर धाम बनाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं मानकषाय रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मायाचारी करने वाले, इस जग में भटकाते हैं।
खोते हैं विश्वास पूर्णतः, पशूगति में जाते हैं।।
कर्म नाशकर यह तीर्थंकर, शिव पदवी को पाते हैं।
यह संसार वास को तजकर, शिवपुर धाम बनाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं मायाकषाय रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ कषाय से लोभी प्राणी, जोड़-जोड़ मर जाते हैं।
खाते-पीते और कोई फल, कर्मों का वह पाते हैं।।
कर्म नाशकर यह तीर्थंकर, शिव पदवी को पाते हैं।
यह संसार वास को तजकर, शिवपुर धाम बनाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं लोभकषाय रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

हास्य कषाय उदय में आवे, प्राणी हँस-हँस के खिल जावे।
जिनवर हास्य कषाय के नाशी, पद पाते अनुपम अविनाशी।।5।।

ॐ ह्रीं हास्यकषाय रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रति उदय में जिसके आवे, वह औरों से प्रीति जगावे।
जिनवर मान कषाय के नाशी, पद पाते अनुपम अविनाशी।।6।।

ॐ ह्रीं रतिकषाय रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरति भाव मन में आ जावे, अप्रीति का भाव जगावे।
जिनवर माया के है नाशी, पद पाते अनुपम अविनाशी।।7।।

ॐ ह्रीं अरतिकषाय रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुछ भी इष्टानिष्ट दिखावे, मन में प्राणी शोक मनावे।
जिनवर लोभ कषाय के नाशी, पद पाते अनुपम अविनाशी।।8।।

ॐ ह्रीं शोक कषाय रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चीज दिखे कोई भयकारी, मन में व्याकुल होवे भारी।
जिनवर भय कषाय के नाशी, पद पाते अनुपम अविनाशी।।9।।

ॐ ह्रीं भयकषाय रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्व-पर के गुण दोष दिखावे, मन में ग्लानी को उपजावे।
जिनवर कहे जुगुप्सा नाशी, पद पाते अनुपम अविनाशी।।10।।

ॐ ह्रीं जुगुप्सा कषाय रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन में व्याकुल होके भारी, रमने को खोजे वह नारी।
जिनवर पुरुषवेद के नाशी, पद पाते अनुपम अविनाशी।।11।।

ॐ ह्रीं पुरुषवेद रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रमण करे पुरुषों में भारी, उसके वेदोदय हो नारी।
जिनवर स्त्रीवेद के नाशी, पद पाते अनुपम अविनाशी।।12।।

ॐ ह्रीं स्त्रीवेद रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन में नर नारी की आशा, रमने की करते अभिलाषा।
जिनवर वेद नपुंसक नाशी, पद पाते अनुपम अविनाशी।।13।।

ॐ ह्रीं नपुंसकवेद रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्याभाव उदय में आवे, सम्यक् श्रद्धा न हो पावे।
जिन होते मिथ्या के नाशी, पद पाते अनुपम अविनाशी।।14।।

ॐ ह्रीं मिथ्याभाव रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छंद)

खेत परिग्रह की अभिलाषा, मानव के मन में आवे।
रक्षा और सुरक्षा हेतू, दूर-दूर तक वे भटकावे।।
यह बहिरंग परिग्रह भाई, जग में गाया दुखकारी।
तीर्थंकर यह कर्म नाशकर, हो जाते हैं अविकारी।।15।।

ॐ ह्रीं क्षेत्र परिग्रह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घर मकान की आशा रखते, वास्तु परिग्रह के धारी।
मोह जगाते रहते उसमें, हो न पाते अनगारी।।

यह बहिरंग परिग्रह भाई, जग में गाया दुखकारी।
तीर्थंकर यह कर्म नाशकर, हो जाते हैं अविकारी।।16।।

ॐ ह्रीं वास्तु परिग्रह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाँदी के बर्तन गहने की, आशा रखते हैं भारी।
मूर्छा रखते हैं रुपयों की, हिरण्य परिग्रह के धारी।।
यह बहिरंग परिग्रह भाई, जग में गाया दुखकारी।
तीर्थंकर यह कर्म नाशकर, हो जाते हैं अविकारी।।17।।

ॐ ह्रीं हिरण्य परिग्रह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णमयी आभूषण की जब, मन में आवे अभिलाषा।
स्वर्ण परिग्रह धारी की यह, भाई जानो परिभाषा।।
यह बहिरंग परिग्रह भाई, जग में गाया दुखकारी।
तीर्थंकर यह कर्म नाशकर, हो जाते हैं अविकारी।।18।।

ॐ ह्रीं स्वर्ण परिग्रह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पशुधन पालन की अभिलाषा, मन में जो रखते प्राणी।
धन परिग्रह के धारी होते, हैं वह मानव अज्ञानी।।
यह बहिरंग परिग्रह भाई, जग में गाया दुखकारी।
तीर्थंकर यह कर्म नाशकर, हो जाते हैं अविकारी।।19।।

ॐ ह्रीं धन परिग्रह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिलाषा जिनके अनाज की, हैं अनाज के व्यापारी।
जोड़-जोड़ कोठों में भरते, धान्य परिग्रह के धारी।।
यह बहिरंग परिग्रह भाई, जग में गाया दुखकारी।
तीर्थंकर यह कर्म नाशकर, हो जाते हैं अविकारी।।20।।

ॐ ह्रीं धान्य परिग्रह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सेवा और चाकरी हेतू, पैसा देकर रखते पास।
पास में रखते हैं लोगों को, परिग्रह यह कहलाए दास।।

यह बहिरंग परिग्रह भाई, जग में गाया दुखकारी।
तीर्थंकर यह कर्म नाशकर, हो जाते हैं अविकारी।।21।।

ॐ ह्रीं दास परिग्रह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सेवा और चाकरी हेतू, दासी रखते अपने पास।
परिग्रह के धारी करते हैं, स्वयं धर्म का अपने ह्रास।।
यह बहिरंग परिग्रह भाई, जग में गाया दुखकारी।
तीर्थंकर यह कर्म नाशकर, हो जाते हैं अविकारी।।22।।

ॐ ह्रीं दासी परिग्रह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वस्त्रों की अभिलाषा मन में, रखते हैं जो जग के जीव।
कुप्य परिग्रह के धारी वह, आस्रव नितप्रति करें अतीव।।
यह बहिरंग परिग्रह भाई, जग में गाया दुखकारी।
तीर्थंकर यह कर्म नाशकर, हो जाते हैं अविकारी।।23।।

ॐ ह्रीं कुप्य परिग्रह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बर्तन की अभिलाषा जिनके, मन में लगी है अपरम्पार।
भाण्ड परिग्रह धारी जग में, बन पाते हैं ना अनगार।।
यह बहिरंग परिग्रह भाई, जग में गाया दुखकारी।
तीर्थंकर यह कर्म नाशकर, हो जाते हैं अविकारी।।24।।

ॐ ह्रीं भाण्ड परिग्रह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतरंग परिग्रह के चौदह, बाह्य के दश बतलाए भेद।
परिग्रह की अभिलाषा धारी, न मिलने पर करते खेद।।
भेद परिग्रह के हैं चौबिस, जग में गाये दुखकारी।
अभिलाषा इनकी जो तजते, वह होते हैं अविकारी।।25।।

ॐ ह्रीं चौबिस परिग्रह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा- बाईस परीषह जय करें, चौदह जीव समास।
द्वादश तपधारी मुनी, करते शिवपुर वास।।

(मण्डस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

रवि केवल ज्ञान का शुभ अनुपम, अन्तर में जिनके चमक रहा।
भव्यों को रत्नत्रय द्वारा, जो पहुँचाते हैं मोक्ष अहा।।
संयम तप के पथ पर चलकर, जो पहुँच गये हैं शिवपुर में
वह तीर्थंकर श्रेयांस जिनेश्वर, आन पधारें मम उर में।।
हमने अपनाए मार्ग कई, पर हमें मिला न मार्ग सही।
प्रभू बढ़े आप जिस मारग पर, हम भी अपनाएँ मार्ग वही।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

22 परीषह जय

(दोहा)

क्षुधा परीषह जय पाते हैं, मुनी वृन्द होके अविकार।
ज्ञान ध्यान तप में रत रहकर, करें साधना मुनि अनगार।।1।।

ॐ ह्रीं क्षुधा परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृषा परीषह जय करते हैं, वीतराग साधु अनगार।
ज्ञान ध्यान तप के धारी मुनि, जग में होते मंगलकार।।2।।

ॐ ह्रीं तृषा परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुश्किल शीत परीषह जय है, वह भी सहते संत महान्।
सम्यक् चारित पाने वाले, होते संयम के स्थान।।3।।

ॐ ह्रीं शीत परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्मी की लपटों को सहते, निस्पृह साधक हो अविकार।
उष्ण परीषह जय के धारी, जग में गाए मंगलकार।।4।।

ॐ ह्रीं ऊष्ण परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दंश मशक परिषह जय करते, समता धारी संत प्रधान।
कठिन साधना करने वाले, तीन लोक में रहे महान्।।5।।

ॐ ह्रीं दंश मशक परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तर बाह्य लाज का कारण, नग्न परीषह सहते हैं।
ज्ञान ध्यान तप के धारी मुनि, समता भाव से रहते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं नग्न परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरति परीषह जय के धारी, होते हैं साधु निर्ग्रन्थ।
विशद साधना करने वाले, करते हैं कर्मों का अन्त।।7।।

ॐ ह्रीं अरति परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हाव-भाव लखकर स्त्री के, समता से रहते अनगार।
स्त्री परीषह जय करते हैं, वीतराग साधू मनहार।।8।।

ॐ ह्रीं स्त्री परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चर्या परीषह जय धारी मुनि, पैदल करते सदा विहार।
यत्नाचार धरें चर्या में, जिनकी चर्या अपरम्पार।।9।।

ॐ ह्रीं चर्या परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान ध्यान आदी को बैठें, विविक्त आसन के आधार।
निषद्या परीषह जय करते हैं, जैन मुनी होके अविकार।।10।।

ॐ ह्रीं निषद्या परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षिती शयन एकाशन में मुनि, करते हैं समता को धार।
शैय्या परीषह जय पाते हैं, जैन मुनि होके अविकार।।11।।

ॐ ह्रीं शैय्या परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कटु वचन बोले यदि कोई, फिर भी न करते हैं रोष।
जैन मुनीश्वर समता धारें, परीषह जय धारी आक्रोष।।12।।

ॐ ह्रीं आक्रोश परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई छंद)

वध करे यदि कोई प्राणी, न बोलें मुनि कटु वाणी।
मुनि वध परिषह जय धारी, हैं जग में मंगलकारी।।13।।

ॐ ह्रीं वध परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिराज याचना धारी, परिषह जय करते भारी।
इनकी है महिमा न्यारी, होते हैं मंगलकारी।।14।।

ॐ ह्रीं याचना परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ना लाभ प्राप्त कर पावें, मन में समता उपजावें।
मुनि अलाभ परीषह वाले, इस जग में रहे निराले।।15।।

ॐ ह्रीं अलाभ परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन में कोइ रोग सतावें, मुनि शांत भाव को पावें।
जय रोग परीषह धारी, होते जग मंगलकारी।।16।।

ॐ ह्रीं रोग परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृण शूल आदि चुभ जावे, फिर भी मन समता आवे।
तृण स्पर्श जयी कहलावे, परीषह में न घबड़ावे।।17।।

ॐ ह्रीं स्पर्श परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन-मल से लिप्त हो जावे, मन आकुलता न लावें।
मुनि मल परिषह जय धारी, जग में रहते अविकारी।।18।।

ॐ ह्रीं मल परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्कार पुरस्कार जानो, परिषह जय धारी मानो।
मुनिवर होते शुभकारी, इस जग में मंगलकारी।।19।।

ॐ ह्रीं सत्कार पुरस्कार परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर शुभ प्रज्ञा पावें, प्रज्ञा में न हर्षावें।
मुनि प्रज्ञा परिषह धारी, जय पाते हैं अविकारी।।20।।

ॐ ह्रीं प्रज्ञा परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान परीषह गाया, मुनिवर ने जय शुभ पाया।
न खेद हृदय में लावें, मन में समता उपजावें।।21।।

ॐ ह्रीं अज्ञान परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिराज अदर्शन धारी, होते उसके जयकारी।
मुनि परिषह जय शुभ पावें, मन में समता उपजावें।।22।।

ॐ ह्रीं अदर्शन परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

14 जीव समास

(शम्भू छंद)

पाँच भेद स्थावर प्राणी, अपर्याप्त जिन गाए हैं।
नहीं रोकते रुकते हैं जो, सूक्ष्म जीव बतलाए हैं।।
जीव समास नशाने वाले, बने आप केवल ज्ञानी।
अतः आपकी पूजा करने, आते हैं जग के प्राणी।।23।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मअपर्याप्त जीव समास रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच भेद स्थावर के जो, सूक्ष्म जीव कहलाए हैं।
छह पर्याप्ती पाने वाले, जो पर्याप्त कहाए हैं।।
जीव समास नशाने वाले, बने आप केवल ज्ञानी।
अतः आपकी पूजा करने, आते हैं जग के प्राणी।।24।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मपर्याप्त जीव समास रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच भेद बादर एकेन्द्रिय, जीवों के बतलाए हैं।
रूकने और रोकने वाले, अपर्याप्त कहलाए हैं।।
जीव समास नशाने वाले, बने आप केवल ज्ञानी।
अतः आपकी पूजा करने, आते हैं जग के प्राणी।।25।।

ॐ ह्रीं बादर अपर्याप्त जीव समास रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच भेद बादर एकेन्द्रिय, पर्याप्ती शुभ पाए हैं।
स्थावर पर्याप्त जीव वह, आगम में बतलाए हैं।।

जीव समास नशाने वाले, बने आप केवल ज्ञानी।
अतः आपकी पूजा करने, आते हैं जग के प्राणी।।26।।

ॐ ह्रीं वादर पर्याप्त जीव समास रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह पर्याप्ती पूर्ण नहीं जो, दो इन्द्रिय कर पाए हैं।
अपर्याप्त वह जीव जगत के, आगम में बतलाए हैं।।
जीव समास नशाने वाले, बने आप केवल ज्ञानी।
अतः आपकी पूजा करने, आते हैं जग के प्राणी।।27।।

ॐ ह्रीं द्विइन्द्रिय अपर्याप्ति जीव समास रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्शन रसना दो इन्द्रिय, जीव जगत में पाए हैं।
पर्याप्ती छह पाने वाले, दो इन्द्रिय कहलाए हैं।।
जीव समास नशाने वाले, बने आप केवल ज्ञानी।
अतः आपकी पूजा करने, आते हैं जग के प्राणी।।28।।

ॐ ह्रीं द्विइन्द्रिय पर्याप्त जीव समास रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन इन्द्रियाँ पाने वाले, पर्याप्ती न पाए हैं।
अपर्याप्त त्रय इन्द्रिय प्राणी, अतिशय दुःख उपाए हैं।।
जीव समास नशाने वाले, बने आप केवल ज्ञानी।
अतः आपकी पूजा करने, आते हैं जग के प्राणी।।29।।

ॐ ह्रीं त्रय-इन्द्रिय अपर्याप्त जीव समास रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह पर्याप्ती सहित जीव जो, तीन इन्द्रियाँ पाए हैं।
वह पर्याप्त तीन इन्द्रिय के, धारी प्राणी गाए हैं।।
जीव समास नशाने वाले, बने आप केवल ज्ञानी।
अतः आपकी पूजा करने, आते हैं जग के प्राणी।।30।।

ॐ ह्रीं त्रय इन्द्रिय पर्याप्त जीव समास रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह पर्याप्ती चार इन्द्रिय, पूर्ण नहीं कर पाए हैं।
अपर्याप्त वह चार इन्द्रिय, जीव असंज्ञी गाए हैं।।

जीव समास नशाने वाले, बने आप केवल ज्ञानी।
अतः आपकी पूजा करने, आते हैं जग के प्राणी।।31।।

ॐ ह्रीं चउ इन्द्रिय अपर्याप्त जीव समास रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह पर्याप्ती सहित जीव जो, चार इन्द्रियाँ पाए हैं।
वह पर्याप्ति चउ इन्द्रिय के, प्राणी जग में गाए हैं।।
जीव समास नशाने वाले, बने आप केवल ज्ञानी।
अतः आपकी पूजा करने, आते हैं जग के प्राणी।।32।।

ॐ ह्रीं चउ इन्द्रिय पर्याप्त जीव समास रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच इन्द्रियाँ पाने वाले, मन से हीन बताए हैं।
अपर्याप्त हैं पूर्ण नहीं जो, पर्याप्ती कर पाए हैं।।
जीव समास नशाने वाले, बने आप केवल ज्ञानी।
अतः आपकी पूजा करने, आते हैं जग के प्राणी।।33।।

ॐ ह्रीं असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव समास रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

पाँच इन्द्रिय पाने वाले, मन से हीन रहे जो जीव।
होते हैं पर्याप्त जीव जो, करते हैं वह कर्म अतीव।।
जीव समास नशाने वाले, बने आप केवल ज्ञानी।
अतः आपकी पूजा करने, आते हैं जग के प्राणी।।34।।

ॐ ह्रीं असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

पाँच इन्द्रियाँ पाने वाले, मन से सहित बताए हैं।
पर्याप्ती छह पाते हैं जो, संज्ञी पर्याप्त कहाए हैं।।
जीव समास नशाने वाले, बने आप केवल ज्ञानी।
अतः आपकी पूजा करने, आते हैं जग के प्राणी।।35।।

ॐ ह्रीं संज्ञी पर्याप्त जीव समास रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

पाँच इन्द्रियाँ पाने वाले, मन भी उत्तम पाए हैं।
पर्याप्ती न पूर्ण करें जो, संज्ञ्यपर्याप्त कहाए हैं।।

जीव समास नशाने वाले, बने आप केवल ज्ञानी।
अतः आपकी पूजा करने, आते हैं जग के प्राणी।।36।।

ॐ ह्रीं संज्ञ्य पर्याप्त जीव समास रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

12 तप

(चाल छंद)

जो अनशन तप को धारें, वह अपने कर्म निवारें।
श्री जिनवर जग हितकारी, हैं जग में मंगलकारी।।37।।

ॐ ह्रीं अनशन तप धारकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप ऊनोदर शुभ करते, फिर कर्म कालिमा हरते।
श्री जिनवर जग हितकारी, हैं जग में मंगलकारी।।38।।

ॐ ह्रीं ऊनोदर तप धारकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप परिसंख्यान व्रतधारी, मुनिवर होते अनगारी।
श्री जिनवर जग हितकारी, हैं जग में मंगलकारी।।39।।

ॐ ह्रीं व्रत परिसंख्यान तप धारकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वादिष्ट रसों के त्यागी, आत्मानुभूती अनुरागी।
श्री जिनवर जग हितकारी, हैं जग में मंगलकारी।।40।।

ॐ ह्रीं रस परित्याग तप धारकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शैय्याशन विविध लगाएँ, निज की अनुभूति जगाएँ।
श्री जिनवर जग हितकारी, हैं जग में मंगलकारी।।41।।

ॐ ह्रीं शैयाशन तप धारकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप काय क्लेश जगाएँ, चेतन में चित्त लगाएँ।
श्री जिनवर जग हितकारी, हैं जग में मंगलकारी।।42।।

ॐ ह्रीं काय-क्लेश तप धारकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द : पद्म नन्दीश्वर)

तप अन्तरंग शुभ धार, होते अनगारी।
गुण विनय आदि मनहार, जग मंगलकारी।।

हम तव गुण पाने नाथ, चरणों में आए।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाने को लाए।।43।।

ॐ ह्रीं विनय तप रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप प्रायश्चित्त शुभकार, साधू पाते हैं।
विषयों से हो अविकार, ध्यान लगाते हैं।।
हम तव गुण पाने नाथ, चरणों में आए।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाने को लाए।।44।।

ॐ ह्रीं प्रायश्चित्त तप रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैय्यावृत्ती तप श्रेष्ठ, जिनने भी पाया।
कर्मों का उनने रोग, क्षण में विनशाया।।
हम तव गुण पाने नाथ, चरणों में आए।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाने को लाए।।45।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ति तप रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप स्वाध्याय शुभधार, ज्ञानी बन जाते।
होकर के मुनि अनगार, शिव पदवी पाते।।
हम तव गुण पाने नाथ, चरणों में आए।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाने को लाए।।46।।

ॐ ह्रीं स्वाध्याय तप रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्युत्सर्ग सुतप हो लीन, निज गुण हम पाएँ।
कर्मों का करें विनाश, चेतन महकाएँ।।
हम तव गुण पाने नाथ, चरणों में आए।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाने को लाए।।47।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग तप रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है अंतरंग तप ध्यान, अनुपम शुभकारी।
हो कर्म निर्जरा खास, मुक्ती पदकारी।।

हम तव गुण पाने नाथ, चरणों में आए।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाने को लाए।।48।।

ॐ ह्रीं अन्तरंग तप रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाइस परीषह जय करते हैं, चौदह जीव समास विहीन।
द्वादश तप को तपने वाले, करते हैं कर्मों को क्षीण।।
विशद साधना करने वाले, साधू गाये हैं निर्ग्रन्थ।
कर्म घातिया के नाशी वह, बन जाते हैं जिन अर्हन्त।।49।।

ॐ ह्रीं द्वाविंशति परिषह जय चतुर्दश जीव समास रहिताय द्वादश तप सहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं एम् अर्हं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा– श्रेयांसनाथ भगवान का, किए निरन्तर जाप।
जयमाला गाए विशद, कट जाएँगे पाप।।

(शम्भू छंद)

श्री श्रेयांस जिनराज लोक में, मंगलमय मंगलकारी।
भवि जीवों के भाग्य विधाता, अनुपम है संकटहारी।।
महिमा जिनकी अगम अगोचर, सारे जग में अपरम्पार।
पूजा अर्चा करने वाला, हो जाता है भव से पार।।1।।

तीर्थंकर प्रकृति बन्ध कर, पाया अनुपम पुण्य अपार।
हुए पंचकल्याणक धारी, तीन लोक में अतिशयकार।।
स्वर्ग लोग से चयकर आए, पृथ्वी पर अवतार लिया।
सिंहपुरी नगरी को तुमने, प्रभु जी अतिशय धन्य किया।।2।।

जन्मोत्सव के शुभ अवसर पर, देवों ने जयकार किया।
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भाव से, मेरू गिरि पर न्हवन किया।।

शुभ भावों से सुरपति आकर, चरणों शीश झुकाते हैं।
खुश होकर के भक्ति भाव से, प्रभु जी के गुण गाते हैं।।3।।

पाकर के कोई निमित्त शुभ, मन वैराग्य जगाते हैं।
वन में जाकर के जिन प्रभू जी, संयम को अपनाते हैं।।
पंच मुष्ठि से केश लुंचकर, पंच महाव्रत धरते हैं।
लौकान्तिक चरणों में आकर, शुभ अनुमोदन करते हैं।।4।।

आत्म साधना करते स्वामी, केवलज्ञान जगाते हैं।
स्वर्ग लोक से इन्द्र प्रभू की, भक्ती करने आते हैं।।
इन्द्र की आज्ञा से कुबेर शुभ, समवशरण बनवाता है।
प्रभु के चरणों वन्दन करके, मन ही मन हर्षाता है।।5।।

गंधकुटी में कमलाशन पर, प्रभु जी शोभा पाते हैं।
दिव्य देशना भवि जीवों को, अतिशय आप सुनाते हैं।।
प्रभु का दर्शन करने वाले, अनुपम पुण्य कमाते हैं।
दिव्य देशना पाकर प्राणी, सम्यक् दर्शन पाते हैं।।6।।

प्रभु की दिव्य देशना पाकर, सम्यक् राह प्रदान करें।
अतिशय पुण्य कमावें प्राणी, जो प्रभु का गुणगान करें।।
कर्म नाश कर अपने सारे, शिवनगरी को जाते हैं।
सुख अनन्त के भोगी बनकर, शिवपुर धाम बनाते हैं।।7।।

दोहा– वीतराग सर्वज्ञ प्रभू, गुण अनन्त की खान।
''विशद'' ज्ञान पाने यहाँ, करते हैं गुणगान।।

ॐ ह्रीं सर्वदोष रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– प्रभु की महिमा है अगम, जान सके न कोय।
विशद भक्ति जो भी करे, शिवपुर वासी होय।।

इत्याशीर्वादः

श्री 1008 श्रेयांसनाथ भगवान की आरती

ॐ जय श्रेयांस प्रभो, स्वामी जय श्रेयांस प्रभो।
भक्त आरती करने, आए यहाँ विभो।।
ॐ जय.....

विमलसेन के सुत हो, विमला के प्यारे।
सिंहपुरी में जन्मे, गेण्डा चिह्न धारे।।
ॐ जय.....।।1।।

लख चौरासी पूरब, आयु प्रभु पाए।
अस्सी धनुष ऊँचाई, तन की कहलाए।।
ॐ जय.....।।2।।

गृह में रहकर प्रभु ने, राज्य सुपद पाया।
हृदय जगा वैराग्य प्रभु को, वह भी न भाया।।
ॐ जय.....।।3।।

राज्य पाट सब त्यागा, परिजन को छोड़ा।
विषय भोग से प्रभु ने, भी नाता तोड़ा।।
ॐ जय.....।।4।।

केश लोंचकर प्रभु ने, शुभ दीक्षा धारी।
पञ्च महाव्रत धारे, होके अविकारी।।
ॐ जय.....।।5।।

तीन योग से प्रभु ने, आतम को ध्याया।
कर्म घातिया नाशे, 'विशद' ज्ञान पाया।।
ॐ जय.....।।6।।

हम सेवक तुम स्वामी, कृपा करो दाता।
हो समृद्धी प्रभु जी, पाएँ सुख साता।।
ॐ जय.....।।7।।

प्रशस्ति

(दोहा)

तीन लोक के मध्य है, जम्बू द्वीप प्रधान।
सात क्षेत्र में जो बँटा, पावन परम महान।।
भरत क्षेत्र दक्षिण दिशा, में मेरू से जान।
भारत देश जिसमें रहा, अनुपम श्रेष्ठ प्रधान।।
भारत देश का प्रान्त शुभ, हरियाणा है नाम।
रेवाड़ी है जिला शुभ, आर्यों का शुभ धाम।।
जैनपुरी के मध्य है, जिन मंदिर शुभकार।
चन्द्रप्रभु जी शोभते, वेदी में मनहार।।
दो हजार ग्यारह शुभम्, पावन वर्षायोग।
प्रभु की भक्ती का बना, यह पावन उपयोग।
जिन श्रेयांश का यह लिखा, पावन परम विधान।
भक्ति से कीन्हा यहाँ, जिन प्रभु का गुणगान।।
कृष्ण पक्ष भादों तिथि, ग्यारस दिन बुधवार।
पूर्ण हुआ लेखन विशद, मंगलमयी विधान।।
लघुधी तथा प्रमाद से, किया गया जो कार्य।
यह प्रमाण जानें सभी, भारत देश के आर्य।।
भूल-चूक इसमें हुई, उसका करें सुधार।
पूजा भक्ती के लिए, पावें शुभ आधार।।
अन्तिम है यह भावना, पावें हम सद्ज्ञान।
भव संतति को नाशकर, करें ''विशद'' कल्याण।।
प्रभु के चरण प्रसाद से, पूरी होगी आस।
मोक्ष मिलेगा शीघ्र ही, पूरा है विश्वास।।

श्रेयांसनाथ चालीसा

दोहा– परमेष्ठी के पद युगल, झुका भाव से शीश।
भक्ति करे जो भी विशद, पा जाए आशीष।।
चैत्य चैत्यालय धर्म जिन, आगम मंगलकार।
श्रेयांशनाथ भगवान को, वन्दन बारम्बार।।

(चौपाई)

जय जय श्रेयांशनाथ गुणधारी, स्वामी तुम हो जग हितकारी।
तुमने भेष दिगम्बर धारा, लगे हृदय को प्यारा–प्यारा।।
स्वामी तुम सर्वज्ञ कहाए, तीर्थंकर ग्यारहवें गाए।
शांत छवि है श्रेष्ठ निराली, जन–जन का मन हरने वाली।।
नाम तुम्हारा प्यारा–प्यारा, जग को तुमने दिया सहारा।
सिंहपुरी नगरी है प्यारी, श्रेष्ठ भक्त रहते नर–नारी।।
राजा विष्णुराज कहाए, रानी वेणु देवी पाए।
स्वर्ग लोक से चय कर आए, सिंहपुरी में मंगल छाए।।
हुई रत्न वृष्टी शुभकारी, नगरी पावन हो गई सारी।
ज्येष्ठ कृष्ण दशमी शुभ जानो, गर्भकल्याणक प्रभु का मानो।।
जन्म प्रभू ने जिस दिन पाया, इन्द्रराज ऐरावत लाया।
नाम श्रेयांस कुमार बताया, अनुपम जयकारा लगवाया।।
चन्द्र कलाओं जैसे स्वामी, वृद्धी पाए थे शिवगामी।
मेरु गिरी पर न्हवन कराया, इन्द्र ने अपना धर्म निभाया।।
फाल्गुन कृष्णा ग्यारस भाई, जन्म तिथि जिनवर की गाई।
प्रभु के चरणों शीश झुकाया, गेण्डा चिह्न देख हर्षाया।।
अस्सी धनुष रही ऊँचाई, श्री श्रेयांश के तन की भाई।
लाख चौरासी वर्ष की स्वामी, आयू पाए अन्तर्यामी।।
देख बसन्त लक्ष्मी विनशाई, जिनवर ने शुभ दीक्षा पाई।
फाल्गुन कृष्णा चौदस जानो, प्रभु का तप कल्याणक मानो।।

देव पालकी लेकर आए, प्रभुजी को उसमें बैठाए।
तभी पालकी देव उठाए, मानव उसमें रोक लगाए।।
प्रभु को लेकर हम जाएँगे, साथ में हम संयम पाएँगे।
देव तभी सुनकर घबराए, नहीं पालकी देव उठाए।।
लिए पालकी मानव जाते, गगन में प्रभु को ले उड़ जाते।
वन में प्रभुजी को पहुँचाए, वस्त्र उतारे दीक्षा पाए।।
केशलुंच निज हाथों कीन्हें, देवों ने भक्ती से लीन्हें।
दिव्य पेटिका में ले चाले, क्षीर सिन्धु में जाकर डालें।।
माघ शुक्ल द्वितीया शुभकारी, हुई लोक में मंगलकारी।
निज आतम का ध्यान लगाए, प्रभुजी केवलज्ञान जगाए।।
समवशरण आ देव रचाते, जिनप्रभु की शुभ महिमा गाते।
सात योजन विस्तार बताया, महिमाशाली अनुपम गाया।।
गणधर श्रेष्ठ बहत्तर गाए, कुन्थु जिनमें प्रथम कहाए।
दिव्य ध्वनि प्रभु की शुभकारी, चउ संध्या में खिरती न्यारी।।
सुर नर पशू सभी मिल आते, कोई सम्यक् दर्शन पाते।
कोई देश व्रतों को पावें, कोई संयम को उपजावें।।
श्रावण शुक्ल पूर्णिमा प्यारी, तिथि हो गई है मंगलकारी।
गिरि सम्मेद शिखर से स्वामी, हुए मोक्ष पथ के अनुगामी।।
अपने सारे कर्म नशाए, सिद्धशिला पर धाम बनाए।
'विशद' भावना हम यह भाए, तव गुण पाने को हम आए।।

दोहा– चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख–शांती सौभाग्य पा, बने श्री का नाथ।।
श्री श्रेयांस के नाम का, करे भाव से जाप।
विशद ज्ञान को पाएगा, कट जाएँगे पाप।।

जाप– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐम् अर्हं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः।

वाग्ज्योति स्वरूप 1008
श्री वासुपूज्य विधान

मण्डल

मध्य में - ह्रीं
प्रथम वलय श्रीं -9
द्वितीय वलय क्लीं - 18
तृतीय वलय व्लूं - 36
चतुर्थ वलय 卐 - 72

रचयिता

प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

वासुपूज्य स्तवन

दोहा- वासुपूज्य को पूजता, विशद भाव के साथ।
भव बन्धन मैटो मेरा, मुक्ती दो हे नाथ!

(शम्भू छन्द)

उत्सुक लोकालोक देखने, ज्ञानी जन के नेत्र स्वरूप।
प्रत्यक्षाप्रत्यक्ष ज्ञान की, स्तुति करता मैं अनुरूप।।
वासुपूज्य ने व्रत को पाकर, कर्मों का संहार किया।
केवलज्ञान प्राप्त कर प्रभु ने, समवशरण आधार लिया।।

जैन धर्म को पाने वाले, धर्म तीर्थ के नाथ हुए।
ऋषी मुनी गणधर यति आदिक, समवशरण में साथ हुए।।
दिव्य देशना के द्वारा प्रभु, इस जग का कल्याण किया।
भूले भटके भव्य जनों को, सम्यक्ज्ञान प्रदान किया।।

दिव्य देशना प्रभू आपकी, जन्म-जन्म तक साथ रहे।
केवलज्ञान जगे न जब तक, झुका चरण में माथ रहे।।
'विशद' ज्ञान पाने की भगवन्, मेरे अन्दर शक्ति जगे।
देव-शास्त्र-गुरु के प्रति मन में, सम्यक् श्रद्धा भक्ति जगे।।

भक्ती की शुभ आशा लेकर, भक्त शरण में आया है।
श्रद्धा के यह पुष्प मनोहर, नाथ ! साथ में लाया है।।
तुच्छ भक्त की तुच्छ भेंट यह, प्रभू आप स्वीकार करो।
भव-भव की बाधाएँ नाशो, मेरे सारे कष्ट हरो।।

भक्त भावना लेकर जो भी, चरण शरण में आता है।
मन वाञ्छित फल पाता है वह, खाली कभी न जाता है।।
महिमा सुनकर नाथ ! आपकी, आज शरण में आए हैं।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, उसके भाव बनाए हैं।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

मंगल ग्रहारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य पूजन

स्थापना

हे वासुपूज्य ! तुम जगत् पूज्य, सर्वज्ञ देव करुणाधारी।
मंगल अरिष्ट शांतीदायक, महिमा महान् मंगलकारी।।
मेरे उर के सिंहासन पर, प्रभु आन पधारो त्रिपुरारी।
तुम चिदानंद आनंद कंद, करुणा निधान संकटहारी।।
जिन वासुपूज्य तुम लोक पूज्य, तुमको हम भक्त पुकार रहे।
दो हमको शुभ आशीष परम, मम् उर से करुणा स्रोत बहे।।

ॐ ह्रीं भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

हम काल अनादी से जग में, कर्मों के नाथ सताए हैं।
तुम सम निर्मलता पाने को, प्रभु निर्मल जल भर लाए हैं।।
हम नाश करें मृतु जन्म जरा, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।1।।

ॐ ह्रीं भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय के विषय भोग सारे, हमने भव-भव में पाए हैं।
हम स्वयं भोग हो गये मगर, न भोग पूर्ण कर पाए हैं।।
हम भव तापों का नाश करें, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।2।।

ॐ ह्रीं भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल अनंत अक्षय अखंड, अविनाशी पद प्रभु पाए हैं।
स्वाधीन सफल अविचल अनुपम, पद पाने अक्षत लाए हैं।।

अक्षय स्वरूप हो प्राप्त हमें, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।3।।

ॐ ह्रीं भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

जग में बलशाली प्रबल काम, उस काम को आप हराए हैं।
प्रमुदित मन विकसित पुष्प प्रभू, चरणों में लेकर आए हैं।।
हम काम शत्रु विध्वंस करें, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।4।।

ॐ ह्रीं भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय विषयों की लालच से, चारों गति में भटकाए हैं।
यह क्षुधा रोग ना मैट सके, अब क्षुधा मैटने आये हैं।।
नैवेद्य समर्पित करते हैं, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।5।।

ॐ ह्रीं भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन मोह महा मिथ्या कलंक, आदिक सब दोष नशाए हैं।
त्रिभुवन दर्शायक ज्ञान विशद, प्रभु अविनाशी पद पाए हैं।।
मोहांधकार क्षय हो मेरा, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।6।।

ॐ ह्रीं भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

है कर्म जगत् में महाबली, उसको भी आप हराए हैं।
गुप्ती आदिक तप करके क्षय, कर्मों का करने आये हैं।।
हम धूप अनल में खेते हैं, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।7।।

ॐ ह्रीं भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जग से अति भिन्न अलौकिक फल, निर्वाण महाफल पाये हैं।
हम आकुल व्याकुलता तजने, यह श्री फल लेकर आये हैं।।
हम मोक्ष महाफल पा जाएँ, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।8।।

ॐ ह्रीं भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में सद् असद् द्रव्य जो हैं, उन सबके अर्घ बताए हैं।
अब पद अनर्घ की प्राप्ति हेतु, हम अर्घ्य बनाकर लाए हैं।।
हम पद अनर्घ को पा जाएँ, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।9।।

ॐ ह्रीं भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

छटवीं कृष्ण अषाढ़ की, हुआ गर्भ कल्याण।
सुर नर किन्नर भाव से, करते प्रभु गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्णा षष्ठीयां गर्भमंगल मण्डिताय भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी, जन्मे श्री भगवान।
सुर नर वंदन कर रहे, वासुपूज्य पद आन।।2।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्णा चतुर्दश्यां जन्ममंगल मण्डिताय भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी, तप धारे अभिराम।
सुर नर इन्द्र महेन्द्र सब, करते चरण प्रणाम।।3।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्णा चतुर्दश्यां तपो मंगल मण्डिताय भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादों कृष्ण द्वितिया तिथि, पाये केवलज्ञान।
समवशरण में पूजते, सुर नर ऋषी महान्।।4।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद कृष्णा द्वितीयायां ज्ञानमंगल मण्डिताय भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादों शुक्ला चतुर्दशी, प्रभु पाए निर्वाण।
पाँचों कल्याणक हुए, चंपापुर में आन।।5।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ल चतुर्दश्यां मोक्ष मंगल मण्डिताय भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– शांतिधारा दे रहे, हे करुणा के नाथ।
हमको भी अब ले चलो, मोक्षमहल में साथ।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– पुष्पाञ्जलि कर पूजते, चरण कमल तव आज।
करुणाकर करुणा करो, तारण तरण जहाज।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा– वासुपूज्य वसुपूज्य सुत, जयावती के लाल।
वसु द्रव्यों से पूजकर, गायें विशद जयमाल।।

(छंद मोतियादाम)

प्रभू प्रगटाए दर्शन ज्ञान, अनंत सुखामृत वीर्य महान्।
प्रभू पद आये इन्द्र नरेन्द्र, प्रभू पद पूजें देव शतेन्द्र।।
प्रभू सब छोड़ दिए जग राग, जगा अंतर में भाव विराग।
लख्यो प्रभु लोक अलोक स्वरूप, झुके कई आन प्रभू पद भूप।।
तज्यो गज राज समाज सुराज, बने प्रभु संयम के सरताज।
अनित्य शरीर धरा धन धाम, तजे प्रभु मोह कषाय अरु काम।।
ये लोक कहा क्षणभंगुर देव, नशे क्षण में जल बुद्–बुद एव।
अनेक प्रकार धरी यह देह, किए जग जीवन मांहि सनेह।।
अपावन सात कुधातु समेत, ठगे बहु भांति सदा दुख देत।
करे तन से जिय राग सनेह, बंधे वसु कर्म जिये प्रति येह।।
धरें जब गुप्ति समिति सुधर्म, तबै हो संवर निर्जर कर्म।
किए जब कर्म कलंक विनाश, लहे तब सिद्ध शिला पर वास।।

रहा अति दुर्लभ आतम ज्ञान, किए तिय काल नहीं गुणगान।
भ्रमे जग में हम बोध विहीन, रहे मिथ्यात्व कुतत्त्व प्रवीण।।
तज्यो जिन आगम संयम भाव, रहा निज में श्रद्धान अभाव।
सुदुर्लभ द्रव्य सुक्षेत्र सुकाल, सुभाव मिले नहिं तीनों काल।।
जग्यो सब योग सुपुण्य विशाल, लियो तब मन में योग सम्हाल।
विचारत योग लौकांतिक आय, चरण पद पंकज पुष्प चढ़ाय।।
प्रभु तब धन्य किए सुविचार, प्रभु तप हेतु किए सुविहार।
तबै सौधर्म 'सु शिविका' लाय, चले शिविका चढ़ि आप जिनाय।।
धरे तप केश सुलौंच कराय, प्रभू निज आतम ध्यान लगाय।
भयो तब केवल ज्ञान प्रकाश, किए तब सारे कर्म विनाश।।
दियो प्रभु भव्य जगत उपदेश, धरो फिर प्रभु ने योग विशेष।
तभी प्रभु मोक्ष महाफल पाय, हुए करुणानिधि नंत सुखाय।।
रचें हम पूजा सुभाव विभोर, करें नित वंदन द्वयकर जोर।
प्रभु हम आए चरण समीप, 'विशद' प्रगटे अब ज्ञान प्रदीप।।

(छंद घत्तानंद)

जय-जय जिनदेवं, हरिकृत सेवं, सुरकृत वंदित शीलधरं।
भव भय हरतारं, शिव कर्त्तारं, शीलागारं नाथ परं।।

ॐ ह्रीं भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- चम्पापुर में ही प्रभु, पाए पंच कल्याण।
गर्भ जन्म तप ज्ञान शुभ, पाए पद निर्वाण।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

प्रथम वलयः

दोहा- प्रकट किए नव लब्धियाँ, वासुपूज्य भगवान।
अष्ट द्रव्य से पूजकर, करते हैं गुणगान।।

।। प्रथम वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

स्थापना

हे वासुपूज्य ! तुम जगत् पूज्य, सर्वज्ञ देव करुणाधारी।
मंगल अरिष्ट शांतीदायक, महिमा महान् मंगलकारी।।
मेरे उर के सिंहासन पर, प्रभु आन पधारो त्रिपुरारी।
तुम चिदानंद आनंद कंद, करुणा निधान संकटहारी।।
जिन वासुपूज्य तुम लोक पूज्य, तुमको हम भक्त पुकार रहे।
दो हमको शुभ आशीष परम, मम् उर से करुणा स्रोत बहे।।

ॐ ह्रीं भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

नौ क्षायिक लब्धियों के अर्घ्य *(शम्भू छंद)*

ज्ञानावरणी कर्म विनाशे, केवलज्ञान जगाए हैं।
ऐसे श्री अरहंत प्रभू पद, सादर शीश झुकाए हैं।।
तीन गती के जीव भाव से, भक्ती करने आते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्म विनाशक क्षायिक ज्ञानलब्धि प्राप्त भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दर्शनावरणी नाशे, क्षायिक दर्शन पाए हैं।
क्षायिक लब्धी पाने वाले, तीर्थंकर कहलाए हैं।।
तीन गती के जीव भाव से, भक्ती करने आते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरणी कर्म विनाशक क्षायिक दर्शनलब्धि प्राप्त भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन मोही कर्म विनाशे, सत् सम्यक्त्व जगाए हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाए हैं।।
तीन गती के जीव भाव से, भक्ती करने आते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं दर्शन मोहनीय कर्म विनाशक क्षायिक सम्यक्त्व लब्धि प्राप्त भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारित मोही कर्म विनाशे, क्षायिक चारित पाए हैं।
कर्म घातिया नाश किए प्रभु, तीर्थंकर कहलाए हैं।।
तीन गती के जीव भाव से, भक्ती करने आते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं चारित्र मोहनीय कर्म विनाशक क्षायिक चारित्र लब्धि प्राप्त भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म विनाशी अन्तराय के, पाए हैं जो क्षायिक दान।
क्षायिक लब्धी पाने वाले, तीन लोक में रहे महान्।।
तीन गती के जीव भाव से, भक्ती करने आते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं दान अन्तराय कर्म विनाशक क्षायिक दान लब्धि प्राप्त भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लाभ अन्तराय कर्म विनाशे, पाए क्षायिक लाभ महान्।
पूजनीय हो गये लोक में, करते हैं जग का कल्याण।।
तीन गती के जीव भाव से, भक्ती करने आते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं लाभ अन्तराय कर्म विनाशक क्षायिक लाभ लब्धि प्राप्त भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भोग अन्तराय कर्म विनाशे, पाए हैं जो क्षायिक भोग।
तीनों योगों के धारी के, मिटे जन्म मृत्यु के रोग।।
तीन गती के जीव भाव से, भक्ती करने आते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं भोग अन्तराय कर्म विनाशक क्षायिक भोग लब्धि प्राप्त भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तराय कर्मों के नाशी, पाए हैं क्षायिक उपभोग।
करके योग निरोध जिनेश्वर, पाते मुक्ती का संयोग।।
तीन गती के जीव भाव से, भक्ती करने आते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं उपभोग अन्तराय कर्म विनाशक क्षायिक उपभोग लब्धि प्राप्त भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर्यान्तराय कर्म के नाशी, पाए क्षायिक वीर्य महान्।
क्षायिक लब्धी पाने वाले, करते हैं जग का कल्याण।।
तीन गती के जीव भाव से, भक्ती करने आते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं वीर्यान्तराय कर्म विनाशक क्षायिक वीर्य लब्धि प्राप्त भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक नौ लब्धी जो पाए, कर्म घातिया किए विनाश।
ज्ञाता दृष्टा हुए लोक में, कीन्हे निज आतम में वास।।
तीन गती के जीव भाव से, भक्ती करने आते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं।।10।।

ॐ ह्रीं चतु: घातिया कर्म विनाशक क्षायिक नव लब्धि प्राप्त भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा– दोष अठारह से रहित, होते हैं जिनराज।
उनकी पूजा मैं करूँ, तीन योग से आज।।

।। द्वितीय वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

स्थापना

हे वासुपूज्य ! तुम जगत् पूज्य, सर्वज्ञ देव करुणाधारी।
मंगल अरिष्ट शांतीदायक, महिमा महान् मंगलकारी।।
मेरे उर के सिंहासन पर, प्रभु आन पधारो त्रिपुरारी।
तुम चिदानंद आनंद कंद, करुणा निधान संकटहारी।।

जिन वासुपूज्य तुम लोक पूज्य, तुमको हम भक्त पुकार रहे।
दो हमको शुभ आशीष परम, मम् उर से करुणा स्रोत बहे।।

ॐ ह्रीं भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

18 दोष रहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र

(शम्भू छंद)

जो कर्म घातिया नाश किए, अरु केवलज्ञान प्रकाशे हैं।
वह तीन लोक में पूज्य हुए, अरु क्षुधा वेदना नाशे हैं।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री वासुपूज्य के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं क्षुधा रोग विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृषा वेदना से व्याकुल जग, जीव सताते आए हैं।
जिसने जीता यह तृषा दोष, वह तीर्थंकर कहलाए हैं।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री वासुपूज्य के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं तृषा दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम जन्म मृत्यु के रोगों से, सदियों से सताते आये हैं।
जो जन्म रोग का नाश किए, वह तीर्थंकर कहलाए हैं।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री वासुपूज्य के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं जन्म दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है अर्ध मृतक सम बूढ़ापन, उससे हम पार न पाए हैं।
अब जरा रोग के नाश हेतु, जिन चरण शरण में आए हैं।।

हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री वासुपूज्य के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं जरा दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मृत्यु का रोग भयानक है, उससे न कोइ बच पाते हैं।
जो जीत लेय इस शत्रू को, वह तीर्थंकर बन जाते हैं।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री वासुपूज्य के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं मृत्यु दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कई कौतूहल होते जग में, करते हैं विस्मय लोग सभी।
जिनवर ने विस्मय नाश किया, उनको विस्मय न होय कभी।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री वासुपूज्य के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं विस्मय दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न कोई शत्रु हमारा है, हम हैं चित् चेतन रूप अहा।
हैं अरति दोष के नाशी जिन, उन सम मेरा स्वरूप रहा।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री वासुपूज्य के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं अरति दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग जीवन क्षण भंगुर है, सब मोह बली की माया है।
जिनवर ने खेद विनाश किया, सच्चे स्वरूप को पाया है।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री वासुपूज्य के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं खेद दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह तन पुद्गल से निर्मित है, कई रोगों की जो खान कहा।
प्रभु नाश किए हैं रोग श्री, जिन पाये पद निर्वाण अहा।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री वासुपूज्य के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं रोग दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनका कोइ इष्ट अनिष्ट नहीं, जो समता भाव के धारी हैं।
वह सर्व शोक के नाशी हैं, जिन की महिमा अति न्यारी है।।
जो भाव सहित जिन चरणों में, जाकर के अर्घ्य चढ़ाते हैं।
वह सर्व सिद्धियों को पाकर, सारे जग के सुख पाते हैं ।।10।।

ॐ ह्रीं शोक दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानादिक आठ महामद हैं, जो विनय भाव को खोते हैं।
जो विजय प्राप्त करते मद पर, वह तीर्थंकर जिन होते हैं।।
जो भाव सहित जिन चरणों में, जाकर के अर्घ्य चढ़ाते हैं।
वह सर्व सिद्धियों को पाकर, सारे जग के सुख पाते हैं ।।11।।

ॐ ह्रीं मद दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मोह महा मिथ्या कलंक, जिससे प्राणी जग भ्रमण करें।
जो मोह महामद नाश करें, वह आतम रस में रमण करें।।
जो भाव सहित जिन चरणों में, जाकर के अर्घ्य चढ़ाते हैं।
वह सर्व सिद्धियों को पाकर, सारे जग के सुख पाते हैं ।।12।।

ॐ ह्रीं मोह दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निद्रा देवी ने इस जग के, सब जीवों को भरमाया है।
जिसने निद्रा को जीत लिया, उसने अर्हत् पद पाया है।।
जो भाव सहित जिन चरणों में, जाकर के अर्घ्य चढ़ाते हैं।
वह सर्व सिद्धियों को पाकर, सारे जग के सुख पाते हैं ।।13।।

ॐ ह्रीं निद्रा दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिंता में चित्त मलीन रहे, तो चित् का चिन्तन खो जाए।
जो खो दे चिंता की शक्ती, वह शीघ्र सिद्ध पद को पाए।।
जो भाव सहित जिन चरणों में, जाकर के अर्घ्य चढ़ाते हैं।
वह सर्व सिद्धियों को पाकर, सारे जग के सुख पाते हैं ।।14।।

ॐ ह्रीं चिंता दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन कर्म घातिया नाश किए, जो परमौदारिक तन पाए।
तव स्वेद रह न उनके तन में, तीर्थंकर जिन कहलाए।।
जो भाव सहित जिन चरणों में, जाकर के अर्घ्य चढ़ाते हैं।
वह सर्व सिद्धियों को पाकर, सारे जग के सुख पाते हैं ।।15।।

ॐ ह्रीं स्वेद दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग से नाता तोड़ा, जो वीतरागता पाए हैं।
वह राग दोष का नाश किए, अरु तीर्थंकर कहलाए हैं।।
जो भाव सहित जिन चरणों में, जाकर के अर्घ्य चढ़ाते हैं।
वह सर्व सिद्धियों को पाकर, सारे जग के सुख पाते हैं ।।16।।

ॐ ह्रीं राग दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनको किंचित् भी मोह नहीं, जो निज स्वभाव में लीन रहे।
वह द्वेष भाव का नाश किए, जिन धर्म तीर्थ के नाथ कहे।।
जो भाव सहित जिन चरणों में, जाकर के अर्घ्य चढ़ाते हैं।
वह सर्व सिद्धियों को पाकर, सारे जग के सुख पाते हैं ।।17।।

ॐ ह्रीं द्वेष दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोला छंद)

भय से हों भयभीत सभी जन, दुःख अनेकों पाते हैं।
भय का नाश किए जिन स्वामी, तीर्थंकर कहलाते हैं।।
भाव सहित जिन चरणों में हम, पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।
जिन के गुण को पाने हेतू, महिमा जिनकी गाते हैं ।।18।।

ॐ ह्रीं भय दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोष अठारह कहे लोक में, इनसे जीव सताए हैं।
सर्व दोष से हीन हुए जो, वह अर्हत् कहलाए हैं।।
भाव सहित जिन चरणों में हम, पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।
जिन के गुण को पाने हेतू, महिमा जिनकी गाते हैं ।।19।।

ॐ ह्रीं अष्टादश दोष विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः

सोरठा– आश्रव के हैं द्वार, बत्तिस घाती कर्म चउ।
कीन्हे प्रभु निवार, केवलज्ञान जगाए हैं।।

।। तृतीय वलयोपरि पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ।।

स्थापना

हे वासुपूज्य ! तुम जगत् पूज्य, सर्वज्ञ देव करुणाधारी।
मंगल अरिष्ट शांतीदायक, महिमा महान् मंगलकारी।।
मेरे उर के सिंहासन पर, प्रभु आन पधारो त्रिपुरारी।
तुम चिदानंद आनंद कंद, करुणा निधान संकटहारी।।
जिन वासुपूज्य तुम लोक पूज्य, तुमको हम भक्त पुकार रहे।
दो हमको शुभ आशीष परम, मम् उर से करुणा स्रोत बहे।।

ॐ ह्रीं भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

32 आश्रव + 4 बन्ध विहीन श्री जिन के अर्घ्य

(शम्भू छंद)

बली आदि हिंसा करके जो, धर्म बतावें जग के जीव।
वह विपरीत कहे मिथ्यात्वी, कर्म बन्ध जो करें अतीव।।
मिथ्या भाव त्याग सद्दर्शन, पाकर करूँ कर्म का नाश।
'विशद' ज्ञान से कर्म नशाऊँ, पाऊँ मोक्षपुरी में वास।।1।।

ॐ ह्रीं विपरीत मिथ्यात्व विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तज निश्चय व्यवहार नयों को, जाने नहीं वस्तु का भेद।
मिथ्यात्वी एकान्तवाद के, नित प्रति करते रहते खेद।।
मिथ्या भाव त्याग सद्दर्शन, पाकर करूँ कर्म का नाश।
'विशद' ज्ञान से कर्म नशाऊँ, पाऊँ मोक्षपुरी में वास।।2।।

ॐ ह्रीं एकान्त मिथ्यात्व विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रागी और विरागी मत को, मान रहे जो एक समान।
मिथ्यात्वी वैनयिक कहे वह, करते मिथ्या में श्रद्धान।।
मिथ्या भाव त्याग सद्दर्शन, पाकर करूँ कर्म का नाश।
'विशद' ज्ञान से कर्म नशाऊँ, पाऊँ मोक्षपुरी में वास।।3।।

ॐ ह्रीं विनय मिथ्यात्व विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीतराग मय धर्म सत्य या, राग सहित होता है धर्म।
मिथ्यात्वी संशय वादी कुछ, प्राप्त नहीं कर पाते मर्म।।
मिथ्या भाव त्याग सद्दर्शन, पाकर करूँ कर्म का नाश।
'विशद' ज्ञान से कर्म नशाऊँ, पाऊँ मोक्षपुरी में वास।।4।।

ॐ ह्रीं संशय मिथ्यात्व विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योग्यायोग्य जानते न कुछ, मूढ़ हिताहित से भी हीन।
अज्ञानी मिथ्यात्वी हैं वह, आत्मज्ञान से रहे विहीन।।
मिथ्या भाव त्याग सद्दर्शन, पाकर करूँ कर्म का नाश।
'विशद' ज्ञान से कर्म नशाऊँ, पाऊँ मोक्षपुरी में वास।।5।।

ॐ ह्रीं अज्ञान मिथ्यात्व विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं हैं त्यागी हिंसा के जो, त्रस स्थावर दोय प्रकार।
वह हिंसा अविरत के धारी, बढ़ा रहे अपना संसार।।
सम्यक् चारित पाने हेतू, चढ़ा रहे हम चरणों अर्घ्य।
अष्ट कर्म का नाश करें अरु, प्राप्त करें हम सुपद अनर्घ।।6।।

ॐ ह्रीं हिंसाविरति विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

असत् वचन को छोड़ न पाते, सत्य से रहते कोसों दूर।
वह असत्याव्रत के धारी, पापों से रहते भरपूर।।
सम्यक् चारित पाने हेतू, चढ़ा रहे हम चरणों अर्घ्य।
अष्ट कर्म का नाश करें अरु, प्राप्त करें हम सुपद अनर्घ।।7।।

ॐ ह्रीं असत्याविरति विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर के धन का हरण करें जो, व्रत अचौर्य न जान रहे।
चौर्याव्रत के धारी हैं वह, नर हो पशू समान कहे।।
सम्यक् चारित पाने हेतू, चढ़ा रहे हम चरणों अर्घ्य।
अष्ट कर्म का नाश करें अरु, प्राप्त करें हम सुपद अनर्घ।।8।।

ॐ ह्रीं चौर्याविरति विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विशद विधान संग्रह (भाग-1)

ब्रह्मचर्य न धारण करते, शीलव्रतों से रहते दूर।
वह कुशील अव्रत के धारी, मोही कहे गये अतिक्रूर।।
सम्यक् चारित पाने हेतू, चढ़ा रहे हम चरणों अर्घ्य।
अष्ट कर्म का नाश करें अरु, प्राप्त करें हम सुपद अनर्घ।।9।।

ॐ ह्रीं कुशीलाविरति विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मूर्छा भाव रहा अन्तर में, संग्रह वृत्ती धार रहे।
परिग्रह अविरत के धारी वह, श्मश्रू के अवतार कहे।।
सम्यक् चारित पाने हेतू, चढ़ा रहे हम चरणों अर्घ्य।
अष्ट कर्म का नाश करें अरु, प्राप्त करें हम सुपद अनर्घ।।10।।

ॐ ह्रीं परिग्रहाविरति विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

स्त्री की चर्चा में लीन, अज्ञानीजन रहे प्रवीण।
यह विकथा कही जिनदेव, कर्माश्रव का कारण एव।।
हम प्रमाद से दूर रहें, भावों से भरपूर रहें।
यही भावना भाते हैं, चरणों शीश झुकाते हैं।।11।।

ॐ ह्रीं स्त्री कथा विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चोर कथा में रहते लीन, श्रेष्ठ मानते उसको दीन।
यह विकथा कही जिनदेव, कर्माश्रव का कारण एव।।
हम प्रमाद से दूर रहें, भावों से भरपूर रहें।
यही भावना भाते हैं, चरणों शीश झुकाते हैं।।12।।

ॐ ह्रीं चोर कथा विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते भोजन कथा हमेशा, धर्म कार्य न करते लेश।
यह विकथा कही जिनदेव, कर्माश्रव का कारण एव।।
हम प्रमाद से दूर रहें, भावों से भरपूर रहें।
यही भावना भाते हैं, चरणों शीश झुकाते हैं।।13।।

ॐ ह्रीं भोजन कथा विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राजा राज्य की चर्चा एव, नित्य प्रती जो करें सदैव।
यह विकथा कही जिनदेव, कर्माश्रव का कारण एव।।
हम प्रमाद से दूर रहें, भावों से भरपूर रहें।
यही भावना भाते हैं, चरणों शीश झुकाते हैं।।14।।

ॐ ह्रीं राज्य कथा विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छंद)

हैं अष्ट भेद स्पर्शन के, जो मन को मोहित करते हैं।
आश्रव होता करके प्रमाद, चेतन की शक्ती हरते हैं।।
हम विष सम विषयों को तजकर, निज आतम रस में रमण करें।
आश्रव के रोध हेतु भगवन्, तव चरणों में हम नमन् करें।।15।।

ॐ ह्रीं स्पर्शन इन्द्रिय विषय विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रसना के पञ्च विषय होते, जो विषयों में अटकाते हैं।
यह कर्माश्रव के कारण हैं, सारे जग में भटकाते हैं।।
हम विष सम विषयों को तजकर, निज आतम रस में रमण करें।
आश्रव के रोध हेतु भगवन्, तव चरणों में हम नमन् करें।।16।।

ॐ ह्रीं रसना इन्द्रिय विषय विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होते हैं विषय घ्राण के दो, जो आश्रव बन्ध कराते हैं।
हैं उभय लोक दुख के कारण, केवलज्ञानी बतलाते हैं।।
हम विष सम विषयों को तजकर, निज आतम रस में रमण करें।
आश्रव के रोध हेतु भगवन्, तव चरणों में हम नमन् करें।।17।।

ॐ ह्रीं घ्राण इन्द्रिय विषय विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्षू इन्द्रिय के पञ्च विषय, पाँचों पापों के हेतू हैं।
हैं उभय लोक में दुखदायी, जो कर्माश्रव के सेतू हैं।।
हम विष सम विषयों को तजकर, निज आतम रस में रमण करें।
आश्रव के रोध हेतु भगवन्, तव चरणों में हम नमन् करें।।18।।

ॐ ह्रीं चक्षु इन्द्रिय विषय विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं सप्त विषय कर्णेन्द्रिय के, जिससे होता है कर्माश्रव।
भटकाते चारों गतियों में, दु:खों के हेतू हैं भव-भव।।
हम विष सम विषयों को तजकर, निज आतम रस में रमण करें।
आश्रव के रोध हेतु भगवन्, तव चरणों में हम नमन् करें।।19।।

ॐ ह्रीं कर्णेन्द्रिय विषय विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कषाय अनन्तानुबन्धी से, कर्माश्रव करते हैं जीव।
भ्रमण करें तीनों लोकों में, पावें जग के दु:ख अतीव।।
सम्यक् चारित्र के द्वारा अब, पाऊँ केवलज्ञान प्रकाश।
वासुपूज्य जिन की पूजाकर, पा जाऊँ मैं मुक्ती वास।।20।।

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी कषाय विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अप्रत्याख्यान कषायोदय से, अणुव्रत के भाव न होते हैं।
अविरत रहकर आश्रव करते, अरु बीज कर्म के बोते हैं।।

सम्यक् चारित्र के द्वारा अब, पाऊँ केवलज्ञान प्रकाश।
वासुपूज्य जिन की पूजाकर, पा जाऊँ मैं मुक्ती वास।।21।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान कषाय विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्याख्यान कषायोदय से, महाव्रती ना बन पावें।
देशव्रती बन फिरें भटकते, जन्म मरण के दुख पावें।।
सम्यक् चारित्र के द्वारा अब, पाऊँ केवलज्ञान प्रकाश।
वासुपूज्य जिन की पूजाकर, पा जाऊँ मैं मुक्ती वास।।22।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान कषाय विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदय संज्वलन का होने से, यथाख्यात् न हो चारित्र।
शुद्ध ध्यान न प्राप्त होय अरु, केवलज्ञान न होय पवित्र।।
सम्यक् चारित्र के द्वारा अब, पाऊँ केवलज्ञान प्रकाश।
वासुपूज्य जिन की पूजाकर, पा जाऊँ मैं मुक्ती वास।।23।।

ॐ ह्रीं संज्वलन कषाय विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षमा भाव को तजने वाले, क्रोध करें जग के जो जीव।
भव सागर में भ्रमण करें वह, पावें जग के दुःख अतीव।।
उत्तम क्षमा भाव के द्वारा, करूँ क्रोध का पूर्ण विनाश।
पूजा कर जिन वासुपूज्य की, विशद ज्ञान का होय प्रकाश।।24।।

ॐ ह्रीं क्रोध कषाय विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनय भाव को तजने वाले, प्राणी करते हैं जो मान।
द्वेष बैर आदी के द्वारा, पाते हैं वह दुःख महान्।।
उत्तम मार्दव के द्वारा अब, करूँ मान का पूर्ण विनाश।
पूजा कर जिन वासुपूज्य की, विशद ज्ञान का होय प्रकाश।।25।।

ॐ ह्रीं मान कषाय विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आर्जव भाव छोड़ने वाले, मायाचारी करते लोग।
छल छद्रम करके दुख पाते, पशु गति का पाते योग।।
उत्तम आर्जव के द्वारा अब, हो माया का पूर्ण विनाश।
पूजा कर जिन वासुपूज्य की, विशद ज्ञान का होय प्रकाश।।26।।

ॐ ह्रीं माया कषाय विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शौच धर्म तज के जगवासी, लुब्धदत्त सम करते लोभ।
जोड़-जोड़ धन कर्म बाँधते, अनरक्षा में करते क्षोभ।।
उत्तम शौच धर्म के द्वारा, करूँ लोभ का पूर्ण विनाश।
पूजा कर जिन वासुपूज्य की, विशद ज्ञान का होय प्रकाश।।27।।

ॐ ह्रीं लोभ कषाय विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनोयोग की व्यर्थ क्रिया से, आश्रव कर्मों का होवे।
जीव भ्रमण करते हैं जग में, चेतन की शक्ती खोवे।।
मनो गुप्ति के द्वारा हमको, करना भाई आत्म प्रकाश।
पूजा कर जिन वासुपूज्य की, विशद ज्ञान का होय प्रकाश।।28।।

ॐ ह्रीं मन योग विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचन योग की व्यर्थ क्रिया से, कलह द्वेष आदी होवे।
कर्माश्रव होता है भारी, चेतन की शक्ती खोवे।।
वचन गुप्ति का पालन करके, करना है अब आत्म प्रकाश।
पूजा कर जिन वासुपूज्य की, विशद ज्ञान का होय प्रकाश।।29।।

ॐ ह्रीं वचन योग विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यर्थ क्रिया करने से तन की, हो कर्मों का आश्रव व्यर्थ।
तन मन की हानी होती है, हो जाते हैं कई अनर्थ।।
काय गुप्ति के द्वारा हमको, करना भाई आत्म प्रकाश।
पूजा कर जिन वासुपूज्य की, विशद ज्ञान का होय प्रकाश।।30।।

ॐ ह्रीं काय योग विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

श्रम अरु खेद को करने दूर, निद्रा लेते हैं भरपूर।
यह प्रमाद कहलाता है, आश्रव पूर्ण कराता है।।
हम प्रमाद से दूर रहें, भावों से भरपूर रहे।
यही भावना भाते हैं, चरणों शीश झुकाते हैं।।31।।

ॐ ह्रीं निद्रा प्रमाद विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्त्री पुत्रादी से नेह, आश्रव बन्ध के कारण येह।
यह प्रमाद कहलाता है, भव में भ्रमण कराता है।।
हम प्रमाद से दूर रहें, भावों से भरपूर रहें।
यही भावना भाते हैं, चरणों शीश झुकाते हैं।।32।।

ॐ ह्रीं प्रणय (स्नेह) प्रमाद विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छंद)

ज्ञानावरण आदि कर्मों का, है स्वभाव नाम अनुसार।
प्रकृति बन्ध होय जीवों को, जिससे बढ़ता है संसार।।
रत्नत्रय के द्वारा अपने, कर्म बन्ध का करूँ विनाश।
पूजा कर जिन वासुपूज्य की, विशद ज्ञान का होय प्रकाश।।33।।

ॐ ह्रीं प्रकृति बन्ध विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरण आदि कर्मों की, स्थिति होती कई प्रकार।
स्थिति बन्ध होय जीवों की, कर्मों की प्रकृति अनुसार।।
रत्नत्रय के द्वारा अपने, कर्म बन्ध का करूँ विनाश।
पूजा कर जिन वासुपूज्य की, विशद ज्ञान का होय प्रकाश।।34।।

ॐ ह्रीं स्थिति बन्ध विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरण आदि कर्मों का, भिन्न-भिन्न होता अनुभाग।
हो अनुभाग बन्ध जीवों का, अत: कर्म संवर में लाग।।
रत्नत्रय के द्वारा अपने, कर्म बन्ध का करूँ विनाश।
पूजा कर जिन वासुपूज्य की, विशद ज्ञान का होय प्रकाश।।35।।

ॐ ह्रीं अनुभाग बन्ध विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरण आदि कर्मों के, होते संख्यातीत प्रदेश।
हो प्रदेश का बन्ध जीव को, कहते हैं यह जिन तीर्थेश।।
रत्नत्रय के द्वारा अपने, कर्म बन्ध का करूँ विनाश।
पूजा कर जिन वासुपूज्य की, विशद ज्ञान का होय प्रकाश।।36।।

ॐ ह्रीं प्रदेश बन्ध विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बत्तिस द्वार कहे आश्रव के, दुख के कारण कहलाए।
भव-भव भ्रमण कराते हैं जो, उनसे पार नहीं पाए।।
रत्नत्रय के द्वारा अपने, कर्म बन्ध का करूँ विनाश।
पूजा कर जिन वासुपूज्य की, विशद ज्ञान का होय प्रकाश।।37।।

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशत् आश्रव द्वार एवं चतु बन्ध विनाशक भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलय

सोरठा- समवशरण में शोभते, मूलगुणों के साथ।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, दश धर्मों के नाथ।।

।। चतुर्थवलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

स्थापना

हे वासुपूज्य ! तुम जगत् पूज्य, सर्वज्ञ देव करुणाधारी।
मंगल अरिष्ट शांतीदायक, महिमा महान् मंगलकारी।।
मेरे उर के सिंहासन पर, प्रभु आन पधारो त्रिपुरारी।
तुम चिदानंद आनंद कंद, करुणा निधान संकटहारी।।
जिन वासुपूज्य तुम लोक पूज्य, तुमको हम भक्त पुकार रहे।
दो हमको शुभ आशीष परम, मम् उर से करुणा स्रोत बहे।।

ॐ ह्रीं भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

10 जन्म के अतिशय

(चौपाई)

दश अतिशय जनमत जिन पाय, पूजत सुर नर हर्ष मनाय।
स्वेद रहित जिनवर तन पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।।1।।

ॐ ह्रीं स्वेद रहित सहजातिशयधारक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल नहिं होय प्रभू तन मांहि, निर्मल रही देह सुख दाय।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।।2।।

ॐ ह्रीं निहार रहित सहजातिशयधारक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम चतुष्क संस्थान जो पाय, हीनाधिक तन होवे नाय।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।।3।।

ॐ ह्रीं सम चतुष्क संस्थान सहजातिशयधारक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संहनन वज्र वृषभ जो होय, अद्भुत शक्ती धारे सोय।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।।4।।

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराच संहनन सहजातिशयधारक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम सुगंधित पाते देह, भव्य जीव सब पावें स्नेह।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।।5।।

ॐ ह्रीं सुगंधित तन सहजातिशयधारक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशयकारी सुंदर रूप, फीके पड़ें जगत् के भूप।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।।6।।

ॐ ह्रीं अतिशय रूप सहजातिशयधारक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्षण एक सहस हैं आठ, सहस नाम जो पढ़ते पाठ।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।।7।।

ॐ ह्रीं सहस्राष्ट शुभ लक्षण सहजातिशयधारक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्वेत रक्त प्रभु के तन होय, वात्सल्य महिमा युत सोय।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।।8।।

ॐ ह्रीं श्वेत रक्त सहजातिशयधारक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हित मित प्रिय वचन सुखदाय, सुनकर हर प्राणी सुख पाय।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।।9।।

ॐ ह्रीं प्रियहित वचन सहजातिशयधारक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बल अतुल्य पाये जिनदेव, जग के जीव करें पद सेव।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।।10।।

ॐ ह्रीं अतुल्य बल सहजातिशयधारक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान के 10 अतिशय

(अडिल्ल छंद)

अतिशय जिनवर केवलज्ञान के, दश कहे।
योजन शत् इक में, सुभिक्षता हो रहे।।
केवलज्ञान का अतिशय, जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में, शीश झुकाए हैं।।11।।

ॐ ह्रीं गव्यूति शत् चतुष्टय सुभिक्षत्व घातिक्षयजातिशय धारक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल ज्ञानी होय, गमन नभ में करें।
प्रभू चले जिस ओर, देवगण अनुसरें।।
केवलज्ञान का अतिशय, जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में, शीश झुकाए हैं।।12।।

ॐ ह्रीं आकाश गमन घातिक्षयजातिशय धारक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर का हो गमन, सदा हितदाय जी।
तिस थानक नहिं कोय, मारने पाय जी।।
केवलज्ञान का अतिशय, जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में, शीश झुकाए हैं।।13।।

ॐ ह्रीं अदयाभाव घातिक्षयजातिशय धारक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर नर पशु जड़ कृत उपसर्ग, चऊ कहे।
इनकी बाधा प्रभु के, ऊपर नहीं रहे।।
केवलज्ञान का अतिशय, जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में, शीश झुकाए हैं।।14।।

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव घातिक्षय जातिशय धारक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा आदि की पीड़ा से, जग दुख सह्यो।
सो जिन कवलाहार जान, सब पर हर्‍यो।।
केवलज्ञान का अतिशय, जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में, शीश झुकाए हैं।।15।।

ॐ ह्रीं कवलाहाराभाव घातिक्षयजातिशय धारक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में श्री जिनवर, स्थित रहे।
पूर्व दिशा मुख होय, चतुर्दिक दिख रहे।।
केवलज्ञान का अतिशय, जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में, शीश झुकाए हैं।।16।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुख घातिक्षयजातिशय धारक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राकृत संस्कृत सकल, देश भाषा कही।
सब विद्या अधिपत्य, सकल जानत सही।।
केवलज्ञान का अतिशय, जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में, शीश झुकाए हैं।।17।।

ॐ ह्रीं सर्व विद्येश्वरत्व घातिक्षयजातिशय धारक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मूर्तिक तन पुद्गल के अणु से, बन रह्यो।
पड़े नहीं छाया, महा अचरज भयो।।
केवलज्ञान का अतिशय, जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में, शीश झुकाए हैं।।18।।

ॐ ह्रीं छाया रहित घातिक्षयजातिशय धारक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर के नख केश, नाहिं वृद्धी करें।
ज्यों के त्यों ही रहें, प्रभू यह गुण धरें।।

केवलज्ञान का अतिशय, जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में, शीश झुकाए हैं।।19।।

ॐ ह्रीं समान नख केशत्व घातिक्षयजातिशय धारक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्रों में टिमकार, केश भौं नहिं हिलें।
दृष्टी नाशा रहे, कोई हेतू मिलें।।
केवलज्ञान का अतिशय, जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में, शीश झुकाए हैं।।20।।

ॐ ह्रीं अक्षस्पंद रहित घातिक्षयजातिशय धारक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

14 देवकृत अतिशय

(दोहा)

अतिशय देवों कृत कहे, चौदह सर्व महान्।
सर्व जीव को सुख करे, अर्धमागधी बान।।21।।

ॐ ह्रीं सर्वार्धमागधीय भाषा देवोपनीतातिशय धारक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवों में मैत्री रहे, जहँ जिन की थिति होय।
देव निमित्तक जानिए, अतिशय जिनके जोय।।22।।

ॐ ह्रीं सर्व जीव मैत्रीभाव देवोपनीतातिशय धारक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फूल फलें षट् ऋतू के, जहँ जिन की थिति होय।
देवों का तो निमित्त है, अतिशय जिनका सोय।।23।।

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादि तरु परिणाम देवोपनीतातिशय धारक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्पणवत् भूमी रहे, जहँ जिन करें विहार।
अतिशय देवों कृत रहा, होय मंगलाचार।।24।।

ॐ ह्रीं आदर्शतल प्रतिमा रत्नमही देवोपनीतातिशय धारक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंद सुगंधित शुभ सुखद, पुनि-पुनि चले बयार।
अतिशय श्री जिनदेव का, करता मंगलकार।।25।।

ॐ ह्रीं सुगंधित विहरण मनुगत वायुत्व देवोपनीतातिशय धारक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व जीव आनंदमय, होवे मंगलकार।
अतिशय होवे यह परम, प्रभु का होय विहार।।26।।

ॐ ह्रीं सर्वानंद कारक देवोपनीतातिशय धारक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय से जिनदेव के, भूगत कंटक होय।
ये अतिशय भी जहाँ में, देव निमित्तक सोय।।27।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमित धूलि कंटकादि देवोपनीतातिशय धारक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंधोदक की वृष्टि हो, अतिशय करते देव।
महिमा यह जिनदेव की, सेवा करें सदैव।।28।।

ॐ ह्रीं मेघकुमार कृत गंधोदक वृष्टि देवोपनीतातिशय धारक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव रचें पद तल कमल, गगन गमन जब होय।
अतिशय श्री जिनदेव का, देव निमित्तक सोय।।29।।

ॐ ह्रीं चरण कमल तल रचित स्वर्ण कमल देवोपनीतातिशय धारक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुखकारी सब जीव को, निर्मल दिश आकाश।
देव करें भक्ती विमल, अतिशय जिन सुख राश।।30।।

ॐ ह्रीं गगन निर्मल देवोपनीतातिशय धारक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धूम मेघ वर्जित सुभग, सब दिश निर्मल होय।
देव करें भक्ती परम, अतिशय जिन का जोय।।31।।

ॐ ह्रीं सर्व दिशा निर्मल देवोपनीतातिशय धारक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ती के वश देव शुभ, करते जय-जयकार।
पृथ्वी से आकाश तक, होवे मंगलकार।।32।।

ॐ ह्रीं आकाशे जय-जयकार देवोपनीतातिशय धारक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वाण्ह यक्ष आगे चले, धर्म चक्र धर शीश।
अतिशय श्री जिनदेव का, चरण झुकें शत् ईश।।33।।

ॐ ह्रीं धर्म चक्र चतुष्टय देवोपनीतातिशय धारक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल द्रव्य वसु देवगण, लेकर चलते साथ।
अतिशय कर सुर नर सभी, चरण झुकाते माथ।।34।।

ॐ ह्रीं अष्ट मंगल द्रव्य देवोपनीतातिशय धारक भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्य

(सोरठा)

तरु अशोक सुखदाय, शोक निवारी जानिए।
प्रातिहार्य कहलाय, समवशरण की सभा में।।35।।

ॐ ह्रीं तरु अशोक सत्प्रातिहार्य सहिताय भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ सिंहासन होय, रत्न जड़ित सुंदर दिखे।
अधर तिष्ठते सोय, उदयाचल सों छवि दिखे।।36।।

ॐ ह्रीं सिंहासन सत्प्रातिहार्य सहिताय भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पवृष्टि शुभ होय, भांति-भांति के कुसुम से।
महा भक्तिवश सोय, मिलकर करते देव गण।।37।।

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य सहिताय भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य ध्वनि सुखकार, सुने पाप क्षय हो भला।
पावें सौख्य अपार, सुर नर पशु सब जगत के।।38।।

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि सत्प्रातिहार्य सहिताय भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौंसठ चँवर ढुराएँ, प्रभु के आगे देवगण।
भक्ति सहित गुण गाय, अतिशय महिमा प्रकट हो।।39।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि चँवर सत्प्रातिहार्य सहिताय भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्त सुभव दर्शाय, भामण्डल निज कांति से।
महा ज्योति प्रगटाय, कोटि सूर्य फीके पड़ें।।40।।

ॐ ह्रीं भामण्डल सत्प्रातिहार्य सहिताय भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव दुंदुभी नाद, करें देव मिलकर सुखद।
करें नहीं उन्माद, समवशरण में जाय के।।41।।

ॐ ह्रीं देव दुंदुभि सत्प्रातिहार्य सहिताय भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़ित सुनग तिय छत्र, तीन लोक के प्रभु की।
दर्शाते सर्वत्र, महिमाशाली है कहा।।42।।

ॐ ह्रीं छत्र त्रय सत्प्रातिहार्य सहिताय भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंत चतुष्टय के अर्घ्य *(शम्भू छंद)*

तीन काल अरु तीन लोक की, सर्व वस्तु के ज्ञाता हैं।
एक साथ सब कुछ दर्शायक, ज्ञानी आप विधाता हैं।।

ज्ञानावरणी का क्षय करके, केवलज्ञान को पाया है।
गुण अनंत की प्राप्ती हेतू, चरणों शीश झुकाया है।।43।।

ॐ ह्रीं अनन्त ज्ञान गुण प्राप्ताय भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व लोक के द्रव्य चराचर, उन सबके दर्शायक हैं।
दर्श अनंत के धारी प्रभुवर, सर्व जगत् में लायक हैं।।
कर्म दर्शनावरणी क्षय कर, दर्श अनंत उपजाया है।
गुण अनंत की प्राप्ती हेतू, चरणों शीश झुकाया है।।44।।

ॐ ह्रीं अनन्त दर्शन गुण प्राप्ताय भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंत रहित अंतर से वर्जित, सुख अनंत को पाया है।
'विशद' गुणों को पाने हेतू, आतमध्यान लगाया है।।
महामोह का क्षय कर प्रभु ने, इन्द्रियातीत सुख पाया है।
गुण अनंत की प्राप्ती हेतू, चरणों शीश झुकाया है।।45।।

ॐ ह्रीं अनन्त सुख गुण प्राप्ताय भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आतम बल से प्रभु तुमने, बल अनंत प्रगटाया है।
जो बल पाया है प्रभु तुमने, उसका शुभ भाव बनाया है।।
अंतराय का छेदन करके, वीर्य अनंत उपजाया है।
गुण अनंत की प्राप्ती हेतू, चरणों शीश झुकाया है।।46।।

ॐ ह्रीं अनन्त वीर्य गुण प्राप्ताय भौम अरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण की चतुर्दिशा में, मान स्तम्भ बने हैं चार।
चैत्य प्रासाद भूमि है पहली, उनके आगे अति मनहार।।
शोभित होते समवशरण में, तीर्थंकर जिन मंगलकार।
उनके चरणों वन्दन करते, विशद भाव से बारम्बार।।47।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित चतुर्दिग मानस्तंभ चैत्य प्रसाद भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों ओर खातिका है शुभ, जलचर जीवों से संयुक्त।
जल कल्लोलों से शोभित है, फूल खिले होकर उन्मुक्त।।
शोभित होते समवशरण में, तीर्थंकर जिन मंगलकार।
उनके चरणों वन्दन करते, विशद भाव से बारम्बार।।48।।

ॐ ह्रीं खातिका भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प जलाशय से पूरित है, लता भूमि शुभ रही महान्।
अतिशय महिमाशाली है जो, उसका कौन करे गुणगान।।
शोभित होते समवशरण में, तीर्थंकर जिन मंगलकार।
उनके चरणों वन्दन करते, विशद भाव से बारम्बार।।49।।

ॐ ह्रीं लता भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फल पुष्पों से शोभित तरुवर, उपवन भूमी में मनहार।
छटा निराली अनुपम जिसकी, चलती जिसमें मंद बयार।।
शोभित होते समवशरण में, तीर्थंकर जिन मंगलकार।
उनके चरणों वन्दन करते, विशद भाव से बारम्बार।।50।।

ॐ ह्रीं उपवन भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्वज भूमी में ध्वज पवित्र शुभ, दश प्रकार चिह्नों से युक्त।
भवि जीवों को प्रमुदित करके, करते रोग शोक से मुक्त।।
शोभित होते समवशरण में, तीर्थंकर जिन मंगलकार।
उनके चरणों वन्दन करते, विशद भाव से बारम्बार।।51।।

ॐ ह्रीं ध्वज भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुपम हैं सिद्धार्थ वृक्ष शुभ, समवशरण में चारों ओर।
कल्पवृक्ष भूमी है अनुपम, करती सबको भाव विभोर।।

शोभित होते समवशरण में, तीर्थंकर जिन मंगलकार।
उनके चरणों वन्दन करते, विशद भाव से बारम्बार।।52।।

ॐ ह्रीं कल्पवृक्ष भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवन भूमि में भवन बने हैं, चतुर्दिशा में कई प्रकार।
देव इन्द्र क्रीड़ा करते हैं, स्तूपों में आनन्दकार।।
शोभित होते समवशरण में तीर्थंकर जिन मंगलकार।
उनके चरणों वन्दन करते, विशद भाव से बारम्बार।।53।।

ॐ ह्रीं भवन भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मण्डप भूमी में द्वादश, कोठे होते सर्व महान्।
उसके ऊपर गंध कुटी में, कमलाशन पर श्री भगवान।।
शोभित होते समवशरण में, तीर्थंकर जिन मंगलकार।
उनके चरणों वन्दन करते, विशद भाव से बारम्बार।।54।।

ॐ ह्रीं श्री मण्डप भूमि स्थित जिनबिम्ब सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश धर्म *(नरेन्द्र छंद)*

उत्तम क्षमा प्राप्त करके जो, तीर्थंकर पद पाए।
वासुपूज्य की भक्ती करके, भक्त चरण में आए।।
तीर्थंकर जिन वासुपूज्य की, महिमा विस्मय कारी।
उनके चरणों विशद भाव से, अतिशय ढोक हमारी।।55।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्म सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम मार्दव धारण करके, उत्तम पद को पाए।
वासुपूज्य जिन चम्पापुर में, केवलज्ञान जगाए।।

तीर्थंकर जिन वासुपूज्य की, महिमा विस्मय कारी।
उनके चरणों विशद भाव से, अतिशय ढोक हमारी।।56।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम मार्दव धर्म सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम आर्जव पाने वाले, ऋजूमती को पाए।
सिद्धी पाकर सिद्धशिला पर, भक्तों द्वारा ध्याए।।
तीर्थंकर जिन वासुपूज्य की, महिमा विस्मय कारी।
उनके चरणों विशद भाव से, अतिशय ढोक हमारी।।57।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आर्जव धर्म सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम शौच धर्म पाए हैं, मूर्छा त्याग किए।
निर्मलता अन्तर में पाए, चित् में चित्त दिए।।
तीर्थंकर जिन वासुपूज्य की, महिमा विस्मय कारी।
उनके चरणों विशद भाव से, अतिशय ढोक हमारी।।58।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम शौच धर्म सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्य धर्म को पाने वाले, स्वयं सत्व को पाए।
तीन लोक में सत्य धर्म की, महिमा शुभ दिखलाए।।
तीर्थंकर जिन वासुपूज्य की, महिमा विस्मय कारी।
उनके चरणों विशद भाव से, अतिशय ढोक हमारी।।59।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम सत्य धर्म सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण असंयम तजने वाले, सत् संयम को धारे।
लगे अनादी कर्म क्षणिक में, नाश किए वह सारे।।
तीर्थंकर जिन वासुपूज्य की, महिमा विस्मय कारी।
उनके चरणों विशद भाव से, अतिशय ढोक हमारी।।60।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम संयम धर्म सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश तप के द्वारा अपने, कर्म नाशते सारे।
अविनाशी सुख पाने वाले, जिनवर रहे हमारे।।
तीर्थंकर जिन वासुपूज्य की, महिमा विस्मय कारी।
उनके चरणों विशद भाव से, अतिशय ढोक हमारी।।61।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम तप धर्म सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्याग धर्म को पाने वाले, त्यागी देव बने हैं।
बाह्याभ्यन्तर परिग्रह त्यागे, सारे कर्म हने हैं।।
तीर्थंकर जिन वासुपूज्य की, महिमा विस्मय कारी।
उनके चरणों विशद भाव से, अतिशय ढोक हमारी।।62।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम त्याग धर्म सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रखते नहीं राग किन्चित् भी, आकिन्चन शुभ पाए।
वीतराग सर्वज्ञ जिनेश्वर, अर्हत् जिन कहलाए।।
तीर्थंकर जिन वासुपूज्य की, महिमा विस्मय कारी।
उनके चरणों विशद भाव से, अतिशय ढोक हमारी।।63।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आकिन्चन धर्म सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मचर्यव्रत पाने वाले, परम ब्रह्मव्रतधारी।
निज स्वभाव में लीन रहें नित, जो स्वपर उपकारी।।
तीर्थंकर जिन वासुपूज्य की, महिमा विस्मय कारी।
उनके चरणों विशद भाव से, अतिशय ढोक हमारी।।64।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

निज आत्म सुधारस लीन मुनी, जिन वासुपूज्य के साथ रहे।
द्वादश शत् मुनी पूर्वधारी, शुभ ज्ञान निधि के नाथ कहे।।
हे वासुपूज्य ! तुम पूज्य हुए, हम अष्ट द्रव्य कर में लाए।
यह शीश झुका तव चरणों में, हम पूजा करने प्रभु आए।।65।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित द्वादश शत् मुनि सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुधर्म आदी छियासठ मुनि, प्रभु के गणधर रहे महान्।
समवशरण में वासुपूज्य की, वाणी का करते व्याख्यान।।
हे वासुपूज्य ! तुम पूज्य हुए, हम अष्ट द्रव्य कर में लाए।
यह शीश झुका तव चरणों में, प्रभु पूजा करने हम आए।।66।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित षट्षष्टि गणधर सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उन्तालीस हजार शतक द्वय, समवशरण में रहे महान्।
शिक्षक पद धारी मुनिवर श्री, ज्ञानामृत की हैं जो खान।।
हे वासुपूज्य ! तुम पूज्य हुए, हम अष्ट द्रव्य कर में लाए।
यह शीश झुका तव चरणों में, प्रभु पूजा करने हम आए।।67।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित एकोन चत्वारिंशत् सहस्त्र द्वय शत् शिक्षक पद धारी मुनिवर सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच हजार चार सौ मुनिवर, समवशरण के बीच रहे।
अवधिज्ञान के धारी पावन, जैन धर्म की शान कहे।।
हे वासुपूज्य ! तुम पूज्य हुए, हम अष्ट द्रव्य कर में लाए।
यह शीश झुका तव चरणों में, प्रभु पूजा करने हम आए।।68।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित पंच सहस्त्र चतुःशत् अवधिज्ञान के धारी मुनिवर सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह हजार मुनि केवल ज्ञानी, समवशरण मे रहे महान्।
मुक्ति वधु को पाने वाले, उनका कौन करे गुणगान।।
हे वासुपूज्य ! तुम पूज्य हुए, हम अष्ट द्रव्य कर में लाए।
यह शीश झुका तव चरणों में, प्रभु पूजा करने हम आए।।69।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित षट् सहस्त्र केवलज्ञानी मुनिवर सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम विक्रिया ऋद्धीधारी, दश हजार मुनि रहे महान्।
तीर्थंकर की दिव्य देशना, का नित करते हैं रसपान।।
हे वासुपूज्य ! तुम पूज्य हुए, हम अष्ट द्रव्य कर में लाए।
यह शीश झुका तव चरणों में, प्रभु पूजा करने हम आए।।70।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित दश सहस्त्र विक्रिया ऋद्धिधारी मुनिवर सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन: पर्यय शुभ ज्ञान के धारी, छह हजार मुनि रहे महान्।
पर के मन की बात जानने, में जो कुशल रहे गुणवान।।
हे वासुपूज्य ! तुम पूज्य हुए, हम अष्ट द्रव्य कर में लाए।
यह शीश झुका तव चरणों में, प्रभु पूजा करने हम आए।।71।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित षट् सहस्त्र मन: पर्ययज्ञान धारी मुनिवर सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छियालिस सौ मुनिवर थे वादी, समवशरण के बीच महान्।
ॐकार मय दिव्य देशना, सबको सुना रहे भगवान।।
हे वासुपूज्य ! तुम पूज्य हुए, हम अष्ट द्रव्य कर में लाए।
यह शीश झुका तव चरणों में, प्रभु पूजा करने हम आए।।72।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित षट् चत्वारिंशत् वादी मुनिराज सहित भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छियालिस गुण को पाने वाले, विशद धर्म के धारी।
समवशरण में शोभा पाते, श्री जिनवर अविकारी।।

तीर्थंकर जिन वासुपूज्य की, महिमा विस्मय कारी।
उनके चरणों विशद भाव से, अतिशय ढोक हमारी।।73।।

ॐ ह्रीं षट् चत्वारिंशत् गुण सहित समवशरण स्थित धर्म धारी भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य–ॐ आं क्रों ह्रीं श्रीं क्लीं भौमारिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नम: सर्व शांति कुरु कुरु स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

दोहा– श्री जिनेन्द्र जग में हुए, अतिशय पूज्य त्रिकाल।
वासुपूज्य जिनराज की, गाते हैं जयमाल।।

तर्ज:– मधुवन के मंदिरों में...

चम्पापुरी में पाँचों कल्याण, पा गये हैं।
जिन वासुपूज्य स्वामी, मम् उर में छा गये हैं।।
पूरव भवों के तप से, जीवन बनाये पावन।
रत्नों की वृष्टि का शुभ, बरसा वहाँ पे सावन ।।
नगरी को देव आकर, सुन्दर सजा गये हैं।
जिन वासुपूज्य स्वामी, मम् उर में छा गये हैं।।1।।
स्वर्गों से चय किये जिन, माँ के गरभ में आए।
सौधर्म इन्द्र ने तब, उत्सव कई मनाए।।
जन–जन के मन में भारी, आनन्द छा गये हैं।
जिन वासुपूज्य स्वामी, मम् उर में छा गये हैं।।2।।
फाल्गुन बदी सु चौदस, को जन्म प्रभु ने पाया।
तीनों ही लोक में यह, शुभ हर्ष का क्षण आया।।
जन्माभिषेक करने, सब इन्द्र आ गये हैं।
जिन वासुपूज्य स्वामी, मम् उर में छा गये हैं।।3।।

संसार विषय भोगों का, राग नहीं पाया।
इसके ही पूर्व मन में, वैराग्य जा समाया।।
संयम के भाव जिनके, अन्तर में आ गये हैं।
जिन वासुपूज्य स्वामी, मम् उर में छा गये हैं।।4।।
होके विरक्त जग से, रहते हैं जग में न्यारे।
श्री वासुपूज्य स्वामी, जिनराज हैं हमारे।।
आतम का ध्यान करके, निज में समा गये हैं।
जिन वासुपूज्य स्वामी, मम् उर में छा गये हैं।।5।।
चउ घातिया करम का, जो नाश कर चले हैं।
केवल्यज्ञान के शुभ, दीपक हृदय जले हैं।।
प्रभु दिव्य देशना शुभ, जग को सुना गये हैं।
जिन वासुपूज्य स्वामी, मम् उर में छा गये हैं।।6।।
फिर शुक्ल ध्यान द्वारा, करके करम सफाया।
मुक्तिश्री को पाकर, निर्वाण सुयश पाया।।
सिद्धों में सिद्ध बनकर, जिनवर समा गये हैं।
जिन वासुपूज्य स्वामी, मम् उर में छा गये हैं।।7।।
हम भाव पुष्प अर्पित, चरणों में करने लाए।
सदियों से लग रहा जो, भव रोग हरने आए।।
विषयों में पड़के भव हम, अपने गवाँ रहे हैं।
जिन वासुपूज्य स्वामी, मम् उर में छा गये हैं।।8।।
हे नाथ ! दो सहारा, हम भव से पार पाएँ।
पाकर जनम मरण इस, भव में न अब भ्रमाएँ।।
सब राग त्याग जग से, चरणों में आ गये हैं।
जिन वासुपूज्य स्वामी, मम् उर में छा गये हैं।।9।।

(छन्द घत्तानन्द)

श्री वासुपूज्य, हैं जगत् पूज्य, जिनके चरणों हम सिरनाते।
महिमा हम गाते, शीश झुकाते, भक्ती करके हर्षाते।।

ॐ ह्रीं भौमअरिष्ट ग्रह निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– भक्त भाव भक्ती करें, चरण शरण में आन।
मोक्ष लक्ष्मी दीजिए, वासुपूज्य भगवान।।

(इत्याशीर्वाद – पुष्पाञ्जलिं)

श्री वासुपूज्य भगवान की आरती

श्री वासुपूज्य भगवान, आज थारी आरती उतारें।
आरती उतारें, थारी मूरत निहारें, कर दो भव से पार।। आज थारी....
वसुपूज्य के सुत हो प्यारे, जयावती के राजदुलारे।
चम्पापुर महाराज–आज थारी....।।1।।
जन्म के अतिशय तुमने पाए, केवलज्ञान के भी प्रगटाए।
देवों कृत शुभकार–आज थारी....।।2।।
कर्म घातियाँ तुमने नाशे, अनुपम केवल ज्ञान प्रकाशे।
शिवपुर के सरताज–आज थारी....।।3।।
अनन्त चतुष्टय तुमने पाए, प्रातिहार्य भी शुभ प्रकटाए।
तीर्थंकर जिनराज–आज थारी....।।4।।
हम भी द्वार आपके आए, पद में सादर शीश झुकाए।
'विशद' ज्ञान के ताज–आज थारी....।।5।।

***

''जिन मंदिर में आते आते, निज मंदिर में आना है।
सिद्ध सनातन है पद मेरा, विशद सिद्धपद पाना है।।''

श्री वासुपूज्य चालीसा

दोहा– परमेष्ठी जिन पाँच हैं, तीर्थंकर चौबीस।
वासुपूज्य के पद युगल, विनत झुके मम् शीश।।

(चौपाई)

वासुपूज्य जिनराज कहाए, अपने सारे कर्म नशाए।
अनुपम केवलज्ञान जगाए, अविनाशी अनुपम पद पाए।।
महाशुक्र से चयकर आए, चम्पापुर नगरी कहलाए।
पिता वसु नृप अनुपम गाए, जयावती के लाल कहाए।।
आषाढ़ कृष्ण दशमी दिन पाए, इक्ष्वाकु शुभ वंश उपाए।
गर्भ नक्षत्र शतभिषा गाए, प्रातःकाल का समय बिताए।।
फाल्गुन कृष्ण चतुदर्शी गाया, जन्म कल्याणक प्रभु ने पाया।
शुभ नक्षत्र विशाका गया, इन्द्र तभी ऐरावत लाया।।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया, भैंसा चिह्न पैर में पाया।
वासुपूज्य तब नाम बताया, हर्ष सभी के मन में छाया।।
लोग सभी जयकार लगाए, सत्तर धनुष ऊँचाई पाए।
माघ शुक्ल की चौथ बताए, जाति स्मरण प्रभु जी पाए।।
अपराह्न काल का समय बताया, एक उपवास प्रभु ने पाया।
बाल ब्रह्मचारी कहलाए, लाल वर्ण तन का प्रभु पाए।।
प्रभु मनोहर वन में आए, तरु पाटला का तल पाए।
राजा छह सौ छह बतलाए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।।
आयु लाख बहत्तर पाए, उत्तम तप कर कर्म नशाए।
माघ शुक्ल द्वितीया शुभ पाए, प्रभु जी केवलज्ञान जगाए।।
मिलकर इन्द्र वहाँ पर आए, प्रभु के पद में ढ़ोक लगाए।
समवशरण सुन्दर बनवाए, साढ़े छह योजन कहलाए।।

गौरी श्रेष्ठ यक्षिणी जानो, सन्मुख यक्ष प्रभु का मानो।
एक माह पूर्व से भाई, योग निरोध किए सुखदायी।।
फाल्गुन कृष्ण पञ्चमी आई, जिस दिन प्रभु ने मुक्ति पाई।
शुभ नक्षत्र अश्विनी गाया, अपराह्न काल का समय बताया।।
मुनिवर छह सौ एक कहाए, साथ में प्रभु के मुक्ति पाए।
छियासठ प्रभु के गणधर गाए, मन्दर उनमें प्रथम कहाए।।
बारह सौ थे पूरब धारी, दश हजार विक्रिया धारी।
शिक्षक पद के धारी गाए, उन्तालिस हजार दो सौ कहलाए।।
छह हजार थे केवलज्ञानी, छह हजार मनःपर्यय ज्ञानी।
दश हजार विक्रियाधारी, ब्यालिस सौ वादी शुभकारी।।
चौवन सौ अवधिज्ञानी पाए, सहस्र बहत्तर सब ऋषि गाए।
आर्यिकाएँ प्रभु चरणों आईं, एक लाख छह सहस्र बताईं।।
वरसेना गणिनी कहलाई, आयु लाख बहत्तर पाई।
एक वर्ष छद्मस्थ बिताए, चम्पापुर से मुक्ति पाए।।
पाँचो कल्याणक शुभ जानो, चम्पापुर में प्रभु के मानो।
ग्रहारिष्ट मंगल के स्वामी, वासुपूज्य जिन अन्तर्यामी।।
मंगल ग्रह हो पीड़ाकारी, प्रभु का वह बन जाए पुजारी।
आरती कर चालीसा गाए, ग्रह पीड़ा को शीघ्र नशाए।।
सुख–शांति वह मानव पाए, उसका भाग्य उदय में आए।
रत्नत्रय पा कर्म नशाए, शीघ्र विभव से मुक्ति पाए।।
यही भावना 'विशद' हमारी, मुक्ति दो हमको त्रिपुरारी।
भव सागर में नहीं भ्रमाएँ, शिवपद पाके शिवसुख पाएँ।।

दोहा– चालीसा जो भाव से, पढ़ते दिन चालीस।
पाते सुख शांति विशद, बनते शिवपति ईश।।

प्रशस्ति

काल अनादि और है, लोकालोक अनन्त।
चौदह राजू लोक है, नहीं गगन का अन्त।।1।।
मध्य लोक के मध्य में, जम्बू द्वीप महान्।
मन्दर मेरू मध्य है, राजू एक प्रमाण।।2।।
जिसके दक्षिण में रहा, क्षेत्र भरत विख्यात।
आर्य खण्ड है मध्य में, होवे सबको ज्ञात।।3।।
कर्म भूमि जिसमें रही, होते हैं छह काल।
चौथे में चौबीस जिन, होते रहे त्रिकाल।।4।।
इस चौबीसी में हुए, बारहवें तीर्थेश।
वासुपूज्य शुभ नाम है, धरा दिगम्बर भेष।।5।।
चम्पापुर में प्राप्त कर, जो पाँचों कल्याण।
अष्ट कर्म का नाश कर, पाए पद निर्वाण।।6।।
भैंसा जिनका चिन्ह है, तन का रंग है लाल।
ऊँचाई सत्तर धनुष, माँ विजया के लाल।।7।।
जीवों के कल्याण का, जिनका रहा स्वभाव।
उनकी भक्ति के विशद, मन में आए भाव।।8।।
चरण कमल का भक्त यह, भक्ती करता नाथ।
हाथ जोड़ विनती करे, चरण झुकाए माथ।।9।।
भक्ती के ही भाव से, जोड़े शब्द अनेक।
उनसे मिलकर बन गया, है विधान यह नेक।।10।।
भक्त सभी मिलकर करें, जिनवर का गुणगान।
भक्ती पूजा अर्चना, मिलकर करें विधान।।11।।
मार्बल पत्थर की रही, मण्डी देश प्रधान।
मदनगंज है किशनगढ़, भक्तों का स्थान।।12।।
पौष कृष्ण की पञ्चमी, सम्वत् चौसठ मान।
वासुपूज्य का तब हुआ, लिखकर पूर्ण विधान।।13।।
अन्तिम है यह भावना, और कोई न भाव।
सभी भव्य पूजा करें, पावें निज स्वभाव।।14।।
नहीं लोक का अन्त है, ज्ञान अनन्तानन्त।
भूल चूक को भूलकर, क्षमा करो हे संत ! ।।15।।
'विशद' भावना है यही, और कोई न आस।
भव सागर से पार हो, पाऊँ शिवपुर वास।।16।।

आरती

(तर्ज-भक्ति बेकरार है.......)

गुरुवर का दरबार है, भक्ति की झंकार है।
देखो आज गुरुवरजी की, हो रही जय-जयकार है।।
ग्राम कुपी में जन्म लिए है, घर-घर मंगल छाए जी-2
देख पुत्र की शान हँसीली, नाम रमेश बताए जी।।-2
गुरुवर.......
देख दशा संसार वास की, मन वैराग्य समाया जी-2
राह पकड़ ली मोक्षपुरी की, भेष दिगम्बर पाया जी।।-2
गुरुवर.......
घृत का दीप जलाकर गुरुवर, आये तेरे द्वारे जी।
मोह-तिमिर का नाश करो अब, जागें भाग्य हमारे जी।।-2
गुरुवर.......
गुण गाते हैं आज गुरुजी, तुम जैसे गुण पाने जी।
भक्ती करते यहाँ आपकी, आके इसी बहाने जी।।-2
गुरुवर.......
तुमने सबको दिया सहारा, हम भी शरण में आये हैं।
'आस्था' रहे शरण में हरदम, यही भावना भाये हैं।।
गुरुवर.......

तुम्हें हमने मेरे गुरुवर स्वयं दिल में बसाया है।
जिन्दगी में गुरु तुमने, मुझे जीना सिखाया है।।
गमों से हम जमाने में, सदा गमगीन रहते थे।
गमों को हे गुरु ! तुमने, हमें पीना सिखाया है।।

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्जः- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज द्वारा रचित साहित्य एवं विधान सूची

1. श्री आदिनाथ महामण्डल विधान
2. श्री अजितनाथ महामण्डल विधान
3. श्री संभवनाथ महामण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ महामण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ महामण्डल विधान
6. श्री पद्मप्रभ महामण्डल विधान
7. श्री सुपार्श्वनाथ महामण्डल विधान
8. श्री चन्द्रप्रभु महामण्डल विधान
9. श्री पुष्पदंत महामण्डल विधान
10. श्री शीतलनाथ महामण्डल विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ महामण्डल विधान
12. श्री वासुपूज्य महामण्डल विधान
13. श्री विमलनाथ महामण्डल विधान
14. श्री अनन्तनाथ महामण्डल विधान
15. श्री धर्मनाथ महामण्डल विधान
16. श्री शांतिनाथ महामण्डल विधान
17. श्री कुंथुनाथ महामण्डल विधान
18. श्री अरहनाथ महामण्डल विधान
19. श्री मल्लिनाथ महामण्डल विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ महामण्डल विधान
21. श्री नमिनाथ महामण्डल विधान
22. श्री नेमिनाथ महामण्डल विधान
23. श्री पार्श्वनाथ महामण्डल विधान
24. श्री महावीर महामण्डल विधान
25. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
26. श्री णमोकार मंत्र महामण्डल विधान
27. सर्वसिद्धीप्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
28. श्री सम्मेदशिखर विधान
29. श्री श्रुत स्कंध विधान
30. श्री यागमण्डल विधान
31. श्री जिनबिम्ब पंचकल्याणक विधान
32. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
33. श्री कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सवदोष प्रायश्चित्त विधान
36. लघु पंचमेरु विधान
37. लघु नंदीश्वर महामण्डल विधान
38. श्री चँवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
39. श्री जिनगुण सम्पत्ति विधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. श्री ऋषिमण्डल विधान
42. श्री विषापहार स्तोत्र महामण्डल विधान
43. श्री भक्तामर महामण्डल विधान
44. वास्तु महामण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांति महामण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभु विधान
47. श्री चौंसठ ऋद्धि महामण्डल विधान
48. श्री कर्मदहन महामण्डल विधान
49. श्री चौबीस तीर्थंकर महामण्डल विधान
50. श्री नवदेवता महामण्डल विधान
51. वृहद् ऋषि महामण्डल विधान
52. श्री नवग्रह शांति महामण्डल विधान
53. कर्मजयी 1008 श्री पंच बालयति विधान
54. श्री तत्त्वार्थ सूत्र महामण्डल विधान
55. श्री सहस्रनाम महामण्डल विधान
56. वृहद् नंदीश्वर महामण्डल विधान
57. महामृत्युंजय महामण्डल विधान
58. श्री दशलक्षण विधान
59. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
60. श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
61. अभिनव वृहद् कल्पतरु विधान
62. वृहद् श्री समवशरण महामण्डल विधान
63. श्री चारित्र लब्धि महामण्डल विधान
64. श्री अनन्तव्रत महामण्डल विधान
65. कालसर्पयोग निवारक महामण्डल विधान
66. श्री आचार्य परमेष्ठी महामण्डल विधान
67. श्री सम्मेदशिखर कूटपूजन विधान
68. त्रिविधान संग्रह
69. पंचविधान संग्रह
70. श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
71. विशद पञ्चागम संग्रह
72. जिन गुरु भक्ति संग्रह
73. धर्म की दस लहरें
74. स्तुति स्तोत्र संग्रह
75. विराग वंदन
76. बिन खिले मुरझा गए
77. जिन्दगी क्या है
78. धर्म प्रवाह
79. भक्ति के फूल
80 विशद श्रमण चर्या
81. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई
82. इष्टोपदेश चौपाई
83. द्रव्य संग्रह चौपाई
84. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई
85. समाधितन्त्र चौपाई
86. सुभाषित रत्नावलि चौपाई
87. संस्कार विज्ञान
88. बाल विज्ञान भाग-3
89. नैतिक शिक्षा भाग-1,2,3
90. विशद स्तोत्र संग्रह
91. भगवती आराधना
92. चिंतवन सरोवर भाग-1
93. चिंतवन सरोवर भाग-2
94. जीवन की मन:स्थितियाँ
95. आराध्य अर्चना
96. आराधना के सुमन
97. मूक उपदेश भाग-1
98. मूक उपदेश भाग-2
90. विशद प्रवचन पर्व
100. विशद ज्ञान ज्योति
101. जरा सोचो तो
102. विशद भक्ति पीयूष
103. विशद मुक्तावली
104. संगीत प्रसून
105. आरती चालीसा संग्रह
106. भक्तामर भावना
107. बड़ा गाँव आरती चालीसा संग्रह
108. सहस्रकूट जिनार्चना संग्रह
109. विशद महा अर्चना संग्रह
110. विशद जिनवाणी संग्रह
111. विशद वीतरागी संत
112. काव्य पुञ्ज
113. पञ्च जाप्य
114. श्री चँवलेश्वर का इतिहास एवं पूजन चालीसा संग्रह
115. बिजोलिया तीथपूजन आरती चालीसा संग्रह
116. विराजनगर तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह

जैन साहित्य एवं मंदिर उपकरण

हमारे यहाँ सभी प्रकार का दिगंबर जैन एवं भारत के सभी प्रमुख धार्मिक संस्थानों का सत साहित्य एवं मंदिर में उपयोग हेतु उपकरण और प्रभावना में बाटने योग्य सामग्री सीमित मूल्य पर उपलब्ध है

(पांडुशिला ,सिंघासन, छत्र, चवर प्रातिहार्य,जाप माला ,मंगल कलश, पूजा बर्तन ,चंदोवा,तोरण ,झारी ,

(शुद्ध चांदी के उपकरण आर्डर पर निर्मित किया जाता है)

नोट:-हमारे यहाँ घरो में उपयोग हेतु ,साधुओ के उपयोग हेतु, अनुष्ठानों में उपयोग हेतु शुद्ध घी भी आर्डर पर उपलब्ध कराया जाता है

SOURABH KUMAR JAIN

9993602663

77229 83010

SOURABHJN1989@GMAIL.COM

जय जिनेंद्र

श्री

शुद्ध घी

देशी गाय का शुद्ध घी

शुद्धता पूर्वक बनाया गया देशी घी

साधु व्रती एवं धार्मिक अनुष्ठानों को ध्यान
में रखकर बनाया गया शुद्ध देशी घी

पहले इस्तेमाल करें फिर विश्वास करें

संपर्क सूत्र

CONTACT FOR ORDER
CALL AND WHATSAPP
9993602663
7722983010

Contact for order
Call and whatsapp
9993602663
7722983010

9993602663

10"
11"
13"

11"
13"
15"

णमोकार महामंत्र
णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायणं
णमो लोए सव्वसाहूण
एसो पंच णमोकारो, सव्व-पावप्पणासणो ।।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।।

5feet

6.5
22/29

18/29
5.5

पीतल डिब्बा सेट

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

WEIGHT
42040
Essae

WEIGHT g
4U6.0
Essae
DS-852

WEIGHT
21565

दिगंबर जैन ग्रंथो की पीडीएफ
के लिये हमारे whatapp नंबर
पर संपर्क करें
09993602663
सौरभ सागर (इंदौर)